''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँ : तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद
की पीएच.ड़ी. (हिंदी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबंध

2009

शोध-छात्र

मल्लिनाथ बिराजदार

शोध-निर्देशिका

डॉ. पद्मा पाटील

हिंदी विभाग,
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

हिंदी विभाग

डॉ. पद्मा पाटील **तिथि:**

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि, श्री. बिराजदार मल्लिनाथ बाबुराव ने मेरे निर्देशन में ''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँ: तुलनात्मक अध्ययन'' शोध-प्रबंध डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद की पीएच.ड़ी. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है । यह कार्य व्याख्यात्मक, सर्वेक्षणात्मक तथा तुलनात्मक अनुसंधान की पद्धतियों का निर्वाह करते हुए संपन्न किया हैं। मेरी जानकारी के अनुसार इसमें दिये हुए तथ्य सही हैं । शोधार्थी के कार्य से मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

शोध-निर्देशिका

(डॉ. पद्मा पाटील)

शपथपत्र

मैं श्री. बिराजदार मल्लिनाथ बाबुराव शपथपूर्वक निवेदन करता हूँ कि ''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँ: तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर प्रस्तुत किया गया शोध-कार्य मेरा अपना है । उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस विषय पर किसी विश्वविद्यालय में शोधकार्य नहीं हुआ है । इसका कोई अंश अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया है, न ही इसका कोई अंश प्रकाशित किया गया है ।

औरंगाबाद :

तिथि :

बिराजदार मल्लिनाथ बाबुराव
शोध छात्र
डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर मराठवाड़ा
विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

प्राक्कथन

आधुनिक काल सभी दृष्टि से विकास और परिवर्तन का काल है। आधुनिक काल में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में काफी सुधार हुआ है। इसका प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभाव साहित्य, संस्कृति और सभ्यता पर हुआ है। प्राचीन संस्कृति और सभ्यता में कवयित्रियों का क्षेत्र सीमित था । काव्य या साहित्य की दृष्टि से स्त्री प्रतिभा समृद्ध, संपन्न होने के बावजूद भी सामाजिक मर्यादाओं के कारण वह विकसित नहीं हो पायी थी। लेकिन आज परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ है। प्रकृति की दी हुई दुर्बलता को झटककर अपनी स्वतंत्र तथा सम्मानित पहचान बनाने में स्त्री निरंतर प्रयत्नशील रही है।

आधुनिक काल में हिंदी तथा मराठी काव्य-जगत् में अपनी काव्य-कृतियों के माध्यम से स्त्री जीवन में क्रांति लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य आधुनिक हिंदी तथा मराठी की कवयित्रियों ने किया है । उन्होंने अपनी कविता के सृजन से अपना विशिष्ट स्थान निर्माण कर हिंदी तथा मराठी कविता को संपन्न बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । प्राचीन काल से ही स्त्री पारिवारिक जिम्मेदारी, खेती में सहयोग, पर्यावरण की रक्षा, सामाजिक परिवेश में सुधार के प्रति सजग रही है । उसे प्राप्त अनुभव के बल पर उसने अपनी भावनाएँ कविता के माध्यम से प्रकट की है, क्योंकि सृजनशीलता की अभिव्यक्ति स्त्री की आत्मनिर्णायक कविता में होती है। इसलिए स्त्री को सृजनशील कहा गया है।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की व्यक्तिगत अनुभव और विविध भाव भावनाएँ चित्रित हुई है । समकालीन कवयित्रियाँ समाज, अपने परिवेश, व्यवस्था, सभ्यता आदि के प्रति काफी सतर्क हैं । यही इनकी विशेषता रही है । पहले जमाना ऐसा था कि पुरुष कवियों ने अपनी दृष्टि से स्त्री को साहित्य या काव्य में स्थान दिया था परंतु आधुनिक हिंदी तथा मराठी की कवयित्रियों ने स्त्री को सशक्तता से काव्य में स्थान देने का प्रयास किया है । वे पारम्पारिक मानसिकता से परे हो गयी है । उनकी आँखों में अब आँसू देखने को नहीं मिलते बल्कि आक्रोश तथा विद्रोह की आग देखने को मिल सकती है।

आधुनिक कालीन हिंदी तथा मराठी की कवयित्रियाँ अपनी समसामयिक स्थितियाँ, सम्पूर्ण परिवेश एवम् स्त्रियों के व्यक्तित्व तथा उनके अस्तित्व को उजागर करती हैं, परंतु वे अनेक वर्तमान सामाजिक विसंगतियों से भी परिचित हैं । इन

कवयित्रियों की अभिव्यक्ति अत्यंत सशक्त है । इनके चित्रण में अलगता है, नवीनता है, एवम् समाज को प्रभावित करने की शक्ति भी है ।

हिंदी में तुलनात्मक साहित्य पर पहली पुस्तक 1982 ई. में प्रकाशित हुई थीं जिसके लेखक डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी थे। पुस्तक का शीर्षक 'तुलनात्मक साहित्य की भूमिका है।' डॉ. नगेंद्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम मे कॉम्पोजिट कोर्स के नाम से भारतीय साहित्य का अध्यापन प्रारंभ किया था। डॉ. इंद्रनाथ चौधुरी के शब्दों में- ''किसी भी भाषा में रचित भारतीय साहित्य का अध्ययन एक साहित्य रूप में करना संभव नहीं है। कोई भी एक भारतीय साहित्य एक दूसरे भारतीय साहित्य से कहीं न कहीं जुड़ा हुआ है और इसीलिए किसी भी एक भाषा के साहित्य का अध्ययन और विश्लेषण एक दूसरी भाषा में रचित साहित्य के अध्ययन के लिए हमें रास्ता दिखाता है और इस तरह एक संपूर्ण भारतीय साहित्य का पता लग पाता है। भारतीय साहित्य तुलनात्मक है और भारत एक तुलनात्मक क्षेत्र है।'' तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व को समझकर विश्वविद्यालयों की स्थापना के साथ-साथ भारतीय भाषाओं के साहित्य से संबंधित शोध कार्य में तुलनात्मक साहित्य पद्धति के प्रयोग की ओर भारतीय विद्वानों का ध्यान आकर्षित हुआ था। लेकिन इस पद्धति से अपरिचित होने के कारण अधिकतर शोध-कार्य तुलनात्मक न होकर दो या तीन भाषाओं के साहित्य तक सीमित रहा। लेकिन आधुनिक काल में काफी परिवर्तन हुआ है। भारत बहुभाषिक देश है। अनेक भाषा एक दूसरे के संपर्क में आने लगी हैं। विभिन्न भाषाओं में प्राप्त साहित्य के अध्ययन से उस भाषा की संस्कृति से हम परिचित हो जाते हैं। इस कार्य के लिए हिंदी भाषा सक्षम है, समर्थ है। अतः प्रत्युत विषय का चयन हुआ।

''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँः तुलनात्मक अध्ययन'' विषय चुनने के और कारण हैं - मेरी मातृभाषा मराठी है और एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा हिंदी विषय लेकर प्राप्त की है । भाषा विचार-विनिमय का साधन है, भाषा के माध्यम से ही हम समाज के साथ संपर्क करते हैं । भारत बहुभाषिक देश है, भारत में अनेक अनगिनत भाषाएँ हैं। भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य आज एकमात्र हिंदी भाषा कर रही है । गंगा की भाँति कल-कल करते हुए देश के कोने- कोने में हिंदी पहुँची है । हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने में पहुँचाने का श्रेय निश्चित रूप से म. गांधी, राजगोपालाचारी आदि को है। उसी प्रकार अन्य भाषा में स्थित साहित्य दूसरों

तक पहुँचाना जरूरी है, क्योंकि प्रत्येक साहित्य के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्य होते हैं । विविधता में एकता यह भारत की विशेषता है, इस एकता को बनाए रखने का काम हिंदी कर रही है । इसलिए विचार किया कि हिंदी कवयित्रियों के साथ मराठी कवयित्रियों की तुलना कर उनकी कविता, कविता में अंकित सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश, धार्मिक संस्कार, रीति, रस्म, रिवाज, पद्धति आदि का अध्ययन कर हिंदी के माध्यम से मराठी कवयित्रियों के विचारों तथा अनुभवों को अनुसंधान कार्य के माध्यम से पाठकों तक पहुचाँया जाय । आज हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को एक व्यापक आयाम प्रदान करने के लिए यह जरूरी है कि हिंदी को केंद्र में रख कर भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यों का अध्ययन किया जाय जिससे कि हिंदी सही मायने मे भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर सकें और भाषिक समस्या से मुक्त कर एकता के तत्त्वों से हमें परिचित करा सकें । अनेक प्रादेशिक भाषाओं का साहित्य समृद्ध है। हिंदी के माध्यम से, हिंदी के साथ प्रादेशिक भाषाओं में स्थित साहित्य की तुलना कर सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधना आवश्यक है और आज यह प्रासंगिक भी है ऐसा मुझे लगता है, क्योंकि तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में शोधनिर्देशिका से चर्चा की। चर्चा के फलस्वरूप 'तुलनात्मक अध्ययन' का महत्त्व समझ में आया और ''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँः तुलनात्मक अध्ययन'' शीर्षक से अनुसंधान कार्य प्रारंभ किया। प्रस्तुत शोधकार्य आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविताओं के कथ्य तक की सीमित रखा है । शिल्प पक्ष पर स्वतंत्र रीति से कार्य किया जा सकता है। सुचारू अनुसंधान के लिए केवल कथ्य सौंदर्य की मर्यादा रखी गयी है।

अनुसंधान कार्य तुलनात्मक अध्ययन, शास्त्रीय, सर्वेक्षणात्मक, व्याख्यात्मक प्रविधि का पालन करते हुए संपन्न किया है। अनुसंधान की सुविधा हेतु प्रस्तुत विषय को सात अध्यायों में विभाजित कर संपन्न किया है। वह इस प्रकार हैं –

प्रथम अध्याय : आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप शीर्षक का है।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक हिंदी कविता का स्वरुप, परिवेशजन्य स्थितियों तथा प्रवृत्तियों कों स्पष्ट किया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

द्वितीय अध्याय : आधुनिक मराठी कविता का स्वरूप शीर्षक का है।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक मराठी कविता का स्वरूप, परिवेशजन्य

स्थितियों तथा प्रवृतियों को स्पष्ट किया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं ।

तृतीय अध्याय : आधुनिक काल की पूर्ववर्ती हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों का जीवन परिचय तथा रचनात्मक सरोकार शीर्षक का है।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक काल के पूर्ववर्ती हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों का परिचय दिया गया है और रचनात्मक सरोकार पर विचार-विमर्श कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गये हैं।

चत्तुर्थ अध्याय : आधुनिक हिंदी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार शीर्षक का है।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक काल में हिंदी में सृजनरत कवयित्रियों का जन्म, शिक्षा-दीक्षा, उन्हें प्राप्त सम्मान पुरस्कारों की जानकारी दी है । साथ ही रचनात्मक सरोकार पर विचार-विमर्श कर निष्कर्ष दिये गए हैं ।

पंचम् अध्याय : आधुनिक मराठी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार शीर्षक का है ।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक काल में मराठी में सृजनरत कवयित्रियों का जन्म, शिक्षा-दीक्षा, उन्हें प्राप्त सम्मान, पुरस्कारों की जानकारी दी हैं। साथ ही रचनात्मक सरोकार पर विचार-विमर्श कर निष्कर्ष दिए गए हैं।

षष्ठ अध्याय : आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य शीर्षक का है ।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक काल में हिंदी में सृजनरत कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य स्पष्ट कर निष्कर्ष दिए गए हैं।

सप्तम् अध्याय : आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य शीर्षक का है।

इस अध्याय के अंतर्गत आधुनिक काल में मराठी में सृजनरत कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य स्पष्ट कर निष्कर्ष दिए गये हैं ।

उपसंहार में अनुसंधान पश्चात् मिले निष्कर्षों कों प्रस्तुत किया गया है ।

मेरा सौभाग्य है कि, डॉ. पद्मा पाटील के निर्देशन में शोधकार्य करने का सुअवसर मिला । उनके प्रति यह शाब्दिक आभार मेरे हृदय में स्थित कृतज्ञतापूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं ।

डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग अध्यक्ष

डॉ.माधव सोनटक्के, तथा अन्य सभी गुरुजनों तथा इस शोध प्रबंध कार्य में मुझे शिक्षण प्रसारक मंडळ, अणदूर के आधारस्तंभ श्रद्धेय सचिव, आदरणीय श्री. सि.ना. आलुरे गुरुजी, अध्यक्ष मा.श्री. मधुकररावजी चव्हाण, जवाहर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. ए. के. मुदकण्णा, प्रा. एम.एम. लंगडे, डॉ. सौ. एम.बी. जाधव मेरे सहयोगी प्राध्यापक एवं कर्मचारियों के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग से यह प्रबंध लेखन का कार्य संपन्न हुआ है । अतः इनका अंतस्तल से आभारी हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को संपन्न बनाने में निम्नाकिंत ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है-

- डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद के ग्रंथपाल और अन्य कर्मचारी, हिंदी विभाग एवं अन्य कर्मचारी ।
- बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी। हिंदी विभाग एवं अन्य कर्मचारी ।
- जयकर ग्रंथालय, पुणे के ग्रंथपाल और अन्य कर्मचारी ।
- एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी ।
- जवाहरलाल नेहरु ग्रंथालय, मुंबई, के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी ।
- मुंबई मराठी ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी ।
- कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, नळदुर्ग के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी ।
- जवाहर विद्यालय और जवाहर महाविद्यालय, अणदूर के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी ।

आदि का मैं विशेष ऋणी रहूँगा, जिन्होंने पुस्तके जुटाने में अत्यंत तत्परता के साथ मेरी सहायता की।

इस शोध-प्रबंध की परिपूर्ति के लिए मेरी माताजी श्रीमती भीमाबाई और स्वर्गीय पिताजी बाबुराव के शुभ आशीष रहे हैं । मेरे भाई, स्वर्गीय भाभी, बहन, सौभाग्यकांक्षिणी कलावती बिराजदार आदि की मुझे विशेष प्रेरणा मिली । मेरे सुपुत्र और पुत्री नागेश और भाग्यश्री ने अपने वांछित से दूर रहकर मुझे शोध कार्य जुटाने के लिए सहयोग दिया है । इन सभी के प्रति मैं सहृदयता से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

इस प्रबंध के संगणक टंकन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण काम मेरे मित्र श्री. वैजनाथ चिंचोले ने अत्यंत तत्परता के साथ कर के शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है । अतः उन सभी के प्रति आभारी हूँ ।

इस प्रबंध के प्रणयन मे जिन कवि, कवयित्रियों का एवं विद्वानों की कृतियों से प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन मिला है, मैं इन विद्वजनों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ । अंत में इस शोध कार्य को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन्होंने सहायता की है, मैं उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस शोध प्रबंध को विद्वजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ ।

स्थान - औरंगाबाद शोध – छात्र

तिथि – **(श्री.बिराजदार मल्लिनाथ बाबुराव)**

अनुक्रम

प्रथम अध्याय : आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप पृ.क्र. **1 - 27**

1:1 भूमिका

1:1:1 भारतेंदु युगीन कविता

1:1:2 द्विवेदीयुगीन कविता

1:1:3 छायावादी कविता

1:1:4 उत्तर छायावादी कविता

1:1:5 प्रगतिवादी कविता

1:1:6 प्रयोगवादी कविता

1:1:7 नई कविता

1:1:8 समकालीन कविता

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय: आधुनिक मराठी कविता का स्वरूप पृ.क्र. **28 - 64**

2:1 भूमिका

2:1:1 केशवसुत युगीन कविता

2:1:2 रविकिरण मंडल युगीन कविता

2:1:3 रविकिरण मंडलोत्तर कविता

2:1:4 मर्ढेकर युगीन कविता

2:1:5 नई कविता

2:1:6 राष्ट्रीय काव्यधारा

2:1:7 साठोत्तरी मराठी कविता

2:1:8 दलित कविता

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय: आधुनिक काल के पूर्ववर्ती हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँ:परिचय एवं रचनात्मक सरोकार पृ.क्र. 65-83

3 भूमिका

3:1 आधुनिक काल: पूर्ववर्ती हिंदी कवयित्रियाँ :

3:1:1 मीराँ

3:1:2 तिरुलाम्बा

3:1:3 देवकुमारिका

3:1:4 मधुरवाणी

3:1:5 रामभद्राम्बा

3:1:6 गंगादेवी

3:1:7 ताजमुगलिनी

3:1:8 चंद्रसखी

3:1:9 गंगास्त्री और यमुनास्त्री

3:1:10 माधवी

3:1:11 झीमा

3:1:12 पद्मा

3:1:13 बिरजूबाई

3:1:14 राणी रणधरी

3:1:15 शेख आलम

3:1:16 रुपमति

3:1:17 साई

3:1:18 रत्नावली

3:1:19 सुजानराय

3:1:20 ब्रजकुँवरिबाई

3:1:21 सुंदर कुँवरिबाई

3:1:22 छत्रकुँवरिबाई

3:1:23 रत्नकुँवरि

3:1:24 सहजोबाई

3:1:25 दयाबाई

निष्कर्ष

3:2 **आधुनिक काल: पूर्ववर्ती मराठी कवयित्रियाँ**

3:2:1 महदंबा

3:2:2 मुक्ताबाई

3:2:3 संत जनाबाई

3:2:4 कान्होपात्रा

3:2:5 वेणाबाई

3:2:6 संत सोयराबाई

3:2:7 संत निर्मलाबाई

3:2:8 संत बहेणाबाई

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : आधुनिक हिंदी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार पृ.क्र. **84- 116**

4:1 भूमिका

4:1:1 प्रताप कुँवरिबाई

4:1:2 निधि रानी

4:1:3 कमल कुँवर

4:1:4 रत्नकुँवरिबीबी

4:1:5 ज्वालादेवी

4:1:6 चंद्रकलाबाई

4:1:7 सरस्वती देवी

4:1:8 रानी रघुराजकुँवरि

4:1:9 तोरनदेवी शुक्ल लली

4:1:10 रामकुमारी देवी'चौहान'

4:1:11 सुभद्राकुमारी चौहान

4:1:12 श्रीमती होमवती देवी

4:1:13 श्रीमती महादेवी वर्मा

4:1:14 पुरुषार्थवती

4:1:15 शकुंतला माथुर

4:1:16 रामेश्वरी देवी चकोरी

4:1:17 सुमित्राकुमारी सिन्हा

4:1:18 तारा पांडे

4:1:19 हीरादेवी चतुर्वेदी

4:1:20 शकुंतला सिरोढिया

4:1:21 शांति मेहरोत्रा

4:1:22 रमासिंह

4:1:23 कमल कुमारी

4:1:24 किरण जैन

4:1:25 इंदू जैन

4:1:26 कमल कुमार

4:1:27 मीना अग्रवाल

4:1:28 उर्मिला कौल

4:1:29 उषा चौधरी

4:1:30 दिनेशनंदिनी डालमिया

4:1:31 सुधा गुप्ता

4:1:32 सुमन राजे

4:1:33 सुनिता बुद्धिराजा

4:1:34 शीला गुजराल

4:1:35 कीर्ति चौधरी

4:1:36 सुधा जैन

4:1:37 अमृता भारती

4:1:38 मालती शर्मा

4:1:39 पुष्पा राही

4:1:40 सावित्री डागा

4:1:41 रेखा मैत्र

4:1:42 सुशीला कपूर

4:1:43 प्रतिभा गर्ग

4:1:44 रमणिका गुप्ता

4:1:45 इंदू वशिष्ट

4:1:46 शांति जैन

4:1:47 अरुणा कपूर

4:1:48 कुसुम कुमार

4:1:49 कुसुम अंसल

4:1:50 स्नेहमयी चौधरी

4:1:51 मणिका मोहिनी

4:1:52 विद्यावती कोकिल

4:1:53 सुनिता जैन

4:1:54 शशि सहगल

4:1:55 मंजु गुप्ता

4:1:56 शामा

4:1:57 अर्चना वर्मा

4:1:58 शैलप्रिया

4:1:59 सुभद्रा खुराना

4:1:60 वासंती रामचंद्रन

4:1:61 कामिनी भटनागर

4:1:62 मंजु 'महिमा' भटनागर

4:1:63 कीर्ति केसर

4:1:64 पद्मजा घोरपडे

4:1:65 शशि शर्मा

4:1:66 अमिता शर्मा

4:1:67 वीणा सिन्हा

4:1:68 इंदिरा मिश्र

4:1:69 गगन गिल

4:1:70 पद्मा पाटील

4:1:71 कात्यायनी

4:1:72 अनिता वर्मा

4:1:73 डी. माधवी

4:1:74 अनामिका

4:1:75 निशा निशांत

4:1:76 अलका सिन्हा

4:1:77 प्रगति सक्सेना

पंचम् अध्याय : आधुनिक मराठी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार पृ.क्र.**117-137**

5:1 भूमिका

5:1:1 सावित्रीबाई फुले

5:1:2 लक्ष्मीबाई टिळक

5:1:3 बहिणाबाई चौधरी

5:1:4 मनोरमाबाई रानडे

5:1:5 काशिताई नाटेकर

5:1:6 विमलाबाई देशपांडे

5:1:7 शांता नाशिकर

5:1:8 शांतादेवी तडवी

5:1:9 इंदिराबाई तेलंग

5:1:10 पद्मा गोळे

5:1:11 संजीवनी मराठे

5:1:12 इंदिरा संत

5:1:13 निर्मला देशपांडे

5:1:14 कमलाबाई देशपांडे

5:1:15 इंदिरा कुलकर्णी

5:1:16 शांता शेळके

5:1:17 सरोज अहंकारी

5:1:18 अनुराधा पोतदार

5:1:19 सरिता पद्की

5:1:20 पद्मा लोकुर

5:1:21 शिरीष पै

5:1:22 अंजली कुलकर्णी

5:1:23 वृंदा लिमये

5:1:24 पद्मिनी बिनीवाले

5:1:25 सुहासिनी इर्लेकर

5:1:26 विजया जहागिरदार

5:1:27 सुनेत्रा ओक

5:1:28 सुशीला मराठे

5:1:29 अंजली ठकार

5:1:30 सुशील पगारिया

5:1:31 वासंती मुझुमदार

5:1:32 हिरा बनसोडे

5:1:33 शैला लोहिया

5:1:34 विजया संगवई

5:1:35 मीना प्रभू

5:1:36 लीला धनपलवार

5:1:37 सुलभा हेर्लेकर

5:1:38 प्रभा गणोरकर

5:1:39 रजनी परुळेकर

5:1:40 अश्विनी धोंगडे

5:1:41 मृणाल चिंचोळकर

5:1:42 सुशीला महाजन

5:1:43 सुरेखा भगत

5:1:44 आसावरी काकडे

5:1:45 ज्योति लांजेवार

5:1:46 संजीवनी बोकिल

5:1:47 यशोधरा साठे

5:1:48 सुमति लांडे

5:1:49 अनुराधा पाटील

5:1:50 अंजली कीर्तने

5:1:51 शैला सायनाकर

5:1:52 श्रद्धा बेलसरे

5:1:53 मलिका अमर शेख

5:1:54 उषा भालेराव

5:1:55 प्रणिता चाकुरकर

5:1:56 रसिका देशमुख

5:1:57 प्रतिभा देशपांडे

5:1:58 प्रतिभा टेपाळे (महाजन)

5:1:59 प्रज्ञा लोखंडे

5:1:60 निशिगंधा (बोकिल) वाड

षष्ठ अध्याय: आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य

पृ.क्र. **138 - 270**

6:1 भूमिका

6:1:1 प्रताप कुँवरिबाई

6:1:2 निधि रानी

6:1:3 कमल कुँवर

6:1:4 रत्न कुँवरिबीबी

6:1:5 तोरनदेवी शुक्ल लली

6:1:6 कमल कुमारी

6:1:7 चंद्रकलाबाई

6:1:8 सरस्वती देवी

6:1:9 रानी रधुराज कुँवरि

6:1:10 रामकुमारी देवी चौहान

6:1:11 श्रीमती होमवती देवी

6:1:12 रामेश्वरी देवी चकोरी

6:1:13 हीरादेवी चतुर्वेदी

6:1:14 पुरुषार्थवती

6:1:15 सुमित्राकुमारी सिन्हा

6:1:16 शकुंतला सिरोढिया

6:1:17 शांती मेहरोत्रा

6:1:18 सुभद्राकुमारी चौहान

6:1:19 विद्यावती कोकिल

6:1:20 शकुंतला माथुर

6:1:21 तारा पांडे

6:1:22 महादेवी वर्मा

6:1:23 कीर्ति चौधरी

6:1:24 कुसुम अंसल

6:1:25 सुमन राजे

6:1:26 रमणिका गुप्ता

6:1:27 कमल कुमार

6:1:28 सुधा गुप्ता

6:1:29 किरण जैन

6:1:30 इन्दू जैन

6:1:31 शांति जैन

6:1:32 अमृता भारती

6:1:33 अरुणा कपूर

6:1:34 अर्चना वर्मा

6:1:35 मुक्ता

6:1:36 प्रभा मुझुमदार

6:1:37 इंदू वशिष्ट

6:1:38 सुनिता बुद्धिराजा

6:1:39 मधुरिमा सिंह

6:1:40 उर्मिला कौल

6:1:41 उषा चौधरी

6:1:42 गगन गिल

6:1:43 अनामिका

6:1:44 दिनेशनंदिनी डालमिया

6:1:45 कीर्ति केसर

6:1:46 मंजु गुप्ता

6:1:47 प्रभा खेतान

6:1:48 कामिनी भटनागर

6:1:49 मंजु महिमा भटनागर

6:1:50 शशि शर्मा

6:1:51 मणिका मोहिनी

6:1:52 निशा निशांत

6:1:53 पुष्पा राही

6:1:54 शीला गुजराल

6:1:55 शशि सहगल

6:1:56 सावित्री डागा

6:1:57 सुशीला कपूर

6:1:58 पद्मा पाटील

6:1:59 कात्यायनी

6:1:60 रमा सिंह

6:1:61 डी. माधवी

6:1:62 सुनिता जैन

6:1:63 रेखा द्विवेदी

6:1:64 सुशीला जोशी

6:1:65 स्नेहमयी चौधरी

6:1:66 मालती शर्मा

6:1:67 शांति सुमन

6:1:68 मोना गुलाटी

6:1:69 पुष्पलता

6:1:70 दिव्या रावल

6:1:71 कुसुम कुमार

सप्तम् अध्याय: आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य पृ.क्र. **271 - 444**

7:1 भूमिका

7:1:1 सावित्रीबाई फुले

7:1:2 लक्ष्मीबाई टिळक

7:1: 3 सावित्रीबाई जोशी

7:1:4 लक्ष्मीबाई लेले

7:1:5 मथुराबाई पंडित

7:1: 6 पद्मावतीबाई भटकळकर

7:1:7 सारजाबाई बापट

7:1:8 उमाबाई कोल्हटकर

7:1:9 सावित्रीबाई पाटणकर

7:1:10 लक्ष्मीबाई दिंगंबर

7:1:11 उमाबाई सहस्त्रबुद्धे

7:1:12 लक्ष्मीबाई कुलकर्णी

7:1:13 कृष्णाबाई गाडगीळ

7:1:14 लक्ष्मीबाई नांदुरकर

7:1:15 सावित्रीबाई केळकर

7:1:16 लक्ष्मीबाई बेहरे

7:1:17 शांतादेवी परदेशी

7:1:18 लक्ष्मीबाई चितळे

7:1:19 मनोरमाबाई नावलेकर

7:1:20 काशीताई नाटेकर

7:1:21 मनोरमाबाई रानडे

7:1:22 विमलाबाई देशपांडे

7:1:23 इंदिरा तेलंग

7:1:24 बहिणाबाई चौधरी

7:1:25 संजीवनी मराठे

7:1:26 इंदिरा संत

7:1:27 शांता शेळके

7:1:28 पद्मा गोळे

7:1:29 अनुराधा पोतदार

7:1:30 सरिता पदकी

7:1:31 पद्मा लोकुर

7:1:32 अंजली ठकार

7:1:33 सुशील पगारिया

7:1:34 शिरीष पै

7:1:35 हिरा बनसोडे

7:1:36 सुशीला मराठे

7:1:37 सुहासिनी इर्लेकर

7:1:38 निर्मला देशपांडे

7:1:39 हेमा लेले

7:1:40 मलिका अमर शेख

7:1:41 पद्मिनी बिनीवाले

7:1:42 कल्याणी इनामदार

7:1:43 सुलभा हेर्लेकर

7:1:44 अनुराधा पाटील

7:1:45 यशोधरा साठे

7:1:46 ज्योती लांजेवार

7:1:47 वासंती मुझुमदार

7:1:48 ललित गौरी भट्ट

7:1:49 प्रभा गणोरकर

7:1:50 रसिका देशमुख

7:1:51 संगीता जोशी

7:1:52 रजनी परुळेकर

7:1:53 अरुणा ढेरे

7:1:54 अश्विनी धोंगडे

7:1:55 आसावरी काकडे

7:1:56 माधवी देसाई

7:1:57 नीरजा

7:1:58 प्रज्ञा लोखंडे

7:1:59 सुमति लांडे

7:1:60 मीना गजभिये

7:1:61 मीना दीक्षित

7:1:62 कमल सोहोनी

7:1:63 मंदा बोडस

7:1:64 अंजली फडके

7:1:65 स्नेहलता किनरे

उपसंहार पृ.क्र. **445 - 467**

संदर्भ ग्रंथ सूची पृ.क्र. **468 - 484**

अ) संदर्भ ग्रंथ

i) हिंदी: कविता संग्रह

ii) हिंदी: संदर्भ ग्रंथ

iii) मराठी: कविता संग्रह

iv) मराठी: संदर्भ ग्रंथ

आ) पत्र- पत्रिकाएँ

i) हिंदी

ii) मराठी

ई) कोश

i) हिंदी

ii) मराठी

प्रथम अध्याय

आधुनिक हिंदी कविता का स्वरूप

1.1 भूमिका

आधुनिक हिन्दी कविता का प्रारंभ लगभग 1850 ई. से माना जाता है। तब से लेकर आज तक यह कविता अनेक सोपानों से गुजरी है और उसका विकास निरंतर होता रहा है । यह विकास प्रक्रिया प्रमुख रूप से भारतेंदु गुयीन कविता, द्विवेदी युगीन कविता, छायावादी कविता, उत्तर छायावादी कविता, प्रगतिवादी कविता, प्रयोगवादी कविता, नयी कविता और समकालीन कविता तक यात्रा कर चुकी है। आधुनिक काल में अनेक कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनमें प्रमुख हैं- भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, नागार्जुन, डॉ. रामविलास शर्मा, अज्ञेय, प्रभाकर माचवे, भारतभूषण अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, गजानन माधव मुक्तिबोध, कुँवर नारायण, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, राजकमल चौधरी, लीलाधर जगूड़ी, धूमिल, चंद्रकांत देवताले, अरुण कमल, आदि अनेक ।

आधुनिक हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक है। इस काल में अनेक रचनाकार होकर गए और उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुए हैं। इन रचनाओं पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इन रचनाओं का अध्ययन करने के लिए, उन्हें समझने के लिए परिस्थितियों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। परिवेशजन्य स्थितियों, सामाजिक, राजनीतिक आदि आधुनिक कविता के स्वरूप गठन के लिए जिम्मेंदार हैं, इसलिए आधुनिक कविता के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए आधुनिक कविता के प्रमुख सोपान, समसामयिक परिवेश, प्रमुख कवि और प्रमुख विशेषताओं का विवेचन किया गया है। वह इस प्रकार है।

1:1:1 भारतेंदु युगीन कविता : (1850 – 1893 ई.)

भारतेंदु युग आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवेश द्वार है, जिसमें काफी सीमा तक संधि-साहित्य का निर्माण हुआ। भारतेंदु-युग का साहित्य हिन्दी के विकास क्रम को

स्वाभाविक रूप से आगे बढाता है। इसमें प्राचीन तथा नवीन साहित्य परम्पराओं का संरक्षण हुआ है। इस युग के साहित्य का उद्देश्य प्राचीन की रक्षा करते हुए भी आगे बढना है।

समसामयिक परिवेश :

आधुनिक काल के आरंभ यानी 1857 ई. से सौ वर्ष पूर्व 1757 ई. प्लासी के युद्ध से लेकर राजनीतिक दशा देश के लिए घातक और अहितकर रही । 1857 ई. में जो जागरण की भावना पैदा हुई वह यद्यपि अंग्रेजों द्वारा दबा दी गयी परन्तु वह नष्ट नहीं हुई और लगभग 80-100 वर्ष के संघर्षपूर्ण प्रयत्नों के बाद भारत की भूमि ने आजादी की साँस ली । हिन्दू-मुसलमानो में भेद ड़ालने की नीति 1857 ई. तक सफल न हुई पर आगे चलकर साम्प्रदायिक सद्भाव टूटने लगा । आधुनिक काल की राजनीतिक दशा पराधीन भारत के दुःख-दर्द, शोषण, दमन, और अत्याचार की कहानी है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल इसी तरह के राजनीतिक परिवेश की भित्ति पर निर्मित हुआ है और बढ़ा है। आधुनिक काल का जो साहित्य लेखन चला वह परिवेश और जनता के दुःख, दर्द और सुख कल्पना की संवेदना को आत्मसात करते हुए बढा ।

भारतीय समाज बहुत जर्जर, रुढिग्रस्त, अशक्त, कुरीतिग्रस्त और लक्ष्यहीन दिशा में भटक रहा था । 1857 ई. की राष्ट्रव्यापी आन्दोलन ने समाज को उँचा उठाने की ओर दृष्टि ड़ाली सौभाग्य से देश में अनेक कर्मठ समाजसेवी शक्तिसंपन्न व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ । उन्होंने देश की स्वतंत्रता की कामना और प्रयासों के मध्य समाज के सुधार के आंदोलनों में भी रूचि दिखलाई । राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, केशव चंद्र सेन, दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण, विवेकानंद, ऐनी बीसेन्ट, बंकिमचंद्र आदि सच्चे मायनो में समाज के उन्नायक सिद्ध हुए। राजा राममोहन राय ने नारी की दयनीय दशा को सुधारने का प्रयत्न किया । सती प्रथा, दहेज प्रथा, बालविवाह, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, बहु विवाह जैसी नारी सम्बंधी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया गया। अस्पृश्यता को दूर करने का प्रयास किया गया और पर्दे में रहनेवाली स्त्रियों ने समाज के कार्यो में भाग लेना आरंभ किया। महात्मा गांधी के प्रयास से राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में स्त्रियों की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण बनी। नारी की प्रतिभा की पहचान और उत्थान ने जागरण की भावना को ठोस भूमि

प्रदान की। समाज सुधार करनेवाले इन महापुरुषों का लक्ष्य स्वतंत्रता को प्राप्त करना था। धर्म, जाति, सम्प्रदाय और समाज का उत्थान उस लक्ष्य के साधन थे। समाज को सुधारने के लिए ब्राह्मो समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी, प्रार्थना समाज जैसी संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसका प्रभाव साहित्य रचना के क्षेत्र में पड़ा। श्रीनिवास शर्मा के शब्दों में- "यह युग ऐसा युग था जब भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे सामाजिक जागरुकता की भावना से भरे साहित्यकार समाज के प्रति सचेष्ट थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज के दुःख-दर्द, समस्या, समाधानों को उभारा, युग और समाज को दिशा दृष्टि दी।"[1]

राजनीतिक और आर्थिक चेतना के कारण जनसामान्य के प्रति सहानुभूति विकसित हुई। एक आदर्श समाज के निर्माण के लिए विद्यार्थी, कृषक और नारी को शक्ति का स्रोत माना गया। इस समय बुद्धिवाद, आदर्शवाद और जनवाद प्रमुख रूप से प्रेरणादायी रहे हैं। बुद्धिवादी दृष्टिकोण को जीवन की समस्याओं पर किए गये गहन चिन्तन ने और अधिक प्रबल कर दिया। इस समय एक ओर जहाँ ब्राह्मो समाज और आर्य समाज ने जीवन के बौद्धिक दृष्टिकोण को प्रश्रय दिया वहीं रवीन्द्र और गांधी ने भी अपने ढंग से राष्ट्र को बौद्धिक अध्यात्म का संदेश दिया। डॉ. मंजु सिन्हा कहती है, "काव्य का विषय क्षेत्र 'चींटी से हाथी' भिक्षुक से राजा, आकाश और पृथ्वी तक खुल जाने पर भी, काव्य के मनोरंजक उपदेश प्रधान होने के अनुबंध के कारण मंगलविधायिनी ही अधिक हो गयी थी। यह पुनरुत्थान का युग था, भारतीय साहित्य की विश्रृंखलता इस समय जागृति में परिणत हो गई थी। समष्टि चेतना प्रधान इस युग में कवि की दृष्टि बाह्य निरुपिणी है, बाह्यगत अधिक है, आंतरिक कम।"[2]

शृंगार काल के उत्तरार्ध में मुगल शासक शक्तिहीन हो गये। इस स्थिति का लाभ मराठा और अंग्रेज उठाने की चेष्ठा कर रहे थे। मुगल शासकों के अनेक सूबेदार अपने को स्वतंत्र घोषित कर रहे थे। अतः एक छत्र शासन के स्तर पर छोटे छोटे प्रांत भूप्रदेश निर्माण हो रहे थे। आगे चलकर मराठों और अंग्रेजों में प्रमुख संघर्ष हो रहा था। राजस्थान की राजपूत रियासतें अशक्त और असंगठित थी। इसमें मराठों ने दिल्ली तक और दिल्ली पर भी अपना प्रभुत्त्व स्थापित किया। इस सत्ता स्पर्धा में भाटपुर के

---

1) शर्मा श्रीनिवास – 'हिंदी साहित्य का इतिहास', पृ. 437

2) डॉ. सिन्हा मंजु – 'हिन्दी और और गुजराती नयी कविता का परिदृष्य', पृ. 17

जाट भी एक स्पर्धक थे। अतः सम्पूर्ण मध्य प्रदेश युद्ध, लूट-खसोट का क्रीड़ा स्थान बन गया। अंत में अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली पर आक्रमण किया। मराठा सेना उसका सामना करने के लिये एकत्र हुई। लेकिन कुछ कुटनीतिक त्रुटियों के कारण उनसे हार गई। इसका उचित लाभ अंग्रेजों ने उठाना प्रारंभ किया।

डॉ. राजनाथ शर्मा कहते हैं - "भारत पर अपना प्रभुत्त्व स्थापित करने वाले अंग्रेजों ने यहाँ के धन, माल और राज्य-शासन सेना को ही नहीं बदला, समाज को भी बदलकर राज्य करने का उद्देश्य रखा है । मैकाले की शिक्षा संबंधी कूटनीति ने भारत के समाज को प्रभावित करने की दिशा में अदभूत् चाल भरा कार्य किया जो आज तक अपनी गंध तक फैलाये हुए हैं।"[3] पूर्व भारत में अंग्रेजों ने अपना व्यापार बढाने का प्रयत्न किया, उसमें वे यशस्वी हो गये। लेकिन अंग्रेज मूलतः व्यापारी थे। अतः वाणिज्य वृत्ती की चतुरता उन्होंने उचित समय पर दिखाकर प्रबल हो गये। अंग्रेज जानते थे कि इस देश में व्यापार पद्धति, कला कौशल्य, उत्पादन क्षमता के सामने अपना व्यापार अधिक सफलता प्राप्त नहीं करेगा। अतः यहाँ के उद्योगधंदे नष्ट करके कच्चा माल सस्ते में खरीद इंग्लैंड़ ले जाना और वहाँ से तैयार माल भारत को लेने के लिये तैयार करना। इस कार्य सिद्धि के लिए स्वतः शासक बनना क्रमप्राप्त था और इसी पूर्ति के लिए प्रत्येक अवसर का उन्होंने चतुराई से, योजनापूर्वक लाभ उठाया। एक-एक करके उन्होंने संपूर्ण भारत पर अधिकार स्थापित किया। इस कूट नीति में तथा स्वार्थ और अदूर दृष्टि से मराठा शासन के स्थान पर अंग्रेज स्वामी बन गये।

अंग्रेजी साम्राज्य स्थापित होने के उपरांत देश में शांति स्थापित हो चुकी थी। धीरे धीरे उन्होंने यहाँ के उद्योग धंदों को मिटाया, व्यापार पर पूर्ण कब्जा प्रस्थापित किया। दूसरे देश की सामाजिक स्थिति में अनुचित परिवर्तन हो गया। कलाकार बेकार हो गये। देशी रजवाडों ने संधि करके उनका सुरक्षितता का सम्पूर्ण स्थायित्व अपने उपर लेकर उन्हें भोग विलास की सुविधा दी। अतः स्वाभिमान देशप्रेम, राष्ट्रीय नैतिकता आदि उच्च गुणों का ह्रास होने लगा, सामान्य जनता अधिक भूखी रहने लगी।

अंग्रेजी शिक्षा से लाभान्वित एक वर्ग निर्माण हुआ वे लोग अपने को, अंग्रेजों के एकनिष्ठ सेवक कहलाने में कृत-कृत्य मानने लगे। उन्हींकी आधार भूमि पर अंग्रेजी शासन दृढ नींव पर खड़ा रहा। अदालत व्यवस्था से न्याय मँहगा हो गया। परिणामतः

---

3) डॉ. शर्मा राजनाथ – 'हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास', पृ. 433

सामान्य जनता में एक भीषण विपन्नावस्था दृढमूल हो गयी और वर्तन कमी के कारण अदालतें सरकारी दप्तर आदि भ्रष्टाचार के अड्डे बन गये। डॉ. श्रीनिवास शर्मा के शब्दों में - "अंग्रेजी न जानने वाले कृषक मजदूर पीस रहे थे और जमींदारों के दबाव में जी रहे थे । राजाओं को प्रलोभन देकर अंग्रेजों ने अपनी ओर मिला लिया था । सामन्त, जमींदार भी उसी तरह क्रुर बनकर अपने को जनता से उँचा समझकर समय का लाभ उठा रहे थे ।"[4] जमींदार, साहुकार जैसे वर्गों को अंग्रेजों ने प्रबल किया ताकि बिना मेहनत किसान मजदूर वर्ग से बड़ा लाभ प्राप्त करके यहाँ की खेती व्यवस्था, पारंपारिक ग्रामीण शासन व्यवस्था को उध्वस्त किया जाय। आगे चलकर किसान दास बने और जमींदार साहुकार अंग्रेजों के हितमित्र हो गये। नागरी जीवन में भी भ्रष्टाचार अपना मुक्त काम कर रहा था। अंग्रेज बनिया था अर्थात तीव्र धन लालसा के कारण उन्हें भारत का विकास करने में कोई रस नहीं था।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आरंभ उस समय हुआ जब रीति कविता का प्रभाव कम होता गया । यह सब कुछ बदलते हुए युग का परिणाम था। 1850 ई. से आधुनिक युग का आरम्भ होता है जबकि अंग्रेजी शासन पूरी तरह प्रतिष्ठित हो जाता है। इस नवीन विदेशी शासन के संपर्क से भारत में एक नवीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साहित्यिक चेतना का स्वस्थ आविर्भाव होता है। पूर्व-पश्चिम के सांस्कृतिक सम्पर्क से जो नई चेतना उद्‌बुद्‌ध हो रही थी और उससे जिस विचार स्वातंत्र्य का जन्म हो रहा था, उसके प्रभाव में हमारे साहित्य ने रुढि के बंधनों को तोड़ विकास की नई दिशा में प्रवेश किया। परिणामतः हमारे साहित्य में विचार और भाव, शैली या शिल्प-विधान और काव्य रूप सभी क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से परिवर्तन आया। नव जागरण के युग में समाज की बदलती हुई मनोवृत्तियों के साथ आधुनिक जनवादी साहित्य में नवीन प्रवृत्तियों का समावेश हुआ। आधुनिक हिन्दी कविता प्रत्येक युग में थोड़े-बहुत अन्तर से परिवर्तित एवं विकसित होती रहीं।

प्रमुख कविः-

भारतेंदु कालीन कविता के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास और बद्रीनारायण चौधरी का नाम उल्लेखनीय हैं। इन सभी कवियों में देशभक्ति और राजभक्ति का स्वर उँचा है। भारतेंदु ने 'भारत

---

4) शर्मा श्रीनिवास, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृ. 434

दुर्दशा' और 'नीलदेवी' नामक नाटकों के गीतों में तथा अन्य स्वतंत्र कविताओं में भारत की हीन दशा का वर्णन किया है । इनकी कविता में कहीं देश के अतीत गौरव की गर्वगाथा, कहीं वर्तमान अधोगति की क्षोभभरी वेदना, कहीं भविष्य की भावना से जगी हुई चिन्ता, कहीं भक्ति के पद, कहीं शृंगार रस के कवित्त और सवैये, कहीं उपदेश और सूक्तियाँ, तो कहीं उत्सव वर्णन है। भारतेंदु ने हिन्दी कविता को नवीन विषयों की ओर अग्रसर किया, किन्तु उसमें किसी नवीन विधान या प्रणली का सूत्रपात नहीं किया।

प्रमुख विशेषताएँ :-

भारतेंदु कालीन कविता की भावगत एवं शैलीगत प्रमुख प्रवृतियाँ इस प्रकार हैं। देशभक्ति, प्राचीनता तथा नवीनता का समन्वय, जन-जीवन का चित्रण, प्रकृति चित्रण की पद्धति, इतिवृत्तात्मकता, भाषा, छंद, विषय वैविधता, शृंगार वर्णन आदि।

1:1:2 द्विवेदी युगीन कविता : (1893 – 1920 ई.)

भारतेंदु युग में जिन साहित्यिक रूपों और प्रवृत्तियों का प्रारंभ हुआ, आगे चलकर द्विवेदी काल में वे विकसित हुई। 1893 से 1920 ई. तक का समय हिन्दी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। इस युग की समूची साहित्य - चेतना के सूत्रधार प्रस्तुत युग के प्रधान पुष्प महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। वे सुदीर्घ काल तक 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन करते रहे तथा युग की भाषा और उसके साहित्य के रूपों को सुदृढ हाथों से निर्धारित करते रहे।

भारतेंदु युग की यथार्थवादी साहित्य धारा अब नये रूप स्वरूप की परिसीमा से प्रभावित होने लगी तथा नये युग की विभिन्न प्रभाव शक्तियों ने उसे मोड़ लेने के लिए प्रेरित कर दिया था।

वस्तुतः इस युग के आरंभ होते-होते काव्य के लिए एक निश्चित भाव भूमि स्थापित हो चुकी थी तथा भारतेंदु युगीन सामाजिक आन्दोलनों का स्थान द्विवेदी युग में राजनीतिक आन्दोलनों ने ले लिया।

समसामयिक परिवेश :

इस समय देश की सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय संस्था काँग्रेस में महान क्रांति के लक्षण दिख पडने लगे ''स्वशासन'' काँग्रेस का उद्देश्य हुआ। अब मध्यवर्ग तथा जनता को उत्स्फूर्त बल प्राप्त होने लगा। फलतः सरकार की कांग्रेस से सहयोग करने की नीति

दमन नीति में परिवर्तित हो गयी। इसका परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय चेतना बढने लगी।

1906 ई. में दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज' का प्रस्ताव प्रथम बार उपस्थित किया। इसी वर्ष मुस्लिम लीग की स्थापना हुई। 1909 ई. में मार्लो मिंटो सुधार योजना की परीक्षण प्रांरभ हुआ। 1910 ई. में पंचम जार्ज ब्रिटन के सिंहासनासीन हुए उनके उपलक्ष्य में 1911 ई. में दिल्ली में विशाल दरबार हुआ। भारत के सभी लोग एकत्र हुए और उन्होंने अपनी राजभक्ति प्रकट की। सम्राट ने इसी दरबार में बंगाल अखंड़ रखने की घोषणा की। 1914-1918 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध हुआ। 1915 ई. गांधीजी आफ्रिका से विजयी सेनानी के रूप में भारत लौटे। 1916 ई. में श्रीमती ॲनी बीसेन्ट ने होमरुल लीग की स्थापना की 1918 ई. में मींट फोर्ड़ योजना का प्रकाशन हुआ। जनवरी 1919 ई. में रौलेट कानून (जो काले कानून के रूप में पुकारा गया) बनाया। 1 अगस्त 1920 ई. में लोकमान्य तिलक का महाप्रयाण तथा असहयोग का म. गांधी से शुरुआत।

इस विशिष्ट तथा संक्रांतिकालीन राजनीतिक परिस्थिति का गहरा संबंध भारतीय जन-जीवन पर हुआ। अर्थात् काव्य का अध्ययन इसी दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। संक्षेप में समूचे भारत वर्ष में 'स्वराज्य' अदम्य लालसा मातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान करने की प्रखर प्रवृत्ति का कालखंड प्रारंभ हुआ।

सामाजिक सुधार की दृष्टि से जीवन के प्रति नवीन एवं व्यापार दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया। जातिभेद, कुरीतियों को दूर करने की चेष्टा बलवती हुई। खास कर स्त्रियों की दशा में सुधार, अछूतों के प्रति उदारता, कृषक वर्ग से सहानुभूति व्यक्त होने लगी। परिणाम स्वरुप कलकत्ता में चितरंजन सेवा-सदन, पुणे में सेवा सदन, महर्षि कर्वे का स्त्री विश्वविद्यालय स्थापित हो चुका।

भारत में अंग्रेजी शासन की कहानी भीषण शोषण की कहानी है। भारतीय उद्योगों को नष्ट करने में उन्होंने योजनाबद्ध कार्य किया। बेकारी की समस्या दिन- ब-दिन बढती रही। इससे आंतकवादी कार्यों की ओर देश के नवयुवकों का ध्यान गया। किसान मजदूरों के संकटों का अन्त नहीं था। संक्षेप में उस समय जनता चक्की के दो पाटो में पीस रही थी। इस विपरीत अवस्था का परिणाम काव्य पर लक्षित होता है। डॉ. रमण नागपाल कहते हैं - "भारत का अतीत स्वर्णिम गौरवशाली था। राष्ट्र की ऐसी अधोगति दृष्टिगोचर होती है तो मन अशांत, व्याकुल हो जाता है। अतः मन

व्यग्रतावश इससे दूर बहुत दूर जाने का प्रयास करता है जिससे राष्ट्र का यह पराभव उसके नेत्रों से ओझल हो सके। यह शांति केवल वर्तमान का परित्याग कर, उससे मुख मोड़कर भव्य अतीत में पदार्पण करने से ही प्राप्त हो सकती है।"[5]

आर्य समाज के धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुनरुत्तथान की भावना में हिन्दुत्व का भाव ही प्रबल था। अतः इस बढते प्रभाव ने मुसलमानों को सचेत किया। फलतः राष्ट्रीय जीवन में साम्प्रदायिक फूट के बीज का वपन हुआ और क्रमशः एक दूसरे से अलग होते गये। वंग-भंग आंदोलन मुख्यतः हिन्दू आन्दोलन था। इस स्थिति को अंग्रेजों ने सफलता से उठाया और भेद, फूट नीति अपनायी।

आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल आदि भारतीय संगठनों तथा बुद्धिवाद, जनवाद, मानवतावाद, स्वच्छंदतावाद आदि पश्चिमी लहर नें विचारों में युगांतर उपस्थित किया। जनमानस को प्रतिबिंबित करनेवाले विषय में उनकी सहज, सफल अभिव्यक्ति हुई। इसलिए द्विवेदी युगीन कवियों की दृष्टि जीवन की दीनता-हीनता, अकिंचनता के प्रति आर्द्र दिखाई देती है। अतः करुणा जगाने के लिए वर्तमान जीवन के यथार्थ चित्र खींचे हैं।

मातृभूमि को देवी मानने की परम्परा का सूत्रपात भारतेंदु युग में ही हुआ था। लेकिन उसे पुष्टि प्राप्त हुई द्विवेदी युग में। क्रांतिकारियों के कारण मातृभूमि को दुर्गा, काली आदि पूज्य, आराध्य देवियों का गौरव प्राप्त हुआ, कभी लक्ष्मी का रूप भी माना गया। श्रीधर पाठक हिन्दी में भारत दैवत के प्रथम महागायक थे। यही परम्परा आज तक अखंड़ प्रवाहित रही है।

इस प्रकार भारतेंदु काल जन-जागरण का प्रारंभिक काल था। उस समय जनता के सामने राष्ट्रीयता का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाया था। द्विवेदी काल में राष्ट्रीय भावना और आदर्श की रूपरेखा बिल्कुल साफ हो गयी थी। भारतेंदु काल में रुढियों का विरोध करना सुधार तक सीमित था, परन्तु अब साहित्य में नाना आदर्शों की सृष्टि हुई और उसमें एक स्वच्छंद भावना का विकास होने लगा। द्विवेदी काल के साहित्य में अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से स्वच्छंद भावना का विकास हुआ । भारतेंदु काल के सुधारात्मक आन्दोलनों से प्रेरणा प्राप्त करके अब काव्य में जीवन का अधिक व्यापक चित्रण होने लगा। इस काल के साहित्य में प्राचीन रुढियों और निरर्थक परम्पराओं के

---

5) डॉ. रमण नागपाल – 'आधुनिक हिन्दी काव्य में पलायनवाद', पृ. 111

प्रतिरोध की भावना है। रीतिकाल की शृंगार-भावना, जो भारतेंदु- काल में जिस किसी रुप में चलती रही, इस काल के साहित्य में सर्वथा बहिष्कार कर दिया गया। साहित्य की प्रत्येक विधा से नैतिकता का साम्राज्य स्थापित होने लगा। अब कवियों की दृष्टि जीवन के नवीन मूल्यों और आदर्शो के प्रति उन्मुख हुई। डॉ. राम सजन पाण्डेय द्विवेदी युगीन कविता के संबध में कहते हैं - ''द्विवेदीयुगीन हिन्दी कविता अहम दायित्व से अनुप्रणित कविता है । उसमें मात्र मनोरंजन ही नहीं है, वरन् उसमें गहरा उपदेश समाहित है जो उस युग की अपेक्षा थी। बहुविधा स्वातंत्र्य भावना की दृष्टि से, नये-नये विषयों की उद्भावना की दृष्टि से, नई चेतना की व्याख्या की दृष्टि से, भाषा-संस्कार की दृष्टि से द्विवेदी युगीन कविता बड़ी विशिष्ट - विशेष है ।''[6]

संक्षेप में द्विवेदी युगीन कविता का स्वरुप सामान्यतः आदर्शवादी, सुधार भावना मूलक रहा है। जीवन के निष्ठापूर्ण अध्ययन उसकी न्यायपूर्ण अभिव्यक्ति को इतना महत्त्व दिया की वह काव्य की चरम अभिव्यक्ति मान ली गयी।

प्रमुख कवि :

इस काल के प्रमुख कवि हैं - आ. महावीर प्रसाद ' द्विवेदी', अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध', श्रीधर पाठक,मैथिलिशरण गुप्त, रायदेविप्रसाद 'पूर्ण', नथुराम शंकर शर्मा, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', माखनलाल चत्तुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, सियारामशरण 'गुप्त' आदि उलेखनींय हैं।

प्रमुख विशेषताएँ :

द्विवेदीजी ने काव्य-भाषा की सरलता, सुबोधता का विशेष आग्रह किया है। संक्षेप में द्विवेदी युगीन कविता की प्रवृतियाँ इसप्रकार हैं।

राष्ट्रीय चेतना का विकास, बौद्धिक सजगता, सुधारवादी रचना दृष्टि, नारी महत्त्व की स्वीकृति, प्रकृति प्रेम, इतिवृतात्मकता, उपदेशात्मकता, प्राचीन आदर्शों के प्रति मोह, समन्वयशील काव्यवृत्ति आदि।

1:1:3 छायावादी कविता (1920-1936 ई.) :

आधुनिक हिन्दी कविता के विकास क्रम का तीसरा चरण छायावाद के नाम से जाना जाता है। इसे आधुनिक कविता का ''स्वर्णयुग होने का भी गौरव मिला है ।''[7]

---

6) डॉ. पाण्डेय रामसजन - 'हिंदी साहित्य का इतिहास', पृ. 292

7) डॉ. शशिभूषण सिंघल – 'साहित्य विधाएँ', पृ. 43

काव्य रुपों के वैविध्य 'छायावाद' शब्द में अंकित है। जैसी, नयी धारा, स्वच्छंदतावाद, रहस्यवाद, मानवतावाद आदि।

वस्तुतः छायावाद एक अंतर्मुखी धारा रही है। अतः प्रधानतः बाह्य जगत् की अपेक्षा भावात्मक, जीवन की यथार्थ की अपेक्षा मनः श्लोक की कल्पना, नग्न सत्य की अपेक्षा कल्पना-वैशिष्टय सौंदर्य, संघर्ष की अपेक्षा प्रेम, परम्परा की अपेक्षा नूतनता के प्रति अधिक मोह रहा है।

आमतौर पर द्विवेदी काल में छायावाद की विभिन्न प्रवृत्तियाँ अंकुरित हुई। प्रधानतः द्विवेदीकालीन उपदेशात्मकता, इतिवृतात्मकता शुष्क तथा नीरस कविता की प्रतिक्रिया के रूप में छायावादी कविता का जन्म हुआ। छायावादी कविता अंग्रेजी की रोमान्टिक कविता से प्रभावित था। यहाँ एक जटिल समस्या सामने आती है कि अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छंदतावादी काव्यधारा हिन्दी में छायावादी काव्यधारा के उदय से लगभग 70-80 वर्ष पूर्व समाप्त हो चुकी थी । छायावादी कवियों ने समकालीन अंग्रेजी कविता की उपेक्षा की।

वस्तुतः कोई भी आन्दोलन अपनी समकालीन परिस्थितियों के कारण ही जन्म लेता है। अतः यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जिन कारणों ने अंग्रेजी रोमान्टिक काव्य को जन्म दिया। वही कारण हमारे यहाँ सन 1920 ई. के आसपास उत्पन्न हुए थे।

समसामयिक परिवेश :

छायावादी काव्यधारा दो महायुद्धों के बीच की कविता है। स्थूलतः प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्त होने के पश्चात् तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारंभ होने के पूर्व के समय की परिधि में जो साहित्य निर्माण हुआ उसे 'छायावादी' विशेषण दिया गया है। प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद भारत की आर्थिक स्थिति शोचनीय हुई। अर्थात् समूचे भारत पर कृष्ण छाया छा गयी।

1917 ई. में रूस में राज्यक्रांति हुई और 'साम्यवादी' शासन निर्माण हुआ। यह क्रांति विश्व की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति को प्रभावित करने लगी, बीसवी शताब्दी के जन-जागरण की शंखध्वनि समस्त विश्व में परिव्याप्त हो गयी। स्त्रियों के कार्यक्षेत्र के संबध में पुरातन मान्यताएँ बदलने लगी। समान अधिकार प्राप्त होने लगा। भारतीय राजनीति के रंगमंच पर म.गांधी का आगमन हुआ और प्रभाव बढता रहा। इस काल की राष्ट्रीयता अखंड़ और शक्तिशाली थी, जन-जीवन में एक नयी चेतना विकसित

हुई। म. गांधीजी ने सम्पूर्ण देश का दौरा किया। हिन्दू और मुसलमानों को एक होने की अपील की। ड़ॉ. राम सजन पाण्डेय के शब्दों में – ''प्रथम विश्वयुद्ध में भारतीयों ने ब्रिटिश सरकार की जन एवं धन से पर्याप्त सहायता की, लेकिन इस सहयोग के प्रतिदान में भी जब भारतीयों को कुछ नहीं मिला तो वे असहयोग आन्दोलन, साइमन कमिशन का विरोध, ड़ांड़ी सत्याग्रह, नाना प्रकार के आन्दोलनों और हडताल करने के लिए विवश हुए । 1936 ई. में लखनऊ अधिवेशन के पश्चात् करो या मरों की संकल्पना दृढ हो गयी। वस्तुतः ये सारे आन्दोलन उस समय की मुक्तिकामी जनचेतना की प्रबलता के प्रमाण हैं।'' [8]

1921 ई. में सम्पूर्ण वर्ष असहयोग में शक्ति, तीव्रता आती गई। 1922,1923,1924 ई. में साम्प्रदायिक दंगों, अंहिसात्मक कार्यों ने हिन्दू मुस्लिम एकता कमजोर कर दी। 26 जनवरी 1930 ई. में देश के हर कोने में स्वतंत्रता का प्रत्तीक तिरंगा झंड़ा फहराया गया और सम्पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की गई। पहली गोलमेज परिषद 1930 ई. को प्रारंभ हुई। 1928 ई. के आसपास भारत में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।

छायावाद के उत्तरार्ध में समाजवाद का प्रवेश भारत में हुआ। जवाहरलाल नेहरु ने भी इसी समय में अपने को समाजवादी घोषित किया । इस दृष्टि से 1935 ई. के बाद भारतीय जीवन में समाजवाद का उत्तरोतर विकास होता गया तथा जन चेतना के साथ ही संघर्ष चेतना का भी विकास हुआ। स्वामी दयानंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, तिलक, गांधी आदि धर्म नेताओं और राजनेताओं ने इस राजनीतिक और सांस्कृतिक चुनौती को स्वीकार किया और अंधःविश्वासों, रुढियों, पलायन और निराशा के विरुद्ध प्रबल स्वर उठाया। साथ ही साथ भारत की पुरातन शक्ति, सामर्थ्य और सचेतन मूल्यों की तरफ भी जनसामान्य का ध्यान आकर्षित किया । परिणाम स्वरूप उस समय के सामाजिक जीवन मे जागरुकता आयी और जीवन जीने के लिए कतिपय नये क्षितिजों का उद्घाटन हुआ।

इस युग में जो सांस्कृतिक आन्दोलन हुए, उनका प्रभाव बीसवी शती के प्रारंभ में राष्ट्रीय चेतना से समन्वित होकर छायावादी काव्य सृजन की प्रेरणा बनी। ब्राह्मो समाज, थियोसोफिकल सोयायटी, आर्यसमाज, अपने तत्त्व प्रणाली से समाज जागृति

---

8) डॉ. पाण्डेय रामसजन – 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृ. 295

का कार्य कर रहा था। स्वामी विवेकानंद ने आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन, अद्‌वैत वेदांन्त, विश्व बन्धुत्व, विश्वकल्याण, मानव स्वतंत्रता, सेवाभाव, भारतीय संस्कृति के आदर्शों को प्रस्तुत करके राष्ट्रीय जागृति कर दी। लोकमान्य तिलक का ''गीता-रहस्य'' कर्म प्रवणता, दुर्दम्य स्वातंत्र्येच्छा, क्रांति की भावना का अंख्रण्ड़ दीप का प्रकाश राष्ट्र को संजीवनी देता रहा। गांधीजी का साम्प्रदायिक ऐक्य, आत्मबल के साथ ही रवींद्रनाथ टैगोर का विश्वमानवता का प्रसार अपनी विशेष मुद्रा मुद्रांकित करता रहा। महायोगी अरविंद ने अति चेतना की ज्योति से अंतर्मन को प्रकाशित कर के अतिमानव की धारणा का प्रतिपादन किया।

इन समस्त सांस्कृतिक आन्दोलनों का मूल छायावादी काव्य में पाये जाते हैं। पाश्चात्य साहित्य ने छायावाद के कवियों को अपने ढंग पर प्रभावित किया इसलिए छायावादी कविता में स्वच्छंतावाद की प्रवृति स्पष्ट प्रतीत होती है। प्राचीन शिष्ट और क्लासिक परिपाटी के विरोध में उठ ख्रडी होने वाली विचारधारा को स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिजम) कहा जाता है।

प्रमुख कवि :

छायावाद के प्रमुख कवि हैं- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि।

छायावाद में स्वानुभूति है, संस्कृत की चली आयी हुई साहित्यिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह है, द्‌विवेदीयुगीन नैतिकता का विरोध है। छायावाद एक पराधीन देश की कविता है। राजनीतिक क्रूरता, प्रथम महायुद्‌धों की विभीषिकाओं, आर्थिक संकट आदि का गहरा अवसाद और तीव्र वेदना का प्रतिबिंब लक्षित होता है। स्वच्छंदतावादी कविता की प्रधान विशेषताएँ छायावादी कवियों में पूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं जैसे - विस्मय मिश्रित, कौतुहल, सौंदर्य प्रेम, सूक्ष्म रहस्यात्मक अनुभूति, जीवन की सरलता आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

छायावादी कविता की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं- वैयक्तिक प्रतिष्ठा, विद्रोह भावना, प्रकृति प्रेम, नारी प्रेम, राष्ट्रीय भावना, रहस्यानुभूति - विस्मय की भावना, वेदना, कल्पना प्रवणता, सौंदर्यप्रियता, मानवतावादी दृष्टिकोण, नवीनता के प्रति आग्रह, विशिष्ट रचना-विधान,लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, गीतात्मकता, मानवीकरण आदि।

इस प्रकार छायावादी काव्य-धारा आधुनिक हिन्दी काव्य की विजय- यात्रा है, विकास-गाथा है, जिसमें जागरण एकपक्षी नहीं बहुमुखी हुआ है। भाव, भाषा, अर्थ गौरव, कल्पनाशीलता, कर्तव्यमयता, रचना धर्मिता, सामाजिक चेतना, शिल्प-विधान इत्यादि कई स्तरों पर इसकी महत्ता है। डॉ. उमेशचंद्र मिश्र 'शिव' कहते हैं, ''भारतीय संस्कृति का 'सुमेरु' है राम की शक्ति पूजा स्वर्गिक शक्ति का अनुपम उद्घोष है, तो 'हिमाद्रि' भारत की सांस्कृतिक विपुल संपदा का जीवन्त प्रतीक।''[9]

1:1:4 उत्तर छायावादी कविता –

छायावादी कविता के पश्चात् उत्तर छायावादी कविता का नाम लिया जाता है, जो छायावाद के समानांतरही प्रवाहित रही है । उसके भी तीन प्रवाह माने जाते हैं । जो इस प्रकार हैं - 1. हालावादी कविता 2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा 3. हास्य व्यंग्यात्मक काव्यधारा आदि ।

आधुनिक काल में 1933 से 1936 ई. तक हालावादी कविता उभरकर आयी। हिन्दी में हरिवंशराय बच्चन 'हालावाद' के प्रवर्तक माने जाते हैं। केवल चार वर्ष तक का जीवन व्यतीत कर हालावाद समाप्त हो गया था। 'हालावाद' की उत्पत्ति, विकास और समाप्ति की कहानी बच्चन की तीन पुस्तकों में ही सीमित होकर रह गयी- 'मधुशाला,' 'मधुबाला' और 'मधुकलश'। इनका प्रकाशन एक-एक वर्ष के अंतराल से हुआ था,और ये उस समय तथा बाद में भी बहुत समय तक किशोरों और नवयुवकों में अत्यधिक लोकप्रिय रही थी।

इसमें 'बच्चन' ने यौवन, सौंदर्य और मस्ती के मादक गीत गाये थे। 'बच्चन' के अतिरिक्त पद्मकांत मालवीय, हृदयनारायण पाण्डेय, 'हृदयेश', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भगवतीचरण वर्मा आदि की कुछ रचनाओं को भी कुछ आलोचक इसी काव्यधारा के अंतर्गत मानते हैं। परंतु प्रमुख रूप से 'बच्चन' एकमात्र ही हालावादी कवि रहे। डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय 'बच्चन' की कविता के संबंध में कहते हैं, ''कहना न होगा कि बच्चनजी की स्थापनाएँ नितांत मौलिक न होते हुए भी इस लिए महत्त्वपूर्ण बन पडी है कि इन्होंने अपनी बात बेझिझक कही है। बच्चन ने आनंद एवं लोकहित को काव्य का मूल प्रयोजन माना है। कवि अपनी हृदय

---

9) डॉ. उमेशचंद मिश्र 'शिव' – 'आधुनिक हिंदी काव्य सरिता', पृ. 34

की व्याकुलता को शांति एवं उल्लास प्रदान करने के लिए काव्य-रचना में प्रवृत होता है। ''[10]

प्रमुख कवि :

इसप्रकार मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश एवं हलाहल जैसी रचनाओं के सृजेता कवि बच्चन निश्चय ही हालावाद के प्रमुख कवि हैं ।

प्रमुख विशेषताएँ :

हालावादी कविता की विशेषताएँ इस प्रकार हैं- मधुकाव्य पर उमर खैय्याम की रुबाईयों का प्रभाव, प्रेम एवं मस्ती की कविता, वैयक्तिक अनुभूतियों का चित्रण, प्रणयानुभूति की मधुर अभिव्यक्ति, सरल भाषा का प्रयोग आदि।

समसामयिक परिवेश :

छायावादोत्तर काल में प्रवाहित राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा का आधुनिक हिंदी कविता में महत्त्वपूर्ण स्थान है और अपना एक अलग पहचान है । आधुनिक काल में जो राष्ट्रीयता का स्वरूप उभरा और विकसित हुआ उसके तीन आधार हैं - पूरे देश में अंग्रेजी शासन की स्थापना, समग्र भारतीय प्रजा द्वारा अंग्रेजी शासन से उत्पन्न यातना का समान अनुभव तथा स्वाधिनता आंदोलन और उसका देशव्यापी प्रसार। डॉ. नगेंद्र ने राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा की कृतियों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि - ''प्रस्तुत कालावधि में आनेवाली कृतियों पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि राष्ट्रीयता के सारे रूप कहीं खंडित रूप में, तो कहीं संश्लिष्ट रूप में इन में दिखाई पड़ते हैं । राष्ट्रीयता का जो सब से स्थूल रूप है, वह है - विदेशी शासन के अत्याचारों, उनसे प्रसुत जनयातनाओं और जनता के मन में उठती हुई क्रोध तथा असंतोष की ललकारों का चित्रण।''[11]

राष्ट्रीयता का विकास आधुनिक काल में हुआ। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत देश भिन्न-भिन्न राज्यों में बंटा हुआ था । अंग्रेजी शासन स्थापित होने के बाद पूरे देश को एक समान यातना का अनुभव हुआ । भिन्न राज्यों मे बंटे हुए सभी जाति - धर्म मुक्त होने के लिए सभी को एक होना आवश्यक है । इस आवश्यकता की पूर्ति उस समय राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के माध्यम से हुई । उन्होने सामान्य जनता को

---

10) डॉ. उपाध्याय करुणाशंकर - आधुनिक हिन्दी कविता में काव्य चिंतन, पृ. 166

11) डॉ. नगेंद्र - 'हिंदी साहित्य का इतिहास', पृ. 619

जागृत कर राष्ट्रीयता की भावना निर्माण करने का महान कार्य राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों ने किया है। आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति भारतेंदुकालीन कविता से प्रारंभ होती है। राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होकर अनेक कवियों ने अपना योगदान दिया है। इनमें मैथिलीशरण गुप्त और सुभद्राकुमारी चौहान आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

प्रमुख कवि :

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में- माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारिसिंह दिनकर, रामनरेश त्रिपाठी आदि हैं।

प्रमुख विशेषताएँ :

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है- देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना, स्वतंत्रता संग्राम के लिए उद्‌बोधन, देश पर बलिदान हो जाने की भावना, वीर भावों की प्रधानता, ओज एवं औदात्य का स्वर, आर्य संस्कृति एवं गांधीवाद का समर्थन, जन जागरण का संदेश आदि।

आधुनिक काल में हास्य- व्यंग्यात्मक काव्यधारा का भी विकास हुआ। छायावादी युग में हास्य-व्यंग्यात्मक काव्य की रचना की गयी। एक ओर तो ईश्वरीप्रसाद शर्मा, हरिशंकर शर्मा, उग्र बेढब बनारसी आदि इस काव्यधारा का प्रमुख रूप से अवलंब किया और दूसरी ओर ऐसे कवियों की संख्या भी कम नहीं हैं जिन्होंने अन्य विषयों पर काव्य-रचना करने पर भी प्रसंग वश हास्य-व्यंग्य को स्थान दिया है।

प्रमुख कवि :

हास्य - व्यंग्य को प्रमुखता देनेवाले अन्य समर्थ कवि हैं-अन्नपूर्णानंद, कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच', शिवरत्न शुक्ल, हरिऔंध, चतुर्भुज चतुरेश, ज्वालाराम नागर 'विलक्षण' जगन्नाथ प्रसाद 'चतुर्वेदी', मोहनलाल गुप्त, श्रीनाथ सिंह आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

हास्य-व्यंग्यात्मक काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं- सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्रों में व्याप्त पाखण्ड तथा भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य, उपमा और वक्रोक्ति का प्रयोग आदि।

1:1:5 प्रगतिवादी कविता (1936 से 1943 ई. तक) :

सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश साहित्य दृष्टि को सर्वाधिक आन्दोलित और

प्रभावित करते हैं। इन्हींके अनुरुप कवि-कर्म बदलता है, साहित्यकार की जीवनदृष्टि निर्धारित होती है। जब समाज में शोषितों की आह थोड़ी प्रखर हुई, सर्वहारा वर्ग की पीड़ा के स्वर गगन को अधिक गूँजित करने लगे और छायावादी वैयक्तिक (आत्मनिष्ठ) भाववादी संपूर्ण काव्य धारा उसे प्रतिनिधित्व नहीं दे सकी, तब परिवेश के अनुरुप जिस दृष्टि प्रवृत्ति भाव-धारा का जन्म हुआ, उसे 'प्रगतिवाद' कहते हैं। सिद्धान्त और जीवन दर्शन की दृष्टि से प्रगतिवाद साम्यवादी चिन्तनधारा, वर्गहीन, धर्महीन, सर्वतो मंगलमय समाज का साहित्यिक स्वरूप है।

प्रगतिवाद के मूल में मार्क्स का दर्शन है। औद्योगिक क्रांति से उत्पादन वितरण के साधनों की व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। यंत्रयुग की विद्युत गति के कारण पूँजी के बल पर पूँजीपतियो ने उत्पादन तथा वितरण के साधनों पर अधिकार प्राप्त किया जिसका परिणाम यह हुआ कि समाज में शोषक एवं शोषित दो वर्ग बन गये। मजदूरों का भीषण शोषण होने लगा, वर्ग संघर्ष की प्रवृति का जन्म हुआ यही आधुनिक साम्यवादी विचार धारा के वैज्ञानिक विकास की पृष्ठभूमि थी। अब यह संघर्ष भौगोलिक सीमाओं को लांघ कर प्रकारांतर से विश्वव्यापी हो गया।

समसामयिक परिवेश:

1936 ई. में प्रेमचंद की अध्यक्षता में भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। अतः हिन्दी साहित्य में मार्क्सवादी विचारधारा प्रगतिवाद के रूप में प्रतिष्ठित हुई। पन्त, निराला, दिनकर, नवीन आदि कवियों ने सक्रिय योगदान दिया। आगे चलकर नरेंद्र शर्मा, अंचल, नागार्जुन, रांगेय-राघव, भारत भूषण अग्रवाल, गजानन माधव मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा, गोपालदास नीरज आदि की सशक्त रचनाएँ प्राप्त हुई।

काल विभाजन की दृष्टि से देखा जाय तो स्पष्ट होता है कि - प्रगतिवाद का समय 1936 से 1943 ई. तक अत्यंत अल्पकाल का है। इस समय भारत में अंग्रजों का क्रूर शासन था। वे निरतंर भारतीयों के शोषण में निमग्न थे। सामाजिक क्षेत्र में प्रधानतः दो वर्गों का अस्तित्व प्रखरता से विद्यमान रहा धनिक, श्रमिक। साहित्य क्षेत्र में उसने यथार्थवाद का समर्थन किया। पन्त का कविता संकलन ''युगान्त'' हिन्दी में प्रथम प्रगतिवादी कविता का संकलन है। स्वयं पन्तजी ने 'युगान्त' नामकरण करके ही जैसे एक युग छायावादी युग का अन्त कर दिया।

नागार्जुन साम्यवाद की मान्यताओं के अनुकूल अपनी जीवन दृष्टि बनाकर काव्य में प्रगतिवाद की पुष्टि करनेवालों में अग्रणी हैं। बहुत सी सुंदर वस्तुओं के सुंदर, सहज कल्याणमय रूप के पीछे जो कुत्सित, कृत्रिम अकल्याणकारी रूप छिपा रहता है, उसे नागार्जुन ने स्पष्टतः खोलकर दिखाया है। व्यंग्य करते समय उन्होंने राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, समाज सुधारक, कलाकार को भी छोड़ा नहीं है। पाखंड़ किसी भी प्रकार का क्यों न हों, नागार्जुन सहन नहीं कर पाते। डॉ. नगेंद्र, नागार्जुन की कविता के संबंध में कहते हैं, ''इनकी कविताएँ मुख्यतः तीन तरह की हैं । कुछ कविताएँ गंभीर, संवेदनात्मक और कलात्मक हैं, जिनमें, कवि ने मानव मन की रागात्मक और सौंदर्यमयी छवियों को अंकित किया है और साथ ही साथ मनुष्य की मानवीय सम्भावनाओं के प्रति आस्था व्यक्त की है। दूसरी कोटि की कविताएँ वे हैं जो सामाजिक कुरुपता, राजनीतिक अव्यवस्था और धार्मिक अंधविश्वास पर बढिया चुभता हुआ व्यंग्य करती हैं।'' [12]

प्रकारांतर से निराला ने भी तीव्र शब्दों में समाज की अर्थलोभी वृत्ति के प्रति तीखा व्यंग्य कसा है। दिनकर के काव्य में सामाजिक चेतना और लोकमंगल प्राप्त होता है। 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथि' के मूल में युद्ध और शांति की समस्या, न्याय और समता है।

अतः असंगतियों से भरे समाज में जब वैषम्य दूर हो जाएगा तब वर्ग-वर्ग का भेद भी मिट जाएगा। लेकिन प्रत्येक अकेला व्यक्ति यह परिवर्तन करने में असमर्थ है। क्रांति के लिए सामूहिक शक्ति ही आवश्यक है। इसलिए व्यष्टि मानव के स्थान पर समष्टि मानव की प्रतिष्ठापना हुई है।

संक्षेप में यह कविता जीवनोन्मुखी रही है। वह शोषित जनता का पक्षधर है। किसान, मजदूरों निम्नवर्गीय दयनीयता का मार्मिक अंकन हुआ है। क्रांति की भावना केवल ध्वंसात्मक ही नहीं है। अपितु उसके सृजनात्मक पक्ष को भी अपनाया है। साथ ही धर्म और ईश्वर के प्रति क्षोभ व्यक्त हुआ है। इसलिए सामाजिक श्रमशक्ति पर पूर्ण विश्वास व्यक्त हुआ है। प्रगतिवादी काव्य भूत, वर्तमान, भविष्य को एक अखंड़ कालप्रवाह के रूप में पाता है। अतः यह कहना उचित होगा कि प्रगतिवादी काव्य आशा और आस्था का काव्य है।

---

12) डॉ. नगेंद्र - हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 626

प्रमुख कवि :

प्रगतिवादी कविता के प्रमुख कवि हैं- नागार्जुन, डॉ. रामविलास शर्मा, रांगेय राघव, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह सुमन, भवानी प्रसाद मिश्र, चंद्रकुँवर वर्थ्वाल, त्रिलोचन, राजेंद्र यादव, अमृतराय, भैरव प्रसाद गुप्त, डॉ. महेंद्र भटनागर आदि ।

प्रमुख विशेषताएँ :

प्रगतिवादी कविता की विशेषताएँ इस प्रकार हैं- सामाजिक यथार्थ की प्रधानता, दलित-पीड़ित, शोषित वर्ग के प्रति असीम करुणा-एवं सहानुभूति, पूँजीवादी, शोषक वर्ग के प्रति तीव्र आक्रोश, आमूल परिवर्तन का स्वप्न, क्रांति का आह्वान, नव मानवतावादी व्यवस्था की प्रतिष्ठा, अतिशय बौद्धिकता और यथार्थवादिता, स्त्री के प्रति उदार दृष्टिकोण, नारी मुक्ति आंदोलन का समर्थन उपयोगितावादी दृष्टि की प्रधानता के कारण भाषागत सरलता, काव्यात्मकता का अभाव, रुढ कल्पना को कोई स्थान नहीं। 'कला कला के लिए' नहीं प्रत्युत जीवन के लिए सिद्धान्त की प्रबलता प्रत्यक्षीकृत मानव, पीड़ा, शोषण, उसके हित-चिन्तन के संकल्प, मानवीय मूल्यों की स्वीकृति, नवमानववाद की प्रतिष्ठा इत्यादि के प्रयास की साहित्यिक अभिव्यक्ति है।

1:1:6 प्रयोगवादी कविता (1943-1953 ई.) :

सामान्यतः कर्तव्य-बोध से किंचित मुक्ति या पलायन या कर्तव्यपूर्ति हो चुकने की निश्चिंतता की भावना मानव को भौतिक सुखों की ओर विशेष उन्मुख और प्रयोगवादी बनाती है। तात्पर्यतः गहन समस्याएँ, जब मानव चेतना को आन्दोलित-उद्वेलित नहीं करती हैं, तब वह विविध प्रयोगों की ओर सहज अग्रसर होता है। बहुत हद तक यह अवधारणा प्रयोगवाद के जन्म के साथ भी काम करती है।

वर्तमान हिन्दी काव्य को प्रयोगवादी या नयी कविता की संज्ञा दी जाती है। वस्तुतः रचनात्मक संवेदनशीलता की दृष्टि से साम्यवादी (जनवादी, प्रगतिवादी) प्रयोगवादी और नयी कविता के सर्जक एक ही धरातल पर हैं। डॉ. उमेशचंद्र मिश्र 'शिव' कहते हैं- ''प्रयोग शब्द भाव तथा गुणवत्ता में अंग्रेजी (एक्सपेरिमेंट) का पर्याय है। विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों की घुड़दौड़ में साहित्यकार ही क्यों पीछे रहे। विषय, भावधारा, उद्देश्य-कुछ हद तक प्रविधि की, दृष्टि से 'प्रयोगवाद', 'प्रगतिवाद' से न बहुत आगे हैं, न भिन्न ही, वैसे इस काव्य-धारा में व्यक्तिगत जीवन-जगत् की भिन्न

चित्रवृत्तियों का उद्‌घाटन हुआ है, नूतन साहित्यिक आयाम की तलाश की जा रही है।'' [13]

प्रयोगवादी या व्यक्तिवादी कविता के प्रेरणा स्रोत पूर्णतः पाश्चात्य हैं। जिस प्रकार प्रगतिवाद के बारे में कहा गया है, उसी प्रकार प्रयोगवाद के बारे में कहा जा सकता है।

प्रथमतः प्रयोगवाद 'अनुकरण' के रूप में यहाँ अवतीर्ण हुआ था। अतः परम्परा से दूर जानेवाली कठिन तथा कला के नूतन प्रदर्शन से यहाँ कुछ समय प्रचंड वैचारिक संघर्ष निर्माण हुआ।संक्षेप में दो भिन्न कला विचारों का टकराव अपनी पूरी ताकत से लड बैठा।

लेकिन चिन्तन के स्तर पर हमें यह स्पष्टतः प्रतीत होता है कि आज वैज्ञानिक युग में सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की इच्छा, परिस्थिति प्रबल होती जा रही है, जिसका फल यह है कि किसी राष्ट्र के सीमित दायरे में ही आज का कवि रचना नहीं करना चाहता बल्कि वह विश्व की किसी भी प्रदेश के जन-मानस की समस्या को मानव मात्र की समस्याओं से अभिन्न मानता है। यह आधुनिक विचारधारा है।

समसामयिक परिवेशः

पश्चिम की राजनीतिक आदि परिस्थिति और यहाँ की स्थिति में दो विश्व-युद्‌ध की विभीषिका का दुःखद अनुभव जीवन्त स्तर पर है। औद्योगिकता की चरमावस्था के फलस्वरूप मनुष्य यांत्रिकीकरण से सफर कर रहा है। विघटन, कुढन, घुटन की अनुभूति हो रही है। पारिवारिक स्थिति में लक्षणीय अंतर लक्षित होता जा रहा है। अर्थकेंद्रित व्यवस्था प्रायः 'अमानुषता' के स्तर पर पहुँची है।

पूर्व में विशेषतः भारत में इस दृष्टि से महायुद्‌धों का कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ा, फिर हमें विश्वशांति की चिन्ता सब से अधिक रही है। औद्योगिकता की जड़ अवस्था यहाँ नहीं है। इसलिए जब हम मशीनों के प्रति अनास्था व्यक्त करने में लग जाएँ तो अस्वाभाविक लगता है। कुल मिलाकर यह कहना उचित होता है कि प्रयोगवादी कविता ने यहाँ की भूमि में अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण किया है जो भविष्य की स्थिति का आधार है।

---

13) डॉ. उमेशचंद्र शिव - (प्रस्तावना) आधुनिक हिंदी काव्य सरिता, पृ. 45

हिन्दी में 1943 ई. में अज्ञेय के संपादन में प्रकाशित 'तारसप्तक' के साथ जिस काव्य प्रवृति का प्रचार, प्रसार हुआ उसे प्रयोगवाद कहते हैं। वास्तव में प्रत्येक युग-युग में प्रयोग का अवलंब होता ही रहा है, किन्तु यह 'प्रयोग' नया बोध, नया शिल्प लेकर उपस्थित हुआ। तार सप्तक के बारे में अज्ञेय का कहना दूसरा मूल सिद्धान्त यह था कि संग्रहित कवि सभी ऐसे होंगे जो कविता को प्रयोग का विषय मानते हैं - जो यह दावा नहीं करते की काव्य का सत्य उन्होंने पा लिया है केवल अन्वेषी ही अपने को मानते हैं।[14]

इस संदर्भ में उन्होंने आगे चलकर यह स्पष्ट किया हैं कि- ''प्रयोगवादी कवि एक ही स्कूल के नहीं है, बल्कि उनकी अभिव्यक्ति प्रयोगधर्मी है... किन्तु इससे यह परिणाम न निकाला जाय कि वे कविता के किसी एक स्कूल के कवि हैं या किसी साहित्य जगत् के किसी गुट अथवा दल के सदस्य या समर्थक हैं, बल्कि उनके तो एक होने का कारण ही यही है कि वे किसी एक स्कूल के नहीं है, किसी मंजिलपर पहुँचे हुए नहीं है, अभी राही हैं... राही नहीं, राहों के अन्वेषी, उनमें मतैक्य नहीं है।''[15]

प्रयोगवाद के प्रवर्तक का अभिमत इसलिए व्यक्त किया है कि आमतौर पर प्रयोगवाद प्रवृत्ति ध्येय आदि का स्पष्ट संकेत प्राप्त हों। दूसरा कारण यह है कि आगे चलकर यह रूप नयी कविता में परिवर्तित हुआ है और नयी कविता समसामयिक कविता में विकसित होती दिखाई देने लगी।

प्रयोगवाद मानवीय भावनाओं का विश्लेषण करने के लिए, अनेक प्रयोग करने के लिए कविता क्षेत्र में अवतीर्ण हुआ। इसीलिए विषयवस्तु, शैली की नवीनता के अर्थ में 'प्रयोगवाद' कहना उचित लगता है।

प्रमुख कवि :

प्रयोगवादी कविता के प्रमुख कवि हैं - प्रभाकर माचवे, भारत भूषण अग्रवाल, गिरिजाकुमार माथुर, डा. रामविलास शर्मा, सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', नेमिचन्द तथा गजानन माधव मुक्तिबोध आदि।

---

14) अज्ञेय – 'तारसप्तक', पृ. 10

15) अज्ञेय – 'तारसप्तक', पृ. 11

प्रमुख विशेषताएँ :

प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ इसप्रकार हैं - व्यक्तिवाद-लघुमानव की प्रतिष्ठा, आस्था, अनास्था और संशय, निराशा, कुंठा, घुटन का प्रदर्शन, क्षणवादी भावनाएँ, पराजय और पलायनवादी प्रवृत्ति, पीड़ा, यौन-भावना, कुरुपता का चित्रण, सामाजिकता, दुरुहता आदि।

डॉ. उमेशचंद्र मिश्र 'शिव' के शब्दों में- ''प्रयोगवादी हिन्दी काव्यधारा आधुनिक कालीन भावभूमि पर एक अत्याधुनिक साज-सज्जा युक्त आधुनिक तीर्थ है जिसकी भूमि पर स्थित मंदिरो से सांस्कृतिक राम-कृष्ण भी अब 'देशी मुर्गियों के विलायती बोल' सुनने के अभ्यस्त हो गये हैं। फूल -फल की बजाय 'टी - काफी' चुस्कियाँ आगत भक्तों के साथ बैठकर लेना पसंद करने लगे हैं। विभिन्न उपलब्धियाँ, प्रयोग के आधार पर कुछ नवीन संभावनाएँ अवश्य दीखती हैं, किन्तु कहीं कहीं अनेक बिगडते स्वरुप आश्चर्य और निराशा की गहन गुफा में उतरने को बाध्य कर देते हैं।'' [16]

इस प्रकार प्रयोगवादी कविता में व्यक्त विचार अत्यंत संपन्न, सारगर्भित, बौद्धिक और वैज्ञानिक हैं। इस दिशा में अज्ञेय और प्रयोगवादी कवियों का विशेष योगदान है। इस काल के कवियों में नवीनता एवं, प्रयोगशीलता के दर्शन होते हैं। प्रयोगवादी कविता जीवनानुभूति की कविता है। प्रयोगवादी कविता के संबंध में डॉ. रामसजन पाण्डेय कहते हैं - ''प्रयोगवादी कविता की इतनी उपलब्धियाँ हैं, जिससे उसके महत्त्व और आधुनिक हिन्दी काव्यधारा में उसकी अपरिहार्यता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। प्रयोगवादी कविता जीवनानुभूत कविता है, सीधे मिट्टी और आदमी की गहरी संवेदना से संलिप्त है। वह आदमी की संपूर्ण चेतना को प्रकृत रूप में शब्दायित करती है।''[17]

1:1:7 नयी कविता :(1954 से 1960 ई.)

नयी कविता प्रयोगवादी काव्य की स्वाभाविक परिणति है। आज भी कुछ आलोचक प्रयोगवाद और नयी कविता को एक ही मानते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रयोगवाद का परवर्ती विकास 'नयी कविता' के माध्यम से अपनी जड़े जमाने में सफल

---

16) डॉ. उमेशचंद्र मिश्र शिव - आधुनिक हिन्दी काव्य सरिता, पृ. 54, 55
17) डॉ. पाण्डेय रामसजन - हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 328

हुआ है। 'नयी कविता' पत्रिका के माध्यम से कविता काव्य-रुचि को नया संस्कार मिला तथा आधुनिक हिन्दी कविता अदम्य शक्ति और दृढ आत्मविश्वास के साथ गतिशील हुई।

'नयी कविता' का मूल स्रोत छायावादी युग में निराला की रचनाओं में माना जा सकता है। नई कविता में प्रगतिवाद, प्रयोगवाद के अनेक कवि अपनी सीमाओं को लांघकर इस गतिमान धारा के साथ मिल गये। इसलिये नई कविता में कई प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं।

समसामयिक परिवेश :

सदियों की बिछडी स्वतंत्रता को पाकर अखिल जनता की आत्मा में अपार खुषियाँ तथा विविध सपनों की मादकता विद्यमान थी। एक अद्‌भुत वसंत था। परंतु अल्पावधि में स्वतंत्रता की असलियत खुलने लगी। अब देश में गोरों के स्थान पर काले शासक सुप्रतिष्ठित हो गये, जिनमें अनुभवहीनता तथा स्वार्थ भरा था। कठोर वास्तव का दर्शन समय के साथ होने लगा जिस से स्वप्नों का भंग होता रहा, खुशियाँ खिन्नता में परिवर्तित हुई, भ्रष्टाचार बढा, आर्थिक क्षेत्र में पूँजीपतियों का स्वामित्व बढ गया। वस्तुतः सामाजिक परिस्थिति में अपेक्षित कोई भी सुधार नहीं हुआ। साधारण जनता की स्थिति कठिनाइयों से जटिल होने लगी, देश में कई योजनाएँ कार्यान्वित होने लगी। विज्ञान का अभूतपूर्व परिचय होने लगा। फिर जनता को स्वराज्य मिला लेकिन सुराज्य नहीं। अतः इस स्थिति में निराशा, अनास्था, पराजय का भाव उभरने लगा, जो साहित्य में प्रतिबिंबित होने लगा।

एक ओर भौतिक सुसंपन्नता अपनी चरम स्थिति पर पहुँच गयी है तो दूसरी ओर अज्ञान, बीमारी, अंधःश्रद्‌धा आपसी वैमनस्य से जीवन विषमता, कटुता, निराशा, अवसाद विह्‌वल बना रही है। संयुक्त राष्ट्र की असफलता आदि से मानवीय मूल्यों का विघटन होता रहा। राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में वित्त को सब रोगों का उपचार माना गया। नये नये प्रश्न उपस्थित हो रहे हैं। बेरोजगारी, बेकारी, जीविकोपार्जन की समस्याओं से उत्पन्न कुंठाओं ने व्यक्ति का गला घोटना प्रारंभ रखा।

डॉ. हरिचरण शर्मा के अनुसार- ''द्‌वितीय महायुद्‌ध ने मानव जीवन को आदर्श के कुहासें से निकालकर यथार्थ की भूमि पर ला दिया अतः मनुष्य के मन में

नवीन मान्यताओं की आग पैदा हो गयी।''[18]

आज वैज्ञानिक युग में पारंपारिक विचार धर्म, नीति आचारादि में अद्‌भुत परिवर्तन हो रहा है। ऐसी अवस्था में अतिगतिशील स्थिति में एक देश की संस्कृति दूसरे में मिलना- जुलना स्वाभाविक है। वास्तव में विशिष्ट दृष्टि से अनुकरण एक सर्वकालीन तत्त्व है। जीवन प्रवाह में अनुकरण की भी गंध हमारे यहाँ पाश्चात्य की कुछ समान्तर परिस्थितियों के कारण आ रही है।

यह सत्य है कि आधुनिक चिन्तनधारा से हम काफी प्रभावित हुए हैं, जिसका प्रकारांतर से कविता पर प्रभाव लक्षित होता रहा है। लेकिन इसकी भूमि, जल यहाँ का है। आज नई कविता काफी विकास कर चुकी है।

प्रमुख कवि :

नयी कविता के प्रमुख कवि इस प्रकार हैं- अज्ञेय, मुक्तिबोध, गिरिजाकुमार माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, कुँवर नारायण, दुष्यन्त कुमार, अजित कुमार, प्रभाकर माचवे, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, कीर्ति चौधरी, लक्ष्मीकांत वर्मा, विजयदेव नारायण साही, बाल कृष्ण राव आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

नयी कविता की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं- वैयक्तिकता, मानव-मूल्यों का विघटन कविता का खंडित व्यक्तित्व, नव-मानव की कल्पना, आशा-निराशा, आशा-अनास्था का मिश्रित स्वर, अनिश्चय एवं दृढ संकल्प का मिश्रित स्वर, मानव-लघुता और गरिमा का उल्लेख, मानवीय प्रेम भावना, व्यंग्यात्मक शैली, बिम्बों का प्रचुर प्रयोग, पौराणिक प्रतीकों एवं बिम्बों का उपयोग, लघु-कविता-शैली, शब्दों का वैयक्तिक प्रयोग, लयहीन गद्यात्मकता आदि ।

1:1:8 समकालीन कविता: (1960 ई.)

1960 ई. के बाद आधुनिक हिंदी काव्यधारा में जिस कविता का प्रारंभ हुआ उस कविता को अनेक नाम दिए गए । जिनमें प्रमुख हैं- साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, अकविता, अभिनव कविता, अस्वीकृत कविता, सहज कविता आदि। इन अनेक नामों का केवल एक ही अभिप्राय है कि साठोत्तरी कविता, नई कविता से कुछ अलग और हटकर है।

---

18) डॉ. शर्मा हरिचरण – 'नयी कविता का मूल्यांकन परंपरा और प्रगति की भूमिका', पृ. 91

डॉ.रामसजन पांडेय के अनुसार- ''समकालीन हिन्दी कविता युगीन सच को साक्षात्कृत करने वाली कविता है। परिवेश का जितना सच्चा और बेबाक चित्रण इस कविता में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। पहली बार आम आदमी को उसके सम्पूर्ण रूप के साथ कविता में स्थान दिया गया है। मुक्ति की आकांक्षा मन में सँजोये आज की कविता उन लाखों-करोंड़ो शोषितों-पीड़ितों के साथ है, जिनके मन में इस भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति विक्षोभ है। समाज को सही प्रगति के पथ पर लाना और सार्थक ढंग से लिखना ही इन रचनाकारों की मूल रचनाधर्मिता है। इन दीन-हीन, शोषित-पीड़ित व्यक्ति के प्रति इनके मन में करुणा है, सहानुभूति है, मात्र सहानुभूति दर्शाकर वह उन्हें पंगु नहीं बनाना चाहते, बल्कि वे उनके भीतर सोये हुए उस ज्वार को जगाना चाहते हैं जो समाज में नयी क्रान्ति ला सकता है। आम आदमी की संवेदना ही काव्य की संवेदना बनी है और यही कारण है कि इसकी भाषा भी आम बोलचाल की भाषा है।''[19]

साहित्य में जब किसी भाव-धारा का समापन होता है और नवीन भाव-बोध का उदय होता है तो उसके समकालीन संदर्भो का ऱ्हास होता है। परंतु वह भाव-बोध कभी-भी संपूर्णतः नष्ट नहीं होता। नवीन समकालीन संदर्भो में पुराने भावबोध के अवशेष रहते ही हैं। इस दृष्टि से प्रत्येक युग का साहित्य समकालीन साहित्य कहा जा सकता है।

समकालीन कविता की पृष्ठभूमि व्यापक है। निराला की कविता में समकालीन कविता के बीज विद्यमान हैं। इसलिए अपनी संपूर्ण पहचान से पूर्व ही समकालीन कविता (छठे दशक के पूर्व) लिखी जा रही थी। समकालीन कविता की पृष्ठभूमि में छायावादोत्तर सभी काव्यादोंलन आ जाते हैं। यह उसकी साहित्यिक पृष्ठभूमि है।

इस प्रकार साठ के दशक में नवलेखन की प्रवृति विकसित हुई। द्वितीय महायुध्दोत्तर काल में नई चेतना का विकास हुआ और तरह-तरह की कविता का दौर चल पड़ा। अनेक नामों से इस कविता को पहचानने के प्रयास हुए। सनातनी सूर्योदयी कविता, अम्परम्परावादी कविता, युयुत्सावादी कविता, अकविता, विद्रोही कविता, एब्सर्ड कविता, साम्प्रतिक कविता, बीट कविता आदि। अनेक नाम सामने आए क्योंकि तब कविता अपने लिए जमीन तलाश रही थी।

---

19) डॉ. पाण्डेय रामसजन – 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', पृ. 347

समसामयिक परिवेश-

1960 ई. के बाद सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों के कारण आम आदमी नवीन स्वतंत्रता से मोहभंग होकर सोचने लगा। आम आदमी का राजनीति से मोहभंग होने लगा था। 1962 ई. के चीनी आक्रमण, 1964 ई. में नेहरु की मृत्यु, 1966 ई. में लाल बहादुर शास्त्री का आकस्मिक निधन, 1965 ई. के भारत-पाक युद्ध आदि घटनाओं ने हमारी मानसिकता और सांस्कृतिक दृष्टि में परिवर्तन हुआ। राजनीतिक अव्यवस्था से समकालीन कविता प्रभावित हुई। 1971 ई. में भारत पाकिस्तान युद्ध और बांगला देश का उदय हुआ। 1975 ई. में इन्दिरा गांधी का चुनाव रद्य कर दिया गया। साहित्यकारों की सोच पर-अभिव्यक्ति पर बाधाएँ आयीं। 1977 ई. में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और पहली बार केंद्र में काँग्रेस च्युत हो गयी। पुनःश्च (दो साल बाद) इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनी। परन्तु तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता आतंकवाद में परिवर्तित हुई और 1984 ई. में इंदिरा गांधी की हत्या से अस्थिरता का वातावरण और गहरा होता गया। भ्रष्टाचार, जातीय विद्वेष, आतंकवाद, राजनीतिक अन्तर्कलह, साम्प्रदायिक संघर्ष बढते गये। परिणामस्वरूप 1991 ई. में पंतप्रधान राजीव गांधी की भी हत्या हो गयी।

परिणामस्वरूप व्यक्ति के असामाजिक होने की सम्भावना बढ़ने लगी। महानगरों में एक नवीन आर्थिक सामाजिक व्यवस्था सामने आने लगी। आपात् काल के पश्चात् राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों के कारण विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गयी। इन सब का परिणाम समकालीन साहित्य पर हुआ। इसीलिए समकालीन कविता वादमुक्त कविता के रूप में सामने आयी। इस कविता में व्यवस्था से निराश, पीडित घायल व्यक्ति को स्थान मिला था । परंतु कुछ कवियों तक ही यह अभिव्यक्ति सीमित रही थी। समकालीन कवि युगीन चिन्ताओं, समस्याओं से सम्बद्ध रहकर भविष्य की आकांक्षा के लिए आगे बढ़ रहा है।

प्रमुख कवि :

समकालीन कवियों में से कुछ प्रमुख कवि इस प्रकार हैं- मुक्तबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, शमशेर बहादुर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, रामकुमार कुंभज, राजकमल चौधरी, लीलाधर जगूड़ी, चंद्रकांत देवताले, धूमिल, बलदेव बंशी, उदयप्रकाश, अरूण कमल, विश्वनाथ तिवारी, श्रीकांत वर्मा, दूधनाथ सिंह, वेणु

गोपाल, मत्स्येंद्र शुक्ल, विष्णु खरे, देवेंद्र कुमार, श्याम विमल, विजय कुमार, परमानन्द श्रीवास्तव, आलोक धन्वा, अमरजीत, प्रताप सहगल, अनिल जोशी आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

समकालीन कविता की विशेषताएँ इस प्रकार हैं- विघटित व्यवस्था के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह, जीवन का वास्तविक चित्रण, मोहभंग की स्थिति, राजनेताओं के प्रति क्षोभ की अभिव्यक्ति, व्यक्ति और सामान्य सत्ता की प्रतिष्ठा, परम्परागत मूल्यों का विघटन, आस्था और अनास्था का चित्रण, व्यक्ति मन का सहज कथन, काम का उन्मुक्त चित्रण, प्रकृति चित्रण, जनवादी चेतना की विस्तृत व्यंजना, भाषिक भंगिमा, अप्रस्तुत विधान, बिम्ब विधान, छंद-योजना आदि ।

निष्कर्ष -

आधुनिक हिंदी कविता का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु युग ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। सर्व प्रथम भारतेंदु युग के काव्य का वास्तविक महत्त्व नवीन चेतना के संधान के रूप में उपलब्ध होता है। इस काल में पहली बार जीवन से संबंध रखनेवाली सारी बातों को कविता का विषय बनाने का आग्रह सामने आया है, जिसे एक बड़े परिवर्तन का शुभारम्भ माना जा सकता है। द्विवेदी युगीन कवियों ने मानवीय क्रिया कलापों, प्रकृति की बहुरंगी एवं मोहक छवियों, समाज, जाति, राष्ट्र एवं मानवता की उन्नति के प्रेरक भावों को चित्रित किया है। इन कवियों ने काव्य में लोकहित का आग्रह तथा बुद्धि एवं हृदय के बीच संतुलन की बात करके अपने विवेकसम्मत दृष्टिकोण का परिचय दिया है। छायावादी कवियों ने कविता के क्षेत्र में परम्परा से हटकर अपनी मौलिकता का परिचय देते हुए नवीन दिशाओं का उद्घाटन भी किया है। इन कवियों ने काव्य स्वरुप, काव्य तत्त्व, रस, काव्यवर्ण्य, काव्यशिल्प के विवेचन में मौलिक अंतर्दृष्टि का परिचय दिया है। इन्होंने काव्य में सांस्कृतिक सौंदर्य, विश्वमानवता, युगचेतना, वैयक्तिकता, प्रकृति-चित्रण, राष्ट्रीयता, स्वाभाविकता एवं सात्विकता का समर्थन किया है । प्रगतिवादी कवियों ने कविता को कल्पना से मुक्त कर ठोस धरती पर उतारा और संघर्षरत समाज की विभीषिकाओं से परिचित कराकर एक नवीन अध्याय का शुभारम्भ किया । इन कवियों ने क्रांति का आह्वान, परिवर्तन की पुकार, साम्यवाद की जय, स्थूलता का आग्रह, यथार्थवादिता, समसामयिक

समस्याओं के प्रति सजगता शिल्पगत सहजता को स्थापित किया। इस युग में काव्य एवं जन जीवन के संबधों में परस्पर प्रगाढता आई है।

प्रयोगवादी कवियों ने काव्य-स्वरूप के अंतर्गत प्रेम की रागात्मक कल्पना, वैयक्तिक अनुभूति, वैचित्र्य-प्रदर्शन, लघुता के प्रति साहित्यिक दृष्टि, भौतिक यथार्थ की मानवतावादी व्याख्या, प्रकृति प्रभाव, प्रयोग से प्राप्त सत्य का समावेश किया है । इन कवियों ने काव्य के अभिव्यजंना कौशल में भी खास तरह का आग्रह दिखलाई पड़ता है । नई कविता के कवियों ने जीवनसत्य का अनवरत अनुसंधान, अनुभूति की प्रामाणिकता, सामाजिक अनुभव के सहारे आत्मभिव्यक्ति तथा अर्थ की लय को काव्य स्वरुप के अंतर्गत रखा है । समकालीन कविता के कवियो ने युगीन परिवेश का सच्चा चित्र खींचकर आम आदमी को कविता का विषय बनाया है । आज की कविता उन लाखों, करोडो, शोषितों पीडितों के साथ है, इन दीन-हीन शोषित पीडित आम आदमी के प्रति इनके मन में प्रेम है, सहानुभूति है। आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर इन्होंने आम आदमी की संवेदना को काव्य स्वरूप में स्थान दिया है।

जब हम आधुनिक हिंदी कविता का विचार करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अल्प अपवादों को छोड़कर अधिकांश कविताएँ काव्य के आंतरिक एवं बाह्य गुणों से परिपूर्ण हैं । उन का भावपक्ष एवं कलापक्ष अत्यंत समृद्ध है ।

आधुनिक हिंदी कविता में व्यक्त देशकाल, समाज, राष्ट्र और विभिन्न विचारधाराओं का विकास हुआ है । इनमें होनेवाले परिवर्तनों के साथ-साथ हिंदी कविता के क्षेत्र में भी काफी परिवर्तन दिखाई देता है। इस युग में पहली बार कविता को जनसाधारण की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा उसमें जीवन मूल्यों, आधुनिक विचारधाराओं, वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकीय विकास, विश्व साहित्य एवं समाज के पारस्परिक संगठन का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता एक नवीन दिशा का उद्घाटन करते हुए आगे बढ़ रही है।

द्वितीय अध्याय

आधुनिक मराठी कविता का स्वरूप

2.1 भूमिका

मराठी कविता को सात सौ वर्षों की समृद्ध परम्परा प्राप्त हुई है। इन सात सौ वर्षो में मराठी कविता विविध आयाम लेकर आगे बढी है। आधुनिक मराठी कविता का आरंभ 1885 ई. से माना जाता है। क्योंकि काव्य के भीतर नवीन दृष्टिकोण की एक निश्चित परंपरा यहीं मिलने लगती है। वैसे तो यह काल गद्य साहित्य का भी है। गद्य साहित्य में निबंधों की दृष्टि से यह काल अत्यंत श्रेष्ठ है। चिपळूणकर के निबंध इस समय तक प्रकाशित हो चुके थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भी 1870 ई. के बीच उत्कृष्ट निबंधों की रचना हुई, ठीक इसी प्रकार मराठी में भी इस समय उत्कृष्टतम निबन्ध प्रकाशित हुए। काव्य साहित्य की दृष्टि से इस युग पर विस्तार से विचार करने के पूर्व पृष्ठ भूमि के तौर पर परंपराबद्ध काव्य साहित्य का भी परिचय करा लेना आवश्यक है।

1875 से 1885 ई. तक का काव्य संक्रमणकाल का काव्य है। अधिकतर काव्य साहित्य परंपराबद्ध था। परंतु इधर कुछ छुटपूट रचनाएँ ऐसी प्रकाशित हो रही थी जिसमें आधुनिकता का निश्चित स्पर्श था। आधुनिक कविता के पहले निम्नलिखित काव्य-धाराएँ थीं- संत काव्य, पंत काव्य, शाहिरी काव्य आदि।

आज के उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर मराठी संतकाव्य का आरंभ 12 वी शताब्दी में हुआ है ऐसा माना जाता है। यह परम्परा 12 वी शताब्दी से 18 वी शती तक चलती रही और आज भी उसका अस्तित्व टिका हुआ है।

नामदेव, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि संत कवियों की एक लंबी परम्परा मराठी में मिलती है। इनकी कविता शुद्ध भक्ति-भावना से ओत-प्रोत थी । इस काल में इस प्रकार की रचनाएँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। इस समय विठोबा दप्तरकार, नारायण खांडेकर, परशुराम गोडबोले आदि कवि इस प्रकार की कविता का सृजन कर रहे थे। परंतु उनमें मौलिकता का पूर्णतः अभाव था। ये लोग ज्ञानेश्वर, तुकाराम, आदि से प्रभावित होकर केवल अनुकरणात्मक कविताएँ ही लिख रहे थे।

पंत काव्यधारा मोरोपंत, वामन पंड़ित आदि के समय से चली आ रही थी। इस परम्परा के कवियों में पांड़ित्य अधिक था, भक्तिभावना कम थी, वैसे तो इनकी सभी काव्य-कृतियों के मूल में भक्ति ही है। परंतु ये कृतियाँ अत्यंत ही दुरुह है। इन्होंने विविध छन्दो तथा अलंकारों का प्रयोग किया है। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे कहते हैं - ‘‘हिन्दी की परवर्ती रीतिकालीन कविता के साथ ही इस काव्य की तुलना की जा सकती है। इस परम्परा के कवियों ने कथा-काव्य की रचना ही अधिक की है। 1875 से 1885 ई. तक इसप्रकार की अनेक रचनाएँ मिलती है। इस परम्परा के काव्य में आधुनिकता का स्पर्श नहीं के बराबर है।’’[1]

प्राचीन कविता का तीसरा प्रकार शाहिरी काव्य है। उपलब्ध साहित्य के आधार पर इस काव्य का जन्म शिवकाल में हुआ और अंत पेशवाई के बराबर ही हुआ। शाहिरी काव्य के ‘पँवारा’, ‘लावणी’ ये दो प्रकार हैं। ‘पँवारा’ वीर रस प्रधान है और इस में वीरों के शूरता का वर्णन किया जाता है। ‘लावणी’ शृंगार रस से संबंधित है। गेयता, तालबद्धता इसकी विशेषताएँ हैं। राम जोशी, अनंत फंदी, होनाजी बाळा, सगनभाऊ, परशुराम, प्रभाकर आदि उल्लेखनीय शाहिर कवि हैं। यह काव्य- परम्परा भी हिन्दी के रीति काव्य के निकट पड़ती है। इस काव्य में भी आधुनिकता का अभाव है।

इसप्रकार 1875 से 1885 ई. के बीच तीन परम्पराबद्ध काव्य-परम्पराएँ मिलती है। एक ओर इस प्रकार की परंपराबद्ध काव्य परम्परा थी तो दूसरी ओर इसी काल में अनेक नये आंदोलन शुरु हो चुके थे। इन आंदोलनों का निश्चित परिणाम साहित्य पर भी हो रहा था। इन आंदोलनों के कारण ही मराठी कविता में आधुनिकता का प्रवेश हुआ और इन सभी आंदोलनों के भीतरी तत्त्वों को आत्मसात करके जब से काव्य-सृजन हुआ, वहीं से मराठी की आधुनिक कविता का सूत्रपात होता है।

आधुनिक मराठी कविता की पृष्ठभूमि भी अत्यंत व्यापक है। उसका निरंतर विकास हो रहा है। आधुनिक मराठी कविता के प्रमुख सोपान हैं- केशवसुतयुगीन कविता, रविकिरण मंडल की कविता, रविकिरण मंडलोत्तर मराठी कविता, मर्ढेकर युगीन कविता, नयी कविता, राष्ट्रीय काव्यधारा, साठोत्तरी मराठी कविता, मराठी गज़ल, आज की कविता, लोकगीत प्रवाह की कविता, ग्रामीण कविता, मुस्लिम

---

1) डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे – ‘प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास’ पृ. 15

अभिव्यंजना, स्त्रीवादी कविता, दलित कविता आदि। आधुनिक काल में अनेक कवियों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है, उनमें प्रमुख हैं- केशवसुत, विनायक, रेव्हरंड टिळक, गोंविदाग्रज, भा.रा. तांबे, बालकवि, लक्ष्मीबाई टिळक, मनोरमा रानडे, बहिणाबाई चौधरी, कुसुमाग्रज, बा. सी. मर्ढेकर, विंदा. करंदीकर, मंगशे पांडगांवकर, कवि अनिल, बोरकर, वसंत बापट, नारायण सुर्वे आदि।

आधुनिक हिंदी कविता की तरह आधुनिक मराठी कविता का भी विकास होता रहा। आधुनिक काल में अनेक प्रसिद्ध रचनाकार और रचनाएँ प्रसिद्ध हुई। इन रचना और रचनाकारों पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। आधुनिक मराठी कविता के स्वरूप गठन के लिए ये परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं। आधुनिक कविता के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए आधुनिक कविता के प्रमुख सोपान, समसामयिक परिवेश, प्रमुख कवि और विशेषताओं का विवेचन इस प्रकार किया गया है।

2:1:1 केशवसुत युगीन कविता : (1885- 1920 ई.)

केशवसुत युग आधुनिक मराठी कविता का प्रवेश द्वार है। कवि केशवसुत के कविता का अनुकरण कर काव्य रचना करनेवाले अनेक कवि यहाँ दिखाई देते हैं । क्योकिं केशवसुत मौलिक प्रतिभा के कवि थे। इनका संस्कृत का अध्ययन सीमित था, किंतु अंग्रेजी का अध्ययन काफी गंभीर तथा सूक्ष्म होते हुए भी दो-एक काव्य-संग्रहों तक ही सीमित था। अध्ययन की इस मर्यादा के कारण ही इनके काव्य पर किसी अन्य काव्य का गहरा प्रभाव नहीं हैं।

केशवसुत जीवन की ओर अत्यंत निराशा की दृष्टि से देखते थे । इनका व्यक्तिगत जीवन भी अत्यंत असफल तथा दु:खपूर्ण रहा। साहित्येतर क्षेत्रों में वे साधारण बुद्धि के थे, परंतु इनमें काव्यगत प्रतिभा विशेष थी। 1875 से 1905 ई. तक तीस वर्षो में इनकी केवल 132 कविताएँ प्रकाशित हुई। आरंभ में वे अंग्रेजी तथा संस्कृत कविताओं का अनुवाद करते रहे। बाद में इन्होंने मौलिक कविताएँ लिखीं। सामाजिक चेतना की कविता, प्रेमविषयक कविता, रहस्यवादी कविता, काव्य-विषयक कविता, सुनीत काव्य आदि। पाँच प्रकार की कविताओं का अध्ययन करने के बाद केशवसुत का मराठी साहित्य का योगदान स्पष्ट हो जाता है।

केशवसुत युगीन कविता और कवि केशवसुत के संबंध में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने कहा है कि- ''उन्होंने उपरोक्त नवीन प्रवाहों की शुरुआत की। उन्होंने विषयों के नये क्षितिजों को स्पर्श किया। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थता, प्रगतिशीलता, प्रकृति-प्रेम, शुद्ध लौकिक प्रेम, रहस्यात्मकता आदि सभी स्वर हैं। हिंदी में इनकी तुलना केवल निराला के साथ की जा सकती हैं।''[2]

केशवसुत के बाद त्र्यंबक बापूजी ठोंबरे अर्थात् बालकवि ही चर्चित और लोकप्रिय कवि रहे। बालकवि (1890 - 1912) प्रकृति में पूर्णतः रम गये थे। 1907 ई. में. जलगाँव के मराठी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर इन्होंने कुछ कविताएँ सुनाई। इन कविताओं से प्रभावित होकर सम्मेलन के अध्यक्ष कीर्तिकर ने इन्हें बालकवि कहा तब से बालकवि के नाम से इन्हें ख्याति मिली। आनंदी आनंद गडे, फुलराणी, श्रावणकाल, पाखाँ, औंदुबर आदि इनकी श्रेष्ठ और प्रसिद्ध कविताएँ हैं।

गोविंदाग्रज स्वयं को केशवसुत का सच्चा चेला मानते हैं। इसलिए केशवसुत की कविता में आनेवाले सब विषय इनकी कविताओं में आते हैं। उन्होंने अपनी कविता में प्रेम का एक तत्त्वज्ञान स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने एक प्रकार से प्रेम कविता का प्रवाह विकसित किया - 'एक क्षण पुरे प्रेमाचा वर्षाव पडो मरणाचा।' ऐसा वे 'प्रेम आणि मळा' कविता में कहते हैं।

कवि 'बी' के संबंध में प्र.के. अत्रे ने कहा है कि- ''कवि 'बी' एक तत्त्वचिंतक कवि हैं। 'पूर्णापासूनी ढकललेले जग जाते पूर्णाकडे' यही उनका लक्ष्य है, जहाँ अमीट आनंद और सतेज सौदर्य का निवास है वहीं पर पूर्णत्त्व की संभावना है और यही सृष्टि या जीवन का लक्ष्य है। यही कवि 'बी' का विचार है।''[3]

दत्त केशवसुती संप्रदाय के मौलिक कवि हैं। परंतु दुर्भाग्य से केवल 24 वर्ष की आयु में ही इनकी मृत्यु हो गयी। प्रेम, प्रकृति, राष्ट्रीयता और सामाजिकता इनकी कविता की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं । प्रखर राष्ट्रवादी कविता का आरंभ मराठी में विनायक (1873-1909) की कविता से होता हैं। हिन्दी में इस प्रकार की कविताएँ काफी बाद में लिखी गयी। हिन्दी भाषा प्रदेश की तुलना में राष्ट्रीय विचारों तथा अंग्रेजी राज्य के प्रति विद्रोह के संकेत मराठी प्रदेश में पहले मिलते हैं। कथा काव्य की

---

2) डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे - प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास पृ. 20

3) अत्रे प्र.के. प्रस्तावना : फुलांची ओंजळ, पृ. 11

जो एक दीर्घ परंपरा मराठी में मिलती हैं। उसके अनुरुप श्री. विनायक ने कथाकाव्य लिखे हैं, पन्ना, पद्मिनी, राणी दुर्गावती, संयोगिता आदि उल्लेखनीय कथा काव्य हैं।

केशवसुत के बाद रेंदाळकर (1887-1920) ही एक ऐसे कवि हैं जिनके पास अपनी विशिष्ट सामाजिक दृष्टि है। रुढियों, परंपराओं, सनातनी दृष्टिकोणों की प्रखर आलोचना इन्होंने की है। सभी धर्मो के मूल तत्त्व समान हैं तथा मनुष्य को मनुष्य के रूप में ही स्वीकार किया जाय, ऐसा आग्रह इन्होंने अपनी कविता में किया है।

1898–1904 ई. के दरमियान में लिखे पुष्पाजंली नाम से संग्रहीत कविताएँ केशवसुत के आंतर्बाह्य अनुकरण करनेवाली हैं। रेंदाळकर के मित्र नागेश ने भी निर्यमक कविता को पुरस्कृत किया और केशवसुत का अनुकरण किया।

इस काल की एक मात्र उल्लेखनीय कवयित्री लक्ष्मीबाई टिळक (1873-1936) को अपने पति के सहवास में काव्य प्रेरणा मिली। उन्होंने अनेक विषयों पर सुबोध कविताएँ लिखी । घर और संसार से संबंधित कविता में उनके वात्सल्यपूर्ण व विनोदप्रिय व्यक्तिमत्त्व दिखाई देता है। 'स्मृतिचित्र' में यही काव्य आगे गद्य रूप धारण कर अधिक सहज रूप में प्रकट हुई। 'मी तुझी मावशी तुला न्यावया आले' उनका प्रसिद्ध गीत है। 'भरली घागर' कविता संग्रह घर-संसार से संबंधित भावनाओं से भरा हुआ है। उनके पति ना.वा. टिळक के अधूरी रचना 'ख्रिस्तायन' के बारह से पचहत्तर अध्याय पतिनिष्ठा के कारण पूर्ण कर सकी। आधुनिक मराठी कवयित्रियों में ऐसा कार्य किसी ने भी नहीं किया। सुंदर सुगम व सहज ग्रामीण शैली के दर्शन ख्रिस्तायन में होते हैं। घर-संसार की कविता के दर्शन लक्ष्मीबाई के बाद बहिणाबाई की कविता में होते हैं।

1920 ई. के आसपास रे. टिळक (1919), गोविंदग्रज (1919) बालकवि (1918), रेंदाळकर (1920), आदि कवियों का निधन हुआ। कुछ कवियों का काव्य लेखन बंद हुआ। राजनीतिक दृष्टि से टिळक युग भी इसी समय समाप्त हो गया। आधुनिक कविता का ऐतिहासिक युग 1920 ई. में समाप्त हुआ, ऐसा माना जाता है। परंतु अनेक महत्त्वपूर्ण कवि इस काल में काव्य-लेखन करने लगे। तृतीय काल में लेखन करनेवाले कवियों की कविताएँ चतुर्थ काल में प्रकाश में आने लगी। केशसुत युग और रविकिरण मंडल युग याने तीसरे चौथे काल में कविताएँ लिखकर अपने व्यक्तित्त्व का काव्य इतिहास में अपना स्वंतत्र नाम स्थापित करनेवाले कवियों में प्रमुख

रुप से चंद्रशेखर, बी, तांबे, सावरकर एवं गोविंद आदि हैं।

समसामयिक परिवेश :

1885 से 1900 ई. तक का काल केशवसुत युगीन कविता का काल माना जा सकता है। 1885 ई. में क्राँग्रेस की स्थापना हुई। क्राँग्रेस के पास जनताभिमुख दृष्टिकोण था। इस काल में पुणे में ज्योतिबा फुले जनसाधारण की शिक्षा के लिए प्रयत्नशील थे। 1842 ई. में उन्होंने इसी शिक्षा के उद्देश्य से पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला।

1875 से 1885 ई. के दरमियान लिखे गए मराठी गद्य में आधुनिक विचारों पर टीका-टिप्पणी शुरु हो चुकी थी। महाराष्ट्र में इस समय दो प्रकार की वैचारिक प्रवृतियाँ मिलती है। एक ओर हिन्दू धर्म को सुधार रूप में स्थापित करने का प्रयत्न हो रहा था। श्रीकृष्ण शास्त्री चिपळूणकर, श्री विष्णुबुवा ब्रह्मचारी, आदि इस प्रकार के विचार जनता के सम्मुख रख रहे थे, दूसरी ओर सभी कर्मकाण्ड़ों को ठुकराकर मनुष्य के रूप में स्थापित करने का प्रयत्न भी हो रहा था। इस काल के चर्चित विषय थे, सामाजिक सुधार तथा 'हिन्दू धर्म का सुधार' ।

1818 ई. में पुणे में अंग्रेजी सत्ता की शुरुआत हुई। अंग्रेजी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई। अंग्रेजी स्कूल के कारण युवा पीढी अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क में आयी। इस कारण मराठी व्यक्ति अपने साहित्य की सीमाओं से परिचित हो गया। एक ओर उसके सामने परम्पराबद्ध मराठी कविता थी। दूसरी ओर विविध सामाजिक विचार प्रणालियाँ थीं। (उदा. म.जोतिबा फुले के विचार, लोकहितवादी के विचार, महर्षि दयानंद प्रणीत आर्य समाज के विचार) तथा नवीन विचारों से ओत-प्रोत मराठी गद्य साहित्य था। उपर्युक्त सभी बातों का प्रभाव युवा मानस पर होने लगा। अब वह साहित्य को मात्र मनोरंजन की दृष्टि से देखना चाह नहीं रहा था। सभी विधाओं का प्रयोग इस समय सामाजिक सुधार के लिए किया जा रहा था।

इसके पूर्व की मराठी कविता जनसामान्य से जुड़ी हुई थी। जनसामान्य के मनोरंजन का साधन होने तक सीमित अर्थ में थीं । जनसामान्य कविता को या तो भक्तिभावना का, अभिव्यक्ति का साधन (संत तथा पंत काव्य) अथवा मनोरंजन का माध्यम मानता था (शाहिरीकाल)। इस कविता के सारे विषय जनसामान्य के जीवन से संबंधित नहीं थे।

आधुनिक कविता के प्रवेश से मराठी कविता मनोरंजन के चक्रव्यूह से बाहर तो आयी, परंतु वह जनसामान्य से दूर हो गई। अब वह अधिक स्थूल, अत्यधिक धार्मिक न रहते हुए सूक्ष्म तथा गंभीर होने लगी। इस प्रकार की सूक्ष्मता तथा गंभीरता का संकेत इस युग के साहित्य से मिलता है। इसलिए इस काल को आधुनिक मराठी साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में स्वीकार किया जाता है।

प्रमुख कवि :

इस काल के प्रमुख कवि इस प्रकार हैं- केशवसुत, बालकवि (त्र्यंबक बापूजी ठोंबरे), गोंविदाग्रज (राम गणेश गडकरी), कवि बी, दत्त, विनायक (वि.ज. करंदीकर), रेंदाळकर, रहाळकर (ना.ग. नवरे), नागेश, लक्ष्मीबाई टिळक आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

केशवसुत युगीन कविता की कुल मिलाकर निम्नलिखित विशेषताएँ हैं- भक्तिपरक परंपराबद्ध अनुकरणात्मक कविता। संस्कृत काव्यों के अनुवाद की काव्य परंपरा। आधुनिक मराठी भाषा को समृद्ध करने के लिए अनेक संस्कृत काव्यों के सरस अनुवाद किए गए। उदा. गणेशशास्त्री लेले द्वारा किया गया 'रघुवंश' का अनुवाद। अंग्रेजी साहित्य के सम्पर्क में आने के कारण अंग्रेजी की उत्कृष्टतम काव्य-कृतियों के मराठी अनुवाद इस काल में किए गये। टेनिसन के 'दि प्रिंसेस' का डॉ. कीर्तिकर द्वारा 'इंदिरा' नाम से किया गया अनुवाद अत्यंत सरल तथा सफल रहा। इसका विषय स्त्री दास्य का विरोध तथा मुक्ति का आग्रह है।

इन अनूदित कृतियों के कारण 'आधुनिकता' का प्रवेश मराठी काव्य-साहित्य में होने लगा। अंग्रेजी की 'लिरिक पोएट्री' का अनुवाद भी इसी समय प्रकाशित हुआ। मौलिक रचनाएँ भी काफी संख्या में लिखी गयी। मौलिक कृति की दृष्टि से महादेव मोरेश्वर कुंटे की 'राजा शिवाजी' अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस काव्य में पहली बार जनभाषा को साहित्यिक स्तर पर लाने का प्रयत्न हुआ।

इसप्रकार इस काल की ये उपलब्धियाँ मानी जा सकती हैं - कविता अपने परंपराबद्ध विषयों को छोड़कर यथार्थ विषयों की ओर मुड़ने लगी, काव्य-कृतियों में सामाजिक प्रश्नों की ओर संकेत होने लगा, अब तक मराठी कविता बहिर्मुखी थी। परंतु अब उसमें अंतर्मुखता आने लगी। वैयक्तिक सुख-दुःख की कविताएँ लिखी जाने लगी, काव्य में लोकभाषा का प्रयोग प्रारंभ हुआ, पंडिती काव्य की बोझिलता से

कविता कामिनी को स्वतंत्र करने का प्रयत्न शुरु हुआ। काव्य-भाषा अधिक सहज, सरल तथा स्पष्ट हो, इसका ध्यान कवि रखने लगे, 'लिरिक' नामक नई काव्य-शैली मराठी में आ गई, कविता नीरे मनोरंजन का स्तर छोडकर गंभीर बनने लगी, ऐतिहासिक विषयों पर कविताएँ लिखी जाने लगी, संस्कृत तथा अंग्रेजी काव्यानुवाद की परम्परा का सूत्रपात हुआ, इस समय भक्तिपरक रचनाएँ भी लिखी जा रही थी।

डॉ. प्र.न. जोशी के अनुसार- ''अव्वल अंग्रेजी जमाने में कविता की दृष्टि ऐहिक और लौकिक हुई। इस दुनिया के घटनाओं पर उसके लक्ष्य केंद्रित हुए। प्रकृति वर्णन, देशभक्ति, समाजकारण, दार्शनिक चिंतन, पारिवारिक प्रसंग, कवि और कविता स्त्री पुरुष प्रेम आदि विविध विषयों पर कविता रची गयी। भावगीत, सुनीत, नाट्यगीत, द्वंद्वं गीत आदि नये काव्य प्रकार भी युरोपीय कविता के मोड पर प्राप्त होने से मराठी कविता अधिक आसान, प्रासंगिक होती गयी। आधुनिक मराठी कविता के ये सभी विशेषताएँ प्रथम कृष्णाजी केशव दामले उर्फ केशवसुत की कविता में दिखाई देने के कारण उन्हें 'आधुनिक मराठी कविता का जनक' कहा जाता है।''[4]

इन दस वर्षों के काल में कविता कामिनी को बंधनों से मुक्त करने का प्रयत्न हो रहा था। इस प्रयत्न में संपूर्ण सफलता 1885 ई. में मिली। अर्थात् कविता को बंधनमुक्त करने का श्रेय कवि कुलगुरु केशवसुत को ही है।

2:1:2 रविकिरण मंड़ल युगीन कविता : (1920-1935 ई.)

1920 ई. के आसपास बालकवि, गडकरी, रे. टिळक आदि कवियों के निधन से काव्य क्षेत्र में अंध:कार फैल गया, कविता के क्षेत्र में उदासीनता छा गई। लेकिन इस अंध:कार को भेदकर रविकिरण मंडल की कविताओं ने इसे प्रकाशित किया और काव्य का निर्माण निरंतर होता रहा।

कवि गिरीष, यशवंत, माधव ज्युलियन, श्री. बा. रानडे, वि.द. घाटे आदि लोग एकत्रित आकर 1923 ई. में 'किरण' पुस्तक का प्रकाशन कर रविकिरण मंडल की स्थापना की।

1920 से 1923 ई. के समय महाराष्ट्र के अन्य भागों से पुणे में पढाई के लिए आए नवयुवक काव्य चर्चा के लिए प्रत्येक रविवार को एक स्थान पर इकठ्ठा होते थे। परंपराबद्ध मराठी कविता केशवसुती सम्प्रदाय तथा अन्य कवि, इन कवियों की

---

4) डॉ. जोशी प्र.न.- 'अर्वाचीन मराठी वाड्मयाचा इतिहास' पृ. 110

सीमाएँ आदि विषयों पर चर्चाएँ होने लगी। 1923 ई. में इन्होंने इसका नामकरण किया - रविकिरण मंडल। इस मंडल के स्थायी सदस्य निम्नलिखित व्यक्ति थे, माधव ज्युलियन (मा.भ्य. पटवर्धन), गिरीश (शं.के. कानेटकर), यशवंत (य.दि. पेंढारकर), श्री. बा. रानडे, सौ. मनोरमा रानडे, ग.म्यं. माडखोलकर, द.ल. गोखले तथा दिवाकर (शं.का. गर्गे) आगे चलकर दिवाकर के स्थान पर वि.द. घाटे को लिया गया।[5]

सितंबर 1923 ई. में. 'किरण' नाम की पत्रिका का प्रकाशन इस मंडल ने शुरु किया। 32 पृष्ठों की इस काव्य पत्रिका ने मराठी में तहलका मचा दिया। इस पत्रिका के प्रकाशित होने के बाद एक ओर रविकरण मंडल काफी ख्यात तथा चर्चित हुआ, तो दूसरी ओर इस मंड़ल के कवियों तथा इनकी कविता पर कठोर आलोचना शुरु हुई। रविकिरण मड़ल ने काव्य साहित्य में सामान्य विषयों तथा सामान्य अनुभूतियों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। विशेषतः प्रेम की बड़ी ही खुलकर चर्चा ये लोग अपनी कविता में करते रहे। इन्होंने केशवसुत की सामाजिक कविता के स्थान पर वैयक्तिकता तथा प्रेमप्रधान रचनाओं को महत्त्वपूर्ण माना। प्रकृति चित्रण भी इनकी विशेष प्रवृत्ति रही है।

कुल मिलाकर रविकिरण मंड़ल के काव्य का मूल्यांकन करते हुए शंकर वैद्य कहते हैं - ''उन कवियों के कुछ अच्छे रचनाओं को स्मरण में रखकर कहा जा सकता है कि, यह कविता कलात्मक अनुभव की, कभी अनुभव से ज्यादा विषय विविधता के पीछे लगी हुई, निवेदनात्मक शैली और सांकेतिक अलंकरण में अटकी हुई, अनावश्यक विस्तार पायी हुयी पाठकों के लिए आसान बनाई हुई, एकाध घटना के साथ निबद्ध होकर पद्य में पिरोया हुआ वर्णन यानी कविता।''[6] इस प्रकार की अधिक कविता इस काल में निर्माण हुई।

समसामयिक परिवेश-

रविकिरण मंडल का यह समय प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति (1818 ई.) तथा द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभ का था। राजनीति में इस समय गांधीवाद का प्रभाव था। राजनीतिक स्थिति अत्यंत भयावह थी। इस प्रकार यह समय भारतीय इतिहास के लिए स्वतंत्रता, भारतीयों और साम्राज्यवादी दमन नीतिवाले अंग्रेजों के मध्य घन-घोर संघर्ष का काल है।

---

5) डॉ. बिरादार वसंत – 'आधुनिक मराठी वाङ् मयाचा इतिहास', पृ. 293

6) वैद्य शंकर- 'रसयात्रा' पृ. 14

रविकिरण मंड़ल के काल में (1920 से 1945 ई.) महाराष्ट्र तथा सारे देश में एक बहुत बड़ी राजनीतिक उथल-पुथल हो रही थी। परंतु रविकिरण मंड़ल के काव्य में इसकी कोई प्रतिध्वनि नहीं है। 1930 से 1942 ई. तक का काल महाराष्ट्र के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। हजारों की संख्या में लोग जेल जा रहे थे। सैंकड़ों बलिदान हो रहे थे। अंग्रेजों का दमन-चक्र तेजी से चल रहा था परंतु रविकिरण मंडल के कवि इन सब बातों से बेखबर थे, ठीक छायावादी कवियों की तरह जिस प्रकार 1920 से 1936 ई. तक की हिंदी भाषी प्रदेश की राजनीतिक उथल-पुथल का कोई जिक्र हिंदी के छायावादी कविता में नहीं, ठीक उसी प्रकार की स्थिति मराठी कविता की है।

इस प्रकार इस काल के कवि कल्पना के महल खड़ा करने में मग्न हैं। इस काव्य धारा से पूर्व का मराठी काव्य जीवन के निकट गया हुआ था। वे चाहते थे तो जन-सामान्य के मन में अंग्रेजी सत्ता के प्रति चिढ़ उत्पन्न कर सकते थे । परंतु इस दायित्व को वे निभा नहीं सके। जिस प्रकार छायावादी कवियों की घोर वैयक्तिकता से चिढ़कर दिनकर जैसे राष्ट्रीय वृत्ति के कवि आगे आए, ठीक उसी प्रकार मराठी में स्वातंत्र्यवीर सावरकर की वाणी प्रस्फुटित हुई। आधुनिक मराठी कविता के इतिहास में रविकिरण मंडल का काव्य घोर व्यक्तिवाद का काल रहा है। इस प्रकार छायावादी कवि और रविकिरण मंडल के कवियों में वैयक्तिकता और सामाजिक दायित्व से पलायन की प्रवृतियाँ दिखाई देती है।

प्रमुख कवि :

रविकिरण मंडल की कविता में कुछ कवियों का योगदान कविता विकास प्रकिया में महत्त्वपूर्ण रहा हैं, वे इस प्रकार हैं- माधव ज्युलियन (मा.भ्य.पटवर्धन), गिरीश (शंकर केशव कानेटकर), यशवंत (यशवंत दिनकर पेंढारकर), श्रीधर बालकृष्ण रानडे, मनोरमा रानडे आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

रविकिरण मंडल के कविता की विशेषताएँ इस प्रकार हैं- रविकिरण मंडल की कविता स्थूल तथा सामान्य अनुभूतियों की है। रविकिरण मंडल के कवियों ने कविता को मंच के साथा जोड दिया। कवि सम्मेलनों की परंपरा इसी काल से शुरु हुई। इन्होंने सामान्य जनता की अनुभूतियों को सामान्य स्तर पर से ही व्यक्त किया है। इस

काल में कविता रचने के साथ-साथ गायन पद्धति भी शुरु हुई। फारसी के लोकप्रिय छंद गज़ल को मराठी में रूढ़ किया गया। सामाजिक विषयों पर खंडकाव्य लिखने की परंपरा इसी काल से शुरु हुई।

2:1:3 रविकिरण मंडलोत्तर मराठी कविता : (1935-1950 ई.)

1920 से 1935 ई. तक का काल रविकिरण मंडल के जवानी का काल था। 1935 ई. के बाद एक ओर रविकिरण मंडल काव्य को ही आदर्श मानकर उसी प्रकार की रचनाएँ लिखी जाने लगी, तो दूसरी ओर चंद्रशेखर तथा तांबे को अपना आदर्श मानकर शुद्ध सौंदर्यवादी अवैयक्तिक काव्य की सृष्टि होने लगी। परिणामतः इस काल के काव्य में पुनरावृत्ति के दोष आने लगे। अंतर्मुखता तथा अति वैयक्तिकता की प्रवृत्ति बढती गई। केशवसुत की सामाजिक दृष्टि का धीरे-धीरे लोप होने लगा। प्रगतिशीलता का अभाव हो गया।

1935 ई. के आसपास आधुनिक मराठी कविता की गति धीमी हो गयी । इतिहासकारों का मत है कि, 1920 ई. में जो परिस्थिति निर्माण हो गयी थी, वही स्थिति 1940 ई. के समय माधव ज्युलियन, भा.रा. तांबे के निधन के कारण हुई। यह महसूस होने लगा कि, स्वच्छंदतावाद में विकृति आने लगी थी, आत्मकेंद्रित संकुचित प्रवृत्ति, समकालीन वास्तविकता से दूर, सामान्य जीवनानुभव, शब्दगत जानपदगीत, काणेकर, केशवकुमार का पद्य से गद्य की ओर प्रयाण आदि कारणों से मराठी कविता का विकास रुक गया है ।

कुसुमाग्रज ने ऐसी परिस्थिति में मराठी कविता की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले ली। उनका काव्य लेखन 1935 ई. से पहले ही आरंभ हो चुका था । नई लहर नई कविता की थी, यह आगे चलकर आनेवाली ही थी, स्वच्छंदतावादी सम्प्रदाय अभी समाप्त हुआ नहीं था। कवि अनिल, बोरकर, कुसुमाग्रज के रूप में नया आकार लिया। कवि अनिल मुक्तछंद और आंतरराष्ट्रीय मानवतावाद की ओर झुक गये, आर्थिक, सामाजिक विषमता और संघर्ष, राजनीतिक आंदोलन आदि के कारण क्रांति की भाषा से काव्य संवेदना प्रभावित हो गयी।

कुसुमाग्रज की कविता में क्रांति की प्रखर अभिव्यक्ति दिखाई देने लगी ऐसा लगा कि मानो केशवसुत सम्प्रदाय का पुनर्जीवन हुआ है। बोरकर ने तांबे सम्प्रदाय की वीणा संभाली ऐसा कहा जाने लगा। वास्तव में यह काल कविता की दृष्टि से क्रांतिपूर्व

काल था। वास्तवता के आवाहन समझ में आते थे, पर स्वच्छंदतावाद की वृत्ति छूटती नहीं थी। रविकिरण मंडल के कुछ कवियों का काव्य लेखन भी इस काल में जारी रहा। लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से इनका कार्य समाप्त हुआ था।

20 वी शताब्दी के पाँचवे दशक में मराठी काव्य में परिवर्तन हुआ । नए रास्ते मिल गये, नये अनुभवों के कारण कविता में प्रगल्भता आयी । मर्ढेकर और मुक्तिबोध ने इसी दशक में नयी कविता लिखी। 1931 ई. से पु.शि. रेगे लिख रहे थे।

1935 से 1945 ई. का यह दशक मर्ढेकर क्रांति का पूर्व तैयारी का दशक माना जाता है। ऐसा कहना ठीक नही हैं कि, अनिल, कुसुमाग्रज बोरकर आदि के स्वच्छंदतावादी अनुभव इतने स्पष्ट थे कि उन्होंने नये काव्यक्रांति की नींव डाली है, लेकिन अनिल ने मुक्तछंद और आंतरराष्ट्रीय मानवतावाद से, कुसुमाग्रज वस्तुनिष्ठ सामाजिक अनुभव और प्रखर अभिव्यक्ति और बोरकर के अनोखे प्रतिमा सृष्टि से मराठी कविता में नयी कविता के दरवाजे खोल दिये। इन तीनों के इर्द-गिर्द ना. ग. जोशी, रा.अ. काळेले, मनमोहन, श्रीकृष्ण पोवळे, वा.रा.कांत, कृ.ब. निकुंब, बी. रघुनाथ, भालचंद्र लोवलेकर, ना.घ. देशपांडे, संजीवनी, वि.म. कुलकर्णी ,सोपानदेव चौधरी, राजा बढे, पद्मा आदि कवियों का काव्य सृजन शुरु था।

डॉ. वसंत बिरादार कहते हैं - ‘‘इस दशक के अंत में कुसुमाग्रज, बोरकर, कांत, काळेले व पोवळे ये उस काल के पाँच कवि के रुप में पहचाने जाने लगे। आगे चलकर काळेले के जगह कृ.ब.निकुंब का नाम लिया गया।’’[7]

1935 ई. से हिन्दी में जिस प्रकार प्रगतिवाद की एक निश्चित काव्यधारा मिलती है, उसका मराठी में अभाव है। कवि अनिल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने रविकिरण मंडल की काव्य परंपरा की संकुचित, आत्मकेंद्रित तथा व्यक्तिवादी कविता का दायरा तोड़कर उसके स्थान पर सामाजिक चेतना की प्रगतिशील कविता को प्रवाहित किया।

आगे चलकर मराठी में नव कविता का जो आंदोलन शुरु हुआ, उसके आरंभिक सभी संकेत अनिल की कविताओं में मिलते हैं। इन्होंने ‘मुक्तछंद’ की शुरुआत की। हिन्दी की तरह मराठी में उनके इस मुक्त छंद के प्रयोग की कठोर आलोचना हुई। श्री. अ. ना. देशपांडे ने लिखा है- ‘‘1920 ई. के बाद मराठी काव्य

---

7) बिरादार वसंत – ‘आधुनिक मराठी वाङ्मयाचा इतिहास’, पृ. 19

इतिहास की यह सबसे प्रक्षोभक घटना मुक्तछंद की शुरुआत है।''[8]

सारे विरोधी तत्वों के बावजूद अनिल मुक्त छंद पर डटे रहे और उन्होंने मुक्त छंद में न केवल अत्यंत सशक्त प्रयोग कर दिखाए बल्कि मुक्त छंद को साहित्यिक जगत् में मान्यता भी दिलाई।

कुसुमाग्रज रविकिरण मंड़ल तथा केशवसुत इन दोनों परंपराओं से जुड़े कवि हैं। क्योंकि कुसुमाग्रज के काव्य का बाह्य रूप रविकिरण मंड़ल की ही तरह है। परंतु कविता का आतंरिक रूप केशवसुत की परंपरा में आता है।

इनकी कविता का विवेचन करते हुए शंकर वैद्य ने कहा है - ''कुसुमाग्रज ने विशिष्ट समस्या के मूल में स्थित शाश्वत भावना के व्यापक जीवन के साथ उसके नाते-रिश्ते की खोज कर प्रतीकात्मक पद्धति पर अनेक कविताओं का निर्माण करने के कारण काल के बंधन में जकड़ी हुई कविता छूट सकी है।''[9]

कवि अनिल की तरह इनके पहले काव्य-संग्रह पर रविकिरण मंड़ल का जबरदस्त प्रभाव है। 'जीवन लहरी' 1933 ई. में छपे इस संग्रह की कविताओं का वातावरण स्वप्नमय, रम्य तथा अद्भुत है। यत्र-तत्र कुछ ऐसी कविताएँ अवश्य हैं, जिनमें उनके भविष्य के कवि व्यक्तित्त्व का आभास मिलता है। 'विशाखा' 1942 ई. में उनका दूसरा काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। उनकी कवित्व शक्ति का चरम उत्कर्ष इस में मिलता है। गोंविदाग्रज के बाद इतनी भव्य कल्पनाएँ इन्हींकी कविताओं में मिलती है। इनकी कविताओं पर गोविंदाग्रज का प्रभाव दिखाई देता है।

कसुमाग्रज ने स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित कई उत्कृष्ट कविताएँ भी लिखी हैं। 'बली', 'लिलाव', 'जालियाँवाला बाग', 'बंदी' इस प्रकार की कविताएँ हैं। इन कविताओं में दीन-दलितों के दु:खों को भी स्वर दिया गया है। श्री अ.ना. देशपांडे जी के अनुसार, ''सामाजिक तथा आर्थिक असमानता को समाप्त करने के लिए केवल आँसू ढालने से काम नहीं चलेगा अथवा 'देवाच्या द्वारी' जाने से काम नही चलेगा, उसके लिए क्रांति की घोषणा करनी होगी।''[10]

'गर्जा जयजयकार क्रांतीचा' इनकी अमर रचना है। 'बलिदान', 'हा काठोकाठ कटाह भरु या' आदि कविताओं में जागृत तथा प्रक्षुब्ध सामाजिक चेतना की

---

8) देशपांडे अ.ना. – 'आधुनिक मराठी वाङ्मयाचा इतिहास', पृ. 391

9) वैद्य शंकर - प्रस्तावना, 'रसयात्रा', पृ. 18

10 देशपांडे अ.ना. 'आधुनिक मराठी वाङमयाचा इतिहास', पृ. 394

अभिव्यक्ति हुई है।

इसप्रकार कुसुमाग्रज और अनिल दो ऐसे कवि हैं जिनके काव्य में समसामयिक परिस्थितियों की जीवंत अभिव्यक्ति हुई है। सामाजिक चेतना तथा प्रगतिशीलता के अलावा कुसुमाग्रज ने प्रेम कविता भी लिखी हैं। अर्थात यहाँ पर भी उन्होंने वीर पुरुष का ही प्रेम केंद्र में रखा है, सर्वसामान्य का नहीं।

'विशाखा' नामक संग्रह पर प्रगतिवाद का स्पष्ट प्रभाव है। वे 'किनारा' में इस प्रभाव से मुक्त हो गए हैं। 'विशाखा' में क्रांतिकारी दिखाई देनेवाला कवि 'किनारा' तक आते-आते गांधीवादी बन गया है। इस प्रकार 1950 ई. तक आते-आते मराठी काव्य-प्रवाह अधिक विस्तृत, गहरा तथा दृढ होता गया। हास्य-व्यंग्य, राष्ट्रीयता, प्रणय, प्रकृति, अध्यात्म आदि इसकी प्रमुख धाराएँ हैं। फिर प्रत्येक धारा के कवि अलग हैं। इस समय तक आते-आते मराठी साहित्य सृजन का क्षेत्र भी विस्तृत हो गया । शिक्षा की सुविधाएँ सभी को प्राप्त होने लगी। कविता में आँचलिकता के तत्त्व भी उभरने लगे और कविता बहुआयामी बनने लगी।

समसामयिक परिवेश:

1920 ई. के बाद की राजनीतिक उथल पुथल की कोई प्रतिध्वनि यहाँ सुनाई नहीं देती। कवि प्रणय तथा ग्राम गीतो में ही खो गए। ये ग्राम गीत भी पूर्णत: काल्पनिक तथा अतिशयोक्तिपूर्ण होते थे। कविता जन सामान्य तक पँहुच गई थी। परंतु अब उसमें उपर्युक्त विकृति भी आ गयी थी, जिसके कारण विकास की गति ही कुंठित हो गई। इस स्थिति को बदलना जरुरी था। इसी समय भारतीय साहित्य में प्रगतिवाद की लहर आयी। इधर हिंदी प्रदेश में प्रेमचंद की अध्यक्षता में प्रगतिवादी आंदोलन की शुरुआत हुई थी। रुसी क्रांति की सफलता के बाद भारतीय युवा मन मार्क्स के विचारों की ओर आकृष्ट हो रहा था। साहित्य में इस प्रकार की उथल पुथल हो रही थी। एक ओर स्वतंत्रता आंदोलन अपनी संपूर्ण शक्ति के साथ आगे बढ रहा था। इन सारी परिस्थितियों से उस वक्त का मराठी युवक तटस्थ कैसे रह सकता था? एक ओर इस प्रकार के आंदोलन थे दूसरी ओर कल्पनाशील मराठी काव्य। इसी कारण मराठी काव्य में नवीनता का आग्रह होता गया।

प्रमुख कवि :

इस काल के प्रमुख कवियों में केशवसुत सम्प्रदाय को चलानेवाले कवि काव्यविहारी, राष्ट्रीय भावना से जागृत होकर लिखनेवाले कुंज विहारी, साने गुरुजी, सेनापति बापट, रविकिरण मंडल के प्रतिध्वनित हुए कवि, या. मु. पाठक , वि.भ. कोलते, भ.श्री. पंडित, स.अ. शुक्ल, निशिगंध गोपिनाथ, वा.भा. पाठक, मंडल के जानपद गीत परंपरा को आगे चलानेवाले ग.ह. पाटील, ग.ल. ठोकळ, गुढवादी वा.ना. देशपांडे, प्रगतिशील समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होकर लिखनेवाले अनंत काणेकर, विडंबनकार कुसुमाग्रज, पु.शि. रेगे, केशवकुमार (प्र.के. अत्रे), बहिणाबाई चौधरी, कवि अनिल, बोरकर आदि कवियों का काव्य लेखन इस काल के उत्तरार्ध में शुरु हुआ। काव्य विकास के धागे एक दूसरे में कैसे गूँथे हुए थे, यह स्पष्ट हो जाता है।

पु. शि. रेगे, वा.रा. कांत, बा.भ. बोरकर, रा.अ.काळेले, ना.ग. जोशी, भालचंद्र लोवलेकर, सोपानदेव चौधरी सुंधाशु, ना.घ. देशपांड़े, मनमोहन श्रीकृष्ण पोवळे, कृ.ब. निकुंब, वि.म. कुलकर्णी, बी. रघुनाथ, ग.दि. माड़गूळकर, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, शांता शेळके आदि महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

शांताराम आठवले, राजा बढे, दा.अ. कोरे , ना.मा. संत, मा.गो. काटकर, पु.मं. लाड, वसंत वैद्य, द.चि. सोमण इत्यादी कवियों के कविता संग्रह 1945 ई. के आसपास प्रकाशित होते रहे।

प्रमुख विशेषताएँ :

रविकिरण मंडलोत्तर कविता की विशेषताएँ इस प्रकार हैं- रविकिरण मंडलोत्तर काल में अन्य भारतीय भाषाओं की तरह मराठी में भी इस समय प्रगतिशीलता के तत्त्व उभरने लगे थे। हिंदी की तरह साम्यवाद को अपना आदर्श मानकर काव्य-लिखने वाले कवियों की परंपरा मराठी में नहीं मिलती। काव्य को जनसाधारण के विषयों से, जन साधारण की भाषा में समृद्ध करने का आंदोलन यहाँ नहीं हुआ। कल्पना के स्थान पर यथार्थ, प्रणय के स्थान पर यथार्थ, कोरी भावुकता के स्थान पर वैचारिकता को स्थान देने का कार्य इस समय शुरु हुआ। कविता-कामिनी को छंदों के बंधनो से मुक्त करने का प्रयत्न हुआ। इस समय के कवियों ने विषयों में विविधता रखी।

2:1:4 मर्ढेकर युगीन कविता: (1946-1960 ई.)

आधुनिक मराठी कविता में 1946 से 1960 ई. तक के काल को मर्ढेकर युगीन कविता का काल माना जाता है। आधुनिक जीवन की निरर्थकता को शब्दबद्ध करने वाले कवि बा.सी. मर्ढेकर आधुनिक मराठी के विशिष्ट कवि हैं। आधुनिक काल के अन्य श्रेष्ठ कवियों की तरह बा.सी. मर्ढेकर के पास भी दूरदृष्टि है। इसलिए आधुनिक मराठी कविता में मर्ढेकर युगीन कविता का अपना एक विशिष्ट स्थान है। 1947 ई. में यह देश स्वतंत्र हुआ। इस समय के भारत - पाक विभाजन ने मनुष्य की क्रूरता तथा पशुवृत्ति को फिर से स्पष्ट कर दिया था। सर्वसामान्य व्यक्ति सब प्रकार से अपने को पूर्णतः पराजित अनुभव कर रहा था। 1950 ई. के पूर्व के काव्य का आशावादी दृष्टिकोण गलत लगने लगा था। सामान्य व्यक्ति के इस दर्द को तटस्थ रूप से शब्दबद्ध करना आवश्यक था। किसी भी प्रकार की राजनीतिक अथवा आर्थिक विचार धारा के दबाव से मनुष्य को मनुष्य के रूप में व्यक्त करना जरुरी था। शब्दाडम्बर के स्थान पर अत्यंत व्यंजना प्रधान रूप में इस दर्द को अंकित करना इस युग की माँग थी। टूटते हुए जीवन मूल्यों का, यंत्र-युग के कारण बढती हुई कृत्रिमता की प्रवृत्ति का, स्वार्थी तथा संकुचित दृष्टि का पर्दाफाश करना जरुरी हो गया था। पुराने कवि अपने ही आदर्शो से जुडे थे। इसी कारण आधुनिक कवियों द्वारा इस नये युग बोध को व्यक्त करने के प्रयत्न शुरु किए।

डॉ. प्र.न. जोशी मर्ढेकर युगीन कविता के संदर्भ में कहते हैं कि, ''कवि बा.सी. मर्ढेकर जब इंग्लैड गये थे तब वहाँ के समकालीन कवियों का प्रभाव मर्ढेकर पर पडा। विदेश मे यीट्स, एझरा पौंड, इलियट आदि समकालीन कवियों ने प्रस्थापित रोमँटिसिझम के विरुद्ध की हुई क्रांति को उन्होंने आँखों से देखा और उनके मन में नई कविता के अंकुर फूट पडे।''[11]

इसप्रकार कालप्रवाह ने मर्ढेकर के साहित्य को ही सर्वोत्कृष्ट साबित कर दिया है। कुल मिलाकर कह सकते हैं कि मर्ढेकर अपनी अनुभूतियों के प्रति अत्यधिक इमानदार साहित्यकार थे। उनके कारण मराठी की सभी विधाओं में नवीन प्रवाह शुरु हुए। नई कविता तथा नई समीक्षा के वे जन्मदाता हैं।

---

11) डॉ. जोशी प्र.न. 'अर्वाचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास', पृ. 120

समसामयिक परिवेश -

1950 ई. तक आते आते सारे विश्व में मनुष्य जाति तथा उसके भविष्य के प्रति जबरदस्त निराशा उत्पन्न हो गई थी। दो महायुद्धों में लाखों की संख्या में लोग मारे गए थे। दूसरे महायुद्ध के कारण संपूर्ण युरोप की सामाजिक तथा पारिवारिक व्यवस्था तहस-नहस हो चुकी थी। सभी श्रेष्ठ मानवी मूल्यों की स्थिति हास्यास्पद हो गयी थी। व्यक्तिवादी भावना का जोर बढ रहा था। व्यक्ति आरंभ से लेकर अंत तक अकेला ही है। इस प्रकार के विचार बढ रहे थे। सभी मंगलमय तथा पवित्र बातों पर से विश्वास उड रहा था। नये जीवन मूल्य सामने नहीं थे और पुराने टूट रहे थे। इस कारण समाज खोखला बन रहा था। दूसरी ओर यंत्र बडी तेजी के साथ मनुष्य का स्थान ले रहे थे। यंत्रो की संस्कृति बढ रही थी। इस यंत्र संस्कृति के सम्मुख मनुष्य अत्यंत ही तुच्छ और क्षुद्र बन गया था। मनुष्य की सम्पूर्ण व्यवस्था को यंत्र बदल रहे थे। तीसरी ओर पूँजीवादी व्यवस्था प्रबल हो रही थी। मजदूर तथा मध्यम वर्ग का शोषण अधिक तेजी के साथ शुरु था।

प्रमुख कवि और प्रमुख विशेषताएँ :

मर्ढेकर युगीन कविता के प्रमुख कवि हैं- बा. सी. मर्ढेकर और य. द. भावे।मर्ढेकर युगीन कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं- प्रबल वैचारिकता, सूक्ष्म मानसिक दु:खों का महत्त्व, जीवन के दूसरे आयाम का निर्भीक चित्रण, भाषा के क्षेत्र में अत्यधिक ध्वन्यात्मकता का प्रयोग, जन साधारण के दु:खों का चित्रण, मूल्यगत परिवर्तन की अत्यंत कलात्मक अभिव्यक्ति, कविता और समीक्षा क्षेत्र में क्रांति आदि।

2:1:5 नयी कविता : (1950 ई.)

आधुनिक मराठी काव्य-साहित्य में 1950 ई. के बाद का काल नयी कविता का काल कहलाता है। इस काल में कविता को अधिक संवेदनशील तथा आधुनिकता से युक्त करने का क्रांतिकारी कार्य बा.सी. मर्ढेकर ने किया है। इसलिए इस काल को 'मर्ढेकर युग' भी कह सकते हैं। मर्ढेकर के काव्य में एक ओर जीवन की विसंगति को व्यक्त करने का प्रयत्न हुआ है, तो दूसरी ओर जीवन की कुरुपता को पकड़ने का। 'निराशा' इस कविता की प्रधान विशेषता है। डॉ.केशव सद्रे के अनुसार - ''केशवसुतादि के काव्य को 'आधुनिक' कहा जाता हो तो भी 'आधुनिकता' की और काव्य में 'नवीनता' की चर्चा मर्ढेकर की नयी कविता से शुरु हुई है । विशेषत: 1945

ई. के समय में मराठी साहित्य का जो पूर्णतया अलग रुप दिखाई देने लगा उसे 'नया' विशेषण से संबोधित किया गया ।''[12] मर्ढेकर युगीन कविता में व्यक्त निराशा का विरोध करके श्री. शरद्‌चंद्र मुक्तिबोध ने आशावादी नयी कविता की परंपरा शुरू की। इस काल में प्रगतिवादी कविता भी मिलती है। श्री. शरद्‌चंद्र, विंदा करंदीकर, नारायण सुर्वे इस काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। सूक्ष्म सौंदर्यवादी कविता की धारा भी इसी समय विकसित हुई। श्री. पु. शि. रेगे इस धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

आधुनिक मराठी कविता में आरंभ से ही जीवन के प्रति दो दृष्टिकोण विकसित होते गए। एक केशवसुत की समाजाभिमुख दृष्टि और दूसरी बालकवि अथवा माधव जयुलियन की शुद्‌ध कलावादी दृष्टि। इस काल में दोनों परम्पराओं के कवि मिलते हैं। समाजवादी दृष्टि रखनेवाले कवि हैं- मुक्तिबोध, विंदा करंदीकर, वसंत बापट, नारायण सुर्वे, वामन इंगोले और शुद्‌ध कलावादी दृष्टि को विकसित करनेवाले कवि हैं- बा.भ. बोरकर, पु. शि. रेगे आदि।

समसामयिक परिवेश-

केशवसुत के काल में अंग्रेजी राज्य के कारण ज्ञान-विज्ञान का नया परिचय भारतीय लोगों को हुआ था और विज्ञान की प्रगति के कारण इन्सान दुनिया पर अधिसत्ता निर्माण करना चाहता था। अपनी सत्ता स्थापित करने की आशा उसके मन में उत्पन्न हुई थी। यह आत्मविश्वास हमें केशवसुत और कुसुमाग्रज के साहित्य में दिखाई देता है। महायुध्दोत्तर काल में मनुष्य का स्थान चींटी जैसा हुआ। जिस विज्ञान पर उसे भरोसा था वही विज्ञान उस पर हावी हो रही थी। मनुष्य अपने मन का स्वामी भी नही, वह यंत्र के आधीन हो गया है, मनुष्य की मर्यादित शक्ति और विश्व का विराट रुप ऐसी अवस्था में उसे किसी का मार्गदर्शन नहीं। मर्ढेकर जी ने किंकर्तव्यविमूढ बने आधुनिक मानव मन के संवेदना को चित्रित करने का काम किया है। यहीं उनके कविता का नयापन, आशय वैशिष्टयपूर्ण है।

उनकी कविताओं में यंत्रयुग के कारण मनुष्य के जीवन में आयी हुई नीरसता, अनियंत्रितता तथा कृत्रिमता का चित्रण है। यह कृत्रिमता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को स्पर्श कर रही है। जीवन की विभिन्न स्थितियों पर कठोर व्यंग्य मर्ढेकर की कविताओं में है। जीवन के सौंदर्य तथा मांगल्य के क्षेत्रों को ही हम कब तक देखते रहेंगे? हमें कुरुपता,

---

12) डॉ. सद्रे केशव - कवितेतील आधुनिकता वाद, पृ.10 (प्रस्तावना)

विकृति, अमांगल्य आदि उपेक्षित क्षेत्रों को भी देखना पडेगा। उसके भीतर उतर कर उस के दर्द को समझ लेना होगा। इसी कारण मर्ढेकर जीवन को हिस्सों में बांटकर देखते नहीं, वे जीवन को समग्रता से देखना चाहते हैं।

आज के सामान्य मनुष्य की स्थिति क्षुद्र चींटी की तरह है, यह वे 'मुंगी' कविता में स्पष्ट करते हैं। चींटी को कोई भी शक्तिशाली व्यक्ति रौंद सकता है। 'गणपत वाणी' कविता में आज के सीमित होनेवाले महत्वाकांक्षा पर प्रकाश डाला है।

आरंभिक काल में उनकी कविता पर रविकिरण मंडल का प्रभाव हों तो भी बाद में 'कांही कविता' इस संग्रह में उनकी अलगता दिखाई देती है। गो.वि. करंदीकर ने उसकी विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है- ''विज्ञान पर मूलभूत निष्ठा, विज्ञान और बुद्धिवादी को मानव के सम्मुख रखने की छटपटाहट, पूँजीपतियों का अंतर्विरोध और शोंषितों का अनुभव, अज्ञानी, दलित और सामान्य मनुष्य के प्रति अथाह सहानुभूति, प्रस्थापित नेतृत्व के प्रति चीढ, झूठा अध्यात्म, पोशाख की संस्कृति आदि का तिरस्कार ये सभी बातें उनकी साम्यवाद की ओर झुकते हुए दिखाई देती है।''[13]

आधुनिक जीवन की निरर्थकता को शब्दबद्ध करनेवाले मर्ढेकर मराठी के विशिष्ट कवि हैं। उनकी कविता में केवल व्यक्तिगत कुंठाएँ नहीं हैं। उनके पास एक स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण भी है। प्रबल वैचारिकता, सूक्ष्म मानसिक दुःखों को महत्व, जीवन के दूसरे आयाम का निर्भिक चित्रण, कठोर यथार्थ का आग्रह ये मर्ढेकर की विषयगत उपलब्धियाँ हैं।

1950 ई. तथा उसके आगे मराठी काव्य में जिस निराश दृष्टिकोण का विकास हो रहा था, उसे मुक्तिबोध ने जबरदस्त आशावाद में बदल दिया। कवि शरदचंद्र मुक्तिबोध हिन्दी के प्रसिद्ध कवि गजानन माधव मुक्तिबोध के छोटे भाई हैं। हिन्दी काव्य क्षेत्र में जो कार्य गजानन का है, ठीक उसी प्रकार का कार्य मराठी में शरदचंद्र मुक्तिबोध का है। शरदचंद्र मुक्तिबोध मूलतः मार्क्सवादी विचारों के प्रसिद्ध कवि हैं। यह सही है कि, मराठी में मार्क्सवाद से प्रेरणा लेकर लिखनेवालों की संख्या हिन्दी की तुलना में बहुत कम है। जब 1935-36 ई. में अधिकांश भारतीय भाषाओं में प्रगतिवादी आंदोलन शुरु हुआ, तब भी मराठी साहित्य उस से अछूता ही रहा । आरंभिक काल में विंदा करंदीकर इस विचार धारा से प्रेरित थे। वास्तव में मार्क्सवादी कविता की

---

13) करंदीकर गो. वि. - परंपरा आणि नवता, पृ. 222

शुरुआत कवि शरदचंद्र मुक्तिबोध से हो जाती है। बाद में नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, दया पवार आदि ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

नयी कविता की दूसरी पीढी का उद्‌य होते समय ही वसंत हसबनीस, ग.ब. ग्रामोपाध्ये और य.द.भावे आदि कवियों ने भी नई कविता में अपनी अपनी पद्‌धति से योगदान दिया।

नई कविता के लक्षणों को अपनी-अपनी पद्‌धति से स्वीकार कर कविता को प्रयोगशील बनानेवाले कवियों में विंदा करंदीकर, मंगेश पाडगांवकर, वसंत बापट और इंदिरा संत प्रमुख हैं। त्र्य. वि. सरदेशमुख दूसरी पीढी के कवि हैं ।

आधुनिक मराठी कविता में सर्वाधिक प्रयोगशील कवि के रूप में विंदा. करंदीकर का नाम लिया जाता है। करंदीकर मार्क्सवादी साहित्य से प्रेरणा लेकर मराठी में आए मराठी काव्य साहित्य में हिन्दी की तरह प्रगतिवादी काव्य आंदोलन चल नहीं पाया। कुछ कवियों ने इस आंदोलन से प्रभावित होकर काव्यरचना शुरु की, परंतु बाद में वे इससे दूर हट गये। करंदीकर इसी श्रेणी में आते हैं। अपवाद रूप में केवल नारायण सुर्वे ही ऐसे कवि हैं जो आरंभ से आज तक इस विचारधारा को आत्मसात करके चल रहे हैं। 'स्वेदगंगा' (1949), 'मृदगंध' (1954), 'धृपद' (1959), 'जातक' (1964) ये महत्त्वपूर्ण कविता संग्रह हैं।

करंदीकर की कविता में आध्यात्मिक अनुभव व्यक्त हुए हैं। इस संदर्भ में मंगेश पाडगांवकर कहते हैं - ''इतिहास, विज्ञान, साम्यवाद आदि का चिंतन करंदीकर की कविता में अनेक जगह दिखाई देती है। उसीके साथ पारंपारिक आत्मदर्शन दिखता है। विज्ञान और अध्यात्म में करंदीकर को विरोध दिखाई नहीं दिया । उल्टा उनमें मेल कराने की दृष्टि है और उनका झुकाव भी इसी तरफ दिखाई देती है।''[14]

राष्ट्रसेवा दल साने गुरुजी की जीवन दृष्टि से प्रेरित होकर कार्य करनेवाली समाजवादी युवकों का एक संगठन है। श्री. बापट इस संगठन से आरंभ से ही संबंधित रहे हैं। इस संगठन के द्‌वारा, तीव्र सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता के संस्कार ड़ाले जाते हैं। वि. वा. शिरवाडकर कहते हैं - ''समाजाभिमुखता उनके कविता की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। यह इस संस्कार का ही परिणाम है । आर्थिक विषमता, दास-मालिक संबंध पर खडी समाज रचना नष्ट हुए बिना, सुख के द्‌वार खुलते नहीं ऐसी कवि की

---

14) पाडगांवकर मंगेश - संहिता, पृ. 11

श्रद्धा है। स्वतंत्रता से सब प्रश्न मिटते नहीं, आगे की लढाई स्वयं के साथ ही लढना है और वह अधिक कठिन है । ’’[15]

वसंत बापट, विंदा तथा मंगेश की परंपरा के कवि हैं। वास्तव में इन तीनों कवियों ने मिलकर मराठी काव्य क्षेत्र को व्यापकता तथा गहराई दी है। नये काव्य के प्रतिनिधि कवि के रूप में बापट का नाम लिया जाता है।

मंगेश पाडगांवकर एक स्वतंत्र कल्पनाशील कवि हैं। आरंभिक काल में चित्रित प्रकृति के प्रति आस्था यह उनकी कविता की विशेषता है। और यहीं से उनकी भावपूर्ण कविता खिली हुई है। उनकी कविता में प्रेम भाव के विविध छटाओं के सहज दर्शन होते हैं। वा.ल. कुलकर्णी इनकी कविता के संबंध में कहते हैं -‘‘प्रेम भाव यह एक गंभीर भाव है। पूरे मन को व्याप्त करने की शक्ति इस भाव के पास है। यह उनकी कविता से स्पष्ट होता है। ’’[16]

1950 ई. में इनका ‘धारा नृत्य’ नामक पहला काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की ‘जीवन-जीवन’, ‘अजाण’, ‘अश्रू’, ‘माती’, इन कविताओं में दीन दलित तथा पीडितों के प्रति सहज प्रेम तथा सहानुभूति की अभिव्यक्ति हुई है। दुःखी जनों के प्रति मानवता का भाव पाडगांवकर में दिखाई देता हैं ।

मंगेश मानते हैं कि, आज की कविता दलितों, पतितों, श्रमिकों तथा व्यथितों की है। मंगेश के काव्य विषय अत्यंत ही वैविध्यपूर्ण हैं। सामाजिक यथार्थ, आर्थिक दुरावस्था, यंत्र-युग में घुटता हुआ मनुष्य आधुनिक जीवन की नीरसता, कृत्रिमता, अर्थहीनता से लेकर प्रकृति प्रेम, प्रणय तथा शिशुभाव आदि तक सभी में वे सहजता से रमते हैं।

प्रमुख कवि :

दूसरे प्रवर्तन में नई कविता प्रस्थापित हुई और तीसरी पीढी में नवकाव्य, नवकवि जैसे शब्दप्रयोग क्षीण होते गये। नई कविता की प्रेरणा से सदानंद रेगे, दिलीप चित्रे और आरती प्रभू आदि ने आधुनिक मराठी कविता की कक्षा को और विस्तृत किया।

---

15) शिरवाडकर वि. वा. (प्रस्तावना) बिजली, पृ. 6

16) कुलकर्णी वा.ल. - मराठी कविता जुनी आणि नवी, पृ. 243

प्रमुख विशेषताएँ :

नयी कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं- सामाजिक यथार्थ, आर्थिक दुरावस्था, यंत्र युग में घुटता हुआ मनुष्य, आधुनिक जीवन की नीरसता, कृत्रिमता, अर्थ हीनता, प्रकृति का मानवीकरण, चिंतनपरक कविता का विकास, गीति काव्य का विकास, विविध प्रकार की काव्य-शैलियों का विकास, फारसी के गज़ल छंद की लोकप्रियता, महाकाव्य तथा खंडकाव्य का लेखन, पूर्णतः मुक्त छंद मे कविता लेखन आदि।

2:1:6 राष्ट्रीय काव्यधारा : (1920 – 1947, 1962-1971 ई.)

भारत की सभी भाषाओं में राष्ट्रीय काव्य-धारा मिलती है। विशेषतः 1920 ई. से 1947 ई. तक यह काव्य-धारा अत्यधिक प्रबल रही। फिर 1962 ई. तथा 1971 ई. में इस प्रकार की कविताएँ हमें मिलती हैं। जब-जब राष्ट्र की स्वतंत्रता खतरे में आ जाती है, तब -तब इस प्रकार की कविताओं का सृजन स्वाभाविक है।

हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त से लेकर दिनकर तक राष्ट्रीय कवियों की काव्य परंपरा ही है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो मराठी में इस प्रकार की कविताएँ बहुत पहले से मिलती हैं। कवि श्री विनायक आधुनिक मराठी काव्य साहित्य की राष्ट्रीय काव्य-धारा के प्रथम कवि हैं। करीब 1880 से 1909 ई. तक इनका काव्य रचना काल रहा है। इस समय हिन्दी में इस प्रकार की प्रखर राष्ट्रीय कविताओं का अभाव सा है। महाराष्ट्र में इस प्रकार की राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के लिए सुयोग्य वातावरण था। लोकमान्य टिळक ने गणेशोत्सव की शुरुआत करके इसके लिए एक उपयुक्त मंच ही तैयार कर दिया था। परिणाम स्वरूप इस उत्सव के बहाने तीव्र राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति शुरु हुई।

समसामयिक परिवेश -

1920 से 1947 ई. और 1962 से 1971 ई. में आम तौर पर इस प्रकार की कविताएँ देखने को मिलती हैं। स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का मोहभंग आदि घटनाएँ इस समय देखने को मिलती है। 1910 से 1950 ई. तक संपूर्ण देश में गांधी जी का कार्य तेजी से उभर रहा था। दुर्भाग्य से मराठी में इनकी कोई अभिव्यक्ति नहीं है। इस दृष्टि से हिंदी काव्य गांधीवाद से अधिक प्रेरित हुआ। गांधीवादी कवियों की एक परंपरा ही वहाँ मिलती है। मराठी में केवल साने गुरुजी ही

अपवाद स्वरूप में गांधीवादी कवि हैं। मराठी साहित्य में सत्य, अंहिसा, निशस्त्र युद्ध आदि कविता के विषय नहीं बन सके। 'चलेजाव' और 'नमक सत्याग्रह' कवियों को प्रेरित नहीं कर सके।

1947 ई. के बाद राष्ट्रीय कविता का अर्थ ही बदलने लगा। स्वतंत्रता पूर्व वही कविता राष्ट्रीय कहलाती थी, जिसमें गुलामी के प्रति नफरत, स्वतंत्रता का आग्रह, त्याग और बलिदान की प्रतिस्थापना का उद्देश्य, क्रांति, वीरत्व की घोषणा आदि हो। परंतु स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय कविता का अर्थ होने लगा-जो कविता आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक समता का आग्रह करती हो, अन्याय, अत्याचार तथा ढोंग के प्रति बुंलद आवाज करती हो, आम जनता की बात करती हो। इस दृष्टि से प्रगतिशीलता का आग्रह करनेवाली कविता ही राष्ट्रीय कविता कहलाने लगी। चीनी आक्रमण, पाक आक्रमण, बांगला देश स्वतंत्रता युद्ध आदि महत्त्वपूर्ण घटनाओं के समय राष्ट्रीयता को जगाने वाली कविताएँ प्रस्फुटित हुई थीं। आधुनिक मराठी में राष्ट्रीय काव्य-धारा की यह परंपरा काफी पुरानी, विस्तृत तथा गहरी है।

प्रमुख कवि :

विनायक दामोदर सावरकर, कवि गोविंद , साने गुरुजी आदि का राष्ट्रीय काव्य-धारा में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं। कवि दु.आ. तिवारी, टेकाडे, बेहरे, वसंत बापट, कुसुमाग्रज, अनिल, ग.दि. माडगूळकर आदि राष्ट्रीय काव्यधारा के अन्य कवि हैं।

प्रमुख विशेषताएँ :

राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं- देशभक्ति की भावना, स्वतंत्रता का आग्रह, गुलामी के प्रति नफरत, त्याग और बलिदान, क्रांति की भावना, वीरत्व की घोषणा, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समता, अन्याय, अत्याचार, ढोंग आदि का विरोध, आम जनता का महत्त्व आदि।

2:1:7 साठोत्तरी मराठी कविता : (1960 ई.)

1960 ई. के बाद आधुनिक मराठी कविता के क्षेत्र में विविध प्रवृतियाँ उभरी हैं। कविता के अनेक सोपान उभरकर सामने आए हैं। इनमें प्रमुख हैं- स्वच्छंदतावाद का नया प्रवाह, मराठी गज़ल, सुरेश भट्ट की पीढी, आज की कविता, लोकगीत प्रवाह की कविता, ग्रामीण कविता, मुस्लिम कविता, स्त्रीवादी कविता, दलित कविता आदि।

1960 ई. के बाद मराठी कविता बहिर्मुखता की वृत्ति छोड़कर अधिक अंतर्मुख होने लगी। अब कवि अपने अंतर्मन की गहरी खोज करने लगे। मनुष्य मन की गहराई की कोई मर्यादा नहीं। कविता का असली क्षेत्र यही मन है - इस प्रकार के विचार व्यक्त किये जाने लगे। समाज,वातावरण, राजनीति आदि को मन की अतल गहराई में ले जाकर वहाँ से प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की जाने लगी। एक ओर मर्ढेकर की यह परंपरा है तो दूसरी ओर कविता को समाज जीवन के साथ जोड दिया गया तथा व्यक्ति और समाज के संघर्ष को, प्रस्थापित व्यवस्था की भयंकरता को व्यक्त किया जाने लगा। यह परंपरा अनिल, मुक्तिबोध, कुसुमाग्रज की है।

इसप्रकार आज के सभी कवियों की कविताओं को इन दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक तीसरी धारा दलित काव्य की भी है। उसका विवेचन अलग से किया गया है।

साठोत्तरी कविता में नयी प्रवृत्तियों को लेकर लिखनेवाले कवियो में - अशोक शहाणे, रघु दंडवते आदि महत्त्वपूर्ण हैं। साठोत्तरी कविता के विद्रोह के बाहर रहकर भी कुछ इसी प्रकार की कविता लिखनेवाले कवियों में 'वसंत आबाजी डहाके' की कविताएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

1965 ई. के बाद प्रकाश में आये हुए अनेक कवियों में अस्तित्ववाद इंद्रियवाद, मनोविश्लेषणवाद आदि प्रवृत्तियों का दर्शन होता है। इसमें लक्ष्मीकांत तांबोळी का 'अस्वस्थ सूर्यास्त', विजय कारेकर का 'मी सूर्यमुक्त', वा. रा. सोनार का 'अनाद',जयवंत वष्ट का 'अंधारयात्रा', सुधाकर गायधनी का 'कवि कवितला समाधिस्थ', 'देवदूत' प्रकाश देशपांडे का 'प्रश्नायन', शरद साठम का 'गाज' अनिरुद्ध कुलकर्णी का 'डिसेंबर' आदि कविता संग्रहों का नाम लिया जाता है।

इनमें शायद सभी कवियों को जीवन की क्षुद्रता अथवा निरर्थकता, अकेलापन अथवा भयानकता ने, अंधकार अथवा नियति ने, अस्तित्व अथवा मृत्यु ने व्यथित और अस्वस्थ किया है। वि. ज. बोरकर, चंद्रकांत प्रभाकर देशपांडे, शशिकांत लोखंडे, विलास सारंग, प्रकाश कामतीकर, रमेशचंद्र पाटकर, दिलीप धोंडो कुलकर्णी, प्रभा गणोरकर, एकनाथ देशमुख, मनोहर वझे आदि के काव्य में भी यह प्रत्यय दिखाई देता है।

साठोत्तरी मराठी कविता में इस प्रकार के प्रमुख कवियों के रूप में महानोर, ग्रेस, म.म. देशपांडे, मधुकर केचे और गुरुनाथ धुरी सामने आते हैं।

आधुनिक मराठी कविता में से रोमँटिक प्रवृत्ति की अनेक दालान पूर्व परंपरा से प्रचलित हैं और अनेक कवि लक्षणीय कविता लिख रहे हैं। शंकर रामाणी, पु.शि. रेगे, और आरती प्रभू आदि के संस्कार से प्रेरित होकर आत्मलक्षी, नाद, लय, भान युक्त कविता लिख रहे हैं। पद्मा लोकुर, अनुराधा पोतदार, शिरीष पै, अंजली ठकार, शंकर वैद्य, श्रीधर शनवारे, सुरेश भट, सुर्यकांत खांडेकर, गंगाधर माहांबरे, संजीव शेवालकर, कृष्णा चौधरी, दत्ता हलसगीकर, सुशील पागरिया आदि कवि पारंपारिक गीत, भावगीत,भावकाव्य कम अधिक रोमँटिक भाव क्षमता से कविता लिखते समय ही नवस्वच्छंदतावाद की कुछ नया प्रत्ययकारी रूप लेकर अरंविद वामन, कुलकर्णी , गोंविद कुलकर्णी, पुरुषोत्तम पाटील, अंबादास माडगुळकर, जवाहर मुभा आदि कवि कविता लेखन का अनुभव ले रहे हैं।[17]

मराठी गज़ल की बहुत बडी परंपरा न होते हुए भी उसका उत्तरोत्तर विकास होते हुए दिखाई देता है। अमृत राय (1689-1753) और मोरोपंत की रचनाओं में गज़ल अवतरित हुई। किर्लोस्कर के 'शाकुंतल' में 'सूर' के साथ 'तालगज़ल' का स्पष्ट निर्देश है। बाद में रविकिरण मंडल में माधव ज्युलियन का गजलांजली, कवि गिरीश का फुलभार (1934), कांचनगंगा (1930), यशवंत के 'यशोगंध' (1930), में 'शामला', 'मेनका', 'आनंदकंद' आदि छंद में गज़ल आयी है।

कुसुमाग्रज की 'विशाखा' में, ना.घ. देशपांडे की 'अभिसार' में, अनिल की 'दशपदी' में, बोरकर की 'प्रेमकविता' में विंदा. करंदीकर के 'जातक' में, वा. रा. कांत के 'जातक' में, मंगेश पाडगांवकर के 'गज़ल' आदि में गज़ल का उल्लेख मिलता है।

गज़ल प्रवाह को एक सही दिशा देनेवालों में महत्त्वपूर्ण योगदान भट जी का है। 'रंग माझा वेगळा', 'एल्गार' इन संग्रहों में उनका सामर्थ्य दिखाई देता है। भट के बाद के कवियों में संजीव का 'गज़ल गुलाब' हिंमाशु कुलकर्णी का 'बाभुळबन' में के कुछ गज़ल, सुहासिनी इर्लेकर के 'अक्षर' में के कुछ गज़ल भावगीत ही हैं। शं. कं. कापडणीस ने 'आषाढधारा' (1984) में और डॉ. सा.का. गायकवाड ने 'गीतगुंजन' में गज़ल संग्रह प्रकाशित किया। इलाही जमादार (जख्रमा अशा सुंगधी) (1944) मुबारक

17) बिरादार वसंत - मराठी वाङ्मयाचा इतिहास , पृ. 370

शेख (काटयांचे ऋण) (1995), सतीश देवपूरकर (रानफुले 1994) सय्यद अल्लादिन (जिंदाबाद मुर्दाबाद) (1994 ई.) आदि के गज़ल संग्रह ख्यात हैं।

आज मराठवाडा, विदर्भ, प. महाराष्ट्र, खानदेश आदि क्षेत्र में काव्यलेखन तेजी से हो रहा है। इसमें ग्रामीण, दलित, जनजाति (आदिवासी) मुस्लिम, गुराख्री, कामगार आदि प्रवाहों का समावेश है।

इस प्रवाह में सृजनरत कवि और काव्य-संग्रह इस प्रकार हैं। श्रीकांत सदावर्ते (अंधाराचे अश्रू), सी. गा. मनाठकर ('जानकी काव्य' शूर्पणखां, 'नीवापांजलि', 'अभिमन्यू', 'विरहगूंजन', 'अंधता') गोपाळ काळे (मोहर), रे. रा. सनपूरकर (अंथाग सागरात) गोपाळ वांगीकर (मिरच्याचे खळे), राम शेवाळकर, भू.द. वाडीकर, राम अग्रवाल (राधा), भगवंत क्षीरसागर (मध्यान्ह), प्रकाश कामतीकर (शब्दांकित), माधव कदम ('क्षितिज फिरे गरगर' , 'मळा') लक्ष्मीकांत प्रामाणिक ('सरोवर'), कृष्णचंद ज्ञाते ('कोमल रिषभ') शंकर झुल्फे ('आभाळवेल', 'रानभूल'), गोंविद कुलकर्णी ('अनिमिष', 'पाऊले', 'मनाचे डोहे', तीन रंगाचे धनुष्य, 'सोनियाचा दिन'), बलभिमराज गोरे ('लघुत्तम चिंतनिका') बलवंत घोंगडें ('सावल्या', 'सांजबनातल्या सावल्या', 'रंग ओले जयतारा'), रेणू पाचपोर ('डाळिंबाचे दाणे','अवथर', 'चांद झुकला पाण्यात'), देविदास कुलकर्णी (झाडे पक्षी, संदर्भ) चंद्रकांत व्यवहारे (पथिक), भगवान अंजनीकर (साक्षदा) कै. प्रकाश ताडले (स्पर्शुली) श्री. दि इनामदार ('शिवगान', 'फुल फुलता राहिना', 'नभ मातीच्या कुशीत', 'दिंडी जाय दिगंतरा') राम मुकदम ('बेहोश चालताना') चंद्रकांत पाटील ('इत्यंभूत', 'बायको आणि इतर कविता') विश्वास वसेकर ('कोरसे', 'काळा गुलाब', 'पैगाम') , दीनानाथ फुलवाडकर ('अंधारकळया') तु. शं. कुलकर्णी (कानोसा)।

लोकगीत परंपरा की कविता लेखन होती रहीं। इसमें से कुछ महत्त्वपूर्ण कवि इसप्रकार हैं - मुक्ताई बाल, केशव शंकर धोंगडे (मुक्तेश्वरी गीता), अनंतराव जगताप ('इथे मराठीचिये नगरी', 'गांधीजी', 'शिवारातील गीते'), राजा मुकुंद (तणाव), मधू जामकर ('क्षितिजा', 'नादरंग', 'आकाशदिवे', 'रखमाई', 'आपुलीच वाद') के .डी. पवार (उद्रेक रेषा), उषा भालेराव (रानकामुन्या), रामकृष्ण बेले ('मी आक्रोश', 'भटक्यांची भ्रमंती', भ्रमंतीकराचा चढउतार) उत्तम राठोड (व्यासपीठ), भास्कर बडे (वावर), लक्ष्मण मारगिलवार (आभाळ पाहताना) दत्तात्रय उकंडे (पाऊस बन) आदि।

फ. मु. शिंदे (‘जुलूस’, ‘आदिम’, ‘वृंदगान’, ‘अवशेष’, ‘प्रार्थना’, ‘सार्वमत’, ‘दिल्ली ते दिल्ली’, ‘फकिराचे अभंग’, ‘आई आणि इतर कविता’, ‘गाथा’, ‘आयुष्य वेचताना’, ‘निरंतर’, ‘भूकंपाची मरण गाणी’, ‘मनाचे अभंग’, ‘मडकं गेंलं फुटून’, ‘सूर्यमुद्रा’), बा. ह. कल्याणकर (‘तांबडं फुटलं’, ‘उठाव’, ‘माळझरे’, ‘शिलालेख, ‘सोनचाफा’, ‘युध्द’, ‘जागल’), गजमल माळी (‘गंधवेणा’, ‘कामायणी’, ‘नागफणा आणि सूर्य’) बापूराव जगताप (‘मास्को पापण्याच्या किनाऱ्यात’, ‘निळया पहाडाच्या कविता’) पद्माकर (‘प्रफुल्ल पद्माकर’), भालचंद्र नेमाडे (‘मेलडी’,‘देखणी’), लक्ष्मीकांत तांबोळी (‘हुंकार’, ‘अस्वस्थ सूर्यास्त’, ‘मी धात्री मी धरित्री’) नागनाथ कोतापल्ले (‘मूडस्’) रे. भ. भारस्वाडकर (‘धनू’), प्रेमसिंग जाधव (‘स्वप्नील’, ‘वलय’), गणेशराज सोनाळे (आठवणींचे शिलालेख), यशवंत कानिटकर (‘मेनका’) शिवाजी गऊळकर (‘अपर्णा’) चंद्रशेखर कपाळे (गंधवती), तु.श. कुलकर्णी (कानोसा), रमेश दीक्षित (‘इब्लिश’) भ.मा. परसावळे (‘आरोह’, ‘रस्ते दुभंगत आहेत’), केशव बावसेकर (‘उर्ध्वगामी’, ‘तफावत’) महावीर जोधळेकर (‘पावसाचे पाय’, ‘बाहुलीचे डोळे’) भगवान कौठेकर (‘वसुधा’, ‘दीप्तिश’, ‘निशांत’, ‘भ्रमविभ्रम’, ‘भाळ अभाळ’) नागनाथ हेगे (शिवांगी) डॉ. सुभाष राजूळे (‘उषःकाल’, ‘गुलमोहर’, ‘सावली’) अरुण नायगावकर (संवाद), महादेश्वर डहाळे (किमया), विलास वैद्य (‘गलफ’, ‘आलाप’) भारत भूषण गायकवाड (‘आयुध’, ‘दिशान्त’) वसंत मा. जाधव (प्रेशक) फ.म. शहाजिंदे (‘निधर्मी’, ‘आदिम’, ‘शेतकरी’, ‘ग्वाही’) केशव मुंगीकर (‘टुकारी’) सुरेश सावंत (‘अबोली’, ‘दुभंग’) साहेब खंदारे (रात्रीच्या कविता) प्रा. नामदेव गरड (‘मृगधारा’) प्रा. महेश गोरे (शिवार) अशोक कुरुडे (करीब 5,6 कविता संग्रह प्रकाशित) लाकनाथ यशवंत (‘आता होऊन जाऊ द्या’, ‘आणि शेवटी काय झाले’) विलास पाटील (‘दुःखाचा आलेख’, ‘भंगलेले अभंग’) शेषेराव जाधव (‘अटक मटक’, ‘आनंद नगरी’) उत्तम अंभोरे (‘गनिम’), अरुण काळे (‘रायरनचे शहर’), प्रतिभा अहिरे (‘मला हवी असणारी पहाट’) किशोर घोरपडे (‘दलदल’), दिपक त्रिभुवन (‘माणसाचा जनक आणि कविता’), लहू कानडे (‘टाचा टिभां’) बा.ग. हरसूलकर, कृष्णकुमार, ना.दि. देशमुख, रवींद्र बोरकर, माधव कृष्णा सावरगावकर, विजय निरखी, श.श्री, काशीकर, दत्ता हलसगीकर, प्रल्हाद लुलेकर (‘आले ढग गेले ढग’) मनोहर मल्हार (श्वेतांबरी) नारायण बोरुळकर (‘हिरव्या हिरव्या कुरणावर’, ‘आदिवासी

कृषिगीते') हरिहर मातेकर, त्र्यंबक वसेकर, बस्वराज करकेलीकर, यशवंत कोरेकल, शंजा. पुरवार, प्रभाकर राऊत, संभाजी शिराळे, यादवसूत, विश्वनाथ मुडपे, धनंजय गुडसूरकर, चंद्रकांत डोणगापुरे, उगवले, श्रीमंत बिराजदार, अलकनंदा धोत्रे, प्रेमकुमार मिंचे, सुहास जेवळीकर, विनयकुमार गवई, जयप्रकाश दगडे, बलभीम तरकस, आशा पैठणे, रा.मा. बेंडे, शिवाजी जवळगेकर, चंद्रज्योति भंडारी, वृंदा दिवाण, उषा टिळक, जीवन देसाई, दिलीप बा. डासाळकर, विद्यासागर पाटंगणकर, एस.एल. शिंदे, सरोज अहंकारी, अशोक अर्धापूरकर, प्रभू निलंग, वैशाली हंडे, नंदकुमार बालुवे, एम.के. गुम्मलवार, तुकाराम खिल्लारे, माणिक मातोळे, कमल कदम, त्रिवेणीकुमार कोलंबीकर,गोंविद गव्हाणे, विजयकुमार गव्हाणे, अशोक कोल्हे, चंद्रप्रकाश देगलूरकर, अशोक जेधे, शंकर देशमुख, गौतम रणवीर, दासू वैद्य, राजा होळकुंदे, केशव देशमुख, प्रवीण भोळे, प्रकाश थेटे, अशोक गवते, विजय वाकडे, गोंविद बनसोडे, व्यकंटेश चौधरी, दत्ता डांगे, गोविंद नांदेडे, ललिता शिंदे, प्रशांत वि. गौतम, पंडित शिंदे, संतोषकुमार सेलूकर, उन्मेष शेकडे, व्ही. जी. शिंदे, माधव जी. बसवंते, शिवाजी आंबुलगेकर, बळी आंबुलगेकर, प्रशांत आडे, रावसाहेब चोले, विद्या अतगरकर, निलांबरी शिर्के, अनिल मोरे, घोंडिराम सिंह राजपूत, उमाकांत नागटिळक आदि ।

आधुनिक मराठी कविता में ग्रामीण कविता का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। ग्रामीण कविता मे ग्रामीण मानवजीवन उसकी यातना, प्रकृति, घटना, तीज, त्यौहार, उत्सव, दरिद्रता आदि का गहरा चित्र ग्रामीण कविता में देखने को मिलता है। ग्रामीण कवि और काव्यसंग्रह निम्नलिखित है।

राम पिंगळीकर (साद), माधव कदम ('क्षितिज फिरे गरगरा', 'मळा') अमृत देशमुख ('तराणा', 'कॉकटेल, 'अमृताचे अभंग', 'आत्मरती', 'जीवनाच्या वाटा') विनय अपसिंगेकर ('तारकांच्या खुणा', 'पहाट पक्षी') ना.धो. महानोर ('रानातल्या कविता', 'वही', 'पळसखेडची गाणी', 'अंजिठा', 'प्रार्थना', 'दयाघना', 'पानझड') आनंद यादव ('हिरवे जग', 'गावाकडची माती') निवृत्ति चांडोळकर ('रानवेल', 'रानातले अभंग') सोपान हळमकर (आक्रोश) मुकुल बोरसे (समाधी), राजेंद्र अत्रे (पाऊस गाणे), जगदीश कदम (रास आणि डोंगर), जीवन आनंदगावकर ('एका कविच्या बरगडयावर', 'गाभेमर व इतर कविता', 'कविता विनाशाच्या हंगामात'), शंकर वाडेवाले ('कढवाही', 'आभाळ माती', 'माती बोले गूज'), विष्णू सलामपूरे

(गोलमोहराच्या झाडाखाली) जयराम खेडकर (‘ऋतुवंत’), शिवाजी मरगळे (काळी माय), इंद्रजित भालेराव (‘पीकपाणी’, ‘आम्ही काबाडाचे धनी’, ‘दूर राहिला गाव’, ‘कुणबिणीची काहाणी’), भारत सातपुते (‘जगण माणसाचं’, ‘हे तिरंगी झेंडया’, ‘कोपरखळया’, ‘साक्षरतेच चांगभल’) श्रीकांत देशमुख (‘शेतकरी चळवळ’, ‘बळीवंत’), रमेश चिल्ले (ओस झाल्या दिशा), आबा गणपती (भरजरी शाप), गंगाधर बनबरे (शर्थ देठ) आदि।

1980 ई. के बाद मुस्लिम मध्यमवर्ग ने आत्मपरीक्षण कर वास्तविकता स्वीकार कर बोलने के लिए शुरुवात की दलित, ग्रामीण कविता के प्रौढ काल में ही मुस्लिम कवियों ने काव्यलेखन आरंभ किया और 1990 में सोलापुर में पहला साहित्य संम्मेलन संपन्न हुआ। मुस्लिम कवि और उनका काव्य संग्रह निम्नलिखित हैं, मिर्झा अटकाल बिलोलीकर (‘गुदगुल्या’, ‘गुठलियाँ’) फ.म. शहजिंदे (‘निधर्मी’, ‘आदम’, ‘शेतकरी’, ‘ग्वाही’), एहतेशाम देशमुख (‘अजान’, ‘कुंपणातील हुंदके’), सय्यद अलाउद्दीन (जिंदाबाद मुर्दाबाद), डी.के शेख (‘प्रेमायण’, ‘सैतान युगातील कविता’, ‘पागल पोराच्या भंकस कविता’, ‘सैतान युगातील कविता भाग 2’, ‘प्रेमवाटीका’), सय्यद जब्बार पटेल (‘एकात्मता’), शेख अय्युब (‘वरदान’, ‘गुडी’) आदि ।

मराठी साहित्य में स्त्रीवादी कविता को आधुनिक काल में एक आंदोलन का स्वरुप प्राप्त हुआ है । कवयित्रियों के कविताओं में से स्वत्वरक्षण और मनुष्यता से खुद्द का अस्तित्व ढूँढनेवाली नारी मन की हुंकार स्त्रीवाद की भूमिका से उदय हुई । स्त्री पढी सुशिक्षित हुई, खुद्द की भावनाएँ कविता में व्यक्त करने लगी। स्त्रीवादी कविताएँ लिखनेवाली कवयित्रियाँ और उनके काव्य-संग्रह इसप्रकार हैं । - सौ. लता बोधनकर (‘कर्पूर’), सुहासिनी इर्लेकर (‘तृप्ती’, ‘अक्षर’), सुष्मा मुंजे (‘आत्ममग्ना’), सुनेत्रा ओक (‘चेतसी’), शैला लोहिया (‘गजाआडच्या कविता’), लीला धनपलवार (‘गुलमोहोर’, ‘वर्षा हसली’), रेखा बैजल, ललिता गादगे (‘फसवी क्षितिजे’, ‘अग्निजळ’), अनुराधा पाटील (‘तरीही’, ‘दिगंत’, ‘दिवसें-दिवस’) भारती पोळ (‘चंद्रसाक्षी’), जयश्री खारकर (‘मोरपंखी’), प्रतिभा देशपांडे (‘पहाटवेणा’), सौ. शारदा खंडगावे, डॉ. वृषाली किन्हाळकर (‘वेदना’), डॉ. प्रभादेवी देव, आत्मीयता घंटे संध्या रंगारी, सौ ललिता शिंदे, मीतल वसमतकर, प्रमिला दंडवते, डॉ.प्रणिता चाकुरकर (‘भावतरंग’), सौ. गीता लाटकर, सुमती उपासनी, प्रतिमा इंगोले, सुमति लांडे आदि ।

समसामयिक परिवेश -

आधुनिक हिंदी कविता मे 1960 ई. के बाद की कविता को समकालीन कविता के नाम सें जाना जाता है। और आधुनिक मराठी कविता में इसी समय सृजनरत कविता को साठोत्तरी कविता के नाम से पहचाना जाता है।

1960 ई. के बाद सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों के कारण आम आदमी नवीन स्वतंत्रता से मोहभंग होकर सोचने लगा। आम आदमी का राजनीति से मोहभंग होने लगा था। 1962 ई. के चीनी आक्रमण, 1964 ई. में नेहरु की मृत्यु, 1966 ई. में लाल बहादुर शास्त्री का आकस्मिक निधन, 1965 ई. के भारत-पाक युद्ध आदि घटनाओं से हमारी मानसिकता और सांस्कृतिक दृष्टि में परिवर्तन हुआ। राजनीतिक अव्यवस्था से साठोत्तरी कविता प्रभावित हुई। 1971 ई. में भारत पाकिस्तान युद्ध और बांगला देश का उदय हुआ। 1975 ई. में इन्दिरा गांधी का चुनाव रद्द कर दिया गया। साहित्यकारों की सोच पर, अभिव्यक्ति पर बाधाएँ आयीं। 1977 ई. में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और पहली बार केंद्र मे कॉंग्रेस च्युत हो गयी। पुनःश्च (दो साल बाद) इंदिरा गांधी प्रधान मंत्री बनीं। परन्तु तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता आतंकवाद में परिवर्तित हुई और 1984 ई. में इंदिरा गांधी की हत्या से अस्थिरता का वातावरण और गहरा होता गया। भ्रष्टाचार, जातिय विद्वेष, आतंकवाद, राजनीतिक अन्तर्कलह, साम्प्रदायिक संघर्ष बढते गये। परिणाम स्वरुप 1991 ई. में राजीव गांधी की (पंतप्रधान) की भी हत्या हो गयी।

परिणाम स्वरूप सामाजिक दृष्टि से औद्योगिक सभ्यता तथा महानगरीय संस्कृति का प्रभाव बढ गया। व्यक्ति के असामाजिक होने की सम्भावना बढ़ने लगी। महानगरों में एक नवीन आर्थिक सामाजिक व्यवस्था सामने आने लगीं तथा समाज में असामाजिकता बढ़ी । आपात् काल के पश्चात् राजनीतिक और सामाजिक संघर्षों के कारण विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गयी। इन सब का परिणाम आधुनिक मराठी की साठोत्तरी कविता पर हुआ है। इस कविता में व्यवस्था से निराश, पीडित घायल व्यक्ति को स्थान मिला था परंतु कुछ कवियों तक ही यह अभिव्यक्ति सीमित रही थी। साठोत्तरी मराठी कवि युगीन चिन्ताओं से, समस्याओं से सम्बद्ध रहकर भविष्य की आकांक्षा के लिए आगे बढ़ रहा है।

2:1:8 दलित कविता - (1970 ई.)

1970 ई. के बाद आधुनिक मराठी कविता में प्रखर सामाजिकता की अभिव्यक्ति हुई है। नामदेव ढसाळ, दया पवार, राजा ढाले, शरणकुमार लिंबाळे आदि की कविताओं में सामाजिक विषमता के प्रति चिढ सामान्य मानव के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। डॉ. सुनिल चंदनशिवे के अनुसार, ''दलित साहित्य में महत्त्वपूर्ण और प्रभावी वाङ्मय प्रकार यानी 'दलित कविता' है। दलित लेखकों ने अपना दु:ख कम शब्दों में मार्मिकता से स्पष्ट करने के लिए, पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, 'कविता' जैसा माध्यम चुनकर, मराठी काव्य वाङ्मय को समृद्ध किया और दलित साहित्य को प्रतिष्ठा प्राप्त करा दिया।''[18]

दलित साहित्य का पहला विस्फोट 'कविता' के माध्यम से हुआ। दलितों के दु:ख का पहला हुंकार कविता के माध्यम से प्रकट हुआ। श्री. नामदेव ढसाळ की कविता से दलित कविता की यात्रा शुरु हो जाती है। 'गोलपीठा' में ढसाळ ने समाज के उपेक्षित लोगों की पीडा को पूरी शक्ति के साथ वाणी दी। डॉ. सुनिल चंदनशिवे के अनुसार- ''कवि नामदेव ढसाळ की कविता में अस्पृश्यता की भावना विद्रोह के माध्यम से प्रकट होते हुए दिखाई देती है। संपूर्ण व्यवस्था के प्रति क्रोध, खीज व्यक्त कर वे दु:ख, दर्द प्रकट करते हैं। नामदेव ढसाळ की भाषा, उग्र, विद्रोही, आकर्षक और क्रांतिकारी है।'' [19]

1958 ई. से केशव मेश्राम लिख रहे हैं । 1977 ई. में इनका पहला काव्य-संग्रह 'उत्खनन' छपा। इस संग्रह की कविताओं द्वारा मेश्राम प्रकाश के रास्ते की खोज कर रहे हैं। यह खनन स्व का है, रुढी, परंपरा, दलितों के दु:खों का, उनकी दरिद्रता का है। इनकी कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विद्रोह की अभिव्यक्ति हुई है।

'बलुतं' (अछूत) आत्मकथा के कारण जिन्होंने पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करा लिया, वे दया पवार उनका काव्य संग्रह 'कोंडवाडा' शीर्षक से 1977 ई. में छपा। कोंडवाडा का अर्थ है कांजी हाऊस, मवेशीखाना। दलित समाज की स्थिति

---

18) डॉ. सुनिल चंदनशिवे- 'मराठी दलित कविता: एक चिकित्सक अभ्यास', पृ. 53

19) डॉ. सुनिल चंदनशिवे- 'मराठी दलित कविता: एक चिकित्सक अभ्यास', पृ. 82

इस व्यवस्था में मवेशीखाने की तरह हो गई है। बहुत ही सामान्य कारणों से दलितों का जो अपमान होता है, इस से संवेदनशील मन पर जो आघात होते हैं, उसे इन्होंने शब्दों में पकडा है।

'गावकुसाबाहेरील कविता' इस पहले ही संग्रह से वामन निबांळकर ने पाठकों का ध्यान आकृष्ट करा लिया । गाँव के बाहर जो बस्ती है, उसकी यातना को समझने का प्रयत्न कभी गाँव के अंदर रहनेवालों ने किया ही नहीं। इस बस्ती की और बस्ती में रहनेवालों की जो उपेक्षा हुई, उसे यहाँ वाणी दी गई है।

'उत्थान गुंफा' श्री यशवंत मनोहर का प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है । 1976 ई. में त्र्यंबक सपकाळ का 'सुरुंग' काव्य-संग्रह छपा । दलितों पर होनेवाले अन्याय के विरोध में इनकी कविता आक्रमक रुप धारण कर लेती है । इनकी कविता का स्वर आत्म परीक्षण का है । श्री प्रल्हाद चेंदवणकर लिखीत 'ऑडिट' शीर्षक कविता-संग्रह अस्सी के दशक में नवयुवकों में अत्यंत लोकप्रिय हुई। इनकी कविता में सामाजिकता और वैयक्तिकता का अद्भूत समन्वय हुआ है । श्री. ज.वि. पवार की कविताओं में दलित जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। दलित स्त्रियों के अपमानित, संवेदनशील मन की छटपटाहट को यहाँ स्वर मिला है। 'छावणी हलते आहे' कविता संग्रह को लेकर अर्जून डांगळे 1977 ई. में सहृदयों के सम्मुख आए। इनकी कविताओं में समाज-जीवन की विद्रुपता का तथा संयमशील मन के दर्शन होते हैं ।

शरणकुमार लिंबाळे मूलतः कवि हैं । 'उत्पात' उनका पहला काव्य संग्रह है । इनकी कविताओं में आक्रमकता है, विद्रोह है और पांखडी समाज के प्रति जबरदस्त चिढ है। 'श्वेत पत्रिका' दूसरा काव्य संग्रह है, इसमें विषम समाज व्यवस्था का पर्दाफाश किया गया है। इस संग्रह की कविताओं में विद्रोह, वेदना और नकारात्मकता की अभिव्यक्ति अधिक हुई है । सम्यक क्रांति का उदात्त सपना कवि देख रहा है ।

डॉ. योगेंद्र मेश्राम के शब्दो में, ''दलित साहित्य की सही जरुरत स्वच्छ और दार्शनिक अधिष्ठान की है। दलित समाज को साहित्यिकों से निष्ठांवत विद्वजनों की अधिक आवश्यकता है। वैचारिक दरिद्रता से समाज में कौनसी भी कला, निर्माण नहीं हो सकती।''[20] इस प्रकार के विचार दलित कविता में अभिव्यक्त हो उठी है ।

---

20 डॉ. मेश्राम योगेंद्र- 'दलित साहित्य उदग्म आणि विकास', पृ. 268

प्रमुख कवि :

दलित कविता आत्मशोध की कविता न होकर विश्वव्यापकता प्राप्त की हुई कविता है। आज सृजनरत दलित कवि और काव्य संग्रह निम्नलिखित हैं - चोखा कांबळे (पिंपळ पान), हिरा बनसोडे (आकाश माती), देवानंद गोरडे (आमची कविता) रविचंद्र हडसनकर ('ठिणगी', 'देणगी', अरे माणसा माणसा, 'हळद उन्हे'), दु. मो. लोणे ('गोधडी', 'घुगऱ्या'), सुखराम हिवराळे ('शब्दायन', 'माळरानाच्या कविता'), भगवान सवई ('जेतवन', चैत्यगवाक्ष), उत्तम बावस्कर ('वाटा', 'विद्रोह'), गौतम सुर्यवंशी ('कुरुक्षेत्रावरील वर्तुळे'), परशुराम गिमेकर ('मोहाडी', 'वडारवाडी'), शरणकुमार लिंबाळे (उत्पात), वामन जगताप ('छेदचक्र', 'वादळवारा', 'अंतःस्फोट', 'खदखद', अग्निदिव्य, 'दुभंगलेले अभंग'), सुरेंद्र नाईक ('भूकंप'), राम दुतोंडे ('रापी जेंव्हा लेखणी बनतें'), भुजंग मेश्राम ('उल-गुलान', 'मोहोळ', 'आदिवासी कविता'), अशोक दवणे ('शृंखला'), राजेंद्र कांबळे ('फेरफार'), नागोराव उतकर ('झोपडीच्या कविता'), ज्योती लांजेवार, हरिहर सोनुले, प्रकाश मोगले, आदिनाथ इंगोले, वैभवकुमार शेरे, सिध्दोधन कांबळे, ऋषीकेश कांबळे, विनायक ढवळे, दि.रा. वाघमारे, प्रतिभा सुरडकर, शिवा कांबळे, अनंत भागे (नेहरी) आदि।

प्रमुख विशेषताएँ :

दलित कविता की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं - सामाजिक विषमता के प्रति चिढ, मानव मात्र के प्रति श्रद्धा, समता का आग्रह, वर्ण तथा जाति व्यवस्था के प्रति चिढ, विद्रोह, वेदना और नकारात्मकता की अभिव्यक्ति, सम्यक क्रांति का उदात्त स्वप्न, स्व का आत्म परीक्षण सामाजिकता और वैयक्तिकता का अद्भुत समन्वय आदि।

निष्कर्ष –

आधुनिक मराठी कविता का आरंभ 1885 ई. से माना जाता है। क्योंकि काव्य के भीतर नवीन दृष्टिकोण की एक निश्चित परंपरा यहीं से मिलने लगती है। काव्य साहित्य की दृष्टि से इस युग पर विचार करने के पूर्व पृष्ठ भूमि के तौर पर जो परंपराबद्ध काव्य साहित्य था। उसका विचार करना आवश्यक होता है।

1875 से 1895 ई. तक का मराठी काव्य संक्रमणकाल का काव्य है। अधिकतर काव्य साहित्य परम्पराबद्ध था । कुछ ऐसी रचनाएँ भी प्रकाशित हो रही थी जिनमें

आधुनिकता का निश्चित स्पर्श था। आधुनिक काल के पहले निम्नलिखित काव्य धाराएँ थी, संतकाव्य, पंतकाव्य और शाहिरी काव्य । संतकाव्य की परम्परा 12 वी शताब्दी से 18 वी शती तक चलती रही और आज भी उसका अस्तित्व टिका हुआ है। नामदेव, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि संत कवियों की एक लंबी परम्परा मराठी में मिलती है। मोरोपंत, वामन पंडित आदि के समय से पंतकाव्य की धारा चली आ रही थी । इस परम्परा के कवियो में पांडित्य अधिक था, भक्ति भावना कम थी, वैसे तो इनकी सभी काव्य- कृतियों के मूल में भक्ति ही है । यह काव्य-परम्परा हिंदी के रीति काव्य के निकट पड़ती है।

एक ओर इस प्रकार की परंपराबद्ध काव्य परम्परा थी तो दूसरी ओर इसी काल में नये आंदोलन शुरु हो चुके थे । इन आंदोलनों का निश्चित परिणाम साहित्य पर भी हो रहा था। इन आंदोलनों के कारण मराठी कविता में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। 1875 से 1885 ई. तक के इस काल में आधुनिक कविता की नींव रखी गयी। इसी नींव पर केशवसुत युग के काव्य भवन का निर्माण हुआ। केशवसुत ने नवीन प्रवाहों की शुरुवात की, उन्होंने विषयों के नये क्षितिजों को स्पर्श किया। उनकी कविता में सामाजिक यथार्थता, प्रगतिशीलता, प्रकृति प्रेम, शुद्ध लौकिक प्रेम, रहस्यात्मकता आदि सभी स्वर हैं। हिंदी में इनकी तुलना केवल निराला के साथ की जा सकती है। गोंविदाग्रज, बी, दत्त, विनायक, रेंदाळकर, रहाळकर, लक्ष्मीबाई टिळक आदि का योगदान आधुनिक मराठी कविता में महत्त्वपूर्ण रहा है।

1920 ई. के आसपास रे. तिलक, गोंविदाग्रज, बालकवि, रेंदाळकर आदि कवियों का निधन हुआ। कुछ कवियों का काव्य लेखन बंद हुआ। राजनीतिक दृष्टि से तिलक युग भी इसी समय समाप्त हो गया। माना जाता है कि आधुनिक कविता का ऐतिहासिक युग 1920 ई. मे समाप्त हुआ। परंतु अनेक महत्त्वपूर्ण कवि इस काल में काव्य-लेखन करने लगे। काव्य इतिहास में अपना स्वतंत्र नाम स्थापित करनेवाले कवियों में प्रमुख रुप से चंद्रशेखर बी, तांबे, सावरकर एवं गोंविद है।

1920 ई. के आसपास बालकवि, गडकरी, रे. तिलक इ. कवियों के निधन से काव्य क्षेत्र में अंध:कार फैल गया। कविता के क्षेत्र में उदासीनता छा गई, लेकिन इस अंध:कार को भेद कर रविकिरण मंडल के कवि गिरीष, यशवंत, माधव ज्युलियन के अतिरिक्त श्री. बा. रानडे और मनोरमा रानडे आदि महत्त्वपूर्ण कवि सृजनरत रहे हैं।

रविकिरण मंडलोत्तर मराठी काव्यकाल के प्रमुख कवियों में केशवसुत सम्प्रदाय को चलानेवाले काव्य-विहारी, कुंजविहारी, साने गुरुजी, सेनापति बापट, रविकिरण मंडल के प्रतिध्वनित हुए कवि या. मु. पाठक, वि.भ. कोलते, भ.श्री. पंडित, स.अ. शुक्ल, निशिगंध, गोपीनाथ, वा.भा. पाठक, मंडल के जानपद गीत परंपरा को आगे चलानेवाले ग.ह. पाटील, ग.ल. ठोकळ, गूढवादी वा.ना. देशपांडे, प्रगतिशील समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होकर लिखनेवाले अनंत काणेकर, विडंबनकार कुसुमाग्रज, पु.शि. रेगे आदि कवियों का काव्य लेखन इस काल के उत्तरार्ध में शुरु हुआ।

1935 ई. के आसपास आधुनिक मराठी कविता की गति धीमी हो गयी ऐसी चर्चा होने लगी। 1920 ई. में जो परिस्थिति निर्माण हो गई थी, वही स्थिति 1940 ई. के समय माधव ज्युलियन भा.रा. तांबे के निधन के कारण हुआ। यह महसूस होने लगा कि स्वच्छंदतावाद में विकृति आने लगी, आत्मकेंद्रीत संकुचित प्रवृत्ति, समकालीन वास्तविकता से दूर सामान्य जीवनानुभव, शब्दगत जानपद गीत, केशवकुमार, काणेकर का पद्य से गद्य की ओर प्रयाण आदि कारणों से मराठी कविता का विकास रुक गया है। कुसुमाग्रज ने ऐसी परिस्थिति में मराठी कविता की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले ली। कुसुमाग्रज की कविता में क्रांति की प्रखर अभिव्यक्ति दिखाई देने लगी। ऐसा लगा की मानो केशवसुत सम्प्रदाय का पुनर्जीवन हुआ है। 20 शताब्दी के पाँचवे दशक में मराठी कविता में परिवर्तन हुआ। अभिव्यक्ति की नए रास्ते मिल गये, नये दशक में नयी कविताएँ लिखी गयी। 1935 से 1945 का दशक मर्ढेकर क्रांति का पूर्व तैयारी का दशक माना जाता है। अनिल, कुसुमाग्रज, बोरकर आदि के स्वच्छंदतावादी अनुभव इतने स्पष्ट थे कि उन्होंने नये काव्य क्रांति का नींव डाली है। इन तीनों के साथ-साथ, ना.ग. जोशी, रा.अ. काळेले, मन मोहन, श्रीकृष्ण पोपळे, वा.रा. कांत, कृ.ब.निंकुब, बी. रघुनाथ, भालचंद्र लोवलेकर, ना.घ. देशपांडे, संजीवनी, वि.म. कुलकर्णी, सोपानदेव चौधरी, राजा बढे, पद्मा आदि कवि तथा कवयित्रियों का काव्य-सृजन शुरु था।

1950 ई. तक आते-आते सारे विश्व में मनुष्य जाति तथा उसके भविष्य के प्रति जबरदस्त निराशा उत्पन्न हो गयी थी। दो महायुद्धों में लाखों की संख्या में लोग मारे गये थे, सामाजिक तथा पारिवारिक व्यवस्था तहस-नहस हो चुकी थी, मानवी मूल्यों की

स्थिति हास्यास्पद हो गयी थी। मंगलमय तथा पवित्र बातों पर से विश्वास उड रहा था। अकेलेपन का एहसास बढने लगा था। पूँजीवाद बढ रहा था, मजदूर और मध्यम वर्ग का शोषण अधिक तेजी से हो रहा था ।

1947 ई. में भारत देश स्वतंत्र हुआ। 1950 ई. के पूर्व के काव्य का आशावादी दृष्टिकोण गलत लगने लगा था। सामान्य व्यक्ति के इस दर्द को तटस्थ रूप से शब्द बद्ध करना आवश्यक था। पुराने कवि अपने ही आदर्शो से जुडे थे। इसीकारण आधुनिक कवियों द्वारा नये युगबोध को व्यक्त करने के प्रयत्न शुरु हुए।

हिंदी में यह कार्य 1945 ई. से आरंभ होता है। अज्ञेय के नेतृत्व में प्रयोगवादी कवियों ने विषय, भाषा, तथा शिल्पगत प्रयत्न कर दिया। मराठी में आंदोलन के रूप में इस प्रकार का कार्य नहीं हुआ। अकेले मर्ढेकर के साहित्य को ही सर्वोत्कृष्ट साबित कर दिया है। शरदचंद्र मुक्तिबोध, नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, दया पवार आदि ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। नई कविता की दूसरी पीढी का उदय होते समय ही वसंत हसबनीस, ग.ब. ग्रामोपाध्ये और य.द. भावे आदि कवियों ने भी योगदान दिया। नई कविता के लक्षणों ने भी योगदान दिया। नई कविता के लक्षणों को अपनी-अपनी पद्धति से स्वीकार कर कविता को प्रयोगशील बनानेवाले कवियों में विंदा करंदीकर, मंगेश पांडगांवकर, वसंत बापट और इंदिरा संत प्रमुख हैं।

1920 ई. से 1947 तक राष्ट्रीय काव्यधारा अत्यधिक प्रबल रही । जब-जब राष्ट्र की स्वतंत्रता खतरे में आ जाती है, तब-तब इस प्रकार की कविताओं का सृजन स्वाभाविक है। हिंदी में मैथिलीशरण गुप्त से लेकर दिनकर तक राष्ट्रीय कवियों की काव्य परंपरा ही है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो मराठी में इस प्रकार की कविताएँ बहुत पहले मिलती है। कवि श्री. विनायक आधुनिक मराठी काव्य साहित्य की राष्ट्रीय काव्य-धारा के प्रथम कवि है। राष्ट्रीय काव्यधारा के अन्य प्रमुख कवि गोंविद, साने गुरुजी, दु.आ. तिवारी, टेकाडे, बेहरे, वसंत बापट, कुसुमाग्रज, अनिल, ग.दि. माडगुळकर आदि हैं।

1960 ई. के बाद मराठी कविता बहिर्मुखता की वृति छोडकर अधिक अंतर्मुख होने लगी। अब कवि अपने अंतर्मन की गहरी खोज करने लगे। मनुष्य मन की गहराई अपरिमित है। कविता का असली क्षेत्र मन है। इस प्रकार के विचार व्यक्त किये जाने लगे। समाज वातावरण, राजनीति, आदि को मन की अतल गहराई में ले जाकर वहाँ

से प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की जाने लगीं। एक ओर मर्ढेकर की यह परंपरा है तो दूसरी ओर कविता को समाज जीवन के साथ जोड दिया गया तथा व्यक्ति और समाज के संघर्ष को व्यक्त किया जाने लगा। अनिल, मुक्तिबोध, कुसुमाग्रज की यह परम्परा है।

साठोत्तरी मराठी कविता में आगे चलकर, स्वच्छंदता का नया प्रवाह, मराठी गज़ल, लोकगीत प्रवाह की कविता, ग्रामीण कविता, मुस्लिम कविता, स्त्रीवादी कविता, दलित कविता आदि का निरंतर विकास हेाता रहा। दलित कवियों में नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, केशव मेश्राम, दया पवार, वामन सुदामा निंबाळकर, यशवंत मनोहर आदि प्रमुख हैं। आज दलित कविता आत्मशोध की कविता न होकर विश्वव्यापकता प्राप्त की हुई कविता है। आधुनिक मराठी कवियों ने जीवन के विविध अनुभवों, समस्याओं को खुले दिल से अभिव्यक्त किया है। आधुनिक मराठी कवियों की प्रतिभा का सामर्थ्य बहुत बडा है। इसलिए दिनोंदिन अधिक जीवंत, मौलिक अनुभव कवि अपनी कविता में अंकित कर रहा है।

''आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियाँ : तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,औरंगाबाद
की पीएच.ड़ी. (हिंदी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबंध

2009

शोध-छात्र

मल्लिनाथ बिराजदार

शोध-निर्देशिका

डॉ. पद्मा पाटील

हिंदी विभाग,
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय,
औरंगाबाद

चतुर्थ अध्याय

आधुनिक हिंदी कवयित्रियाँ : परिचय एवम् रचनात्मक सरोकार

4:1 भूमिका :

प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक काल में हिंदी में सृजनरत कवयित्रियों का जीवन परिचय तथा उनके रचनात्मक सरोकार पर विचार किया है। उनका जन्म, नाम, शिक्षा-दीक्षा, साहित्य निर्माण, प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार आदि को प्रस्तुत किया है। वैसे तो जीवन वृत्त की खोज करना भ्रमण प्रयासी कार्य है। जीवनवृत्त किसी भी साहित्यिकार या कवयित्रियों के सम्पूर्ण जीवन पर प्रकाश ड़ालता है। इनके जीवन परिचय से उनके साहित्यिक मूल्यों की भी पहचान हो जाती है। दूसरे शब्दों में कहे तो इन्हीं मूल संवेदनाओं के आधार पर पाठक इस व्यक्ति की साहित्यिक गरिमा को सहजता से हासिल करता है।

कवयित्रियाँ हों या कवि, वे जिस परिवेश, संस्कार तथा वातावरण में जन्मे, पले तथा बढ़े हैं उन पर भी सोचना जरुरी होता है। मनुष्य के जीवन में संस्कार महत्त्वपूर्ण होते हैं। व्यक्ति के सामाजिक संस्कारों का संबंध जाति, समाज और राष्ट्र से होता है और वह 'वसुधैव कुटुम्बकम' मानवतावाद तथा बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय जैसी उदात्त भावनाओं का समर्थक बन जाता है। अतः किसी भी साहित्यकार का अध्ययन करते समय इन सारी बातों को ध्यान में रख कर जीवन परिचय देखना आवश्यक हो जाता है।

आधुनिक काल में दो सौ से भी अधिक कवयित्रियाँ सृजनरत हैं। हम प्रस्तुत अध्याय में उनके जीवनवृत्त तथा उनकी रचनात्मक सरोकार पर प्रकाश ड़ालते हैं।

4:1:1 प्रताप कुँवरिबाई :

माना जाता है कवयित्री प्रताप कुँवरिबाई का जन्म 1873 वि. में हुआ होगा। इनकी जन्म तिथि निश्चित रुप में उपलब्ध नहीं है। इनका निधन 1943 वि. में हुआ। उनके पिता का नाम ठाकुर गोमंतदास है तथा पति का नाम महाराजा मानसिंह।

उनकी एक काव्यकृति उपलब्ध है जिसका शीर्षक 'महिला मृदुवाणी' है। यह संकलन की दृष्टि से सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। इस कविता का मूल कथ्य स्त्रीत्व

की सार्थकता पति को देवत्व मानने में है। कवयित्री ने पारिवारिक जीवन को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उनकी कविता में सर्वत्र भारतीय आदर्शों का अंकन दृष्टिगोचर होता है।[1]

4:1:2 निधि रानी :

कवयित्री निधि रानी की जन्मतिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है। श्री स्वर्गीय हीरालाल द्वारा सम्पादित खोज रिपोर्ट में इनका उल्लेख मिलता है। कवयित्री उन्नाव जिले में पुरवा रणजीत के राजा गिरिजा बक्शसिंह की पत्नी थी।

उनकी एक ही काव्य-कृति उपलब्ध है। उनके कविता संग्रह का शीर्षक 'राम-मिलन' है। इस कविता का मूल कथ्य है 'भक्ति भावना'। कवयित्री ने मध्यकालीन संतभक्तों की तरह 'गुरू' की भक्ति को अत्यधिक महत्त्व दिया है।[2]

4:1:3 कमल कुँवर :

कमल कुँवर की भी जन्मतिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है। उनकी एक काव्य कृति उपलबध है। उसका शीर्षक 'विनय चन्द्रिका' है इसका प्रकाशन 1894 ई. में हुआ। इस कविता का भी मूल स्वर है 'भक्ति भावना'। कवयित्री ने भक्ति-भावना के साथ कृष्ण की महानता और अपनी दीनता का वर्णन किया है।[3]

4:1:4 रत्न कुँवरि बीबी :

रत्नकुँवरि बीबी की जन्म तिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है। उनका जन्म मुर्शदाबाद के प्रसिद्ध जगत सेठ के यहाँ हुआ था। धनी परिवार मे आपका जीवन सुख एवं आनंदमय था । गाने बजाने में आप अत्यंत निपुण थी, योगाभ्यास में परिपक्व थी । सत्तर वर्ष की अवस्था में भी बाल काले थे तथा आँखो में ज्योति बालकों की सी थी।

उनकी एक कविता संग्रह उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'प्रेमरत्न' है। इसका प्रकाशन 1925 वि. में हुआ। इस कविता का मूल कथ्य कृष्णजीवन से सम्बधित है।[4]

4:1:5 ज्वालादेवी :

ज्वालादेवी की जन्म तिथि निश्चित रूप से उपलब्ध नही है। उनकी एक कृति

---

1) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ' पृ. 61
2) वही, पृ. 74,75
3) वही, पृ. 83,84
4) वही, पृ. 84,88

उपलब्ध है । 'नारी विनय' इस कविता का मूल स्वर 'स्त्री स्वतंत्रता का है। पहले से ही समाज मे 'स्त्री' को सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा था। परंतु इसी युग में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील हुई । कवयित्री द्वारा रचित कविता संग्रह इस युग की 'स्त्री' जागृत का ज्वलंत उदाहरण है।[5]

4:1:6 चन्द्रकलाबाई :

कवयित्री चन्द्रकालाबाई का जन्म संवत् 1930 में हुआ। इनका निधन संवत् 1975 में हुआ। कवयित्री विशेष पढी-लिखी नहीं थी।[29] अपनी पिता की मृत्यु पश्चात् माँ के साथ 'बूंदी नरेश' के राजकवि गुलाबसिंह के यहाँ दासी के रुप में थी। कविराज गुलाब सिंह ब्रजभाषा एवम् संस्कृत के विद्वान थे। उन्हीं से कविता करने की प्रेरणा उन्हें प्राप्त हुई है। पर कविता के मर्म को खूब समझती थी। अपनी कम उम्र में ही उन्होंने 'तुलसी रामायण' रामचन्द्रिका आदि ग्रंथों का अध्ययन करके उसे सात काण्डो में प्रस्तुत किया। 'रामचरित्र' नाम से काव्यबद्ध किया है। उनकी यही एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'रामचरित्र' है। इस कविता की मूल संवेदना तुलसी कृत 'रामचरितमानस' के अनुरुप है।[6]

4:1:7 सरस्वती देवी :

कवयित्री सरस्वती देवी का जन्म संवत 1932 ई. में हुआ। उनके पिता पंडित रामचरित तिवारी है। पति का नाम पंड़ित महावीर प्रसाद है। कवयित्री विशेष पढी-लिखी नहीं थी। इन्हें हिंन्दी के अलावा बंगला, अंग्रेजी का भी ज्ञान था। उनकी दो काव्य कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'सुंन्दरी सुपन्थ' तथा दूसरे का नाम 'वनिता बंधू' है।

'सुंन्दरी सुपन्थ' की इन कविताओं की मूल संवेदना स्त्री आदर्शो से सम्बन्धित रही है। कवयित्री मानती है की, पति सेवा करना भारतीय स्त्री का कर्तव्य है। कवयित्री प्राचीन आदर्शों को माननेवाली भारतीय स्त्री है।

'वनिता बन्धू' की कविताओं का मूल कथ्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों की प्रतिष्ठापना रहा है। इस के साथ ही कवयित्री 'स्त्री' की दीन-हीन दशा से परिचित थी। इसकी अभिव्यक्ति भी उनकी कविताओं में हुई है।[7]

---

5) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ. 82,83

6) वही पृ. 68,69

7) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ. 72

4:1:8 रानी रघुराज कुँवरि :

कवयित्री रानी रघुराज कुँवरि का जन्म 1940 वि. में हुआ होगा ऐसा माना जाता है क्योंकि इनकी जन्म तिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है । उनके पति का नाम श्री प्रताप बहादुर सिंह है।

उनकी दो काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'रामप्रिया विलास' तथा दूसरे का नाम श्याम आनंदिनी है। पहले संग्रह की कविताओं का मूल स्वर 'राम की भक्ति' रहा है । कवयित्री ने सगुण भक्ति में रुपोपासना पर अत्यधिक बल दिया है। दूसरे कविता संग्रह का मूल कथ्य 'रामकृष्ण की भक्ति' से सम्बन्धित रहा है। परंतु रामभक्ति सम्बन्धी पद अधिक हैं।[8]

4:1:9 तोरन देवी शुक्ल लली :

कवयित्री तोरन देवी शुक्ल लली का जन्म 1897 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम पं. कन्हैयालाल त्रिपाठी है। माता का नाम श्रीमती भाग्यवती देवी। पति का नाम पं. कैलाशनाथ शुक्ल है।

कवयित्री तोरन देवी की एक कविता संग्रह उपलब्ध है जिसका शीर्षक 'जागृति' हैं। इसमें 54 कविताएँ हैं। यह समस्त पुस्तक निम्न पाँच श्रेणियों में विभक्त हैं - 'दिव्य ज्योति', 'जीवन ज्योति', 'रत्नज्योति', 'अमर ज्योति', 'दीप ज्योति' आदि। दूसरे श्रेणी का मूल कथ्य 'देशप्रेम' है। इसके साथ ही कवयित्री ने सामाजिक पक्ष की ओर भी अपना लक्ष केन्द्रित किया है। तीसरी श्रेणी की कविताओं में कवयित्री ने जीवन की प्रगति और विकास के लिए वेदना, पीड़ा और निराशा की अवहेलना कर हास्य को अपनाया है। 'अमरज्योति' की कविताओं के मूल में उन महान व्यक्तियों के प्रति श्रद्धांजली है जिन्होंने ईश्वरीय प्रेम, मानव प्रेम और संवेदना एवम् त्याग के अनुपम रूप मानस के सामने रखा है। 'दीपज्योति' की मूल संवेदना वेदना है। कवयित्री ने इस में अपनी स्वर्गवासी माँ को आधार बनाया है।[9]

4:1:10 रामकुमारी देवी चौहान :

रामकुमारी देवी चौहान का जन्म 1901 ई. कानपुर में हुआ। उनके पति का नाम श्री ठाकुर रत्नसिंह है। उनकी एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक

---

8) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ' पृ. 76

9) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ' पृ. 89

'नि:श्वास' है। इसका प्रकाशन 1935 ई. में हुआ। इस कविता की मूल संवेदना देशप्रेम है। इस संग्रह की प्रथम कविता 'मातृवंदना' है जिसमें 'मातृभूमि' की महिमा का वर्णन किया गया है । इस में कवयित्री का राष्ट्रीय भाव व्यक्त हुआ है।[10]

4:1:11 श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान :

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म 1904 ई. में प्रयाग नागपंचमी के दिन हुआ उनका निधन 1948 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम श्री कामनाथ सिंह है। पति का नाम ठाकुर लक्ष्मण सिंह। उनकी शिक्षा प्रयाग कास्थवेट गर्ल्स् कॉलेज में हुई। सुभद्राकुमारी चौहान हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि माखनलाल चत्तुर्वेदी की शिष्या थी।

कवयित्री सुभद्रा एक सच्ची देश-प्रेमिका थी। उनके हृदय में महात्मा गांधी और कांग्रेस नीति के प्रति अगाध श्रद्धा थी। सुभद्रा भारत वर्ष की पहली सत्यागृही महिला थी। नर्मदाप्रसाद खरे ने लिखा है- ''सुभद्रा कवयित्री, कहानी लेखिका थी, किन्तु वे सबसे पहले मानवी थी, पूर्णरुपेण मानवी । मानव मात्र के लिए उनके हृदय में अपार करुणा, सहानुभूति और ममता थी।''[11]

उनकी एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उनके पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'मुकुल' है। इस कविता की मूल संवेदना राष्ट्रीय प्रेम तथा वात्सल्य भावना है।

4:1:12 श्रीमती होमवती देवी :

श्रीमती होमवती देवी का जन्म 20 नवम्बर 1906 ई. मेरठ के प्रसिदध पाथरवालों परिवार में हुआ। उनका निधन 3 फरवरी 1951 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम श्री रामनाथ है। माता का नाम श्रीमती कुंदन देवी। पति का नाम डॉ. चीरजीलाल (स्थान जेलसर) कवयित्री को शिक्षा का अधिक अवसर नहीं मिला। [12]

उनकी एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'उद्गार' है। इस कविता की मूल संवेदना 'सामाजिक संवेदना' है। कवयित्री ने समाज की विधवा स्त्री का करुणामय चित्र प्रस्तुत किया है।

4:1:13 महादेवी वर्मा :

कवयित्री महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई. फार्रुखाबाद के एक प्रतिष्ठित

---

10) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ. 93

11) खरे नर्मदाप्रसाद - 'बुंदेले हरबोले के मुँह जिसने सुनी कहानी ', पृ. 63

12) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 116

कायस्थ परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री गोंविद वर्मा है। माता का नाम श्रीमती हेमरानीदेवी पति का नाम डॉ.स्वरुप नारायण शर्मा है। कवयित्री की प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर में हुई। उन्होंने घर पर चित्रकला एवम् संगीत की शिक्षा पायी। उन्हें अपने पिता से कविता लेखन की प्रेरणा मिली है।

उनकी छः काव्यकृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले काव्य संग्रह का शीर्षक 'नीहार' दूसरे का 'रश्मि' तीसरे का नाम 'नीरजा' और चौथे का 'सांध्यागीत' पाँचवे का शीर्षक 'यामा' तथा अंतिम कविता संग्रह का शीर्षक 'दीपशीखा' हैं। पहले संग्रह की कविताओं का मूल स्वर कौतुहल मिश्रित वेदना से परिपूर्ण हैं । दूसरे कविता संग्रह का मूल कथ्य 'नीहार' के समान विरह से परिप्लावित है। परंतु इन गीतों में वेदना के प्रति ममत्व अधिक पनपा है। 'नीरजा' की कविताओं में भी 'नीहार' और 'रश्मि' में व्यक्त वेदना, आत्मा-परमात्मा की अभिन्नता आदि विषयों की पुनरावृत्ति है - किन्तु अपेक्षाकृत इसकी अभिव्यजंना में अधिक मधुरता, कोमलता एवम् सरसता आ गई है। 'सांध्यगीत' की कविता का मूल कथ्य- विरह-वेदना, सुख-दुःख आदि पूर्व कृतियों के समान दृष्टिगत होता है। पाँचवे संग्रह में नीहार, रश्मि, नीरजा और सांध्यगीत की कविताएँ संग्रहीत हैं। 'दीपशीखा' की कविताओं का मूल स्वर 'प्रणय' निवेदन है। [13]

4:1:14 पुरुषार्थवती :

कवयित्री पुरुषार्थवती का जन्म 8 अक्तुबर 1911 ई. वजीराबाद में हुआ। उनका निधन 11 फरवरी 1931 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम लाला चिरंजीलाल है। पति का नाम श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार है।[14]

उनकी एक काव्यकृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'अन्तर्वेदना' है। इस कविता संग्रह की कविताएँ देशप्रेम से संबंधित हैं। 'अंतर्वेदना' की संपूर्ण कविताएँ निम्न खंडों में विभक्त हैं- 'महानाविक के प्रति', 'वंशी की तान', 'प्रकृति संगीत', 'मेरे उच्छवास', 'हे माँ' आदि। महामानव के प्रति शीर्षक में जीवन को तारने के लिए भक्त वत्सल पतित पावन ईश के प्रार्थना की गई हैं ।

4:1:15 शकुंतला माथुर :

कवयित्री शकुंतला माथुर का जन्म 1911 ई. मे दिल्ली में हुआ। उन के पति

---

13) माथुर उमेश -'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 129

14) माथुर उमेश -'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ' पृ. 135

का नाम श्री गिरिजाकुमार माथुर है। आपकी शिक्षा-दीक्षा देहली में हुई ईं । आपने हिंदी प्रभाकर, साहित्य रत्न तथा बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है, 'चित्रकारी' तथा 'संगीत' में आपकी विशेष रुचि रही है। आपने कॉंग्रेस के समारोंहो, जुलूसों में भी सक्रिय भाग लिया था।

उनकी एक काव्य कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'चाँदनी चूनर' है। इसका प्रकाशन 1960 ई. में हुआ। इन कविताओं की मूल संवेदना पारिवारिक रही है। विषेश रूप से स्त्री-पुरुष सम्बध से। कवयित्री की अनेक कविताएँ अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' में संकलित की गई है।[15]

4:1:16 रामेश्वरी देवी चकोरी :

कवयित्री रामेश्वरी देवी चकोरी का जन्म 1913 ई. 'उन्नाव' जिले के वेल्थर गांव में हुआ। उनका निधन 1935 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम पं. उमाचरण शुक्ल है। पति का नाम श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'अरुण' है। उनकी बाल्यावस्था में ही उनके पिताजी गुजर गए। परिणामतः उनकी शिक्षा ननिहाल में ही हुई।

उनकी तीन काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'किंजल्क' तथा दूसरे का 'मकरंद' तीसरे का 'उषागीत' है। पहले संग्रह की कविता वैयक्तिक सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदि भाव से पूर्ण हैं। दूसरे कविता संग्रह की कविताओं के केंद्र में 'प्रेमजन्य-वेदना' का स्वर है। 'उषागीत' की कविताओं का मूल कथ्य 'प्रेमभावना' है।[16]

4:1:17 सुमित्राकुमारी सिन्हा :

कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा का जन्म 1914 ई. को फैजाबाद में हुआ। उनके पिता का नाम श्री महेशचरण सिन्हा है। उनके पति का नाम श्री राजेंद्र शंकर है। उनकी शिक्षा पिता की देखभाल में घर पर ही हुई। वे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत और अंग्रेजी भाषा से परिचित थी।

कवयित्री सुमित्रा इस युग की सजग एवम् प्रगतशील विचारोंवाली स्त्री रही है। उनके चार कविता संग्रह उपलब्ध हैं। उसमें से पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'विहाग' तथा दूसरे का शीर्षक 'आशापर्व' तीसरे का 'पथिंनी' चौथे का 'बोलो के देवता' है।

---

15) माथुर उमेश -'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 176
16) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 190

पहले संग्रह की कविताओं के केंद्र में मूल भाव 'प्रेमभावना' है। 'आशापर्व' की कविताओं की मूल संवेदना 'विहाग' के समान ही है।

'पथिनी' की कविताओं का मूल स्वर 'विहाग', 'आशापर्व' के समान ही है। 'पथिंनी' का भी मूल भाव प्रेम रहा है। परंतु इसके प्रेम के स्वर में अधिक व्यापकता आ गई है। चौथे संग्रह की कविता का मूल कथ्य व्यक्ति की जीवन के प्रति आस्था, जीवन साधना की रचनात्मक भावभूमि और भौतिक क्षेत्र में कर्म की सुनिश्चित प्रेरणा है।[17]

4:1:18 तारा पांड़े :

कवयित्री तारा पांड़े का जन्म दिसम्बर 1915 ई. को दिल्ली में हुआ। उनके पिता का नाम मनमोहन जोशी है तथा पति का नाम डॉ.पुरुषोत्तम पांड़े है। उनकी शिक्षा घर पर ही हुई है। वे हिन्दी, अंग्रेजी बंगला भाषाओं से अच्छी तरह से परिचित थी।

उनकी छः काव्य कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले संग्रह का नाम 'सीकर' तथा दूसरे का नाम 'शकुपिक' तीसरे का 'वेणुकी' चौथे का 'आभा' पांचवे का 'अंतरंगिनी' छटे का नाम 'गोधुली' है।[18]

पहले संग्रह की कविताओं का मूल कथ्य 'वेदना' है। 'शकुपिक' इन कविता का मूल स्वर 'प्रेमजन्य वेदना' है। 'वेणुकी' कविताओं में कवयित्री ने स्वप्न एवम् कल्पना लोक की गायिका नहीं जगत् की कठोर यथार्थता की चित्रकार बन गयी है। 'आभा' की कविताओं की मूल संवेदना 'वेदना' है। 'अंतरंगिनी' की कविता का मूल कथ्य 'प्रेमभावना' है। कवयित्री ने यह भाव निजी न मानकर उसे पति, पुत्र, परिवार सभी में विभक्त किया है। 'गोधुली' की कविताओं की मूल संवेदना 'संघर्ष' चेतना है।

4:1:19 हीरादेवी चत्तुर्वेदी :

कवयित्री हीरादेवी चत्तुर्वेदी का जन्म 2 मई 1915 खण्डवा (मध्यप्रदेश) में हुआ। उनके पिता का नाम पं. देवीदयाल चत्तुर्वेदी 'मस्त' है। उन्हें कविता लेखन की प्रेरणा अपने पतिद्वारा प्राप्त हुई है।

उनकी चार काव्य कृतियाँ उपलब्ध हैं। उस में पहले संग्रह का नाम 'मंजरी'

---

17) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 150

18) माथुर उमेश - आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ , पृ. 164

तथा दूसरे का नाम 'नीलम' तीसरे का 'मधुबन' चौथे का 'मधुमास' है। पहले संग्रह की कविता की मूल संवेदना 'भक्ति' है। 'नीलम' कविताओं का मूल कथ्य 'भक्ति' है। 'मधुबन' की कविताओं का मूल स्वर 'वेदना' है। चौथे संग्रह की कविता की मूल संवेदना 'वेदना' है।[19]

4:1:20 शकुंतला सिरोढिया :

कवयित्री शकुंतला सिरोढिया का जन्म दिसम्बर 1915 ई. 'कोटा' (राजस्थान) में हुआ। उनके पति का नाम श्रीयुत भुवन भूषण सिरोढिया है। उनका पारिवारिक माहौल साहित्यिक रहा है। इन्हें कविता लिखने की प्रेरणा अपने परिवार से मिली।

उनकी तीन काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। उस में से पहले का नाम 'दीप' (1944) तथा दूसरे का नाम 'सुधि के स्वर' तीसरे का नाम 'चाँद इतना हँसा' है। पहले संग्रह की कविता में मूल स्वर 'प्रेम' है। सुधि के स्वर कविता ओं की मूल संवेदना 'स्त्री की विवशता' है।[20]

'चाँद इतना हँसा' का मूल कथ्य 'प्रियमिलन की आकुलता' है।

4:1:21 शांति मेहरोत्रा :

कवयित्री शांति मेहरोत्रा का जन्म 9 मार्च 1926 ई. ग्राम बुआ 'बूंदी' राजस्थान में हुआ। उनके पति का नाम श्री वैकुंठलाल मेहरोत्रा है। उनकी चार काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले संग्रह का शीर्षक 'निष्कृति' तथा दूसरे संग्रह की कविताओं का मूल कथ्य प्रेम है। 'पगध्वनि' इन कविताओं की मूल संवेदना दार्शनिकता 'पंचप्रदीप' की कविता का मूल कथ्य 'स्त्री' चेतना है। कवयित्री शांति ने भारत की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण कर के उन स्थलों का श्रद्धापूर्ण गान किया है ।[21]

4:1:22 रमासिंह :

कवयित्री रमासिंह का जन्म 27 मई 1927 ई. लखनऊ में हुआ। उनके पिता का नाम डॉ. फुलसिंह है। उन्हें हिन्दी के अलावा बंगाली भाषा का विषेश ज्ञान था। आपने एम.ए. (हिंदी राजनीति) एल.एल.बी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है।

---

19) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 172

20) वही, पृ. 180

21) वही, पृ. 180

उनकी एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'समुद्रफेन' है। इन कविताओं का मूल कथ्य निराशावादिता है। जीवन में घटित अनेक घटनाओं ने कवयित्री को गंभीर और चिंतनशील बना दिया है। आपकी रचनाएँ समय-समय पर आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से प्रसारित होती रहती हैं।[22]

4:1:23 कमल कुमारी :

कवयित्री कमल कुमारी का जन्म 1928 ई. में हुआ है। इनका निधन 1978 ई. ओड़छा में हुआ। उनके पिता का नाम श्रीमान महाराज प्रतापसिंह देव बहादूर ओड़छा के महाराज हैं। माता का नाम श्रीमती वृषभानुकुंवरी। पति का नाम श्रीमान विश्वनाथ सिंह जू है।

उनकी एक काव्यकृति उपलब्ध है। इसका शीर्षक 'जुगलप्रिया पदावली' है। इस कविता की मूल संवेदना भगवान की भक्ति है। कवयित्री को राधाकृष्ण नाम की अनुपम विधि के सम्मुख संसार की सम्पूर्ण सुख-संपत्ति झूटी लगती है। इसी से संसार के सब वैभव विलास को भुलाकर कवयित्री ने अपना तन मन भगवान के चरणों में अर्पित कर दिया है।[23]

4:1:24 किरण जैन :

कवयित्री किरण जैन का जन्म 1 जनवरी 1930 ई. में हुआ । उनकी शिक्षा नागपुर विश्वविद्यालय से हुई। हिन्दी साहित्य की अनेक प्रमुख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित हुए हैं।

कवयित्री किरण के दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। यात्रा और यात्रा-(1969), स्वर परिवेश के (1981)[24]

4:1:25 इंदू जैन :

कवयित्री इंदू जैन की जन्म तिथि निश्चित रूप से उपलब्ध नहीं है। प्रतिष्ठित कवयित्री के रूप में वे लगभग चार दशकों से निरंतर लिख रही है । कवयित्री इंदूजी विदेशी भाषा विभाग, विश्वविद्यालय जपान में अतिथि प्रोफेसर रही है।

कवयित्री इंदू के आठ कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'चौंसठ कविताएँ' (1968), 'आँख से भी छोटी चिडीयाँ' (1977), 'हम से पहले भी लोग यँहा थे'

---

22) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिन्दी लेखिकाएँ', पृ. 184

23) वही, पृ. 66

24) जैन किरण - यात्रा और यात्रा, पृ. फ्लैप पर

(1980), 'कितनी अवधी', 'बुनती अवाजें' , 'कौन तेरा कौनसा' (1993), 'यहाँ कुछ हुआ तो था' (1994), 'सबूत क्यों चाहिए' (1999), इनके आठों संग्रह की मूल संवेदना वैयक्तिक अन्तश्चेतना है। इसके साथ ही उनकी कविताओं में आधुनिकता और विज्ञान के विषम प्रभाव का टूटते रिश्ते - नातों और मिटती बनती संवेदना का चित्रण दृष्टिगत होता है।[25]

4:1:26 कमल कुमार :

कवयित्री कमल कुमार का जन्म पंजाब में हुआ। उनकी सम्पूर्ण शिक्षा पंजाब में हुई। इन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। कविता, कहानी, उपन्यास आदि में इनका समान अधिकार है। कवयित्री सृजनात्मक लेखन के अतिरिक्त आज की संघर्षरत स्त्री की सभी समस्याओं के साथ जुड़ी है। उनके अनेक लेख पत्र-पत्रिकोओं में प्रकाशित हुए हैं।

कमल कुमारी की एक कविता संग्रह उपलब्ध है - 'बयान' (1970) इस कविता संग्रह की कविताएँ व्यवस्था विरोधी संघर्षमयी चेतना से सम्बन्धित हैं।[26]

4:1:27 मीना अग्रवाल :

कवयित्री मीना अग्रवाल का जन्म 1930 ई. में हुआ। कवयित्री सुप्रसिद्ध कहानी लेखिका भी है। कवयित्री का साहित्य सृजन और उनके आन्दोलनों में सक्रीय सहभाग। कवयित्री अनेक वर्षो तक मन्त्री व अध्यक्ष रही। ट्रस्टी तथा महिला मंड़ल स्वावलम्बन की सह प्रोजेक्ट ड़ायरेक्टर हैं। आज प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'मंजूषा' का कुशल संपादन करने में लीन हैं।[27]

कवयित्री मीना के दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं- दीप-दीप और दीपा (1984), 'यादों की दोपहरी' (1988)

4:1:28 उर्मिला कौल :

कवयित्री उर्मिला कौल का जन्म एक उच्च शिक्षित मध्यमवर्गीय परिवार में 25 फरवरी 1930 ई. मे आम्बाला नगर में हुआ। उनके पिताजी प्रोफेसर पं. मेलारामजी को अनेक भाषाओं का विशेष ज्ञान था। कॉमर्स के प्राध्यापक होने पर भी साहित्य में उनकी रूचि थी। उनकी माता शकुंतला भी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाह

---

25) जैन इंदू - सबूत क्यों चाहिए पृ. फ्लैप पर

26) कुमार कमल - बयान पृ. फ्लैप पर

27) अग्रवाल मीना - यादों की दोपहरी, पृ. फ्लैप पर

करते हुए साहित्य पठन में रूचि लेने लगी। शरदचन्द्र, बंकिमचन्द्र, प्रेमचंद आदि उनकी पसंद्गी के विशेष आदरपात्र लेखक थे। बचपन से उस साहित्यिक वातावरण का प्रभाव उर्मिला के ऐतिहासिक उपन्यासों को पढने की ओर उनका मन अधिक आकृष्ट हुआ। उर्मिला की स्कूली शिक्षा सिर्फ इंटरमीजियट तक हुई। कवयित्री को संगीत हस्तकला, पाककला, विशेषकर सितारवादन आदि का शौक है और साथ ही नाटक लेखन, निर्देशन और मंचन का।

उर्मिला केवल हिंदी में ही साहित्य रचना नहीं करती बल्कि अंग्रेजी और पंजाबी में भी उन्होंने काव्य तथा इतर विषयों पर काफी लेखन कार्य किया है। इसी प्रकार उन्होंने केवल काव्य रचना ही नहीं बल्कि कहानी, उपन्यास, नाटक हास्य-व्यंग्य, बाल साहित्य एवम् लघुकथा आदि में भी बहुत लिखी है। [28]

कवयित्री उर्मिला की एक कवितासंग्रह है- 'पथिक आ' (1981)

4:1:29 उषा चौधरी :

कवयित्री उषा चौधरी की जन्म तिथि निश्चित रूप से उपलब्ध नहीं है। कवयित्री उषा की प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा लखनऊ में हुई।

कवयित्री के कविताओं के आलावा अनेक कहानियाँ तथा लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा आकाशवाणी से प्रसारित हुए हैं।

'आस्था का किरण' (1983) में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह की मूल संवेदना 'मानवीय पीड़ा' है।[29]

4:1:30 दिनेशनन्दिनी ड़ालमिया :

कवयित्री दिनेशनन्दिनी डालमिया का जन्म राजस्थान के उदयपुर शहर में हुआ। उनकी शिक्षा उदयपुर और नागपुर में हुई। उन्हें पढाई और गद्य गीत में विशेष रूचि है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में सृजन किया है। समकालीन कहानी, उपन्यास, गद्यगीत विशेष प्रसिद्ध हैं। पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं। [30]

कवयित्री दिनेशन्दिनी डालमिया की कविता संग्रह हैं - 'सारंग', 'मनुघर', 'प्रतिछाया', 'उरवाती', 'इति', 'जागती हुई रात' (1984), 'हिरण्यगर्भा', 'शाम्भवी'

---

28) कौल उर्मिला - साहित्य उकादमी उदयपुर, विशेषांक पृ. 1

29) चौधरी उषा - आस्था का किरण पृ. फ्लैप पर

30) डालमिया दिनेशनन्दिनी - मरजीवा , पृ. फ्लैप पर

आदि। इनकी कविताओं की मूल संवेदना 'नारी जीवन से सम्बन्धित है।' नैराश्य, असंतोष, मन की व्यथा, आंतरिक, गंभीर तथा निष्फल प्रतीक्षा की असहय मर्मांतक पीड़ा है।

4:1:31 सुधा गुप्ता :

कवयित्री सुधा गुप्ता का जन्म 18 मई 1934 ई. को मेरठ के एक शिक्षित एवम् संस्कारी परिवार में हुआ। उनके पिता श्री विश्वम्भरनाथ आनंद आर्य समाज के उच्चादर्शों में विश्वास करते थे और साथ ही गांधीजी के जीवन आदर्शो से प्रभावित होने के कारण सारा जीवन उच्च विचार वाली परंम्परा के त्यागी एवम् कर्मठ व्यक्तियों मे से एक थे। जो परंपरा आज कल लुप्त होती जा रही है। उनकी माताजी श्रीमती सुमति देवी गोयल से शीलगुणयुक्त सुगृहिणी के सद्संस्कार मिलने का सौभाग्य भी सुधा को मिला। कवियित्री सुधा के प्रारंभिक शिक्षा से लेकर ड़ी. लिट तक की उपाधि प्राप्त करने तक की संपूर्ण शिक्षा मेरठ में हुई। उस समय वहाँ की शिक्षा संस्थाएँ आगरा विश्वविद्यालय से संलग्न थी। कवयित्री की रुचियों में प्रथम स्थान कविता का है। बाद में बच्चे और फूल आते हैं। सुधा का सफल कवयित्री एवम् सफल प्राचार्या होने का रहस्य भी उनकी रुचियों में ही निहित है।

शोध के क्षेत्र में प्रबन्ध के अतिरिक्त सुधा के अनेक शोध पत्र भी प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न काव्य संकलनों का भी उन्होंने संपादन किया है। वे अनेक राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक संस्थाओं की आजीवन सदस्या हैं। उन्हें विभिन्न शैक्षिक सामाजिक एवम् साहित्यिक संस्थानों ने सम्मानित किया है।[31]

सुधा के चार कविता संग्रह हैं- 'अनचीन्हा परिवेश' (1970), 'चेतना के फूल' (1997), 'रोशनी की शहतीर' (1977), 'ऋतुओं की भाषा' (1981) आदि।

सुधा के चारों कविता-संग्रहों की कविताओं का मूल कथ्य आम आदमी का दर्द और पीड़ा संर्घषशील परिस्थिति है।

4:1:32 सुमन राजे :

कवयित्री सुमन राजे प्रतिष्ठित लेखिका के रुप में भी प्रसिद्ध है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है। शोध एवम् आलोचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय रचनाएँ लिखी है।

---

31) गुप्ता सुधा - सा. अकादमी उदयपूर, विशेषांक, पृ. 1,4

कवयित्री सुमन के चार कवितासंग्रह तथा चौथा सप्तक में संकलित कुछ कविताएँ प्रकाशित हुए हैं। 'सपना और लाशघर' (1973), 'उगे हुए हातों के जंगल' (1987), 'एरका' (1990), 'यायादेश' इन संग्रहों की कविता का मूल कथ्य पीड़ा 'सामाजिक विषमता', वैयक्तिक आंतरिक स्वर है। कई कविताएँ प्रकृति-चित्रण से सम्बधित हैं।[32]

4:1:33 सुनिता बुद्धिराजा :

कवयित्री सुनिता बुद्धिराजा का जन्म 17 नवम्बर 1934 ई. दिल्ली में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई बचपन से ही पढने लिखने की रुचि थी।[33]

सुनिता केवल हिन्दी में साहित्य रचना नहीं करती बल्कि तेलगु में भी उन्होंने काव्य-रचना तथा अन्य विषयों पर काफी लेखन कार्य किया है। इस प्रकार उन्होंने केवल काव्य-रचना ही नहीं की तो उनकी दो लघु कहानियाँ षड्ज संगीतकारों के साथ किये गये साक्षात्कारों पर आधारित लेखों का संग्रह पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

सुनिता के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हैं- 'आधी धून', 'और कब', 'अनुत्तर' (1995) आदि।

4:1:34 शीला गुजराल :

कवयित्री शीला गुजराल की जन्म तिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। शीला को हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी और पंजाबी का विशेष ज्ञान था। अब तक उनकी अंग्रेजी, पंजाबी और हिन्दी में बाईस कृतियाँ प्रकाशित हुए हैं। इनके कुछ कहानी संग्रह, नाटक उपन्यास हैं। उनके कुछ पंजाबी एवम् हिन्दी में अनुवाद भी छपें हैं- 'बर्फ के चेहरे', 'जब मैं न हूँ' (1995), 'सागर के तट पर' आदि।[34]

इनकी कविताओं का मूल स्वर 'प्रकृति-चित्रण' से सम्बन्धित है।

4:1:35 कीर्ति चौधरी :

कवयित्री कीर्ति चौधरी का जन्म जनवरी 1935 ई. को नईमपुरा (उन्नाव) (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उनके पिता का नाम श्री राजेंद्र शंकर है। माता का नाम सुप्रसिद्ध कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा है। तथा पति का नाम श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव है।

---

32) राजे सुमन – एरका, चौथा सप्तक

33) बुद्धिराजा सुनिता - अनुत्तर, पृ. फ्लैप पर

34) गुजराल शीला - जब मैं न हूँ , पृ. फ्लैप पर

उनकी एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'कविताएँ' है। उसका प्रकाशन 1938 ई. में हुआ है। इन कविता की मूल संवेदना प्रेम, सौंदर्य, रंग, रस, दुःख, पीड़ा, वेदना तथा अवसाद का चित्रण है। उनकी अनेक कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' में संकलित हैं।[35]

4:1:36 सुधा जैन :

कवयित्री सुधा जैन का जन्म 4 फरवरी 1935 ई. बिजनौर (उ.प्र) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा बिजनौर में हुई। साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन। उनकी दो सौ से अधिक रचनाएँ देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। [36]

कवयित्री सुधा के 'गुलाबों का शहर' कवितासंग्रह 1985 ई. में प्रकाशित हुआ है। इनकी कविताओं की मूल संवेदना 'सामाजिक विषमता' है।

4:1:37 अमृता भारती :

अमृता भारती का जन्म नाजीयाबाद (उ.प्र) फरवरी 1937 ई. में हुआ। इनकी शिक्षा बनारस विश्वविद्यालय से हुई। अमृता ने हिन्दी कविता के अतिरिक्त अंग्रेजी की अनेक कविताओं का अनुवाद किया। साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन।

अमृता के पाँच कविता संग्रह उपलब्ध हैं- 'मैं तट पर हूँ' (1971), 'आज या कल या सौ बरस बाद' (1977), 'मिट्टी पर साथ साथ', 'मैंने नहीं लिखी कविता', 'सन्नाटे में दूर तक' आदि। इस संग्रह की कविताओं की मूल संवदेना 'संघर्ष और विद्रोह' की वैयक्तिक परिकल्पना से जुड़े सामाजिक रुपान्तरण का बोध और उसके अन्तर्विरोध से सम्बधित दृष्टिगत होती है।[37]

1:1:38 मालती शर्मा :

कवयित्री मालती शर्मा का जन्म 15 नवम्बर 1938 ई. ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में हुआ। श्री. शिवलाल सारस्वत और अशफी देवी की सुपुत्री का बचपन का नाम 'गोपिका' था। उनकी शिक्षा ग्वालियर और उज्जैन में हुई। कवयित्री को साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यों में रुचि विशेषतः लोक साहित्य संग्रह में। विद्यर्थी जीवन में रहते हुए समाजसेवा कार्य किया। कवयित्री को हिन्दी के अलावा मराठी, अंग्रेजी ब्रजभाषा का

---

35) कीर्ति चौधरी – कविताएँ, पृ. फ्लैप पर
36) सुधा जैन - गुलाबों का शहर, पृ. फ्लैप पर
37) भारती अमृता - सन्नाटें में दूर तक,पृ. फ्लैप पर

विशेष ज्ञान। मालती को संगीत और गायन की रुचि है।

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन। समकालीन कहानी, नाटक, कविता, ललित निबंध, बाललोक कहानियाँ विशेषतः नारी समश्याएँ बाल साहित्य पर लेखन, देश की प्रतिष्ठित पत्रिका में अनेक लेख्र प्रकाशित। कवयित्री मालती जी की पहली कविता 'कल्पना' पत्रिका में प्रथम पृष्ठ पर छपने का सौभाग्य उन्हें मिला। अभि तक उनकी 500 से उपर रचनाएँ प्रकाशित हुए हैं।[38]

कवयित्री मालती कई सम्मेंलन संगोष्ठियों की अध्यक्षता मुख्य अतिथि, उद्घाटन विमोचक रह चुकी है। भारत के प्रतिनिधि के रुप में उन्होंने इटली, फ्रांन्स, रोम, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, स्विझरलैंण्ड, हालैंड, बेलजियम का भ्रमण किया।

कवयित्री के रेडिओं, दूरदर्शन पर पचपन से भी अधिक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। कवयित्री अनेक सन्मानों से पुरस्कृत है। मालती के कविता संग्रह हैं- 'निर्वासन की आँधी' (1981), 'आक्टोपस के पेट में बच्चा एक बीज' (1987), 'दृष्यों से बाहर' (1992) आदि।

इनकी कविताओं का मूल पुरुष सत्ता का विद्रोह किया है और नारी स्वंतत्रता की मांग की है।

4:1:39 पुष्पा राही :

कवयित्री पुष्पा राही का जन्म 8 मार्च 1938 ई. घुमना जिला गुरुदासपुर (पंजाब) में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। इन्हें पढाई और लेखन की रुचि थी। किशोरावस्था से ही आप काव्य-सृजन में प्रवृत्त हुई। 'छायावादी काव्य में अलंकार योजना' विषय पर आपने अनुसंधान किया है।

कवयित्री की अनेक कविताएँ धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, सरिता, मुक्ता नवनीत आदि सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा अनेक प्रतिनिधि काव्य संग्रहो में संकलित हैं। इनका अनेक कवि सम्मेंलनों, कविता परिचर्चाओं, आकाशवाणी एवम् दूरदर्शन कार्यक्रमों में सहभाग रहा है। दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध जानकीदेवी मेमोरियल कॉलेज में वरिष्ठ प्राध्यापिका के पद से अवकाश ग्रहण किया है ।[39]

---

38) शर्मा मालती – निर्वातसन की आँधी, पृ. फ्लैप पर

39) राही पुष्पा - एक युग के बाद, पृ. फ्लैप पर

पुष्पा के चार कविता संग्रह हैं - 'एक युग के बाद' (1994), 'अनुष्टुभ', 'शब्दों की लहरे', 'सतह' आदि।

इन कविताओं का मूल कथ्य सुख-दुःख, आशा-निराशा, अंधःकार-प्रकाश, संयोग-वियोग, मिथ्या-मोह, देश पाखंण्ड आदि से सम्बधित हैं।

4:1:40 सावित्री ड़ागा :

कवयित्री सावित्री ड़ागा का जन्म 10 मार्च 1938 ई. बीकानेर में हुआ। उनकी शिक्षा बीकानेर में हुई। उन्होंने जोधपुर से एम.ए. पीएच. ड़ी. की उपाधि प्राप्त की उनकी रूचि पढ़ना, पढाना और कागज रंगाने में है। कवयित्री हिन्दी विभाग के वरीष्ठ प्रवक्ता पद से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात उन्होंने अपना पूरा समय साहित्य सेवा में लगा दिया है। अब तक उनके प्रकाशित ग्रंथो की संख्या 22 हैं- 'अपना अपना मोक्ष' कविता संग्रह (1998) में प्रकाशित हुआ है।[40]

इस संग्रह की कविताओं का मूल स्वर मानव मूल्यों का ह्रास, नारी जीवन की त्रासद स्थितियाँ है।

4:1:41 रेखा मैत्र :

कवयित्री रेखा मैत्र का जन्म बनारस (ऊ.प्र.) में हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा बनारस में हुई। उसके बाद सागर विश्वविद्यालय से टीचर्स ट्रेनिंग में डिप्लोमा किया। इसके अलावा रेखाजी केंद्रीय हिन्दी संस्था आगरा में प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

मध्यप्रदेश में आयोजित अमरीकी पीस कोर के प्रशिक्षण कार्यक्रम में अमरीकी स्वयंसेवको को हिन्दी का प्रशिक्षण दिया। राज्यभाषा विभाग, गृहमंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों, उपक्रमों के अनेक अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण दिया।[41]

रेखा की एक कविता संग्रह है- 'पन्नों की परछाइयाँ' (1998) पन्नों की परछाइयाँ' की कविताओं का मूल कथ्य संघर्ष चेतना है।

4:1:42 सुशीला कपूर :

कवयित्री सुशीला कपूर का जन्म माटुंगा मुंबई में हुआ। सुशीला पंजाब निवासी

---

40) डागा सावित्री - अपना अपना मोक्ष, पृ. फ्लैप पर

41) रेखा मैत्र - पलो की परछाइयाँ , पृ. फ्लैप पर

श्री प्रकाशचंद्र सुल्तानी मल्ल की प्रथम पुत्री है। उनकी शिक्षा उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में हुई। कवयित्री को बचपन से ही भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा है।[42] हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है। समकालीन कहानी, नाटक, निबंध, उपन्यास, मुक्तक काव्य, गद्यकाव्य, प्रबन्ध आदि विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं।

सुशीला का कविता संग्रह एक है- 'नारी-नारायणी' (1998), 'माँ का मंदिर'-(मुक्तक काव्य),'महिजा' (महाकाव्य),'रत्नजा'(महाकाव्य), 'संकल्प' (महाकाव्य) आदि।

नारी-नारायणी की कविताओं का मूल कथ्य नारी के प्रति हो रही सभी प्रकार के उत्पीड़न, शोषण और अन्याय अत्याचार से सम्बन्धित हैं।

4:1:43 प्रतिभा गर्ग :

कवयित्री प्रतिभा गर्ग का जन्म 1 मार्च 1939 ई. नजीबाबाद, बिजनौर (उ.प्र) में हुआ था और 11 दिसंम्बर 2007 ई. को स्वर्ग वास हुआ। वे 68 वर्ष की थी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा लखनऊ में हुई तथा उच्च शिक्षा शोध संस्थान हैद्राबाद में। इनके पिता का नाम स्व. प्यारेलाल गुप्ता तथा पति का श्री राजेंद्र प्रसाद गर्ग है । स्व. डॉ. प्रतिभा जी की शिक्षा एम.ए. सोशलवर्क (लखनऊ) विश्वविद्यालय में हुआ था। उस्मानिया विश्वविद्यालय से आपने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। कवयित्री प्रतिभा प्रयाग महिला विद्यापीठ इलाहाबाद की भी छात्रा रही, जिसकी प्राचार्या महादेवी वर्मा रही । 25 नवम्बर 2007 ई. को स्व. डॉ. गर्ग को महादेवी वर्मा की जन्मभूमि फरुखाबाद में महादेवी शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। इसी समारोह में उनकी अंतिम कृति 'स्नेह सलिला' का विमोचन हुआ था।

कवयित्री भारत का प्रतिनिधित्त्व करती हुई हिन्दी संगोष्ठियों और सम्मेलनों में विश्व के कई देशों की यात्रा कर चुकी है। मॉरीशश, नेपाल तथा अमेरिका आदि। उनके आकाशवाणी और दूरदर्शन से वार्ता प्रसारण पर काव्यपाठ भी हुए हैं। उन्होंने साहित्त्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनकी कई रचनाएँ भिन्न भिन्न साहित्यिक और सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। समकालीन कहानी, निबंध, महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। [43]

---

42) कपूर सुशीला - नारी नारायणी, पृ. फ्लैप पर

43) गर्ग प्रतिभा - काव्यार्चन, पृ. फ्लैप पर

कवयित्री प्रतिभा की रचनाएँ इस पकार हैं- 'काव्यार्चन' (1998), 'शतदल' (1987), 'आज न जाना मधुशाला' (1989), 'ज्योंतिपूँज' (1982) आदि। इन्हें सुभद्राकुमारी चौहान, राष्ट्रभाषा रत्न, अग्रवाल साहित्य रत्न, शताब्दी की उत्कृष्ठ महिला, नामक सम्मानों से कई संस्थाओं ने सम्मानित किया था । वे साहित्य सुमन संस्था की अध्यक्षा रही। इनके कविताओं की मूल संवेदना 'देशप्रेम' है।

4:1:44 रमणिका गुप्ता :

कवयित्री रमणिका का जन्म 'सृनाम' (पंजाब) में 22 अप्रैल 1939 ई. में हुआ। डॉ. प्यारेलाल और लीलावली बेदी की सुपुत्री का बचपन का नाम 'रमना' था। उनकी शिक्षा पटियाला और लाहोर में हुई। बाल्यकाल से ही हुई परिवर्तनवादी मानसिकता के कारण रमणिका मजदूरों, श्रमिकों, आदिवासीं, दलितों, दलित स्त्रियों के अधिकारों की सदस्य रह चुकी है। विश्व के उन्नीस देशों की वे यात्रा कर चुकी है। भारत के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने मजदूर परिषदों में मैक्सिको, बर्लिन, रूस, युगोस्लाविया, फिलिपाइन्स तथा समर्थ पक्षधर बनी रही। साहित्य सृजन और उनके आन्दोंलनो में सक्रीय सहभाग द्वारा वे उनका प्रतिनिधित्त्व करती आयी है। बिहार विधान परिषद एवम् बिहार विधानसभा की वे क्युबा में भाग लिया है। उन्होंने कई राष्ट्रों की साहित्यिक यात्राएँ की है-अमेरिका, कनाडा, जपान, हाँग-काँग, बैंकाक, इग्लैंड़, फ्रान्स, इटली, नार्वे स्विझरलैण्ड़ स्वीड़न आदि प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका, युद्धरत आम आदमी का कुशल सम्पादन करने में वे लीन है। सोरठा एवम् जनभाषा तथा दलित चेतना और तेलगु दलित साहित्य के तेवर विशेषांक विशेष प्रसिद्ध है। उनके तीन आलेख संग्रह प्रकाशित होकर साहित्यकारों समिक्षकों में चर्चित रहे हैं।

पत्रिका के सम्पादन की तरह वे अन्य कृतियों का भी कुशल सम्पादन करती है - 'रोशनी की लकीरे', 'बोनेक बोलरा', (खोरडा) तथा 'नया मिजाज' (गज़ल) 'आखिरी दशक की लम्बी कविता', 'दलित चेतना', 'कविता एवम् दलित चेतना', 'साहित्यिक एवम् सामाजिक सरोकार' आदि उन्होंने संपादित किए हैं। रमणिका जी के कविता संग्रह चौदह हैं। [44]

'गीत-अगीत' (1962), 'अब और तब' (1968), 'खूँटे' (1980), 'आम आदमी के लिए' (1982), 'पूर्वांचल एक कविता यात्रा' (1985), 'प्रकृति युद्धरत' (1997),

---

44) गुप्ता रमणिका - अब और तब, पृ. फ्लैप पर

'कैसे करोगे बँटवारा इतिहास का' (1994), 'विज्ञापन बनना कवि' (1996), 'आदिम से आदयीनल' (1997), 'भला मैं कैसे मरती' (1997), 'मैं आजाद हुई हूँ' (1999), 'तिल तिल मूजन' (1999) तुम कौन (1999) आदि।

1:4:45 इंदू वशिष्ट :

कवयित्री इंदू वशिष्ट का जन्म 1939 ई. उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी शिक्षा लखनऊ में हुई। इन्दू को कविता करने की रुचि थी। उन्होंने विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनकी कहानियाँ कविताएँ और उनके लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

कवयित्री के सात कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं- 'संदर्भ अपने अपने', 'धुप के रंग', 'दर्द के नुपूर' (1979), 'रेत के घरौंदे', 'मैं और मेरा चुप', 'यादो की पुरवाईयाँ', 'टुकडे टुकडे जिन्दगी' (1989) आदि।

इनके सातों संग्रह की कविताओं की मूल संवेदना 'आम आदमी का दर्द तथा राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य है।'[45]

4:1:46 शांति जैन :

कवयित्री शांति जैन की जन्म तिथि निश्चित रूप से उपलब्ध नहीं है। उनकी शिक्षा एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक हुई। उन्हें विद्यार्थी जीवन से ही कविता में रुचि रही है।

कवयित्री शांति जैन की एक कविता संग्रह 'एक वृत्त के चारो ओर' (1979) प्रकाशित हुआ है। इस कविता संग्रह की कविताओं का मूल स्वर 'सामाजिक विषमता' है।[46]

4:1:47 अरुणा कपूर :

कवयित्री अरुणा कपूर का जन्म दिल्ली में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। कवयित्री की अभिरुचि पढ़ाई और लेखन की है। कवयित्री ने केवल कविता ही नहीं लिखी तो कहानी, उपन्यास, रेड़ियो, नाटक, दूरदर्शन धारावाहिक लेखन आदि साहित्य एवम् कला के क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों पर निरंतर लिख रही है। दूरदर्शन कार्यक्रमों के लिए 50 से अधिक शैक्षिक नाटकों की रचना की है। [47]

---

45) वशिष्ट इंन्दू – दर्द के नुपूर, पृ. फ्लैप पर

46) जैन शांति - एक वृत्त के चारो ओर, पृ. फ्लैप पर

47) कपूर अरुणा - तुम झेल नहीं पाओंगे, पृ. फ्लैप पर

अरुणाजी के कविता संग्रह तीन हैं - 'टूटते अँधेरे' (1979), 'तुम झेल नहीं पाओगे' (1992), 'उधर दीवारें चुप है' आदि।

उनकी कविताओं की मूल संवेदना 'सामाजिक, राजनीतिक विषमता से जुड़ी है।

4:1:48 कुसुम कुमार :

कवयित्री कुसुम कुमार का जन्म 5 अगस्त 1939 ई. को हुआ। कुछ नाट्यशास्त्र और कुछ रंगमंच के सैद्धंतिक पक्ष पर आपने अनुसंधान किया है। कवयित्री कुसुम कुमार ने अनेक विधाओं में लिखा किंतु शुरुआत कविता और नाट्य लेखन से की।

कवयित्री कुसुम कुमार का 'तृष्णाकिंत' यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। 'अभी रहेंगे', 'रास्ते भर जंगल', 'तीन अपराध', 'छत्र' आदि महत्त्वपूर्ण कविता हैं।[48]

(सुनो शेफाली, ओम क्रांति क्रांति, रावण, दिल्ली उंचा सुनती है, संस्कार को नमस्कार, लष्कर चौक, पवन, चत्तुर्वेदी की ड़ायरी। आदि नाटक)

साहित्य में अपनी विश्वसनीय और सुधरी उपस्थिति के साथ-साथ एक कुशल विचार संचलित चित्रकार के रूप में अनुवाद विभन्न भारतीय भाषाओं में भी हो चुके हैं। 'सुनो शेफाली' और 'ख्वाबगाह' नाटकों पर टेली फिल्में बनी है। सम्प्रति स्वतंत्र लेखन करती है।

4:1:49 कुसुम अंसल :

कवयित्री कुसुम अंसल का जन्म 1940 ई. अलीगढ उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी शिक्षा पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक हुई। कवयित्री हिन्दी के आलावा पंजाबी में लिखती है। इन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। हिन्दी साहित्य की प्रमुख पत्र-पत्रिकोओं में अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं।

कवयित्री कुसुम के चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'मौन के दो पल', 'धुएँ का सच' (1978), 'विरुपीकरण' (1986), 'मेरा होना' (1998).

इनकी कविताओं का मूल कथ्य 'संघर्ष चेतना, पारिवारिक संबंध, प्रकृति-चित्रण' है। कई कविताओं में व्यक्तिगत अनुभूति प्रकट हुई है।[49]

4:1:50 स्नेहमयी चौधरी :

कवयित्री स्नेहमयी चौधरी की जन्म तिथि निश्चित रूप में उपलब्ध नहीं है।

---

48) कुसुम कुमार - पूर्वी द्वार (उपन्यास) पृ. फ्लैप पर

49) अंसल कुसुम - विरुपीकरण, पृ. फ्लैप पर

हिन्दी साहित्य की अनेक पत्र-पत्रिकोओं में उनके लेख्र प्रकाशित हुए हैं।[50] कवयित्री स्नेहमयी का कविता संग्रह - 'पूरा गलत पाठ' (1976) में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की मूल संवेदना सामाजिक विषमता है।

4:1:51 मणिका मोहिनी :

कवयित्री मणिका मोहिनी का जन्म 20 मई 1940 ई. दिल्ली में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा दिल्ली में हुई। इन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन किया। वे कहानी, कविता, नाटक आदि निर्माण करती रही वैचारिक संकलन पत्रिका की तरह वे अन्य का भी कुशल सम्पादन करती रही है। [51]

4:1:52 विद्यावती कोकिल :

कवयित्री विद्यावती कोकिल का जन्म 26 जुलाई 1941 ई. में हुआ। उनके पिता का नाम बाबू शिवप्रसाद श्रीवास्तव है तथा पिता का नाम श्री त्रिलोकीनाथ सिन्हा है।

उनकी सात काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। उसमें से पहले संग्रह का नाम 'अंकुरित' तथा दूसरे का 'माँ' तीसरे का 'सुहागिन' चौथे का 'सोहागगीत' पाचँवे का 'पुनर्मिलन' छटे का 'आरती' सातवे का 'आरती' है। पहले संग्रह की कविता का मूल स्वर 'प्रकृति और वात्सल्य' है। 'सुहागिन' की कविताओं की मूल संवेदना 'भक्ति' है। 'सोहागगीत' की कविता में विवाह से लेकर वधू के आगमन तक की सभी छोटी बड़ी बातों का परिचय मिलता है। पाँचवे संग्रह की कविता ओं का मूल स्वर 'आत्मा और परमात्मा' मिलन कथा है। 'आरती' यह कविता संग्रह कवयित्री की मौलिक कृति नहीं है। सातवे कविता संग्रह का मूल कथ्य 'भक्ति भावना' है।[52]

4:1:53 सुनिता जैन :

कवयित्री सुनिता जैन का जन्म 31 जुलाई 1941 ई. को हुआ। आपने एम.ए. अंग्रेजी, स्टेट युनिवर्सिटी न्यूयार्क, और पीएच.ड़ी. की उपाधि यूनिवर्सिटी ऑफ नेब्रासका से प्राप्त की है। मानविकी एवम् समाज विज्ञान विभाग, इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी, दिल्ली में, प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य कर चुकी है। आप को अमेरिका में 'मैरी सैण्डोज प्रैरिक स्कूनर पुरस्कार' तथा 'रोलैंड़' आवार्ड व

---

50) चौधरी स्नेहमयी - पूरा गलत पाठ, पृ फ्लैप पर

51) मोहिनी माणिका – मेरा मरना, पृ फ्लैप पर

52) विद्यावती कोकिल - अंकुरित, पृ. फ्लैप पर

कविता के लिए 'निराला नामित' तथा 'प्रभा खेतान' पुरस्कार। हिन्दी अकादमी, दिल्ली से साहित्यकार सम्मान आदि पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है।

सुनिता का रचना- संसार बहुत व्यापक है। 1973 से 1998 के बीच लिखी और 23 काव्यसंग्रहों में बिखरी संपूर्ण कविताएँ 'यहीं कहीं पर' शीर्षक से तीन खंडो में प्रकाशित हुई है। उनके अन्य संग्रह हैं - 'गंगा तट देखा', 'इस अकेले तार पर', 'कातर बेला', 'हथकडी में चाँद', 'धूप हठीले मन की', 'कितना जल', 'इतना भर समय', 'सुनो मधु किश्वर', 'रंग-रति', 'बोलो तुम ही', 'युग क्या होते और नहीं', 'कौनसा आकाश', 'लेकिन अब जो करता है', 'पौ फटे का पहला पक्षी', 'हो जाने दो मुक्त', 'सीधी कलम् सधे न', 'कहाँ मिलेगी कविता', 'जाने लडकी पगली', 'सच कहती हूँ' , 'मूकं करोति वाचालं', 'सुत्रधार सोते हैं', और प्रतिनिधिक कविताओं का संकलन- 'छाया कहीं बडी है' आदि। गद्य में लिखा तमाम साहित्य संपूर्ण कहानियाँ और संपूर्ण उपन्यास के रूप में दो जिल्दों में संकलित हैं।[53]

4:1:54 शशि सहगल :

कवयित्री शशि सहगल का जन्म 2 अक्तुबर 1944 ई. लाहौर में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की संपूर्ण शिक्षा लाहौर में हुई। कवयित्री शशि ने हिन्दी कविता के अलावा हिन्दी कविताओं का पंजाबी में अनुवाद किया। कवयित्री को पंजाबी भाषा का विशेष ज्ञान है। उनकी अनेक कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। कवयित्री समीक्षा कर्म, कविता एवम् कथा लेखन में समान रूप से सक्रीय है। साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन।[54]

कवयित्री शशि का कविता संग्रह है- 'एक टुकडा वक्त' (1997) इस संग्रह की कविताओं की मूल संवेदना नारी जीवन की आकुलता एवम् विवशताएँ है।

4:1:55 मंजु गुप्ता :

कवयित्री मंजु गुप्ता का जन्म 1945 ई. मेरठ (उ.प्र) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा मेरठ में हुई हिन्दी की अनेक प्रमुख साहित्यिक एवम् दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रम प्रसारित।

कवयित्री मंजू का कविता संग्रह है - 'मिट्टी की वर्णमाला' (1992)[55]

---

53) जैन सुनिता : यहीं कहीं पर, पृ. फ्लैप पर

54) डॉ. सहगल शशि – एक टुकडा वक्त, पृ. फ्लैप पर

55) गुप्ता मंजु- मिट्टी की वर्णमाला पृ. फ्लैप पर

4:1:56 शामा :

कवयित्री शामा का जन्म 28 जुलाई 1945 ई. श्रीनगर (कश्मीर) में हुआ। उनकी शिक्षा श्रीनगर में हुई। कवयित्री नें पेटिंग, मुर्तिकला एवम् जापानी फुल-सज्जा आदि में देशी- विदेशी कई विशेष कोर्स किए हैं।

कवयित्री ने भारत के प्रतिनिधित्व के रुप में विश्व के 17 देशों की यात्रा कर चुकी है। अमेरिका, यू.के. फ्रान्स, नीदरलैण्ड, नार्वे स्विझरलैंण्ड़, विएंना, भूतान, नेपाल आदि। देश-विदेशों में अनेक बहु-प्रशंसित स्वरचित्र चित्रों की एकल प्रदर्शनियाँ, साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन समकालीन कहानी यात्रा वृत्तांत आदि । पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख्र प्रकाशित हैं।[56]

शामा के कविता संग्रह आठ हैं- 'चुटकी भर मुस्कान', 'उदासियों के शहर में', 'मुट्ठीभर टूटन', 'तुम्हें याद तो होगा', 'तूम मेरी आदत है', 'समुन्दर ने चुरा लिए किनारे', 'वक्त की कोरे पन्ने पर', 'पीली धूप का टुकडा' (1996) आदि ।

4:1:57 अर्चना वर्मा :

कवयित्री अर्चना वर्मा का जन्म 6 अप्रैल 1946 ई. इलाहाबाद में हुआ। उनकी शिक्षा इलाहाबाद में हुई। उनकी अनेक कहानियाँ , कविताएँ, समीक्षात्मक लेख्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।[57]

अर्चना के दो कविता संग्रह उपलब्ध हैं। 'कुछ दूर तक' (1979) 'लौटा है विजेता' (1993) इनकी कविताओं की मूल संवेदना स्त्री जीवन की परेशानियाँ, विवशताएँ, आकुलता है।

4:1:58 शैलप्रिया :

कवयित्री शैलप्रिया का जन्म 11 दिसम्बर 1946 ई. में हुआ। उनका निधन 1 दिसम्बर 1994 ई. में हुआ। उनकी शिक्षा एम.ए. उपाधि तक हुई। कवयित्री की रूचि में प्रथम स्थान कविता का है।

समकालीन कविता और नारी उत्पीड़न के खिलाफ और नागरिक समस्याओं के संघर्ष में लगभग तीन दशकों तक संस्थागत भागीदारी। 'सुरभि' और 'अभिव्यक्ति' संस्थापक सदस्यो में एक आकाशवाणी के राँची केंद्र से अनेक रचनाओं का प्रसारण, अनेक पत्र - पत्रिकाओं और संकलनो में कविताओं का प्रकाशन।[58] 'अपने लिए',

---

56) शामा - पीली धूप का टुकडा, पृ. फ्लैप पर

'चाँदनी आग है','घर की तलाश में यात्रा'(1996) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

4:1:59 सुभद्रा ख़ुराणा :

कवयित्री सुभद्रा ख़ुराणा का जन्म 7 अगस्त 1946 ई. की पश्चिमी पंजाब पाकिस्तान के ग्राम हवेली जिला मिवटगुंमरी में हुआ है। 1947 ई. के देश विभाजन में नगर सहारनपुर में इनका लालन-पालन हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा सहारनपुर में हुई। उन्होंने चार विषयों में एम.ए. किया। कवयित्री की अभिरुचि पढाई और लेखन में रही है।[59]

सुभद्रा के कविता संग्रह तीन हैं- 'अक्षर अक्षर नाम तुम्हारा' (1980), 'मैं तेरी वंशी हूँ माधव', 'गुरु गोविंद' आदि।

4:1:60 वासंती रामचंद्रन :

कवयित्री वासंती रामचंद्रन का जन्म 13 अगस्त 1947 ई. दक्षिण भारत 'तन्जौर' में हुआ। उनकी शिक्षा तन्जौर में हुई। साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ एवम् लेख प्रकाशित हुए हैं।[60]

कवयित्री वासंती का कविता संग्रह है- 'स्मृतियों के लहरे' (1989)

4:1:61 कामिनी भटनागर :

कवयित्री कामिनी भटनागर का जन्म 6 जुनावाड़ा दिल्ली में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त करने तक की संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में हुई। विद्यार्थी जीवन से ही कविता में रूचि रही है। अनेक लेख, कविताएँ विभन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

कवयित्री कामिनी का कविता संग्रह-'निजी गंध' (1990) प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह की कविताओं का मूल कथ्य 'पारिवारिक जीवन तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्ध है।' [61]

4:1:62 मंजु 'महिमा' भटनागर :

कवयित्री मंजू 'महिमा' भटनागर का जन्म 30 जुलाई 1948 ई. कोटा (राजस्थान) में हुआ। कवयित्री की रुचियों में प्रथम स्थान पठन लेखन, संगीत, हस्तकला, चित्रकला, यात्रा, फोटोग्राफी और नये नये व्यंजन बनाना आदि है।

---

57) वर्मा अनिता - लौटा है विजेता, पृ. फ्लैप पर
58) शैलप्रिया - अपने लिए, पृ. फ्लैप पर
59) ख़ुराणा सुभद्रा - अक्षर अक्षर नाम तुम्हारा. पृ. फ्लैप पर
60) रामचंद्रन वासंती - सृतियों लहरे, पृ. फ्लैप पर
61) भटनागर कामिनी - निजीगंध , पृ. फ्लैप पर

कवयित्री मंजू की अनेक कविताएँ, कहानियाँ नाटक एवम् लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। उनकी कुछ कविताएँ एवम कहानियाँ गुजराती में अनुदित कई कविताओं का अहमदाबाद दूरदर्शन से प्रसारण भी हुआ है।[62]

कवयित्री मंजू का कविता संग्रह- 'बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी' (1990) प्रकाशित हुआ है।

इस संग्रह की कविताओं की मूल संवेदना 'स्त्री' स्वतंत्र न रह पाने का क्षोभ है, उसके विवश होने की व्यथा है,उसे दहेज के लिए जिंदा जलाए जाने की गहन पीड़ा है।

4:1:63 कीर्ति केसर :

कवयित्री कीर्ति केसर का जन्म जालंदर (पंजाब) में हुआ। उनकी शिक्षा गोला गोरण नाथखीरी में हुई। उन्होंने 'आगरा' विश्वविद्यालय से एम.ए तथा मेरठ विश्वविद्यालय से पीएच.ड़ी. उपाधि प्राप्त की।[63]

साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन। समकालीन कहानी, नाटक, आलोचना और अनुवाद तथा लोक साहित्य पर अनेक लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। कुछ कविताओं की विशेष चर्चा हुई। कवयित्री ने हिन्दी के अलावा पंजाबी की श्रेष्ठ रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया है।

कवियित्री कीर्ति का एक कविता संग्रह उपलब्ध है- 'मुक्त कर दो' (1991)

4:1:64 पद्मजा घोरपडे :

कवयित्री पद्मजा घोरपड़े प्रारंभिक शिक्षा से पीएच.डी. उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा पुणे विश्वविद्यालय में हुई। साहित्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन। कवयित्री पद्मजा की दो कविता संग्रह- 'जख्मों के हाशिए' (1991), 'पारदर्शी आँधियाँ' (1999) प्रकाशित हुए हैं। [64]

4:1:65 शशि शर्मा :

कवयित्री शशि शर्मा का जन्म दिल्ली में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की संपूर्ण शिक्षा दिल्ली में हुई। उसके अलावा रुसी भाषा में डिप्लोमा किया कवयित्री की रुचि पढाई और लेखन की है। [65]

---

62) भटनागर मंजू महिमा - बोनसाई संवेदनाओं के सुरजमुखी, पृ. फ्लैप पर
63) केसर कीर्ति - मुक्त कर दो , पृ. फ्लैप पर
64) घोरपडे पद्मजा- जख्मों के हाशिए, पृ. फ्लैप पर
65) शशि शर्मा - जंगल से गुजरता शहर , पृ. फ्लैप पर

कवयित्री शशि के कविता संग्रह हैं - 'जंगल से गुजरता शहर', 'अपराजिता', 'मैं तुम से अलग तो नहीं', 'मौसम से कह दो' (1992) आदि। इनकी कविताओं का मूल कथ्य संघर्ष चेतना है।

4:1:66 अमिता शर्मा :

कवयित्री अमिता शर्मा का जन्म 1955 ई. को इलाहाबाद में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद में हुई और उच्च शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय में। कवयित्री की रूचि समकालीन साहित्य और सैंद्धातिंक समीक्षा में है। अनेक विधाओं में साहित्य सृजन कर रही है। समकालीन कहानी, कविताएँ हिन्दी और अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।[66]

अमिता के दो काव्य संग्रह उपलब्ध हैं- 'आँख में उलझी धूप' (1998), 'शालभंजिक और अलग घर', 'अलग बारीश' आदि।

4:1:67 वीणा सिन्हा :

कवयित्री वीणा सिन्हा का जन्म 23 अगस्त 1957 ई. को सुकूमा बस्तर (म.प्र.) में हुआ। इंजीनियर पिता के तबादलों के साथ मध्यप्रदेश के कस्बों व गावों में उनकी शिक्षा हुई। स्वर्ण पदक के साथ स्त्री रोग विज्ञान में एम.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। श्री. मुरलीधर पत्की और बिंदू पत्की की तीसरी पुत्री थी। विद्यार्थी जीवन से ही उन्हें कविता, नाटक अभिनय में रूचि है। स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में मध्यप्रदेश शासकीय चिकित्सा सेवा में कार्यरत ।

कवयित्री की अनेक कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वीणा का कविता संग्रह एक है - 'तुम्हें जाना है मैंने' (1996) इस संग्रह की मूल संवेदना स्त्री और उसके दु:ख है।[67]

4:1:68 इंदिरा मिश्र :

कवयित्री इंदिरा मिश्र की जन्मतिथि निश्चित रूप से उपलब्ध नहीं है। कवयित्री का बचपन हरिद्वार व श्री अरविंद आश्रम पाण्डिचेरी में बीता। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य-सृजन। समकालीन कहानी, यात्रा और ललित निबन्ध आदि प्रकाशित हुए हैं। अब दसवर्षों से कविता के क्षेत्र में सक्रीय हैं।[68]

---

66) शर्मा अमिता - आँख्ो में उलझी धूप, पृ. फ्लैप पर

67) सिन्हा वीणा – तुम्हे जाना है मैंने, पृ फ्लैप पर.

68) मिश्र इंदिरा - अभ्यंतर , पृ. फ्लैप पर

कवयित्री इंदिरा के कविता संग्रह हैं - 'दो घड़ी अपने साथ', 'अभ्यंतर' (1996) आदि ।

4:1:69 गगन गिल :

कवयित्री गगन गिल का जन्म 18 नवम्बर 1959 ई. नयी दिल्ली में हुआ। कवयित्री हिन्दी भाषा के अलावा अंग्रेजी और पंजाबी का विशेष ज्ञान रखती है। कवयित्री गगन को 1985 ई. के बाद उभरनेवाली कवयित्रियों में विषेश स्थान है।

कवयित्री विश्व के कई देशों की यात्रा कर चुकी है। 1990 ई. में आयोबा इंटरनेशनल रायटिंग प्रोग्राम के निमंत्रण पर तीन महिने के लिए अमेरिका गयी थी। उसी दौरान कैनेड़ा यात्रा भी कर चुकी है। [69]

1992-93 ई. में उत्कृष्ठ पत्रकारिता के लिए हारवर्ड विश्वविद्यालय की नीमेन फैलोशिप के अंतर्गत दस महिने के लिए केम्ब्रिज। कवयित्री भारत के विभिन्न नगरों के अतिरिक्त इग्लैंड़, जर्मनी, अमेरिका, आदि में कविता पाठ। 1991 ई. में रुस और इटली की यात्रा। उनकी रचनाओं का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। प्रथम संग्रह 'एक दिन लौटेगी लडकी' का बंगला भाषा मे अनुवाद हुआ। उनकी कई रचनाएँ अंग्रेजी, जर्मन, रुसी और चीनी में अनुवादीत प्रकाशित । कवयित्री अनेक सम्मान एवम् पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं।

कवयित्री गगन के कविता संग्रह हैं - 'एक दिन लौटेगी लड़की' (1989), 'अँधेरे में बुद्ध' (1996), 'यह आकांक्षा समय नहीं' (1998) आदि।

इनकी कविता की मूल संवेदना 'वर्तमान काल में स्त्रियों की दयनीय स्थिति' से सम्बन्धित है। ये ख्यात कथाकार निर्मल वर्मा की पत्नी है।

4:1:70 पद्मा पाटील :

कवयित्री पद्मा पाटील का जन्म 1959 ई. में हुआ। ये स्नातक और स्नातकोत्तर अध्यापन कार्य तथा शोध निर्देशन लेखन करती रही है। इनकी कविताएँ, कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। साथ ही अनेक साहित्यिक विषयों पर आकाशवाणी वार्ताएँ प्रस्तुत हुई। इन्हें चित्रकला और संगीत कला में रुचि है। अब तक आपकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं।

---

69) गिल गगन - अंधेरे में बुद्ध, पृ. फ्लैप पर

आपकी प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं -'यहाँ से देखो: एक अध्ययन', (1995) 'यक्ष का संदेश', 'सम्वेदना और शिल्प' (1997) 'कांदम्बिनी' (काव्य संग्रह) (1998), 'विद्यापति के काव्य में शृंगार, भक्ति और समाज दर्शन' (1999), 'दस्यु का घोडा' (अनुदित कविता संग्रह 2000), 'मुक्तिबोध की कविता' (कला, शिल्प और सौंदर्य 2001), 'साहित्यिक अनुवाद' (पाठ्य पुस्तक 2002), 'मनुवाद के विषैले जनक धर्मसूत्र तथा बहुजनों की गुलामी' 2003), 'साये में धूप: समकालीन सृजन संदर्भ' (2003), 'यशपाल और मानव अधिकार' (2003),'कीर्तिलता: युगीन वास्तवदर्शी रचना' (2004), 'महात्मा कबीर और महात्मा फुले: तुलनात्मक अध्ययन' (2005) आदि ।

कवयित्री पद्मा को अनेक पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है - 'तुलसीदासकी साहित्यिक महत्ता': अखिल भारतीय इंदिरा गांधी निबंध प्रतियोगिता 1989 का प्रथम पुरस्कार। कला, साहित्य, संस्कृति संस्थान, विधुनगर द्वारा कला, साहित्य में किए कार्य के लिए सम्मानित (1998), विदर्भ साहित्य संस्कृति, अमरावती का पंजाबराव देशमुख साहित्यिक सम्मान (2001), अखिल भारतीय कवयित्री परिषद का 'ताज मुगलिनी', सम्मान, सामाजिक एकता की सर्वश्रेष्ठ हिंदी रचना 'कादम्बिनी' पर प्राप्त (2003), अखिल भारतीय कला मंच, मुरादाबाद का स्व. रामकिशन अग्रवाल स्मृति 'हिंदी गीत काव्य सृजन' सम्मान (2003), सुभद्रा कुमारी चौहान जन्मशती साहित्यिक सम्मान, जैमिनी हिंदी अकादमी, पानीपत (2004) अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद का महाकवि आदेश साहित्य चूडामणि सम्मान (2004) आदि।

इन रचनाओं में चार समीक्षात्मक, चार अनूदित तथा एक मौलिक है। यह मौलिक कृति विधा की है। इसका शीर्षक 'कांदम्बिनी' है। इसका प्रकाशन 1998 ई. में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के प्रकाशन अनुदान सहयोग से हुआ है।[70]

4:1:71 कात्यायनी :

कवयित्री कात्यायनी का जन्म 9 मई 1959 ई. में हुआ। उनकी शिक्षा लखनऊ में हुई। बाल्यावस्था से ही पढ़ाई में रुचि। समकालीन कहानी, अंग्रेजी, पंजाबी, और मराठी में कुछ अनुदित कविताएँ प्रकाशित हुए हैं।

विगत चौदह वर्षो से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विषयों पर स्वतंत्र लेखन कर रही है। कवयित्री अठारह वर्षों से सांस्कृतिक

---

70) पाटील पद्मा - महात्मा कबीर, महात्मा फुले, पृ. फ्लैप पर

मोर्चे पर और एक दशक से नारी मोर्चे पर सक्रीय। उनकी अधिकांश कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।[71]

कात्यायनी का कविता संग्रह एक है - 'सात भाईयों के बीच चम्पा' (1999) इस संग्रह की कविताओं की मूल संवेदना 'नारी की दीन-हीन दशा' तथा उसकी विवशताएँ है।

4:1:72 अनिता वर्मा :

कवयित्री अनिता वर्मा का जन्म 13 सितम्बर 1960 ई. दिल्ली में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली और राजस्थान में हुई। कोटा के खुले विश्वविद्यालय से जन संचार एवम् पत्रकारिता का डिप्लोमा किया। साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन। समकालीन कहानी, उपन्यास आदि उनकी रचनाएँ देश की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

कवयित्री अनिता का कविता संग्रह-'आरम्भ से हाशिये तक' (1998) में प्रकाशित हुआ हैं।[72]

4:1:73 डी. माधवी :

कवयित्री डी. माधवी का जन्म 28 अगस्त 1960 ई. अमलापुरम (आ.प्र) में हुआ। कवयित्री को हिन्दी और तेलगु का विशेष ज्ञान है। उनकी शिक्षा हैद्राबाद में हुई। साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन समकालीन कविता, गीत, गजल, लघुकथा, कहानी, नाटक, आलेख, समीक्षा आदि। दूरदर्शन एवम् आकाशवाणी पर समय-समय पर प्रसारण। हिन्दी ,उर्दू तेलगु कवि सम्मेंलनों में सक्रीय रूप से भागीदारी। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेख प्रकाशित।

कवयित्री माधवी का कविता संग्रह हैं- 'जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें'। (2000) इस संग्रह की कविताओं का मूल स्वर सार्थक जीवन जीने की तलाश है। और सब से ज्यादा स्त्री जीवन के प्रश्न, आकुलता एवम् परेशानियाँ है।[73]

4:1:74 अनामिका :

कवयित्री अनामिका का जन्म 17 अगस्त 1961 ई. मुजफ्फर (बिहार) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा से ड़ी. लिट की उपाधि प्राप्त करने तक की सम्पूर्ण शिक्षा

---

71) कात्यायनी - सात भईयों के बीच चम्पा, पृ. फ्लैप पर

72) वर्मा अनिता - आरंभ से हाशिए तक, पृ. फ्लैप पर

73) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिये पर कुछ लम्हे, पृ. फ्लैप पर

मुजफ्फर में हुई। जहाँ की शिक्षा संस्थाएँ उस समय बिहार विश्वविद्यालय से सलग्न थी कवयित्री की रुचियों में प्रथम स्थान कविता और लेखन का है अनामिका का सफल होने का रहस्य भी उनकी रुचियों में निहित है।[74]

कविता के अतिरिक्त कवयित्री अनामिका के अनेक कहानी संग्रह उपन्यास, अनुवाद आलोचना आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वे साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन कर रही है।

अनामिका के कविता संग्रह तीन हैं - 'बीजाक्षर' (1993), 'समय के शहर में', 'अनुष्टूभ' आदि । इनकी कविताओं का मूल कथ्य स्त्री नियति की तीखी यातना है।'

कवयित्री मणिका के तीन संग्रह प्रकाशित हुए हैं। साथ ही अनेक उपन्यास उपलब्ध हैं- 'कटघरे में' (1993), 'मेरा मरना' (1996) , 'प्रेम प्रहर'।

तीनों संग्रह की कविताओं की मूल संवेदना स्त्री पुरुष सम्बन्ध तक सीमित दृष्टिगत होती है।

4:1:75 निशा निशांत :

कवयित्री निशा निशांत का जन्म 6 जून 1963 ई. में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। निशा ने गांधीजी के जीवन पर आधारित श्री रिचर्ड एटन को द्वारा निर्देशित फिल्म 'गांधी' में एक पात्र की भूमिका की है। हिन्दी के विश्वविद्यालय साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर के साथ 1984 से 1995 ई. तक उनकी निजी सहाय्यक सांस्कृतिक महत्वपूर्ण पूरातत्व स्थलों का पर्यवेक्षण किया है। बाल्यावस्था से निशा को खेलने का बहुत शौक था। स्कूल एवम कॉलेज में साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमो में भाग लिया और अनेक पुरस्कार प्राप्त किये। निशा को पढ़ाई और नाटक में रुचि है।

निशा ने कई गांवो की साहित्यिक यात्राएँ की है - लखनऊ, नागपुर , चंद्रपुर वर्धा सेवाग्राम, मद्रास, श्री आरविंद आश्रम, ग्वालियर, भोपाल, दातिया आदि। सम्प्रति वे इन्द्रप्रस्थ भारती का कुशल सम्पादन करने में लीन है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रतिबिंब उसकी रचनाओं में उभरकर सामने आता है। निशा निशांत का व्यक्तित्व उनकी रचनाओं में अनायास ही झलकता है। कविता करने की प्रेरणा के सम्बन्ध में स्वयं निशा ने कहा है - 'कविता करने की प्रेरणा मुझे अपनी पारिवारिक वातावरणों से

74) अनामिका - बीजाक्षर , पृ. फ्लैप पर

मिली है।'[75]

निशा का कविता संग्रह एक है - 'पगडंडी का सफर' (1994) इन कविताओं की मूल संवेदना 'स्त्री जीवन की विसंगति, आकुलता एवम् परेशानियाँ हैं।'

4:1:76 अलका सिन्हा :

कवयित्री अलका स्निहा का जन्म 9 नवम्बर 1964 ई. भागलपुर (बिहार) में हुआ। एम.बी.ए. एम.ए. पी.जी. डी. टी., केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय द्वारा संचालित अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। उनकी शिक्षा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश में हुई। कवयित्री अलका स्कूल और कॉलेज में राष्ट्रीय स्तर पर पाचसों बार पुरस्कृत हुई। उनकी कहानियाँ कविताएँ आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित।

कवयित्री अलका का विशिष्ट गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है - दिल्ली दूरदर्शन के साहित्यिक की प्रस्तोता, आकाशवाणी की हिन्दी उद्घोषक, गत अनेक वर्षों से गणतंत्र - दिवस परेड़ का आँखो देखा हाल सुनाने का गौरव, एयरलाइंस कर्मियों को उद्घोषणा संबंधी जानकारी देने के लिए आयोजित वाईस कल्चर ट्रेंनिग में फैकल्टी पर्सन, एन.सी.ई.आर.टी. के श्रव-दृश्य शिक्षण कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण, साहित्य प्रत्रिका 'अक्षरम् संगोष्टी' की मानद सह-संपादक केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की पूर्व 'साहित्य एवं संस्कृति' मंत्री आदि। कवयित्री को दिल्ली हिंदी आकादमी, विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा कविरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया है ।[76]

कवयित्री अलका का कविता संग्रह - 'काल की कोख से' 1997 ई. में प्रकाशित हुआ है।

4:1:77 प्रगति सक्सेना :

कवयित्री प्रगति सक्सेना का जन्म 2 अगस्त 1967 ई. हिसार में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली में हुई। उसके बाद कवयित्री ने जर्मन भाषा का अध्ययन किया।[77]

कवयित्री हिन्दी और अंग्रेजी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समाज, संस्कृति,

---

75) निशांत निशा – पगडंडी का सफर, पृ. फ्लैप पर

76) अलका सिन्ना – काल की कोख से, पृ. फ्लैप पर

77) सक्सेना प्रगति - आश्चर्य लोक, पृ. फ्लैप पर

युवा वर्ग और महिलाओं से जुड़े अनेक मुद्दों पर लेखन। उनकी कविताएँ पहल, विपाशा, समकालीन जनमत, जनसत्ता, नवभारत टाइम्स आदि में प्रकाशित। कुछ हिन्दी की कविताएँ अंग्रेजी में अनुदित हुए हैं। उन्हें साहित्य अकादमी की अनुवाद वर्कशॉप में अनुवादक के रूप में आमंत्रित किया था।

कवयित्री प्रगति का कविता संग्रह - 'आश्चर्य लोक' (1994) में प्रकाशित हुआ है।

निष्कर्ष :

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों का परिचय एवम् रचनात्मक सरोकार देखने के बाद ऐसा लगता है कि कवयित्रियों की कविता की पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक है । इस काल की कविता पर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक आदि परिस्थितियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

कवयित्रियों के जीवन परिचय तथा रचनाओं को देखने के बाद संक्षेप में कहा जा सकता है कि कवयित्रियों ने अपने जीवन को जिस तरह देखा, जाना, परखा है उसी तरह अभिव्यक्त किया है। उससे उनके व्यक्तित्व और रचनाओं का निर्माण हुआ है। वे अपनी साहित्यिक कृतियों में जीते-जागते जीवन के अनुभव को चित्रित करती है। ये कवयित्रियाँ रुढि परम्पराओं के विरोध में है। साहित्य की दृष्टि से उनकी रचनाओं का अपना महत्त्व है। साथ ही ये कवयित्रियाँ अच्छी लेखिकाएँ भी हैं। अतः हम कह सकते हैं कि कवयित्रियों का व्यक्तित्व निश्चित रुप से साहित्यिक पाठकों के लिए प्रेरणादायी तथा महत्त्वपूर्ण रहेगा।

पंचम् अध्याय

आधुनिक मराठी कवयित्रियाँ: परिचय एवं रचनात्मक सरोकार

5:1 भूमिका :

प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक काल में मराठी में सृजनरत कवयित्रियों का परिचय एवम् रचनात्मक सरोकार पर विचार किया गया है। आधुनिक काल में मराठी कविता को समृद्ध बनाने में कवयित्रियों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। आधुनिक काल में मराठी कवयित्रियों को आए हुए अनुभव, आशा-आकांक्षाएँ, गृह-गृहस्थि से संबंधित, खेती में काम करते समय, संसारी जीवन में आए अनुभव कवयित्रियों ने चित्रित कर मराठी कविता को आगे बढाने का काम किया है।

आधुनिक काल में स्त्री के अनुभव का दायरा बढता गया, स्त्री घर की देहलीज पार कर हर क्षेत्र पादाक्रांत करने लगी, राजनीति, नौकरी , शिक्षा आदि क्षेत्र में वह जाने लगी, उसका 'स्व' अस्तित्व पहचानने लगी, परंपरागत विचारों के बंधनों से बाहर आकर वह स्वतंत्र विचार करने लगी, अनेक अनुभव आधुनिक काल में वह चित्रित करने लगी। आधुनिक काल में मराठी में भी करीब-करीब दो सौ सें भी अधिक कवयित्रियाँ सृजनरत दिखाई देती हैं। उनका जीवन परिचय और रचनात्मक सरोकार इस प्रकार हैं -

5:1:1 सावित्रीबाई फुले :

आधुनिक मराठी की एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण कवयित्री युगस्त्री सावित्रीबाई का जन्म 3 जनवरी 1831 ई. को कुदरत की सुंदरता में बसे हुए सतारा जिले के खंड़ाला तहसिल स्थित नायगांव नामक गाँव में हुआ। इनके पिता खंड़ोजी नेवसे पाटील ने 'पहली बेटी धन की पेटी' के रूप में उन्हें स्वीकार किया और नाम रखा सावित्री। सावित्री के बाद सदू, सखाराम और श्रीपति आदि सावित्री के तीन भाईयों का जन्म हुआ। घर की पहली बेटी और सुंदरता के कारण सावित्री माता-पिता की लाड़ली बन गयी।[1]

---

1) लांजेवार विठ्ठल - 'युगस्त्री सावित्रीबाई फुले' पृ. 5.

खंड़ोजी पाटील माली जाति से संबधित थे। घर, गृहस्थि, खेती-बाड़ी, संपन्न थी। वे स्वयं मेहनत करनेवालों मे थे, इसका परोक्ष प्रभाव बाल्य काल से ही सावित्री पर पड़ा। सावित्री पिता के साथ खेत खलिहान में घूमने जाती। पानी में भीगना, फूल तोडना, पंछियों के पीछे भागना, जानवरों की देखभाल करना, घर में हर काम में माँ को मद्द करना, ये सारे सावित्री में युगस्त्री के लक्षण दिखाई देते हैं। ऐसे परिवेश में सावित्री का मन परिपक्व हुआ और कविता का पिण्ड़ तैयार होते हुए भी दिखाई देता है। नौं वर्ष की अवस्था में सावित्री का विवाह 1840 ई. में ज्योतिराव फुले के साथ संपन्न हुआ।

कवयित्री सावित्रीबाई की चार रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें दो काव्य संग्रह, एक संपादन और एक भाषण, पत्र, गीत आदि से संबधित हैं - 'काव्यफुले', (1854), 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' (1892) (काव्यसंग्रह) 'ज्योतीराव फुले यांची भाषणे' (संपादन) 'सावित्रीबाईची भाषणे, पत्रे व गाणे' आदि।

5:1:2 लक्ष्मीबाई टिळक :(गोखले मनकर्णिका)

आधुनिक काल की आद्य कवयित्री के रूप में लक्ष्मीबाई टिळक को जाना जाता है। इनका जन्म 1868 ई. में और देहांत 14 फरवरी 1936 ई. में हुआ है। कवयित्री लक्ष्मीबाई को आत्मचरित्र, चरित्र और कविता में विशेष रूचि रही है।

1933 ई. में नागपुर में संपन्न मराठी, ख्रिस्ती साहित्य सम्मेंलन में अध्यक्ष के रूप में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। लगातार पाँच वर्षों तक सपन्न हुए कविसंम्मेलन की स्वागताध्यक्षा रही।

'भरली घागर' (1951), 'मी तुझी मावशी तुला न्यावया आले' यह उनका प्रसिद्ध गीत है। 'ख्रिस्तायन' के 12 से 75 तक के अध्याय पति की मृत्यु के बाद पति के प्रति निष्ठा और उस निष्ठा से ही प्रेरित होकर उसे पूर्ण किया है।[2]

5:1:3 बहिणाबाई चौधरी :

बहिणाबाई चौधरी का जन्म जलगाँव के समीप दो मिल पर स्थित आसादे नामक गाँव में महाजन के घराने में 1879 ई. में हुआ। उनकी माँ भीमाई वात्सल्य की मूर्ति थी और पिता उखाजी महाजन गाँव के जमींदार, कर्ता पुरुष थे। घमा, गणा, और धना नाम के तीन भाई और अहिल्या, सीता, तुलसा नामक तीन बहनें थी।

---

2) गुंडी नीलिमा - 'स्त्री कविता भाग - 1' 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' खंड 2 पृ. 48

बहिणाबाई का विवाह 13 वर्ष की अवस्था में जलगाँव के चौधरी घराने में हुआ। ससुराल में संयुक्त परिवार पद्धति थी, विवाह के कुछ दिन बाद घर खेती का विभाजन हुआ, अकाल की समस्या निर्माण हो गयी और असमय में ही पति नथुजी खंड़ेराव चौधरी की मृत्यु के कारण वैधव्य प्राप्त हुआ। फलस्वरुप खेती में काम करना पड़ा, उनका जीवन मानो संर्घष बना, परिस्थितियों की थपोड़ों में तपकर वे कंचन बन गयी।

'बहिणाबाईची गाणी' कवितासंग्रह उनके पुत्र सोपानदेव चौधरी ने 1952 में प्रकाशित किया है। निसर्गकन्या बहिणाबाई ने वास्तव में जो देखा, परखा, अनुभव किया वही उनके हृदय से प्रस्फुटित होकर फूट पड़ा-'माझी माय सरसोती, माले शिकविते बोली'[3]

5:1:4 मनोरमाबाई रानडे :

कवयित्री मनोरमाबाई रानड़े का जन्म 13 जनवरी 1896 ई. में और मृत्यु जनवरी 1926 ई. में हुआ। इन्होंने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। इन्होंने कविताएँ ही लिखी हैं। 'श्रीमनोरमा' काव्य संग्रह है।[4]

5:1:5 काशिताई नाटेकर :

कवयित्री काशिताई नाटेकर का जन्म 1900 ई. में मुंबई में हुआ और मृत्यु 1973 ई. में। उन्हें काव्य और बालसाहित्य के प्रति रूचि थी।[5]

5:1:6 विमलाबाई देशपांड़े :

कवयित्री विमलाबाई देशपांड़े का जन्म 13 जुलाई 1903 ई. को नरसिंगपुर में हुआ है। उन्होंने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता के प्रति उनकी रूचि रह चुकी है। 'निर्माल्यमाला' (1933) यह कविता संगह प्रकाशित हो चुका है।[6]

5:1:7 शांता नाशिकर :

कवयित्री शांता नाशिकर जी का जन्म 4 फरवरी 1903 में ठाणे में हुआ। इन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सृजन किया है । इनकी कहानी, कविता, नाटक और ललित गद्य के प्रति रूचि रही है।[7]

---

3) चौधरी बहिणाबाई – 'बहिणाबाईची गाणी', पृ. 7.
4) डॉ. खांडगे - मंदा, - स्त्री साहित्याचा मागोवा पृ. 88
5) खांडगे मंदा, डॉ. दीक्षित लीला, ताम्हनकर मंजिरी - स्त्री साहित्याचा मागोवा पृ. 58
6) खांडगे मंदा, डॉ. दीक्षित लीला, ताम्हनकर मंजिरी - स्त्री साहित्याचा मागोवा पृ. 58
7) वही, पृ.58

5:1:8 शांतादेवी तड़वी :

कवयित्री शांतादेवी तड़वी का जन्म 25 फरवरी 1905 ई. पुणे में हुआ। इन्होंने ट्रेंनिग कॉलेज फॉर वुमेन (वर्धा) में राष्ट्रभाषा कोविद का दूसरा वर्ष पूर्ण किया है। शांतादेवी अध्यापिका के रूप में कार्य कर अवकाश ग्रहण कर चुकी हैं। उन्हें आत्मचरित्र, काव्य और बाल साहित्य में रुची रही है।

'शांतागीते', साखर फुटाणे, 'सुमनमाला' आदि रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं।[8]

5:1:9 इंदिरा तेलंग :

कवयित्री इंदिरा तेलंग का जन्म 29 जुलाई 1905 ई. को मुंबई में हुआ। काव्य, कहानी और बाल साहित्य में आपको रुचि रही है।

'भावना तरंग' (1937) आपका काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[9]

5:1:10 पद्मा गोळे :

कवयित्री पद्मा गोळे का जन्म 10 जुलाई 1913 ई. को सांगली जिले के तासगाँव तहसिल में हुआ। आपने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। काव्य, नाटक आदि विधा में आपने साहित्य सृजन किया है। पद्मा को महाराष्ट्र (राज्य) सरकार की ओर से पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। कवयित्री का देहांत 13 फरवरी 1998 ई. में हुआ है।[10]

1930 ई. से कवयित्री पद्मा गोळे का काव्य-लेखन प्रारंभ हुआ है। आपके प्रकाशित काव्य संग्रह इस प्रकार हैं- 'निहार', (1954), 'प्रीती पथावर' (1956), 'स्वप्नजा' (1962), 'आकाशवेडी' (1964), 'श्रावण मेघ' (1988) आदि।

5:1:11 संजीवनी मराठे :

संजीवनी मराठे मराठी की एक प्रसिद्ध कवयित्री है। आपने मराठी तथा हिन्दी में एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कै. ग.स. मराठे की संजीवनी कन्या है और श्री. रा.चि. मराठे के साथ उनका प्रेमविवाह हुआ है। (1937) विद्यार्थी जीवन से ही काव्य-लेखन और गायन के प्रति रुचि रही है।[11]

---

8) जोशी अनंत लक्ष्मण - मराठी सारस्वत पृ. 331
9) डॉ.खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 43
10) डॉ.खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 43
11) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत', पृ. 440

1932 ई. में प्रकाशित 'काव्य-संजीवनी' उनका प्रथम काव्य संग्रह है। राका (1939), 'संसार' (1943), 'छाया' (1949), 'चित्रा'(1957), 'चंद्रफुल' (1971), 'मी दिवाणी' (1981), 'आत्मीय' (1994) 'भावपुष्प', 'परिमला' (गीत) आदि काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'कौतुक', 'गमन', 'बर का ग आई' और 'हसू बाई हसू' आदि बालगीत संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

5:1:12 इंदिरा संत :

कवयित्री इंदिरा संत का जन्म 4 जनवरी 1914 ई. को बिजापुर जिले के इंडी नामक गाँव में हुआ। उनका बाल्य जीवन 'तंवदी' नामक गांव में गुजरा। कुदरत की सुंदरता का स्पर्श इन्हें यहीं पर हुआ। बाल्यावस्था में ही उनके पिता के मृत्यु के कारण पितृछाया से वंचित होना पड़ा।

इंदिरा की स्कूल की पढ़ाई बेलगाँव के वनिता विद्यालय में हुई, और महाविद्यालयीन शिक्षा पुणे के फर्ग्यूसन और कोल्हापुर के राजाराम महाविद्यालय में हुई। फर्ग्युसन में ना.मा. संत से इनका परिचय हुआ। कविता के प्रति अत्यधिक लगाव और प्रेम के कारण दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हो गये, परिणामस्वरुप विवाह के बंधन में बंधे गए।

बेलगांव में संपन्न हुए साहित्य सम्मेंलन में कवयित्री को कवि यशवंत के काव्य गीतों को सुनने का मौका मिला। कवि यशवंत की 'गुलांमांचे गाऱ्हाणे' यह कविता उनके मन को भायी और यहीं से सही रूप में उनके काव्य लेखन का आरंभ हुआ।[12]

फर्ग्युसन मराठी मंड़ल की ओर से प्रकाशित पत्रिका 'ज्योत्स्ना' में उनकी पहली कविता प्रकाशित हुई और उसके बाद 'संजीवनी', 'प्रतिभा', 'साहित्य', 'सत्यकथा' आदि पत्रिकाओं में उनकी कविताएँ आने लगी। आगे चलकर दुर्गा भागवत और खांड़ेकर के मार्गदर्शन का लाभ भी हुआ।

विवाह के बाद पति के संपर्क में आने के उपरांत मराठी और अंग्रेजी साहित्य को पढने का मौका मिला, रुचि बढती गई, मार्गदर्शन का लाभ हुआ चतुर्दिक विचार, चर्चा, चिंतन, आदि के कारण गहराई तक जाने का मौका मिला। डिस्रायली, इसाड़ोरा, ड़ंकन, व्हॅन गॉज, जवाहरलाल नेहरु आदि के चरित्रों को पढने से उनमें अधिक गहराई आयी, फलस्वरुप उनकी कविता मे लय और ताल का सहज प्रवेश

---

12) संत इंदिरा- 'शेला' पृ. 19

हुआ। बाल्यावस्था में ही 'ओवी' (मराठी की) छंद की रुचि उसमें निर्माण हो गयी थी। जहाँ कहीं 'ओवी' मिलती, वहाँ जाकर संग्रहित करने लगी। उनके संकलित 'ओवी' में से नीचे की 'ओवी' उन्हें बहुत ही अच्छी लगी। वह इस प्रकार हैं।

''चांदीच्या ताटामंदी

फूल दशाळीचा लाल

त्याच रंगाची चोळी धाड बंधुराया''

इंदिरा संत के प्रकाशित काव्य संग्रह इस प्रकार हैं।

'सहवास' (1941), 'शेला' (1951), 'मेंदी' (1955), 'मृगजळ' (1957), 'रंगबावरी' (1964), 'बाहुल्या' (1972), 'मृण्मयी' (1981), 'चित्कळा' (1989), 'गर्भरेशीम' (1990), 'वंशकुसुम' (1994) आदि।

5:1:13 निर्मला देशपांड़े :

कवयित्री निर्मला देशपांड़े का जन्म 27 दिसम्बर 1915 ई. को इंदौर के देवास में हुआ। कहानी, उपन्यास, कविता और बाल साहित्य में आपकी विशेष रूचि रही है और आपने इस पर खूब लेखन कार्य किया है।

'गंधखुळी' (1960), 'हा छंद सुटत नाही' (1987) दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है। 'टिकली एवढ तळं' इस रचना को महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार, 'कथा एका बकुळीची' इस रचना पर ह.ना. आपटे पुरस्कार और बाल साहित्य पर महाराष्ट्र शासन के तीन और म.सा. परिषद का शरद बाबू पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[13]

5:1:14 कमलाबाई देशपांड़े :

कवयित्री कमलाबाई देशपांड़े का जन्म 21 फरवरी 1918 ई. और मृत्यु 1965 ई. में हुआ है। आपने एम.ए., पीएच.डी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है, आत्मचरित्र, काव्य, ललित गद्य, वैचारिक लेखन आदि में आपकी रूचि रही है।

'गीतद्विवदल' (1925) यह कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'संस्कार : त्यांचा उगम आणि विकास' इस विषय पर उन्होंने पीएच.डी का प्रबंध लिखा है।[14]

5:1:15 इंदिरा कुलकर्णी :

कवयित्री इंदिरा कुलकर्णी का जन्म 20 अक्तुबर 1918 ई. को कऱ्हाड़ में हुआ

---

13) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 91

14) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 50

और देहांत 16 जनवरी 2000 ई. को हुआ। आपकी शिक्षा मैट्रिक तक हुई थी। कहानी, कविता, एकांकी और बालसाहित्य आदि पर आपने कलम चलायी है। विविधमुखी लेखन के कारण आपको पुणे महानगरपालिका की ओर से गौरवान्वित किया गया है।

''मानसमेघ' आपकी कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।[15]

5:1:16 शांता शेळके :

मराठी की प्रसिद्ध कवयित्री शांता शेळके की स्कूल की शिक्षा हुजरपागा पुणे में और महाविद्यालयीन शिक्षा स.प. महाविद्यालय पुणे में हुई। प्रा. श्री. म. माटे और रा.श्री. जोग इनके गुरु रह चुके हैं। कवयित्री की संस्कृत के प्रति रुचि थी। पढाई के बाद कुछ दिन 'नवयुग' में आपने नौकरी की। करीब चालीस साल तक मुंबई में वास्तव्य। फिल्म सेंसॉर बोर्ड, महिला साहित्य संस्कृति मड़ळ, पाठ्य-पुस्तक मंड़ळ, लोक-साहित्य समिति आदि पद पर सदस्या के रुप में विराजमान हो चुकी है।

कविता, कहानी, उपन्यास, व्यक्तिचित्र, ललित-लेखन, बाल-साहित्य, आदि में महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य कर चुकी है। आपके गीत, फिल्म, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि पर प्रसारित हो चुकी है। नागपुर हिस्लॉप, मुंबई रुइया, महर्षि दयानंद महाविद्यालय में मराठी की प्राध्यापिका के रुप में कार्य कर सरस्वती की उपसना की है।

कवयित्री शांता शेळके के प्रकाशित काव्य संग्रह इस प्रकार हैं, 'वर्षा' (1947), 'रुपसी' (1956),'तोच चंद्रमा', (1973), 'गोंदण' (1986), 'जन्मजान्हवी' (1990), 'पाण्यावरच्या पाकळया' (हायकु)(1992), 'चित्रगीते' (1995), 'पूर्वसंध्या' (1996)

बालसाहित्य (काव्य) - 'आरशातली आई', 'कविता करणारा कावळा', 'झोपेचा गाव', 'थुई थुई नाच मोरा' आदि।[16]

5:1:17 सरोज अहंकारी :

कवयित्री सरोज अहंकारी का जन्म 11 मार्च 1926 ई. को उस्मानाबाद जिले के उमरगा तहसिल में हुआ। आपने बी.ए. बी.एड. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। आपके पिता सुप्रसिद्ध वकील स्व. दत्तात्रेय खरोसेकर और माता कमलाबाई है। एक देशभक्त त्यागी व्यक्ति श्रीनिवासराव अहंकारी से 1940 ई. में आपका विवाह हुआ।

---

15) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 1
16) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत', पृ. 439

एक ध्येय पुरुष त्यागी देशभक्त की पत्नी के रूप में संसार करते समय जो अनुभव मिले उन्हींको आपने शब्दबद्ध किया है।

कवयित्री सरोज अहंकारी की 'पुंष्पाजली' (1986) यह काव्यसंग्रह और 'खाऊ घ्या खाऊ' यह बालगीत संग्रह प्रकाशित हुआ है।[17]

5:1:18 अनुराधा पोतदार :

कवयित्री अनुराधा पोतदार का जन्म 15 दिसम्बर 1927 ई. को अहमदनगर में हुआ है। आपने एम. ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। 'मराठीचा अर्थविचार' इस विषय पर आपने उनुसंधान किया है।

अनुराधा के 'आवर्त' (1969), 'कॅक्टस फ्लॉवर' (1979), 'मंझधार' (1988) आदि कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।[18]

5:1:19 सरिता पद्की :

कवयित्री सरिता पद्की का जन्म 13 दिसम्बर 1928 ई. को थाना जिले के आगाशी नामक गांव में हुआ। आपने एम. ए. संस्कृत उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता, कहानी, उपन्यास बाल साहित्य, ललित गद्य आदि विविधमुखी साहित्य सृजन आपने किया है।

एन.सी.ई. आर. टी पुरस्कार, अखिल भारतीय स्त्री संस्था पुरस्कार, शिरोले, बाल वाङ्मय पुरस्कार, पुणे मराठी ग्रंथ संग्रहालय पुरस्कार आदि पुरस्कारों से कवयित्री को सम्मानित किया गया है।

'चैत्रपुष्प' यह कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[19]

5:1:20 **पद्मा लोकुर :**

कवयित्री पद्मा लोकुर का जन्म 4 मई 1928 ई. में हुआ है। आपने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है।

'मनोरा' यह आपका काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है और इस काव्य-संग्रह को महाराष्ट्र सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया है।[20]

---

17) अहंकारी सरोज - 'पुंष्पाजली' पृ. 15
18) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 65
19) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 60
20) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 40

5:1:21 शिरीष पै :

आचार्य अत्रे जी की जेष्ठ कन्या कवयित्री शिरीष का जन्म 15 दिसम्बर 1929 ई. में हुआ है। आपने बी.ए. एल.एल.बी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। 1935 ई. में 'नवयुग' का संपादन, 1956 ई. से दै. मराठा का संपादन और 1969 ई. से लेकर 1976 ई. तक 'मराठा' के संपादिका के रूप में लेखन कार्य किया है।

कवयित्री 'शिरीष पै' के सात कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'कस्तुरी' (1959), 'आईची गाणी' (1963), 'एकतारी' (1965), 'एका पावसाळयात' (1969), 'विराग' (1982), 'गायवाट' (1985), 'हायकू' (1986) आदि।[21]

5:1:22 अंजली कुलकर्णी :

कवयित्री अंजली कुलकर्णी का जन्म 7 मई 1929 ई. को रत्नागिरी में हुआ। आपने बी.ए. बी.एड़. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता, उपन्यास ललित गद्य आदि में आपको विशेष रूचि रही है।

'मी :एक स्त्री जातीय अस्वस्थ आत्मा' (1995) यह आपका काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुका है।[22]

5:1:23 वृंदा लिमये :

कवयित्री वृंदा लिमये का जन्म 14 फरवरी 1930 ई. को मुंबई में हुआ। आपने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त कर लेखन कला में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। कविता और बालगोंपालो के साहित्य में आपकी विशेष रूचि रही है और आपने बाल-गोपालों के साहित्य पर प्रचुर मात्रा में लेखन किया है। आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

कवयित्री वृंदा के 'काळोख-कमळ' (1981), 'प्रसाद'(1993) (काव्यसंग्रह) और 'अटक-मटक', 'कमाल-धमाल', 'जंगल-जत्रा', आदि बाल कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'काळोख-कमळ' इस कविता संग्रह को महाराष्ट्र साहित्य परिषद की ओर से और 'अटम-मटक' इस बाल कविता संग्रह को एन.सी. ई, आर. टी पुरस्कार, 'कमाल-धमाल','जंगल-जत्रा' को महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार से सन्मानित किया गया है।[23]

---

21) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 69
22) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 14
23) वही, पृ. 62

5:1:24 पद्मिनी बिनीवाले :

कवयित्री पद्मिनी बिनीवाले का जन्म 22 अप्रैल 1931 ई. को पुणे में हुआ। आपने एम.ए. बी.एड़. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कहानी, कविता और बालसाहित्य के प्रति आपकी विशेष रूचि रही है।

कवयित्री बिनीवाले का 'मिडास' यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। 'अलांटी-वेलांटी' इस रचना पर महाराष्ट्र राज्य साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

दीपावली अंक और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आपने ललित लेखन किया है। 1967 ई. से शारदाश्रम, विद्यामंदिर मुंबई में कार्य किया है।[24]

5:1:25 सुहासिनी इर्लेकर :

कवयित्री सुहासिनी इर्लेकर का जन्म 17 फरवरी 1932 ई. में हुआ है। आपने एम. ए., बी. एड, पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा पाप्त की है। बलभीम महाविद्यालय बीड़ में मराठी विभाग प्रमुख के रुप में कार्यकर चुकी है।

कवयित्री सुहासिनी इर्लेकर की 'तृप्ति' (1961), 'अक्षर' (1972), 'चित्रांगण' (1972) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।[25]

5:1:26 विजया जाहगिरदार :

कवयित्री विजया जाहगिरदार का जन्म 12 सितम्बर 1932 ई. को इंदौर में हुआ। आपने मैट्रीक उपाधि तक की अल्प शिक्षा प्राप्त की है। कवयित्री को ललित गद्य, काव्य, कहानी, उपन्यास और बालसाहित्य में रूचि रही है। लेखन , संपादन और मासिक पत्रिकाओं में आपने लेखन किया है।[26]

'आकाश मोगरा' (1985) यह काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'कर्मयोगिनी' इस उपन्यास पर मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 'हिरकण्या', 'भिर भिर', आदि को महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार और 'मोहराचं झाड' इस रचना को बालकुमार साहित्य सम्मेलन पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

5:1:27 सुनेत्रा ओक :

कवयित्री सुनेत्रा ओक का जन्म 3 मई 1936 ई. को पुणे में हुआ। आपने एम.ए. मराठी, ग्रंथपालन, वृत्तविद्या आदि उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कहानी,

---

24) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत' पृ. 356
25) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 60
26) वही, पृ. 33

उपन्यास, कविता और बाल साहित्य आदि में आपकी रूचि रही है। मा.प. विधि महाविद्यालय औरंगाबाद में ग्रंथपाल के रूप में कार्य कर अवकाश ग्रहण किया है। सुनेत्रा ओक का 'चेतसी' (1977)नामक एक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[27]

5:1:28 सुशीला मराठे :

कवयित्री सुशीला मराठे का जन्म 3 अक्तुबर 1916 ई. को मुंबई में हुआ। आपने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। बालसाहित्य, काव्य, एकांकी आदि में आपकी विशेष रुचि रही है।

कवयित्री सुशीला के तीन काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'मम सुख्राची ठेव' (1969), 'सती सावित्री' (1972), 'स्त्री धन' (1975) आदि।[28]

5:1:29 अंजली ठकार :

कवयित्री अंजली ठकार का जन्म 14 अगस्त 1936 ई. को नंदुरबार में हुआ है। आपने एम.एस्सी उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त कर लेखन आरंभ किया। ललित गद्य, कहानी और काव्य लेखन में आपने सफलता प्राप्त की है।

'तुलसीदल' आपका काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[29]

5:1:30 सुशील पगारिया :

कवयित्री सुशील पगारिया का जन्म 6 अक्तुबर 1938 ई. को पुणे जिले में पुरंदर तहसिल के सासवड़ नामक गाँव में हुआ। कवयित्री काव्य, अनुवाद, कहानी, ललित गद्य आदि साहित्य प्रकारों में सृजनरत है। महाभारत के महत्त्वपूर्ण पात्र विदुर पर अनुसंधान कर ललित प्रबंध लेखन किया है।

'मनवृंदावन' (1970), 'केसर' (1977), आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'केसर' काव्य-संग्रह को 1977 ई. का विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[30]

5:1:31 वासंती मुझुमदार :

कवयित्री वासंती मुझुमदार का जन्म सतारा जिले के कराड़ नामक गाँव में 5 अप्रैल 1939 ई. को हुआ। आपने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। काव्य-लेखन ललित गद्य और संपादन में आपकी विशेष रुचि रही है।

---

27) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 50
28) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 82
29) वही, पृ. 60
30) वही, पृ. 74

कवयित्री वासंती को महाराष्ट्र राज्य केशवसुत पुरस्कार, अनंत काणेकर, भैरु रतन दमाणी, बा.सी. मर्ढेकर, तात्यासाहेब सरवदे, यशवंतराव चव्हाण आदि पुरस्कारों से सन्मानित किया गया है।

'सहेला रे' यह आपकी कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।[31]

5:1:32 हिरा बनसोडे :

कवयित्री हिरा बनसोडे का जन्म पुणे जिले के पुरंदर तहसिल के गराडे नामक गाँव में 1 अक्तूबर 1939 ई. को हुआ। आपने एम. ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। एक दलित कवयित्री के रूप में हिरा बनसोडे का मराठी कविता क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

'पौर्णिमा' (1970), 'फिनिक्स', 'आकाश माती', 'फिर्याद' आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।फिनिक्स, कविता संग्रह के लिए महाराष्ट्र राज्य केशवसुत पुरस्कार और 1992, 93 ई. का अहिल्याबाई होळकर अस्मितादर्श पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[32]

5:1:33 शैला लोहिया :

मराठवाडा की एक ज्येष्ठ समाजसेविका कवयित्री शैला लोहिया का जन्म 6 अप्रैल 1940 ई. को धुळे में हुआ। आपने एम.ए., पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। अंबाजोगाई महाविद्यालय में प्राचार्या के रूप में कार्य कर अवकाश ग्रहण कर चुकी हैं। ''भूमी आणि स्त्री, लोक साहित्य व लोक संस्कृतीचा विशेष अभ्यास'' इस विषय पर आपने अनुसंधान कर प्रबंध लिखा है।[33]

'गजाआड़च्या कविता' यह आपका कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।

5:1:34 विजया संगवई :

कवयित्री विजया संगवई का जन्म 4 मई 1940 ई. को मराठवाड़ा के देगलूर में हुआ है। आपने एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। 'पुरुषार्थ विचार' इस विषय पर अनुसंधान कर प्रबन्ध लिखा है। कवयित्री ने काव्य, वैचारिक, चरित्र आदि पर कलम चलाई है।

'अरुपाची गंधगीते' (1988) सत्यं, शिवम् सुंदरम् अर्ध्य (1993) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। रामशास्त्री नाटेकर पुरस्कार से आपको सम्मानित किया

---

31) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 33

32) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' वही, पृ. 74

33) वही, पृ. 55

गया है।[34]

1:5:35 मीना प्रभू :

कवयित्री मीना प्रभू का जन्म 27 अगस्त 1940 ई. को पुणे में हुआ। आपने एम.बी.बी.एस डी.जी.ओ. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता, ललित गद्य और चरित्र लेखन में आपको विशेष रूचि रही है।

कवयित्री मीना प्रभू का 'सुख निधी : तुझा-माझा' यह कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुका है। आपको अनंत काणेकर और पु.ल.देशपांडे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।[35]

5:1:36 लीला धनपलवार :

कवयित्री लीला धनपलवार का जन्म 11 जून 1943 ई. को मराठवाड़ा के अंबाजोगाई में हुआ है। आपने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त कर मुख्याध्यापिका के रूप में कार्य कर अवकाश ग्रहण किया है। आपको कविता और बाल साहित्य में विशेष रूचि रही हैं। कवयित्री लीला धनपलवार के दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'गुलमोहर', 'वर्षा हसली' आदि। [36]

5:1:37 सुलभा हेर्लेकर :

कवयित्री सुलभा हेर्लेकर का जन्म 7 जून 1943 ई. को अमरावती में हुआ। सुलभा को बचपन से ही कविता -लेखन के प्रति रूचि थी । 'किर्लोस्कर', 'अनुष्ठान', 'प्रतिष्ठान' आदि पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित होती रही हैं। कॅनड़ा अमेरिका में जाकर आपने विदेशी स्त्रियों से मुलाकात कर स्त्री समस्या पर चर्चा की है। 1985 ई. में इंदौर में संपन्न शीख महिला मंड़ल स्वर्ण महोत्सव में अध्यक्षा पद पर आप विराजमान थी।

कवयित्री सुलभा की 'नितळाई' (1983), 'पहाटपक्षी' (1981), 'आभास वेळा' (1992) आदि कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 1981 में 'पहाटपक्षी' को महाराष्ट्र शासन पुरस्कार और 1996 ई. मे 'आभासवेळा' काव्य संग्रह को, सुरभि, पुणे, कला पुरस्कार और कृष्णाबाई मोटे आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।[37]

---

34) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 106
35) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 67
36) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत' पृ. 426
37) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 90

5:1:38 प्रभा गणोरकर :

कवयित्री प्रभा गणोरकर का जन्म 8 जनवरी 1945 ई. को अमरावती में हुआ। आपने एम.ए. पी.एच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। काव्य, समीक्षा आदि में आपकी रूचि रही हैं। 'चि.त्र्य. खानोलकर के वाङ्मय में चित्रित शोकभाव' विषय पर आपने अनुसंधान किया है। एल्फिन्स्टन महाविद्यालय, मुंबई में प्राध्यापिका के रूप में कार्य कर संभवत: अवकाश ग्रहण किया है।

कवयित्री प्रभा गणोरकर का विवर्त (1985), और 'व्यतीत' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।[38]

5:1:39 रजनी परुळेकर :

कवयित्री रजनी परुळेकर का जन्म 16 जून 1945 ई. को रत्नागिरी जिले के पावस नामक गांव में हुआ है। आपने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। ये अध्यापन क्षेत्र से जुड़ी रही हैं ।

कवयित्री रजनी के 'दीर्घ कविता', 'स्वीकार' और 'महानोर' आदि काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'दीर्घ कविता' काव्य-संग्रह को 1985 ई. का महाराष्ट्र राज्य पुरस्कार, 'स्वीकार' को 1993 ई. का कुसुमाग्रज पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[39]

5:1:40 अश्विनी धोंडगे :

कवयित्री अश्विनी धोंडगे का जन्म 21 जनवरी 1947 ई. को पुणे में हुआ। आपने एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। एस.एन.डी.टी. महिला महाविद्यालय में प्राचार्या के रूप में आपने कार्य किया है। ललित गद्य, काव्य, कहानी, उपन्यास और बालसाहित्य आदि विविध मुखी साहित्य आपने निर्माण किया है।

'स्त्री सुक्त' (1988), 'अन्वय' यह काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुकी है। कवयित्री अश्विनी धोंडगे की 1988 ई. में प्रकाशित काव्य संग्रह में पहली बार शहर में जीनेवाली मध्यमवर्गीय स्त्री के विविध आयामों, समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है।

कवयित्री अश्विनी को महाराष्ट्र शासन का केशवसुत पुरस्कार, महाराष्ट्र साहित्य का कुसुमाग्रज पुरस्कार, ग.दि. माड़गुळकर प्रेरणा पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।[40]

---

38) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 33
39) वही, पृ. 36
40) वही, पृ. 56

5:1:41 मृणाल चिंचोळकर :

कवयित्री मृणाल चिंचोळकर का जन्म 2 मार्च 1947 ई. को वर्धा जिले के वरुल में हुआ है। आपने एम.ए.,बी.एड. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। काव्य, ललित गद्य में आपकी विशेष रूचि रही है। 'कवयित्री इंदिरा संत यांच्या काव्याचा चिकित्सक अभ्यास' विषय पर अनुसंधान कर प्रबंध लिखा है। ये वृजलाल माणिकलाल वसंत महाविद्यालय, नागपुर में अध्यापिका के रूप में कार्यरत रह चुकी है।

'रातपाकळया' (1983) इनका कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है।[41]

5:1:42 सुशीला महाजन :

कवयित्री सुशीला महाजन का जन्म 10 सितम्बर 1947 ई. को गोवा के म्हापसा नामक गांव में हुआ। संवाददाता (पत्रकार), संपादिका के रूप में आपने काम किया है। आपकी मातृभाषा कोंकणी है। ललित गद्य और चरित्र लेखन में आपकी विशेष रूचि रही है।

इनका 'स्वरजिजाई' (1947) कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है।[42]

5:1:43 सुरेखा भगत :

कवयित्री सुरेखा भगत का जन्म 26 दिसम्बर 1949 ई. को यवतमाळ जिले के टाकळगाँव में हुआ। आपने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। व्यवसाय के रूप में आप सरकारी नौकरी करती हैं। कविता के प्रति आपकी विशेष रुचि रही है। 'दलित कवयित्रींच्या कवितेतील सामाजिक जाणीवा' विषय पर आपने अनुसंधान किया है।[43]

5:1:44 आसावरी काकड़े :

मराठी और हिंदी में काव्य सृजन करनेवाली कवयित्री आसावरी काकड़े का जन्म 23 जनवरी 1950 ई. को सांगली जिले के अष्टे नामक गाँव में हुआ। आपने बी. कॉम. और एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। स्टेट बँक ऑफ इंडिया पुणे में नौकरी कर स्वेच्छा अवकाश लिया है। काव्य, बालसाहित्य, वाङ्मय, आदि में आपने साहित्य सृजन किया है।

'आरसा' (1990), 'आकाश' (1991), 'लाहो' (1995) और 'मौन क्षणों का अनुवाद' (हिंदी) आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'मी एक दर्शनबिंदू' रचना

---

41) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 23
42) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 51
43) वही, पृ. 74

को महाराष्ट्र राज्य बालसाहित्य पुरस्कार, 'आरसा' काव्य संग्रह को परिवर्तन पुरस्कार और 'लाहो' काव्य-संग्रह को अहमदनगर से 'एकोल' आदि पुरस्कारों से कवयित्री को सम्मानित किया गया है।[44]

5:1:45 ज्योति लांजेवार :

कवयित्री ज्योति लांजेवार का जन्म 25 नवम्बर 1950 ई. में हुआ है। आपने एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। आकाशवाणी, दूरदर्शन पर आपका कविता पठन हुआ है और 'युगवादी', 'अस्मितादर्श' आदि पत्र-पत्रिकाओं में आपने काव्य लेखन किया है। कविता समीक्षा, संपादन और लेखन में आपकी विशेष रूचि रही है। [45]

कवयित्री ज्योति लांजेवार का 'दिशा' (1982) यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।

5:1:46 संजीवनी बोकिल :

कवयित्री संजीवनी बोकिल का जन्म 16 जून 1951 ई. में पुणे में हुआ। आपने एम.ए. बी.एड़. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। काव्य, उपन्यास, एकांकी, बालसाहित्य, अनुवाद और संपादन आदि में आपकी विशेष रूचि रही है।

'काळीजकुपी' (1994) और 'एकांत रेषेवर' दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके है। 'काळीजकुपी' काव्यसंग्रह को नांदेड़ से संजीवनी पुरस्कार, साहित्य कलायात्री पुणे, कै. शिरुडे पुरस्कार और 'एकांत रेषेवर' कविता संग्रह को कै. संजीवनी खोजे, नगर, बंधुता प्रतिष्ठान,पुणे पुरस्कार, प्रेरणा पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।[46]

5:1:47 यशोधरा साठे :

कवयित्री यशोधरा साठे का जन्म 13 मार्च 1951 ई. में हुआ है। आपने एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कवयित्री यशोधरा साठे के 'तनामनाची गाणी' (1982) और 'काळं अभाळ' (1993) दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।[47]

---

44) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 10
45) वही, पृ. 83
46) वही, पृ. 73
47) वही, पृ. 51

5:1:48 सुमति लांड़े :

कवयित्री सुमति लांडे का जन्म 3 जनवरी 1952 ई. में संगमनेर तहसिल के वडगांव में हुआ। आपने एम.ए. बी.एड. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है।

कवयित्री सुमती लांडे का 'काचकमळे' यह काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है। इस काव्य संग्रह को यशवंतराव चव्हाण और पद्मश्री विखे पाटील पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।[48]

5:1:49 अनुराधा पाटील :

कवयित्री अनुराधा पाटील का जन्म 5 अप्रैल 1953 ई. जलगाँव में हुआ। एस.एस.सी. (मैट्रीक) उपाधि तक की अल्प शिक्षा प्राप्त कर आपने कवयित्री के रुप में मराठी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कवयित्री अनुराधा पाटील के 'तरीही' (1981), 'दिगंत' (1985),'दिवसें दिवस'(1992) आदि तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'तरीही' काव्य-संग्रह को महाराष्ट्र सरकार का कविवर्य केशवसुत पुरस्कार, महाराष्ट्र साहित्य परिषद का पहला कुसुमाग्रज पुरस्कार, गोखले आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। दिगंत काव्य-संग्रह को मराठवाड़ा साहित्य परिषद का पहला नरहर कुरंदकर वाङ्मय पुरस्कार और 'दिवसें दिवस' काव्य-संग्रह को महाराष्ट्र फौंडेशन, अमेरिका इस संस्था से ललित वाङ्मय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।[49]

5:1:50 अंजली कीर्तने :

कवयित्री अंजली कीर्तने का जन्म 4 मई 1953 ई. को वालचंद नगर में हुआ। उन्होंने एम.ए. पीएच.ड़ी. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। चरित्र, काव्य, कहानी आदि में आपको विशेष रुचि है। ''मोलियरचा मराठी नाटकावरील प्रभाव'' यह आपका प्रबंन्ध है। और आपने ''डॉ. आनंदीबाई जोशी: काळ आणि कतृत्व'' विषय पर अनुसंधान किया है।

'हिरवी गाणी' यह आपका काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है। 'डॉ. आनंदीबाई जोशी' रचना पर महाराष्ट्र साहित्य परिषद का श.ना. जोशी पुरस्कार और 'वेडा मुलगा शहाणा माकड' रचना पर म.सा. प. पुरस्कार और काका साहेब गाडगीळ पुरस्कार

---

48) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 92

49) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 102

प्राप्त हुआ है।[50]

5:1:51 शैला सायनाकर :

कवयित्री शैला सायनाकर का जन्म 29 अप्रैल 1956 ई. को भवानी नगर में हुआ। और 2004 ई. में मृत्यु हुई । आपने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए.,एम. फिल उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, इस्लामपुर में अंग्रेजी की प्राध्यापिका के रूप में आप कार्यरत रही हैं। कविता, ललित गद्य और अनुवाद के प्रति आपको रूचि रही है।

'कविता सायलीच्या' (1993), 'रक्तकमळाचे रान' (1993), 'काळीज गोंदण' आदि आपके काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'कविता सायलीच्या' कविता संग्रह को महाराष्ट्र शासन और प्रचार प्रकाशन कोल्हापुर का पुरस्कार,'रक्त कमळांचे रान' को सांगाती पुरस्कार और विशेष सम्मान के साथ साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 'आजुनी वाढताती झाडे' रचना को म. साहित्य परिषद, पुणे का पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[51]

5:1:52 श्रद्धा बेलसरे :

कवयित्री श्रद्धा बेलसरे का जन्म 4 अगस्त 1956 ई. को हुआ है। बाल जीवन से ही कविता के प्रति आपकी रूचि रही है।

कवयित्री श्रद्धा के दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं - 'जकाल '(1987), 'मोरपंखी', 'त्याही नंतर', 'मोरपंखी' कविता संग्रह को कवि कट्टी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।[52]

5:1:53 मलिका अमर शेख :

कवयित्री मलिका अमर शेख का जन्म 16 अप्रैल1957 को हुआ। शाहीर अमर शेख इनके पिता हैं। मलिका ने एस.एस.सी. तक अल्प शिक्षा प्राप्त की है। कम पढी-लिखी होने के बावजूद भी इनकी कविताएँ हृदय पर गंभीर घाव करते हुए गहराइ तक पहुँचती हैं।

'मला उध्वस्त व्हायचयं' यह आपकी प्रसिद्ध आत्मकथा है। संघर्षमय जीवन के तीखे अनुभव आपने इस आत्मकथा में चित्रित की है। कवयित्री मलिका के तीन काव्य-

---

50) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत' पृ. 187

51) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 103

52) वही, पृ. 50

संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं - 'वाळूचा प्रयकर', 'महानगर', 'देहऋतु' आदि।

समीक्षकों के अनुसार मलिका अमर शेख यह मराठी की पहली 'स्त्रीवादी' कवयित्री हैं, उनके 'वाळूचा प्रयकर' संग्रह की कविताओं में पहली बार स्त्री के अनंत दु:खों को वाणी मिली है।[53]

5:1:54 उषा भालेराव :

कवयित्री उषा भालेराव का जन्म 26 फरवरी 1958 ई. में हुआ है। आपने बी.ए. (कोविद हिन्दी) उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता लेखन में आपको विशेष रूचि रही है।

कवयित्री उषा भालेराव का 'रानकामुन्या' (1987) यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[54]

5:1:55 प्रणिता चाकुरकर :

कवयित्री प्रणिता चाकुरकर का जन्म 1 जनवरी 1959 ई. को औरंगाबाद जिले के कन्नड में हुआ। आपने एम.बी.बी.एस., डी.जी.ओ. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। आप व्यवसाय से डॉक्टर हैं, स्त्री रोग तज्ञ हैं। कविता लेखन के प्रति आपकी रूचि रही है।

'भावतरंग' यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[55]

5:1:56 रसिका देशमुख :

कवयित्री रसिका देशमुख का जन्म परभणी जिले के सोनपेठ में 28 अप्रैल 1961 ई. को हुआ। आपने (पोस्ट ग्रॅज्युएट डिप्लोमा) एम. ए. मराठी उपाधि तक की शिक्षा, मराठा कला विश्व विद्यालय में प्राप्त की है। डॉ. सौ. र.भा. पा. महिला कला विद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत रही है। आपको काव्य लेखन में रूचि रही है। कवयित्री रसिका देशमुख का 'श्रावण सरी' (1985) यह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[56]

5:1:57 प्रतिभा देशपांड़े :

कवयित्री प्रतिभा देशपांड़े का जन्म 14 जनवरी को भंड़ारा जिले के तुमसर

---

53) डॉ. खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' , पृ. 72
54) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 56
55) वही, पृ. 25
56) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 61

नामक गाँव में हुआ है। कविता और बालसाहित्य में आपकी रूचि रही है।

कवयित्री प्रतिभा देशपांडे का 'पहाटवेणा' यह काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुका है।[57]

5:1:58 प्रतिभा टेपाळे (महाजन) :

कवयित्री प्रतिभा टेपाळे का जन्म 2 सितम्बर 1966 ई. को अहमदनगर में हुआ है। उन्होंने बी.ए. बी.एड़. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। आध्यापिक के रूप में आप कार्यरत हैं। काव्य के प्रति आपकी विशेष रूचि रही है।

कवयित्री प्रतिभा टेपाळे की 'रंगसूत्रे' (1988), 'आस्वाद' (1993), 'स्त्री आणि इतर कविता' (1996) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव पाटील साहित्य पुरस्कार और इंदूमति लांडगे साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।[58]

5:1:59 प्रज्ञा लोखंड़े :

कवयित्री प्रज्ञा लोखंड़े का जन्म 11 फरवरी 1966 ई. को सोलापुर में हुआ। आपने मराठी में एम.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। कविता लेखन में आपकी विशेष रूचि रही है।

'अंत:स्थ' कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'अंत:स्थ' काव्य-संग्रह को यशवंतराव चव्हाण साहित्य पुरस्कार, कवि केशवसुत पुरस्कार और कवि कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान नाशिक का विशाखा पुरस्कार प्राप्त हुआ है।[59]

5:1:60 निशिगंधा वाड़ :

कवयित्री निशिगंधा वाड़ का जन्म 11 अक्तुबर को ठाने में हुआ। आपने बी.ए. उपाधि तक की शिक्षा प्राप्त की है। अनुसंधानात्मक लेखन और अभिनय के क्षेत्र में आपने उल्लेखनीय कार्य किया है। काव्य, ललित गद्य आदि में रुचि रही है। आपको विशेष बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। कहानी, उपन्यास, काव्य आदि में आपने साहित्य सृजन किया है।[60]

---

57) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' पृ. 31
58) खांडगे मंदा - 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', पृ. 51
59) वही, पृ. 91
60) वही, पृ. 93

'अनुष्का' (1993) (काव्यसंग्रह) 'फुलपंखी', 'इवलू-टिवलू' और 'छोटूली गाणी' आदि आपके बालगीत संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

निष्कर्ष -

आधुनिक मराठी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार देखने के बाद ऐसा लगता है कि, आधुनिक मराठी कविता की पृष्ठभूमि भी अत्यंत व्यापक है। आधुनिक मराठी कविता को समृद्ध बनाने में कवयित्रियों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। कवयित्रियों को प्राप्त अनुभव, आशा-आकांक्षा, गृहस्थी से संबंधित, खेती में काम करते समय, गार्हस्थ्य जीवन में आए हुए अनुभव कवयित्रियों ने सशक्तता से चित्रित कर मराठी कविता को आगे बढाया है। आधुनिक काल में उनके अनुभवों का दायरा बढता गया, हर क्षेत्र में वह विचरण करने लगी। स्व अस्तित्व को पहचान कर अपनी जागरुकता का परिचय दिया । उन्होंने अबला जीवन को नकारते हुए सबला का प्रतिपादन करते हुए आगे बढनेवाली स्त्री को अपनी कविता में स्थान दिया। इस काल की कवयित्रियों में स्त्री विषयक आक्रोश की भावना तो दिखाई देती है परंतु उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक, संदर्भ, आर्थिक विषमता, पारिवारिक संबंध आदि के उल्लेख मिलते हैं।

षष्ठ अध्याय

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता : कथ्य सौंदर्य

6.1 भूमिका :

कविता का कथ्य जीवन के अनुभव होते हैं। कवि, जीवन में जो दिखाई दे रहा है उसे तो व्यक्त करता ही है, साथ ही, उसकी गहराइयों में उतरकर उसकी असलियत को भी पहचानने की कोशिश करता है। साहित्य की सभी विधाओं में, किसी न किसी रूप में, जीवनानुभव प्रकट होते हैं । उन्हें व्यक्त करने के लिए, माध्यम के रूप में कथ्य में पात्र आदि का उपयोग किया जाता है। कवि जीवन संबधी अनुभवों को व्यक्त करने के लिए उसे मानव जीवन के भावात्मक संबंधों से जोड़ता है। जीवन सम्बन्धी अनुभवों को जोड़ने पर मन को छूनेवाली वाणी मिलती है। यह वाणी दूसरे शब्दों में अनुभूति है।

मानवीय अनुभूति को प्रकट करने का सशक्त माध्यम कविता को माना जा सकता है । उसकी अनुभूति जीवन और जगत् के विविध संदर्भों से जुड़ कर विविध रुपों में प्रकट होती है। कविता मानव जीवन और सृष्टि सौंदर्य की विशद व्याख्या है, जिसके अध्ययन से मनुष्य की आंतरिक भावनाएँ जाग उठती हैं और मानव जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेती है ।

आधुनिक हिन्दी कविता की विकास प्रक्रिया में कवयित्रियों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है । आधुनिक काल की हिन्दी कवयित्रियाँ कई संवेदनाओं से जुडी हुई हैं। कवयित्रियों की कविता मानव के संपूर्ण जीवन की कविता है । आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों की कविता में जीवन और जगत् से जुडी प्रत्येक स्थिति - परिस्थिति को अत्यंत यथार्थपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया है । ऐसी बहुआयामी और संपूर्ण जीवन निरुपिणी कवयित्रियों की कविता को देखा जा सकता है। कवयित्रियों को जीवन जीते समय जीवन के जिन कटु यथार्थ का सामना करना पड़ा, जिन दबावों - तनावों को झेलना पडा है, जिन-जिन उतार-चढ़ावों से, संकल्प-विकल्पों से गुजरना पडा है, उसकी स्पष्ट छाप आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में दिखाई देती है।

आधुनिक काल में अनेक कवयित्रियाँ सृजनरत दिखाई देती है। उनके काव्य का कथ्य सौंदर्य इसप्रकार देखा जा सकता है।

6.1.1 प्रताप कुँवरिबाई :-

कवयित्री प्रताप कुँवरिबाई की 'महिला मृदुवाणी' कविता संग्रह सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है । **'ज्ञान सागर', 'ज्ञान प्रकाश', 'प्रताप पचीसी', 'राम प्रेम सागर', 'रघुनाथ जी के कवित्त', 'भजन', 'पद हरजस'** आदि ग्रंथों का इसमें उल्लेख मिलता है। इसमें चित्रित मूल कथ्य स्त्रीत्व की सार्थकता पति को देवता मानने में है। कवयित्री ने पारिवारिक जीवन को सर्वाधिक महत्त्व दिया है । पति, सास, ससुर की सेवा करना, घर और बच्चों की देखभाल करना भारतीय स्त्री के प्रमुख कर्तव्य हैं । कवयित्री प्रताप कुंवरिबाई की कविता में भारतीय आदर्शों का प्रतिपादन मिलता है । पति की मृत्यु के उपरांत स्त्री के जीवन में किसप्रकार अंधकार और निराशा छा जाती है इसका अनुभव कवयित्री ने स्वयं लिया है तथा उसे अभिव्यक्त भी किया है। शोकजन्य आकुलता में दिन वर्ष के समान प्रतीत होने लगते हैं । कवयित्री को वैधव्य-पीड़ा ने संसार से विमुख कर भक्ति पथ पर अग्रसर किया । उमेश माथुर के अनुसार - "इनके काव्यानुशीलन से ज्ञात होता है कि वैधव्य की विषम पीडा को इन्होंने मूक, शांत भाव से शिव गरल की भांति पी डाला था ।"[1]

इस प्रकार स्पष्ट है कि कवयित्री प्रताप कुँवरिबाई की कविता में शांति एवं गंभीरता अधिक है। रामचरित्र की महानता का अत्यंत स्वाभाविक चित्रांकन इनकी कविता में हुई है ।

6:1:2 निधि रानी :-

कवयित्री निधि रानी की एक ही काव्यकृति उपलब्ध है। उनके कविता संग्रह का शीर्षक 'राम मिलन' है।[2] इस कविता का मूल कथ्य भक्ति भावना है। कवयित्री ने मध्यकालीन संत भक्तों की तरह गुरु की भक्ति को अत्याधिक महत्त्व दिया है। इनकी कविताएँ रामभक्ति संबंधी भजन के रूप मे उपलब्ध होती हैं ।

---

1) माथुर उमेश - आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ, पृ.62
2) माथुर उमेश - आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ, पृ.76

6:1:3 कमल कुँवर :-

कवयित्री कमल कुँवर की एक काव्य-कृति उपलब्ध है। उसका शीर्षक 'विनयचन्द्रिका' है। इनकी कविता का मूल कथ्य 'भक्ति-भावना' है। कवयित्री ने भक्ति भावना के साथ कृष्ण की महानता और अपनी दीनता का वर्णन किया है । इसमें कुल 68 पद संग्रहित हैं। 34 पदों की रचना भक्तों के गान-कीर्तन के अर्थ से की गई है । इसके प्रत्येक पद के अन्त में 'कमल कुँवर' नाम दिया गया है -

"प्रभु तुम ऐसे दीन दयाल ।
दीन जान अब कमल कुँवर पे कृपा करो नन्दलाल ।।"[3]

कृष्ण भक्ति, राम-सीता, बाल-लीला, पद्भवानी की स्तुति आदि का वर्णन इसमें किया गया है ।

6:1:4 रत्नकुँवरि बीबी :-

कवयित्री रत्नकुँवरि बीबी का 'प्रेमरत्न' शीर्षक 42 पृष्ठों का एक खंडकाव्य उपलब्ध है । इस कविता का मूल कथ्य कृष्ण जीवन का गान है । इस ग्रंथ के आरंभ में परम पुरुष परमात्मा की वन्दना कर के तथा गुरु के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करके कृष्ण के अवतार लेने के मूल कारणों का उल्लेख किया गया है तथा उनके जन्म, ब्रजवासियों के साथ रासलीला, मथुरागमन, कंस वध आदि का संक्षिप्त वर्णन मिलता है । इसके उपरांत कुरुक्षेत्र मिलन की कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है ।

कुरुक्षेत्र तक की यात्रा का सुंदर एवं सजीव वर्णन कर कवयित्री वातावरण निर्माण में पूर्णत: सफल हुई हैं । कृष्ण के आने के समाचार को सुनकर विभिन्न व्यक्तियों पर विभिन्न प्रतिक्रियाएँ हुईं । कृष्ण के आने का समाचार सुनते ही यशोदा का चिरकालीन अतृप्त

मातृत्व सबकुछ भूलकर पुत्र: मिलन की लालसा में विह्वल हो उठा है और वे इसप्रकार आनंद विभोर हो उठती है -

---

3) कमल कुँवर - 'विनय चन्द्रिका - पृ.12

"सुनतहि जसुमति है गई बोरी । ताग्वालहि पूछत उठि दौरी ।।"

आये श्याम सत्य कह भैया? मोहि दिखावहने कु कन्हैया ।।"[4]

कवयित्री के कृष्णभक्ति के संबंध में उमेश माथुर कहती है -

"रत्नकुंवरि जी की कृष्ण-भक्ति सूरदास की भांति मधुर एवं सत्य भाव की न होकर दास्य भाव की है । उन्होंने कृष्ण के माधुर्य रुप की अपेक्षा भक्त-वत्सल तथा रक्षक रुप पर अधिक महत्त्व दिया है ।"[5]

इसप्रकार स्पष्ट है कि साहित्यिक दृष्टि से कवयित्री रत्नकुँवरि बीबी का काव्य कृष्ण काव्य परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है ।

6:1:5 तोरनदेवी शुक्ल 'लली' -

कवयित्री तोरनदेवी शुक्ल 'लली' का 'जागृति' कविता संग्रह उपलब्ध होता है जिसे सैक्सरिया पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । 'जागृति' शीर्षक 125 पृष्ठों की कविता संग्रह उपलब्ध है । इसमें 54 कविताएँ हैं । यह संग्रह निम्न पाँच श्रेणियों में विभक्त है - 1) दिव्य ज्योति 2) जीवन ज्योति 3) रत्न ज्योति 4) अमर ज्योति 5) दीप ज्योति.

'दिव्य ज्योति' की कविताओं का मूल स्वर 'भक्तिभावना' है । 'जीवन ज्योति' शीर्षक के खंड कविता का मूल कथ्य 'देश प्रेम' है । साथ ही कवयित्री ने सामाजिक पक्ष की ओर भी अपना लक्ष्य केंद्रित किया है । तीसरे खंड में कवयित्री ने जीवन की प्रगति और विकास के लिए वेदना, पीड़ा और निराशा की अवहेलना कर हास्य को अपनाया हुआ दिखाई देता है ।

'अमरज्योति' में उन महान व्यक्तियों के प्रति श्रध्दांजलि है, जिन्होंने ईश्वरीय प्रेम, मानव प्रेम और संवेदना अहिंसा एवं त्याग के अनुपम रूप मानस के सामने रखा है । 'दीप ज्योति' की मूल संवेदना वेदना है । कवयित्री ने इसमें अपनी स्वर्गवासी माँ को आधार बनाया है ।

कवयित्री ने 'दिव्य ज्योति' में निर्गुण ब्रह्म को अनादि अनंत के रूप में देखा है ।

---

4) रत्न कुँवरि बीबी - प्रेमरत्न, पृ.5

5) माथुर उमेश - आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ, पृ.88

"तुम अनादि हो या अनन्त हो,

या विराट संसार तुम्ही,

अखिल अगोचर अणु अणुवासी,

या इस उर के प्यार तुम्हीं

कुछ भी हो आश्रय दे देना

अपने ही चरणों की ओर ।[6]

उमेश माथुर के शब्दों में - "कवयित्री तोरन देवी शुक्ल 'लली' की 'जागृति' का 'जीवन ज्योति' अंश राष्ट्रीय जागरण की सूचना देता है । भारत माता की सेवा में तल्लीन देशवासियों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता की भावना व्यक्त की गयी है । 'रत्नज्योति' जीवन के प्रति जागृति का संदेश है जो प्रत्येक प्राणी के व्यक्तित्व में एक नवीन ज्योति के द्वारा विकास की कल्पना करती है। 'अमर ज्योति' उन महान व्यक्तियों के प्रति श्रध्दांजलि है जिन्होंने ईश्वरीय प्रेम, मानव प्रेम और संवेदना, अहिंसा एवं त्याग के अनुपम रूप मानस के सामने रखे । अंत में 'दीप ज्योति' उस ममतामयी माँ के प्रति उद्गार है, जो स्वयं दीपक की भाँति आलोक को फैलाकर स्वयं अदृश्य में विलीन हो गयी ।"[7]

इस प्रकार कवयित्री के कथ्य में हमें त्याग, श्रद्धा, मानव प्रेम, संवेदना, आदि के दर्शन होते हैं ।

6:1:6 कमल कुमारी :-

कवयित्री कमल कुमारी की एक काव्यकृति उपलब्ध है । उसका शीर्षक 'जुगलप्रिया पदावली' है । इस कविता की मूल संवेदना भक्ति भावना है। कवयित्री को राधाकृष्ण नाम की अनुपम निधि के सामने संसार की संपूर्ण सुख सम्पति झूठी लगती है । इसलिए संसार के सब वैभव, विलास को भुलाकर कवयित्री ने अपना तन, मन भगवान के चरणों में अर्पित कर दिया है।

शृंगार रस की कुछ हृदयस्पर्शिनी कविताएँ भी अनायास ही कवयित्री की वाणी में

---

6) तोरनदेवी शुक्ल 'लली' - 'जागृति' - पृ.2.

7) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ.92

प्रस्फुटित हो गई है । संयोग चित्रण की अपेक्षा जुगलप्रिया के विरह वर्णन को अधिक सफलता प्राप्त हुई है । जुगल प्रिया के काव्य की सफलता उनकी तीव्र विरहानुभूति एवं उनकी सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति में निहित है ।

"सखी मेरी नैननि नींद दुरी ।
पिय सों नहिं मेरे बस कछुरी ।।"[8]

संपूर्ण संसार सुप्तावस्था में है, पर उनकी विरहिणी को नींद नहीं कवयित्री प्रियतम के वियोग में जलविहीन मछली के समान तड़प रही है ।

6:1:7 चंद्रकलाबाई :

कवयित्री चन्द्रकलाबाई विशेष पढ़ी लिखी नहीं थी। अपने पिता की मृत्यु पश्चात् माँ के साथ बूँदी नरेश के राजकवि गुलाबसिंह के यहाँ दासी के रूप में थी । कविराज गुलाबसिंह ब्रजभाषा एवं संस्कृत के विद्वान थे। उन्हींसे कविता करने की प्रेरणा उन्हें प्राप्त हुई है । पर कविता के मर्म को वह खूब समझती थी । कम उम्र में ही उन्होंने 'तुलसी रामायण', 'रामचंद्रिका' आदि ग्रंथों का अध्ययन कर उसे सात काण्डों में प्रस्तुत किया है । 'रामचरित्र' नाम से काव्यबद्ध उनकी यही एक काव्यकृति उपलब्ध है । इस कविता की मूल संवेदना तुलसीकृत 'रामचरितमानस' के अनुरूप है।

कवयित्री चंद्रकलाबाई की योग्यता के संबंध में किसी प्रकार का सन्देह अनुचित प्रतीत होता है ऐसा कहते हुए कविराय गुलाबसिंह ने कहा है -

"तुलसी केशव ग्रंथ लखि, लेय सबन को सार ।
चंद्रकला नै प्रथम यह रच्यौ चरित हित कार ।।"[9]

कवि गुलाब ने काव्य की रचना में सहायता की है । इसका भी उल्लेख इनके काव्य में यत्र-तत्र मिलता है । मंगलाचरण के रूप में गणेश, शिव और सरस्वती की वंदना है । काव्य-संग्रह में स्थान बूँदी तथा वहाँ के तत्कालीन राजा रामसिंह और उनके वंश के अन्य

---

8) श्री.मिश्र ज्योतिप्रसाद - 'स्त्री कवि कौमुदी', पृ.185
9) चंद्रकलाबाई - 'रामचरित्र', पृ.1

व्यक्तियों का स्वभाव, योग्यता आदि का विस्तृत परिचय दिया है और काव्य गुरु गुलाबसिंह को समर्पित किया गया है ।

6:1:8 सरस्वती देवी :

कवयित्री सरस्वती देवी की दो काव्य कृतियाँ उपलब्ध हैं। पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'सुंदरी सुपन्थ' तथा दूसरे का शीर्षक 'वनिता बंधू' है।

'सुंदरी सुपंथ' का मूल कथ्य स्त्री आदर्शों से संबंधित है। कवयित्री प्राचीन आदर्शों को माननेवाली भारतीय स्त्री थी। कवयित्री मानती है कि पतिसेवा करना भारतीय स्त्री का कर्तव्य है । पति के प्रति पत्नी का क्या कर्तव्य है इस संबंध में कहती है -

"कुलवन्ति को धर्म नहिं पति सेवा तजि आन।
सहज मुक्ति मारग यही भाषत वेद पुरान।।
पति स्वभाव अनुकूल रहि करौ सकल गृह कार।
पति की आज्ञा पाय के वर्तहु तेहि अनुसार ।।"[10]

कवयित्री के अनुसार पूज्य जनों के प्रति आदर, सत्कार एवं सेवा भाव, छोटा तथा छोटों के प्रति स्नेहभाव रखना यही भारतीय जीवन का आदर्श रहा है। इसलिए भारत में नारी को गृहलक्ष्मी की उपाधि से विभूषित किया जाता है। इस प्रकार 'सुंदरी सुपन्थ' में आदि से अंत तक नारी जीवन के विविध अंगो से संबंधित 'नारीधर्म' तथा नारी आदर्शों का ही उल्लेख मिलता है ।

'वनिता बंधु' की कविताओं का मूल्य कथ्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों की प्रतिष्ठापना रहा है । इसके साथ ही कवयित्री स्त्री की दीन-हीन दशा से परिचित थी । इनकी अभिव्यक्ति भी उनकी कविताओं में हुई है ।

'वनिता बंधु' का प्रारंभ राधाकृष्ण वंदना से किया गया है -

"राधा माधव पद कमल बंदौ विविध प्रकार ।
फूलै सकल मन कामना, जासु प्रेम आधार ।।"[11]

---

10) सरस्वती देवी - 'सुंदरी सुपन्थ', पृ.8
11) सरस्वती देवी - 'वनिता बंधु', पृ.1

नारी अपनी दीन-हीन अवस्था में अपने उद्धार के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है। कवयित्री सरस्वती देवी के काव्य में प्रभुत्व रूप से यही स्वर मुखरित हुआ है । अपनी अन्य कविताओं में भी कवयित्री ने अपनी ममताभरी भावनाओं को अभिव्यंजित किया है। पारिवारिक जीवन स्त्री जीवन का अभिन्न और मुख्य केंद्र होता है । अपने स्त्रीत्त्व का एहसास इस युग की कवयित्रियों ने कतई भूली नहीं है । उसी स्त्रीत्त्व को केंद्र में रखकर उन्होंने अपने अनुभवों को अपनी संवेदनाओं को शब्दांकित किया है । परिवार में स्त्री का कोमल नाजूक रिश्ता होता है । उसका उल्लेख कवयित्री ने किया है ।

इस प्रकार आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर की कवयित्रियाँ केवल प्रेम भावना, भक्ति भावना, पारिवारिक जीवन, प्रकृति चित्रण आदि तक सीमित नहीं रही । वे अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागृत हो गयी थी । स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उन परंपरागत मूल्यों का विरोध कर रही थी, जिनकी बोझ से वह स्वनिर्णय की शक्ति को खो चुकी थी । पुरुष प्रधान व्यवस्था में उसके अधिकारों को प्राय: अनदेखा किया जाता रहा है। उसे घर की देहलीज के भीतर आबद्ध कर रुढियों की शृंखलाओं से जखड़ दिया गया । स्त्री, माँ, बहन या पुत्री के रूप में वह पूरी तरह से पुरुष पर अवलम्बित थी । ये कवयित्रियाँ इस परम्परागत धार्मिक रुढियों को तोड़ना चाहती थी ।

6:1:9:- रानी रघुराज कुँवरि :-

रानी रघुराज कुँवरि की दो कृतियाँ उपलब्ध हैं। पहले कविता संग्रह का शीर्षक 'रामप्रिया-विलास' तथा दूसरे का शीर्षक 'श्याम आनंदिनी' है। पहले संग्रह की कविताओं का मूल स्वर राम की भक्ति रहा है। कवयित्री ने सगुण भक्ति में रूपोपासना पर अत्यधिक बल दिया है ।

दूसरे कविता संग्रह का मूल कथ्य सौंदर्य 'रामकृष्ण की भक्ति' से संबंधित रहा है। परंतु रामभक्ति संबंधी पद अधिक हैं। रामभक्ति संबंधी पदों के साथ, हनुमान, शिव, आदि का वर्णन है जो धार्मिक एकता का प्रतीक है। कवयित्री ने विनय से पूर्ण पदों में आराध्य की महानता और भक्त की दीनता का वर्णन किया है। उमेश माथुर के शब्दों में - "भारतेंदु-युगीन अन्य कवियों के समान कवयित्री के काव्य में प्रकृति के उद्दीपन रूप को स्वीकार

किया गया है । चेतना-संपन्न प्रकृति का रूप उसमें दृष्टिगत नहीं होता। उसमें वर्णनात्मकता की प्रधानता है ।"[12]

इस प्रकार दोनों ही ग्रंथों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कवयित्री ने राम-कृष्ण की आराधना समानभाव से की है। यद्यपि संख्या में रामभक्तिसंबंधी पद अपेक्षा कृत अधिक हैं। पदों में एक प्रकार का माधुर्य एवं प्रवाह दृष्टिगत होती है ।

6:1:10:- रामकुमारी देवी चौहान :-

कवयित्री रामकुमारी देवी चौहान का एक काव्य-संग्रह 'निश्वास' उपलब्ध है। इस संग्रह की प्रथम कविता 'मातृवंदना' है जिसमें मातृभूमि की महिमा का वर्णन किया गया है। इस कविता की मूल संवेदना देशप्रेम है । इसमें कवयित्री का राष्ट्रीय भाव व्यक्त होता है -

"उस भारत जननी के चरणों
पर जग के सुख सारे
लुट जाने दो हंसते हंसते
जीवन वैभव प्यारे ।"[13]

'अंतर्दाह', 'करुणामूर्ति', 'ग्रामदेवता' शीर्षक कविताओं में कवयित्री के प्रगतिशील विचारों की सजीव एवं सरस अभिव्यंजना मिलती है ।

कवयित्री रामकुमारी का ध्यान उस कृषक वर्ग की ओर भी गया है, जो रात-दिन कठोर परीश्रम करके दूसरों की उदरपूर्ति करता है । परंतु उस कृषक का हमारे समाज में न आदर होता है, न उसका सम्मान होता है, उसके स्थान पर उसे अपमान ही मिलता है । कवयित्री कहती है यह जीवन की कैसी विडम्बना है ।

इस प्रकार यह कवयित्री मजदूरों की जिंदगी और उनकी रोजमर्रा की समस्या से जुड़ी हुई है । अत: इसकी कविता में मजदूरों की समस्या और जीवनानुभूति का प्रामाणिक और संवेदनशील चित्रण मिलता है । उमेश माथुर के शब्दों में - "इन कविताओं का विषय स्वानुभूति पर अवलम्बित है और उनमें अवसाद और रागात्मक संस्पर्श है । विषाद और

12) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ.79
13 रामकुमारी देवी चौहान - 'निश्वास', पृ.102

पीड़ा की आवृत्ति बार-बार अनेक पदों में मिलती है परंतु इस पुनरावृत्ति में नीरसता नहीं आने पाई है । अनुभूतियों तथा भावपक्ष की प्रधानता से साधारण उक्तियाँ भी अत्यंत मार्मिक बन पड़ी है ।" [14]

6:1:11:- श्रीमती होमवती देवी :

कवयित्री होमवती देवी की 'अपना घर', 'धरोहर', 'स्वप्नभंग', 'निसर्ग', 'अर्ध', और 'उद्‌गार' शीर्षक कविता संग्रह में कविताएँ संग्रहित हैं। सुयोग्य स्नेही पति के निधन से कवयित्री होमवती के हृदय का दु:ख-जर्जर होना स्वाभाविक था। 'उद्‌गार' के मुखपृष्ठ पर कवयित्री ने लिखा है -

"उर में उमड़ा पीड़ा वारिधि, जीवन में बरसे अंगार ।
जीवन धन को खोकर मैंने, पाया कविता धन उपहार ।।"[15]

कवयित्री ने समाज की विधवा स्त्री का कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है । शताब्दियों से अंधविश्वास एवम् परम्पराओं से जकडी भारतीय समाज में विधवा स्त्री की दशा अत्यंत दयनीय थी। पति की मृत्यु के पश्चात् समाज द्‌वारा स्त्री को जीवन्मृत की उपाधि दी जाती थी। समाज की धारणा थी 'पति के साथ स्त्री का भी आधा अंग चितापर जल जाता हैं जब तक स्त्री गंगा न नहाए तब तक वह मुरदे के बरोबर रहती है।

सामाजिक रुढियों एवं परंपराओं से जकड़ी स्त्री को अपने परिवार से अपमान, अनादर के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता था। कवयित्री को पति की मृत्यु के पश्चात् स्वयं सामाजिक एवम् पारिवारिक विकृतियों से संघर्ष करना पड़ा था।

आत्मानुभूति के धरातल पर रचित इन कविताओं को अपूर्व सफलता मिली है। विधवा स्त्री की दयनीय अवस्था चरमसीमा पर पहुँच गयी थी। उसे अपने पुत्र और बहु के अन्याय एवं अत्याचार को भी सहन करना पड़ा था। उसे अपने ही बेटे के यहाँ दासी रूप में रहना पड़ता था।

---

14 माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ.94
15) होमवती देवी - 'उद्‌गार', पृ.मुखपृष्ठ.

इस कवयित्री ने विधवा समस्या का चित्रण तो किया परंतु कवयित्री होमवती विधवा का समर्थन करते हुए प्राचीन संस्कारों के जीवन गौरव का भी सम्मान करती थी ।

प्रकृति-चित्रण इन कवयित्रियों का लक्ष्य नहीं था । परंतु कुछ कवयित्रियों की कविता में प्रकृति चित्रण भी दृष्टिगत होता है । कवयित्री होमवती देवी ने प्रकृति के माध्यम से नारी जीवन का करुण चित्रण किया है । 'दलित कुसुम' कविता इसी प्रकार की 'निर्बल अबला' के जीवन की कहानी है । फुल सी खिलनेवाली बालिका दु:खी एवं उपेक्षित बन जाती है ।

इनकी कविता के संबंध में उमेश माथुर का कथन है - "फलत: जीवन में व्याप्त रोदन, क्रंदन, छल कपट ही होमवती जी का संसार के प्रति विरक्ति भाव का कारण बनता है और वह संसार से विमुख होकर छायावादियों के एकांत लोक में चली जाना चाहती है। व्यक्तिगत वेदना से उत्पन्न छायावाद पलायनवादिता इनकी रचनाओं में दिखाई देने लगती है। अत: जीवन संघर्षों से घबराकर कवयित्री ऐसे लोक में जाने की कामना करती है, जहाँ दु:ख और निराशा न हो, छल और कष्ट का अस्तित्व न रहे ।"[16]

'अर्ध' कविता में कवयित्री अब अपने अंदर संसार की जटिलताओं को झेलने के लिए अधिक बल एवं साहस का अनुभव करने लगती है, इसीसे अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए भवसागर में अपनी जीवन-नौका को छोड देती है -

"भवसागर की दुस्तर लहरें, नित धन और घटाएँ घहरे,
बहने दो डगमग नैया को, चलो भंवर में हो लें
नाविक ! आओ नौका खोलें ।[17]

इस प्रकार उनकी कविताओं से स्पष्ट होता है कि कवयित्री केवल अपने दु:ख से विभोर हो आँसू बहानेवाली नहीं, युग से वह प्रभावित हुई है और समय-समय पर रचित उनकी कविताओं में इसकी अभिव्यंजना उपलब्ध होती है ।

16) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ', पृ.113.
17) होमवती देवी - 'अर्ध', पृ.7.

6:1:12:- रामेश्वरी देवी 'चकोरी' :

कवयित्री रामेश्वरी देवी 'चकोरी' की तीन काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं । 'किंजल्क', 'मकरंद' और 'उषागीत'। किंजल्क की कविता वैयक्तिक सुख-दु:ख, हर्ष, विषाद, आशा, निराशा आदि भावों से पूर्ण हैं । 'मकरंद' संग्रह की कविताओं के केंद्र में 'प्रेमजन्य वेदना' का स्वर है । 'उषागीत' की कविताओं का मूल कथ्य 'प्रेमभावना' है ।

'अनुरोध' कविता में व्यक्ति के हृदय में उठनेवाले भावों का अत्यंत सूक्ष्म, सुंदर और आकर्षक चित्रण मिलता है -

"मानस की मधुर उमंगे, मदमत्त मुस्कराती हैं,
आशाएँ थिरक-थिरक कर, नर्तन करती, गाती है ।
जीवन की स्वर लहरी में, आकुल रस-धार बहा दो,
अंतर के शून्य गगन में, आशा-रवि उदय दिखा दो ।"[18]

कवयित्री रामेश्वरी देवी 'चकोरी' ने छायावादी कवियों की तरह प्रकृति-चित्रण किया है । प्रकृति कहीं सुंदर नारी के रूप में तो कहीं प्रेयसी की छबि में, कवयित्री ने अनेक कविता में प्रकृति चित्रण विविध रूपों में चित्रित किया है । उषा सुंदरी आकाश पर सुंदर परिधान धारण कर छा जाती है । प्रकृति प्राय: मानवीय भावों की छाया बनकर आयी है । बादल, पंछी का चित्रण संदेश वाहक के रूप में भी मिलता है ।

'मकरंद' कविता संग्रह में प्रेमजन्य वेदना का स्वर पाया जाता है । 'विधवा' कविता समाज में विधवा नारी की स्थिति का चित्र प्रस्तुत करती है । 'उषागीत' में उषा की ध्वनि में पहला स्वर गंभीर विषाद का है । भाव और कल्पना दोनों का प्राबल्य कवयित्री के काव्य में पाया जाता है ।

इस प्रकार कवयित्री रामेश्वरी देवी की कविता के कथ्य सौंदर्य में विविधता है । कहीं वह जन-जीवन से जुडी हुई है, तो कहीं परिवेश से जुडी हुई दृष्टिगोचर होती है ।

---

18) रामेश्वरी देवी - 'चकोरी' - 'किंजल्क' पृ.32.

6:1:13:- हीरादेवी चतुर्वेदी :

कवयित्री हीरादेवी चतुर्वेदी के चार काव्य-संग्रह उपलब्ध हैं । 'मंजरी', 'नीलम', 'मधुबन' और 'मधुमास' । 'मंजरी' और 'नीलम' का मूल कथ्य भक्ति है और 'मधुबन' और 'मधुमास' की कविताओं का मूल स्वर 'वेदना' है ।

कवयित्री हीरादेवी चतुर्वेदी का 'मंजरी' पहला कविता-संग्रह है । इसमें हीरादेवी कृत14 और पति 'मस्तजी' कृत 27 रचनाएँ संग्रहित हैं । इन गीतों में दाम्पत्य भाव है जिसमें विरहजन्य उत्कंठा, प्रतिक्षा, स्मृति आदि का चित्रण प्रधान रूपसे मिलता है ।

'मधुमास' कविता संग्रह के 'मैं मजदूरिन चली काम पर' कविता में कवयित्री ने आर्थिक विषमता पर तीखा व्यंग्य कसा है । जीवन की कितनी बड़ी विडम्बना कि धनवान के कुत्ते-बिल्ली दूध मलाई को अपना भोज्य बनाते हैं और पसीने बहानेवाला मजदूर पेटभर रोटी के लिए तरसता है -

"टुकुर टुकुर मैं खड़ी देखती
धनवानों की शान निराली ।
उनके कुत्ते-बिल्ली पीते
दूध मलाई भर-भर थाली
किन्तु पसीना बहा रात-दिन
हम मजदूरी करने वाले,
पाते कहाँ पेटभर भोजन
अस्त्र-वस्त्र के पड़ते लाले ।"[19]

कवयित्री चतुर्वेदी ने अपनी कविता में अन्याय, अत्याचार और शोषण का मर्मस्पर्शी अंकन किया है।

कवयित्री हीरादेवी चतुर्वेदी की कविता के संबंध में उमेश माथुर का कथन है - "हीरादेवी की कविताओं की सबसे बडी विशेषता है, उनकी सरल तथा बोधगम्य भाषा, जो

---

19) चतुर्वेदी हीरादेवी - 'मधुमास', पृ.32.

उनके भावों को व्यक्त कर पाठक को आत्मविभोर कर देती है । उसमें कलागत सौंदर्य प्रयत्न साध्य नहीं है । शब्दाडम्बर का उसमें अभाव है । जीवन की यथार्थ भूमि पर स्थित होकर कवयित्री की कल्पना आकाश में विहार करती है ।"[20]

'नीलम' कविता संग्रह में कल्पना की सुंदरता और जीवन की मादकता के साथ-साथ जगत् की वास्तविकता से परिचित कराया है । 'भारतवर्ष', 'आकांक्षा' कविताओं में राष्ट्रीय भावना प्रधान है । 'भारतवर्ष' शीर्षक कविता में भारतवर्ष के अतीत गौरव का वर्णन है तथा आकांक्षा में मातृभूमि के हित के लिए आत्मबलिदान की आकांक्षा व्यक्त की गई है ।

'मधुबन' में कवयित्री 'मंजरी' से 'मधुबन' में पहुँचकर रुदन और आँसुओं की निरर्थकता को समझने लगती है और हृदय में साहस बटोरकर उनके प्रति विद्रोह भी करती है -

"मेरी आँसू की भी सरिता
मिटा सकी कब जग की प्यास
तब क्या सघन घनों के आँसू
मिटा सकेंगे इसकी प्यास।।"[21]

इसप्रकार कवयित्री के जीवन में छाये नैराश्य और वेदना के बादल 'मधुबन' के आगमन पर बिखर जाते हैं और उल्लास और आशा का आकाश प्रकट हो जाता है ।

6:1:14:- पुरुषार्थवती :

कवयित्री पुरुषार्थवती की एक काव्य कृति उपलब्ध है । उसका शीर्षक 'अन्तर्वेदना' है । इस कविता संग्रह की कविताएँ देशप्रेम से संबंधित हैं । 'महानाविक के प्रति' शीर्षक कविता में जीवन-नौका को तारने के लिए भक्त-वत्सल पतितपावन ईश से प्रार्थना की गई है । इसकी रचना आत्मनिवेदन शैली में की गई है -

अब तो केवल आशा तेरी ।
टूटी-फूटी नौका स्वामी ! पड़ी भंवर में मेरी

20) माथुर उमेश - 'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ' - पृ.171.
21) चतुर्वेदी हीरादेवी - 'मधुबन', पृ.24.

सूझे आर-न-पार चहूँ दिशि ड़ोलत नैया मेरी

विव्हल होकर नाथ पुकारुँ - क्यों की अब लग देरी ?

अब तो केवल आशा तेरी । "[22]

कवयित्री को लगता है कि, स्त्री केवल अब घर-परिवार तक सीमित न रहकर साहस और आत्मविश्वास के साथ राष्ट्रहितार्थ अपना योगदान दे रही है । अब भारतीय स्त्री केवल कवयित्री ही नहीं बनी तो देश की आजादी की लढाई में स्त्री उत्साहपूर्वक भाग ले रही थी । स्वाधीनता का यह संग्राम पुरुषों तक ही सीमित नहीं रहा । स्त्री - पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगी थी ।

कवयित्री पुरुषार्थवती कहती है - देश की स्वतंत्रता के लिए स्त्री और पुरुष दोनों का सहयोग अनिवार्य है । 'वीर संदेश', 'भारत प्रेमरमणी ', कविता में पुरुषों और स्त्रियों को प्रोत्साहित किया है । देश के नवयुवकों को संदेश देती है और नवयुवकों के समान वीर-प्रसविनी भारतीय स्त्री में राष्ट्रीय चेतना जगाते हुए, उसे अबला नहीं सबला कहती है -

"कौन कह रहा तुमको अबला

तुम तो शत्रु-घातिनी सबला

शक्ति और साहस में प्रबला

वीर प्रसविनी भारत की,

शक्तिदायिनी भारत की ।"[23]

इस प्रकार कवयित्री स्त्री के मिथ्या भय को भगाकर फिर से दुर्गा बनने की प्रेरणा देती है।

6:1:15:- सुमित्राकुमारी सिन्हा :-

आधुनिक काल की हिन्दी कवयित्रियों में कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा का महत्त्वपूर्ण स्थान है । कवयित्री सिन्हा एक सजग एवम् स्वतंत्र प्रगतिशील विचारोंवाली स्त्री रही है । 'विहाग', 'आशापर्व', 'पंथिनी', 'बोलो के देवता' आदि उनके चार कविता संग्रह

22) पुरूषार्थवती - 'अंतर्वेदना' - पृ.3.

23) पुरूषार्थवती - 'अंतर्वेदना' - पृ.63.

उपलब्ध हैं ।

'विहाग' संग्रह की कविताओं का मूल कथ्य 'प्रेमभावना' है । 'आशापर्व' की कविताओं की मूल संवेदना प्रेम भावना ही है । 'पंथिनी' का भी मूलभाव प्रेम रहा है । परंतु इसके प्रेम स्वर में अधिक व्यापकता आ गई है । 'बोलो के देवता' संग्रह की कविता का मूल कथ्य व्यक्ति को जीवन के प्रति आस्था, जीवन साधना की रचनात्मक भाव भूमि और भौतिक क्षेत्र में कर्म ही सुनिश्चित प्रेरणा है।

'विहाग' कविता संग्रह के मूल स्वर की समीक्षा करते हुए डॉ.रामकुमार वर्मा ने इसकी भूमिका में लिखा है - "उनकी कविता में अनुराग और प्यार का वह उन्माद है जिससे जीवनपथ

कष्टप्रद न होकर एक गति-एक क्रम में परिवर्तित हो गया है । उनके मिलन में असफलता भी सफल हो जाती है, भावनाएँ एक ज्वालामुखी के अन्तराल से निकलकर आकाश में पहुँचते-पहुँचते शीतल और स्निग्ध हो जाती है ।"[24]

कवयित्री सुमित्राकुमारी की अधिकांश गीतों का निर्माण पीड़ा, असफलता, निराशा, व्यथा, वेदना आदि के ताने-बाने में ही हुआ है, किंतु आशा के दृढ तंतुओं से कवयित्री जीवन की समस्त निराशाओं को बांधकर वीतराग में ही आत्म-तुष्टि खोजने लगती है । आशातंतु बड़ा सबल होता है । निराशा के गहन अंधकार में ही आशा का किरण उसके मन में विश्वास भर देती है, कवयित्री को विश्वास है कि एक दिन उसका साथी अवश्य आएगा, वह प्रतीक्षा करती है-

"मैं सूनी संध्या बेला में
दीप जला बैठी रहती हूँ ।
आँखों की बरुनी से पथ के
काँटे चुन उर में रखती हूँ ।
कितने दिवस मास बीते अब
कब लौटोगी हे परदेशी ?[25]

---

24) डॉ.रामकुमार वर्मा - 'विहाग' पृ. (भूमिका) -
25) सिन्हा सुमित्राकुमारी - 'विहाग' - पृ.26.

कवयित्री सुमित्राकुमारी सिन्हा ने अपनी कविता में प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं का चित्रण किया है । वियोग के समय वह शीतल समीर, मुस्कराती उषा, उमड़ते-घुमड़ते बादलों और कोयल की पी-पी की पुकार से अपने को बचाना चाहती है । कवयित्री ने प्रकृति को आधार बनाकर अनेक गुढ तत्त्वों का भी अवलोकन किया है । उनकी कविता में प्रकृति का चित्रण सदैव ही जीवित और सक्रिय रुप में किया है, जड़ तथा निर्जीव बनकर नहीं ।

'आशापर्व' तक पहुँचते-पहुँचते कवयित्री की वैयक्तिक पीड़ा, वेदना, लोकपीड़ा का रूप धारण कर लेती है -

"आज विश्व जीवन पर मेरी
पीड़ा का उर भर आया है ।"[26]

व्यथा, पीड़ा, वेदना की अभिव्यक्ति तो इस संग्रह की रचनाओं में मिलती है लेकिन उनमें कातरता, व्याकुलता नहीं, उनमें आत्मविश्वास का भाव दृढ होकर झलका है ।

'बोलो के देवता' संग्रह की मूल प्रेरणा के संबंध में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने भूमिका में लिखा है कि - "बोलो के देवता" का विषय व्यक्ति की जीवन के प्रति निश्चल आस्था, जीवन-साधना की रचनात्मक भावभूमि और भौतिक क्षेत्र में कर्म की सुनिश्चित प्रेरणा है । इस प्रेम में ही धरती के दैन्य, दु:ख, संघर्ष, पराजय, उलझन, असंतोष तथा संसार की समस्त समस्याओं का समाधान खोजा गया है ।"[27]

इस प्रकार कवयित्री की कविता में जीवन के प्रति आस्था और विश्वास तथा भौतिक क्षेत्र में कर्म के प्रति प्रेरणा मिलती है ।

6:1:16:- शकुंतला सिरोढिया :-

कवयित्री शकुंतला सिरोढिया की तीन काव्य-कृतियाँ उपलब्ध हैं। 'दीप', 'सुधि के स्वर' और 'चाँद इतना हँसा'।

'दीप' संग्रह की कविता का मूल स्वर प्रेम है । 'सुधि के स्वर' संग्रह की कविताओं की

---

26) सिन्हा सुमित्राकुमारी - 'विहाग' - पृ.47.
27) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी - 'बोलो के देवता' - पृ.भूमिका

मूल संवेदना 'स्त्री' विवशता है । 'चाँद इतना हँसा' कविता का मूल कथ्य 'प्रियमिलन की आकुलता' है।

कवयित्री सिरोढिया ने प्रेम को मानव मन की अनिवार्य अनुभूति माना है । 'दीप' संग्रह की कविता में प्रेम के वियोग पक्ष को अधिक प्रधानता मिली है इसलिए इस कविता में सुख, आशा, आकांक्षा के स्थान पर निराशा असफलता पीड़ा, अंधकार, सूनेपन और काँटो की चर्चा अधिक हुई है, पर इनसे कवयित्री कातर नहीं होती, वह पीड़ा में भी सुख का अनुभव करती हैं -

"पर मुझ को अपनी पीड़ा में ही
सुख का मधु पा लेने दो -[28]

कवयित्री दु:ख में सुख की अनुभूति जीवन-मार्ग में उपस्थित बाधाओं से संघर्ष करने की शक्ति देती है । कवयित्री ने प्रकृति के माध्यम से मानव भावनाओं का सुंदर अंकन किया है । सूर्य उनकी व्यथा से जलता है, संध्या सिसकी भरती है और सरिता जीवन भर उनके दु:ख से रोती है । कवयित्री ने अपने प्रियतम को 'सत्य', 'शिव', 'सुंदर' का प्रतीक माना है ।

'चाँद इतना हँसा' कविता संग्रह के गीता में प्रेम पीड़ा और विरह का चित्रण है । साथ ही अध्यात्म की झलक बहुत स्पष्ट उभरी है । 'दीप' में प्राप्त प्रेम का स्वर 'सुधि के स्वर' कविता संग्रह में अधिक स्पष्ट हो जाता है किंतु 'चाँद इतना हँसा' में वह पूर्णता को प्राप्त कर लेता है ।

कवयित्री शकुन्तला सिरोढिया ने जगत् की सत्ता को नित्य मानते हुए भी कवयित्री ने प्रकृति के वैभव को क्षणिक और नाशोन्मुख माना है । 'धरती वरमाला पहनाएगी' शीर्षक कविता में ऋतुराज वसंत को वर रूप में, धरती को वधू और रजनी को मंगलकलश-धारिणी नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

"नभ में रजनी, चँदा का

---

28) सिरोढिया शकुंतला - 'दीप' - पृ.2.

कलश उठायेगी

धरती बसंत को

वरमाला पहिनाएगी ।[29]

इसप्रकार व्यक्तिगत राग का पर्यवसान समष्टिगत प्रेम में होता है। फलत: जन-जीवन के कारुणिक चित्र भी उनकी रचनाओं में प्रचुर मात्रा में आ गये हैं। समाज का हाहाकार, दुर्दिनों का प्रहार, और परिस्थितियों का क्रंदन उनकी उत्तरकालीन कविताओं के मुख्य विषय बन कर आए हैं।

6:1:17:- शांति मेहरोत्रा :

कवयित्री शांति मेहरोत्रा की चार काव्यकृतियाँ उपलब्ध हैं। 1) निष्कृति 2) रेखा 3) पगध्वनि और 4) पंचप्रदीप आदि।

'निष्कृति' संग्रह में चित्रित प्रेम व्यक्तिगत एवं लौकिक है । प्रथम गीत में ही कवयित्री ने अपने काव्य रचना के उद्देश्य को स्पष्ट कर दिया है -

"यह मेरे कल्पित गीत नहीं, इनमें मेरा इतिहास छिपा ।

इनमें इस जीवन की उलझन, इनमें मेरा विश्वास छिपा ।।"[30]

कवयित्री शांति मेहरोत्रा के काव्य की उत्पत्ति मन की अनंत वेदना से ही हुई है । कवयित्री ने पीड़ा, असफलता, निराशा, व्यथा, वेदना आदि को धैर्य और संयम के साथ सहन कर सकती है। वह कहती है -

"मैं इतना दु:ख भी ले लूंगी,

मैं इतना सुख भी ले लूंगी ।

दोनों के ही बलपर जग का, शीतल हाहाकार करुंगी ।

मैं दोनों स्वीकार करुंगी ।[31]

कवयित्री शांति मेहरोत्रा की कविता में संसार के प्रति विद्रोह की भावना तो पायी जाती है परंतु विद्‌वेष की नहीं । निराशा, वेदना, पीड़ा में भी आशारुपी किरण उनके मार्ग

---

29) सिरोढिया शकुंतला - 'चाँद इतना हँसा' - पृ.102.

30) मेहरोत्रा शांति - 'निष्कृति' - पृ.3.

31) मेहरोत्रा शांति - 'निष्कृति' - पृ.4.

को निरंतर आयोजित करती रहती है ।

6:1:18:- सुभद्राकुमारी चौहान :

अलौकिक साहित्यिक प्रतिभा से संपन्न कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का कार्यक्षेत्र बड़ा विशाल था । देश-सेवा, साहित्य-सेवा, समाज सेवा आदि तीनों की त्रिवेणी का संगम उनके जीवन में मिलता है । कवयित्री का पारिवारिक जीवन सुखमय था । सुभद्रा एक कुशल गृहिणी थी । उनके व्यक्तित्व की सर्वप्रमुख विशेषता थी मातृत्व-भावना वे किसी कीमत पर अपने बच्चों को दु:खी नहीं देख सकती थी । सरल स्वभाववाली सुभद्रा निश्चय ही असाधारण नारी थी, वे अपनी सहज सरलता और निष्कपटता से सभी को अपना स्नेही बना लेती थी ।

छ:-सात वर्ष की अवस्था से सुभद्राजी छोटी-छोटी कविता रचनी आरंभ कर दी थी, परंतु पूर्ण रूप से साहित्य-सृजन का कार्य कवयित्री ने 1920-21 ई. से प्रारंभ किया। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में सुभद्राजी की कविताएँ प्रकाशित हो रही थी । एक समय उनकी 'राखी' एवं 'झांसी वाली रानी' कविताएँ लोक-व्यापक हो गई थी ।

कवयित्री सुभद्राजी के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'त्रिधारा', 'मुकुल' और 'बंगीय साहित्य परिषद' द्वारा प्रकाशित 'बुंदेले हरबोले के मुँह' ।

'मुकुल' कविता संग्रह की कविताओं के संबंध में स्वयं कवयित्री ने कहा था कि - "ये सभी कविताएँ, मेरे जीवन के उष:काल में लिखी गई थी ।"[32] 'मुकुल' कविता संग्रह में 'राष्ट्रीय कविताएँ', प्रणय भावना की कविताएँ, वात्सल्य भावना की कविताएँ, विविध विषयक कविताएँ चित्रित हैं।

कवयित्री सुभद्रा ने राष्ट्रीय कविताओं में युग की, देश की पुकारको ही स्वर दिया है, देश में गाँव-गाँव में फैलनेवाली आजादी की भावना और विदेशी सरकार के प्रति घृणा और रोष व्यक्त किया है । कवयित्री के इन रचनाओं में युग का सच्चा इतिहास मिलता है -

"जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,

32) चौहान सुभद्राकुमारी - 'मुकुल', (प्रस्तावना) - पृ.5.

यह तेरा बलिदान जगावेगा, स्वतंत्रता अविनाशी ।"[33]

कवयित्री सुभद्राकुमारी ने राष्ट्रीय कविताओं के अतिरिक्त प्रणय-भावना से संबंधित कविताएँ भी रची है । कवयित्री के अनुसार नारी अपने सात्विक प्रेम और त्याग के लिए प्रसिद्ध है, वह निरपेक्ष और निष्काम भाव से प्रेम करती है, उसमें किसी प्रकार की स्वार्थ-भावना नहीं होती। जीवन की इस सत्यता का चित्र इस प्रकार मिलता है -

"मैं उन्मत प्रेम की प्यासी
हृदय दिखाने आयी हूँ ।
जो कुछ है, बस यही पास है
इसे चढाने आई हूँ ।।[34]

इस प्रकार सुभद्राजी की कविताएँ अधिक न होते हुए भी उनके कृतित्व में एक उल्लेखनीय वैविध्य और अनोखी सहजता दिखाई देती है। प्रेम, परिवार, राजनीति, उद्बोधन जिन विषयों को सुभद्राजी ने उठाया, उसे सहजता से चित्रित किया है।

स्पष्ट है कि सुभद्राकुमारी चौहान पहले इन्सान थी फिर साहित्यकार, समाजसेवी और स्वतंत्रता सेनानी । उनके जीवन का मानवीय पक्ष सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और मजबूत पक्ष है जो इन्सान बनने तथा बने रहने की प्रेरणा देता है । मानवीय संवेदना से उनके सरोकार गहरे जुड़े थे । कवयित्री सुभद्राकुमारी यही चाहती थी कि मानव मानव के लिए बना रहे । इसीके लिए उन्होंने संघर्ष किया । यही उनके जीवन का सार है ।

6:1:19 विद्यावती कोकिल :

कवयित्री विद्यावती कोकिल की 'अंकुरित', 'माँ', 'सुहागिन', 'सोहाग गीत', 'पुनर्मिलन', 'आरती' और 'ऋतायन' आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी हैं।

पहले संग्रह की कविताओं का मूल स्वर 'प्रकृति और वात्सल्य' है। 'माँ' का मूल कथ्य वात्सल्य है, सुहागिन की 'भक्ति', 'सोहागगीत' की कविता में विवाह से लेकर वधू के आगमन तक की सभी छोटी -बडी बातों का परिचय मिलता है। 'पुनर्मिलन' का मूल स्वर 'आत्मा परमात्मा' मिलन है। 'आरती' संग्रह का मूल कथ्य 'भक्ति भावना' है और 'ऋतायन'

33) चौहान सुभद्राकुमारी - 'मुकुल', (प्रस्तावना) - पृ.75.
34) चौहान सुभद्राकुमारी - 'मुकुल', (प्रस्तावना) - पृ.26.

पाँच खंडों में विभाजित है।

'ऋतायन' की 102 रचनाएँ कोकिल के काव्य विकास की झाँकी प्रस्तुत करती है। इसलिए वह स्वयं इसे अपनी कविताओं का एक प्रतिनिधि संग्रह मानती हैं। ये कविताएँ पाँच खंडो में विभक्त हैं। उर्ध्वविवृति, अन्तर्विवृति, भारत भक्ति, भविष्य दृष्टि और आनंद प्राप्ति। अन्तिम खंड में श्री अरविन्द की पाँच कविताओं तथा श्री माँ की दो प्रार्थनाओं का अनुवाद है। श्री अरविन्द की विचारधारा में कोकिल का व्यक्तित्व विकसित हुआ है। अत: यह स्वाभाविक है कि उन्हें श्री अरविंद की भाषा की ठीक समझ है। हिन्दी पाठकों कों यह अनुवाद मूलत: आनंद प्रदान करने में समर्थ है। शेष चार खंड़ मौलिक रचनाओं के हैं।

प्रथम खण्ड़ की कविताएँ श्री अरविन्द की विचारधारा की प्रेरणा लिए हुए हैं। चेतना, अवचेतना, आरोहण, अवरोहण, रुपान्तर शब्द श्री अरविंद दर्शन के गहन अर्थभेद शब्द हैं जिनका व्यवहार कई स्थानों पर है। श्री अरविंद के प्रति श्रृद्धा भाव की अभिव्यक्ति के साथ चरम सत्ता के प्रति जिज्ञासा तथा एकनिष्ठता इन कविताओं में है। ज्ञान और कर्म का भेदभाव मिटनेवाली भक्ति-साधना यहाँ दिखती है। कोकिल ने लिखा है-

"मेरा ज्ञान भजन बन जाता
पीडा में क्या आह निकालूँ
और विजय में नाद करुँ क्या
आत्मा की पुलकन बन जाता।" [35]

दूसरे खंण्ड की रचनाओं को उन्होंने 'स्वयं' व्यक्तिगत अनुभूतियों की कहानी कहा है। इनमें मीराँ की तन्मयता यत्र-तत्र मिलती है। 'मैं तो तेरे ही रंग-राती' या 'मैं केवल चरणों की दासीं' या 'मैया मैं कुछ कहन चहौं' जैसी पक्तियाँ भावनात्मक तीव्रता का बोध कराती हैं। भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति के कारण ये कविताएँ मार्मिक बन गयी है।

संग्राम की सैनिक विद्यावती कोकिल का राष्ट्रप्रेम तीसरे खंण्ड में व्यक्त हुआ है। 'ऋषियों के देश चल तू गीता के मार्ग पर' जैसी पक्तियों में उद्‌बोधन है तो इन पक्तियों में एक घोषणा..

"सुनो शक्तियों फूट डालने वाली,
तोड न सकती तुम संकल्प हमारा
हम फौलाद हैं कि जिसने गल गलाकर

---

35) कोकिल विद्यावती - ऋतायन, पृ.19

है नित नव नव स्वरुप गढा, निखरा"। [36]

भारतमाता को प्रणाम करते हुए कोकिलाजी कहती है -

"पर्वत और मैदान नदी की ये रेखाएँ
मनुज बुद्धि के वैर विरोधों की बाधाएँ,
रचती हैं निज रूप नित्य ये अभिनव नाना
क्योंकि अंतर ने न तुम्हें पहचाना
भित्ति विमर्दिनि सीमा भंजिनि तुम्हें प्रणाम।"[37]

कवयित्री विधि लेखे को मिटाकर जीवन के सपनों को धरती पर उतारना चाहती है ।

"शंका और संदेह धरा के
विधि लेखे से मिटा सकूँ
और दिव्य जीवन के सपने
को भू पर सच बना सकूँ।"[38]

विद्यावती कोकिल ने काव्य की एकान्त साधना की है इसलिए उनकी रचनाओं में सर्वत्र आस्था और आशा का दर्शन है, क्षणिक आवेग नहीं। कहीं कहीं अभिव्यक्ति की शिथिलता है लेकिन ऐसे स्थल विरल ही हैं। जैसे -

"परम मार्ग का सिगनल वह ही
जिसका प्रश्न जहाँ लग जाए।" [39]

"वह प्रकाश मानव के मन की
जेल में गिरफ्तार हो गया।" [40]

'ऋतायन' ऐसी कविताओं का है जो कुंठा, संत्रास, अकेलापन से भरे हुए महौल में विश्वास, आस्था, प्रेरणा जगाती है तथा कविता के भावी स्वरुप की ओर संकेत करती है।

6:1:20 शकुंतला माथुर :

कवयित्री शकुंतला माथुर की ' चाँदनी चूनर' (1960) की मूल संवेदना पारिवारिक और विशेष रूप से स्त्री -पुरुष संबंध रही है। कवयित्री की अनेक कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में संकलित की गई हैं।

---

36) कोकिल विद्यावती - ऋतायन, पृ. 99
37) कोकिल विद्यावती ङ ऋतायन, पृ. 107
38) वही, पृ. 125
39) कोकिल विद्यावती - ऋतायन, पृ. 74
40) वही, पृ. 31

अपने सप्तकीय वक्तव्य में उन्होंने लिखा हैं "काव्य सम्बन्धी अपने विचार प्रकट करने के पूर्व मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि यद्यपि मैंने पिछले दस वर्षो (अर्थात 1941-51 तक का काल) में ढेर कविताएँ लिखी है पर मैंने आरम्भ से यह कभी नहीं सोचा कि मैं कवि हूँ और मेरी रचनाएँ औरों के लिए भी कुछ महत्त्व रख सकती है। मैंने जब भी कुछ लिखा उसे मन की मौज समझकर छोड दिया और मेरे पति ने भी उसे सदा हंसी में टाल दिया इसके अतिरिक्त जब भी मैं कविता लिखती, इनकी कोई-न-कोई रचना मेरे सामने आ खड़ी हो जाती।"[41]

1960 ई. में प्रकाशित 'चाँदनी चूनर' कवयित्री का प्रथम कविता संग्रह है । इसमें इनकी 55 कविताएं हैं जिसमें 'जानबुझ कर नहीं जानती', 'लीडर', 'निर्माता' कविताएँ दूसरे सप्तक में भी संग्रहीत की गयी है । दूसरा सप्तक की कविताओं से इसकी रचनाओं में विविधता मिलती है । श्रीमती शकुंतला माथुर प्रयोगवादी काव्यधारा की प्रथम कवयित्री है जिन्होंने पारिवारिक जीवन के साधारण दैनिक सत्यों का उद्‌घाटन किया है । इनमें सुख एंव हर्ष का स्वर सुनाई पड़ता है । 'बरस बीत गया' कविता में नारी की मैके जाने की आकुलता का वर्णन कवयित्री इसप्रकार करती है -

"सितम्बर में आई थी
पूरा बरस बीत गया
मैके की याद आई
पहुँचा दो
भाई मेरा दो बार लौट गया
पूरा बरस बीत गया ।"[42]

पारिवारिक जीवन के दैनिक सत्य, जो अभी तक अछूते और अनदेखे पड़े थे, वे साकार हो उठे हैं। इन कविताओं के संबंध में स्वयं कवयित्री ने कहा है ''पारिवारिक अनुभूतियाँ ही मेरी कविता की विषय वस्तु है । ये घर-गृहस्थी से उठाए आनंद के टुकड़े हैं, अनुभूतियों के छोटे-छोटे आईने हैं, जिनमें घर की रसमय दृष्टि से संसार को देखा गया है।''[43]

कवयित्री शकुंतला माथुर की अधिकांश कविताएँ सुखी गृहस्थिन की अनुभूतियों को लेकर लिखी गयी है।

---

41) दूसरा सप्तक, सम्पादक, अज्ञेय, वक्तव्य पृ. 34
42) माथुर शकुंतला - 'चाँदनी चूनर' साहित्य भवन प्रा.लि.इलाहाबाद सन 1960, पृ.13,15
43) वही, वक्तव्य, पृ.7

आधुनिक युग में व्यक्ति का ईश्वर और नियति पर विश्वास नहीं रहा है । नया कवि मानव का मापदण्ड मानव को मानता है 'पूजा' कविता में कवयित्री शकुंतला माथुर कहती है -

"न पूजे पत्थर पूजा कर ली आपनी ही फिर
न पूजे चित्र मिटे उसी क्षण जीवन भर के सभी
न पूजे भाव शाप ।"[44]

इस प्रकार की कविताओं से कवयित्री की नास्तिकता का स्पष्टीकरण होता है । कवयित्री शकुंतला माथुर ने अपनी कविता में वास्तविकता और यथार्थ को अधिक महत्त्व दिया है । उनके संबंध में उमेश माथुर का कथन है - ''भावपक्ष की भांति कवयित्री के काव्य का कला और शिल्प-पक्ष भी सतत विकासशील रहा है । आपकी भाषा -शैली में अकृत्रिम साद्गी, सरलता, स्पष्टता, स्वच्छता तथा निजत्व दीख पड़ता है।''[45]

इस प्रकार कवयित्री शकुंतला माथुर नयी पीढी की कवयित्रियों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है ।

6:1:21 तारा पांड़े :

कवयित्री तारा पांड़े का 'भावगंध' पहला कविता संग्रह है । प्रकृति के प्रति असीम अनुरक्ति कवयित्री की दृष्टि व्यक्तिगत रही है। पुस्तक की भूमिका लिखते हुए श्री राकेश गुप्त ने आरंभ में ही यह स्पष्ट किया है कि, "इनकी कविताओं में छायावादी परम्परा विद्यमान है।"[46]

प्रकृति-चित्रण के अतिरिक्त कवयित्री ने देश प्रेम तथा भक्ति भावना को भी स्वर दिया है।

मेरा देश बुलाता मुझको
होते व्याकुल प्राण हैं
मुखर हो उठे कंठ हैं
बलिदानों के गान हैं। [47]

'तारक - शिशु-वृन्द' और बचपन की झलक जैसी कविताओं में तारकों के क्रिड़ामय जीवन

---

44) माथुर शकुंतला - 'चाँदनी चूनर' साहित्य भवन प्रा.लि.इलाहाबाद सन 1960 पृ.85
45) माथुर उमेश - आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ पृ.178
46) गुप्त राकेश - भावगंध, पृ. प्लैपपर
47) पांडे तारा - भावगंध, पृ.12

के प्रति आकर्षण है, क्योंकि वे दु:खियों के दु:ख को हरते हैं किन्तु अब प्रकृति में सर्वत्र व्यथा के तत्त्व दिखाई दे रहे हैं। 'अन्वेषण', 'भावना' आदि कविताएँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं। 'विषाद' कविता में प्रकृति के माध्यम से जीवन की क्षणभंगुरता का चित्रण किया गया है-

"जल-बुदबुद सा छोटा जीवन
पलभर में हो जाता मौन।"[48]

उनकी भक्ति भावना संबंधी कविता में आस्था के स्वर दिखाई देते हैं। कवयित्री अपने आराध्य 'राम' और 'शिव' के अलावा 'महाशक्ति' और 'प्रभु' का संबोधन भी दिया है-

" नभ में गहरा विश्वास छिपा है।
तारों में है चेतना सजग
स्पन्दित कर जाता प्राणों को
इनका चुप चुप सौंदर्य सुभग।"[49]

भक्ति भावना से प्रेरित इन पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री रहस्यात्मकता की ओर उन्मुख होती दिखाई दे रही हैं। इन पंक्तियों में कवयित्री की अभिव्यक्ति व्यथा मिश्रित हो गयी है।

6:1:22 महादेवी वर्मा :

सजल गीतों की गायिका महादेवी वर्मा आधुनिक युग की मीराँ कही जाती है। कवयित्री महादेवी वर्मा के 6 काव्यकृतियाँ उपलब्ध हैं- 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा' और 'दीपशीखा' आदि।

'नीहार' में प्रारंभिक कविताओं का संकलन है। इसमें वैयक्तिक दु:ख और अध्यात्मवाद की अभिव्यक्ति हुई है। 'रश्मि' में कवयित्री का जीवन-मृत्यु सुख और दु:ख पर मौलिक चिन्तन प्रकट हुआ है। 'नीरजा' में प्रकृति के मानवीय भावनाओं की भव्य झाँकिया एवं विरह वेदना के चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। 'सांध्य-गीत' में कवयित्री सुख और दु:ख, विरह और मिलन में समन्वय दिखाने में प्रयत्नशील है।

कवयित्री महादेवी वर्मा के साहित्य में पीड़ा, आँसू, माधुर्य, आनन्द तथा उल्लास सभी कुछ है। उनकी कविताओं में पीड़ा के तत्त्व की प्रधानता देखकर कुछ आलोचकों ने इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा है। और महादेवीजी से एक बड़ा मार्मिक प्रश्न पुछा गया है- "कुछ ऐसा कहते हैं की आप आधुनिक मीराँ है। किन्तु क्या ऐसा नही है की मीराँ की

48) पांडे तारा - भावगंध, पृ.35
49) पांड़े तारा - भावगंध, पृ.20

प्रेमप्रसूत वेदना ने उनकी आत्मा को उदात्त बनाकर पूर्णत: मुक्त कर दिया, जबकि आपको कुंठित कर व्यथा के द्वीप में निर्वासित कर दिया।" उसके उत्तर में महादेवीजी ने अपने और मीराँ के युग में कई सौ वर्षो के अन्तर को रेखांकित करते हुए दोनों के व्यक्तित्व के मूल भेद को स्पष्ट किया है और अपने कुंठित होने के आरोप का खंडन करते हुए लिखा है- "समष्टि में अपने अंह को लय कर देना ही कवि की मुक्ति है। मेरे निकट मेरा काव्य सृजन उनसे मुक्ति की साधना है। जब मनुष्य अपनी प्रतिकुल परिस्थितियों से हार कर अपनी आकांक्षाओं को अपने आपमें दमित कर लेता है तब कुंठा उत्पन्न होती है। मैंने तो अपनी अत्यंत प्रतिकुल परिस्थितियों से संघर्ष कर अपने अनुकूल बना डाला है। अत: मेरे कुंठित होने का प्रश्न ही नहीं उठता।..... मेरी व्यथा मेरे मन का ऐसा करुण भाव है जो मुझे मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र के सुख-दु:ख से तादात्म्य की क्षमता देता है। वह बादल हो अकता है, द्वीप नहीं उसमें निर्वासन होना संभव नही।"[50]

अपने जीवन में व्याप्त विरह के संबंध में महादेवी अपने शब्दों में कहती हैं- "दु:ख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधे रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढी तक भी न पहुँचा सके, हमारा एक बूँद भी जीवन को अधिक उर्वर बनाए बीना नहीं गिर सकता।..... विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार एक एक जल बिंदु समुद्र में लीन हो जाता हैं, कवि को मोक्ष है।"[51]

कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता में हमें बुद्ध की व्यापक करुणा और विश्व की मंगल कामना के भाव मिलते है। महादेवी वर्मा का मानना है कि यदि मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षाओं को कुछ कम करके दूसरों के प्रति सम दु:खी बन जाए तो उसका दु:ख काफी हद तक कम हो जाएगा। दु:ख को वह वरदान सदृश्य स्वीकार करती हैं। संसार की क्षणभंगुरता, नश्वरता देखकर कवयित्री का हृदय कंपित हो उठता है । 'संसार' शीर्षक कविता में संसार की अस्थिरता निष्ठुरता के संबंध में वह कहती है -

"नि:श्वासों का नीड, निशा का बन जाता
....जब शयनागार,
आँसू से लिख-लिख जाता हैं कितना अस्थिर है संसार।"[52]

---

50) लाल कृष्णचंद - प्रश्नों के घेरे, समीक्षा, जुलाई-सितम्बर, 1982, पृ.83
51) वर्मा महादेवी - काव्य, कला और जीवन दर्शन, इलाहाबाद
52) वही, प. 15

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना, दु:ख, विरह और करुणा प्रमुख रूप से विद्यमान है।

कवयित्री दु:ख को आधार मानकर विरह में लीन होना चाहती है, यही दु:ख की भावना संसार के साथ उनकी एकात्मता को विकसित करता है और वे सभी को यह संदेश देना चाहती है की वे अपने आस-पास के व्यापक संसार के दु:ख का अनुभव करे -

"बह चला दृगों से किन्तु नीर,
सुनकर जलते कण की पुकार।
सुख से विरक्त दु:ख में समान । [53]

दु:ख के मार्गपर चलते हुए दु:ख ही उनके लिए दवा बन गया। वे स्वयं कहती है कि दु:ख मेरा निर्माण बन गया। महादेवी वर्मा का दु:ख व्यष्टि का न होकर समष्टि का था। जिसमें करुणा, स्नेह एवं लोक मंगल की भावना कूट-कूट कर भरी थी जो भारतीय नारी की अस्मिता के प्रति सदैव सतर्क रही हैं।

इस प्रकार नीर भरी दु:ख की बदली महादेवी वर्मा ने पीडा में प्रियतम को और प्रियतम में पीडा को खोजती है। दु:ख की भावना इनके काव्य में अधिक चित्रित हुई है और इसके माध्यम से वे समस्त मानवजाति को एकसूत्र में बांधने का प्रयास करती है -

"कंटको की सेज जिसकी आंसुओं का ताज,
सुभग ! हंस उठ, उस प्रफुल्ल गुलाब ही सा आज।" [54]

'कौन रोयेगा सुमन' कविता में कवयित्री के हृदय का क्षोभ, असमर्थता, बेबसी और व्याकुलता व्यंजित होती है। दु:ख में सुख ढुँढनेवाली कवयित्री महादेवी वर्मा ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक परिवर्तनों को भली-भांति देखा एवं समझा है। इसमें वे गरीबी को सबसे बडा अभिशाप मानती है। उनकी सम्पूर्ण सहानुभुति इस वर्ग के साथ जुडी है। वे अपने दु:ख को उनके दु:ख में शामिल कर एकाकर हो जाना चाहती है।

महादेवी जी की प्रेम भावना स्वदेश प्रेम के रूप में प्रकट हुई है। उन्हें अपने देश के मानवों से, यहाँ तक की वन वल्लरियों, पर्वतों, नदी और निर्झरो से भी प्रेम हैं।

6:1:23 कीर्ति चौधरी :

कीर्ति चौधरी 'तीसरा सप्तक' की कवयित्री हैं । कवयित्री को ऐसा माहौल मिला था इस माहौल में कविता से बच पाना उनके लिए सम्भव नहीं था। कवयित्री स्वयं कहती है - "कविता लिखना कैसे आया? यह मैं स्वयं नहीं जानती । प्रेमचंद जी और सम्पूर्णानन्द जी

53) वर्मा महादेवी - सांध्यगीत, पृ 83
54) महादेवी वर्मा - नीरजा, पृ.101

से हम लोग संबंधित हैं। निराला जी अरसे तक युग मंदिर में रहे हैं। नाना मामा-मौसी सब कुछ लिखते रहते थे। पिता की विशिष्ट साहित्यिक रूचि है। माँ ने साहित्य क्षेत्र में प्रसिद्धि पायी है। बडे भाई भी अपने को लेखक कहते हैं। ऐसे वातावरण में कविता मेरे लिए शायद एक अनिवार्यता बन गई। घर परिवार, वातावरण, संस्कार और वृत्ति सभी में साहित्य था। मैंने चाहा होता तो भी सम्भवत: मेरे पास कोई दूसरा उपाय न था।"[55]

'तीसरा सप्तक' में संग्रहीत कीर्ति चौधरी की कविताएँ उनकी प्रारंभिक दौर की कविताएँ हैं और उसमें आधुनिक मनोवृत्ति की अपेक्षा सहज रोमँटिक भावना अधिक है। इसमें अनजान, अनकही, लगनेवाली रहस्यमय सुख, उदासी, स्मृति आदि की अनुभूतियाँ हैं।

कवयित्री कीर्ति चौधरी की कविताओं में छायावादी कविता के समान प्रेम, सौंदर्य, रंग, रस, दु:ख पीडा, वेदना आदि है। कई कविताएँ मानवतावादी भावधारा को व्यक्त करती हैं। कीर्ति अनास्था, अविश्वास और निराशा की कवयित्री नहीं है। 'प्रतीक्षा' कविता में धैर्यपूर्वक भविष्य की प्रतीक्षा की है। कवयित्री पराजयवादी मानव को नकारती है वह कहती है कि जिस अँधियारे से लडने में सूरज चाँद और नक्षत्रों की उजियाली तथा मानिकमयी छाँह में हार नही मानी उससे तुम क्यों हार मानते हो।

" करूँगी प्रतीक्षा अभी
दृष्टि उस सुदूर अविष्य पर टिकाकर
धैर्य नहीं खोया है।"[56]

इस प्रकार की कविताएँ जीवन पथ पर बढते रहने की अभिलाषा, आस्था व विश्वास, दृढता आदि को व्यक्त करती हैं। विजय प्राप्त करने के लिए कवयित्री ने कर्मठ बनने की प्रेरणा दी है। इसके अतिरिक्त कीर्ति ने युगीन जीवन की परिस्थितियों का यथार्थ वर्णन, प्रगति, वक्त, आवाज, 'देवता का प्राप्य' आदि कविता में मिलता है। 'आवाज' कविता में मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकता स्थितियों की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। प्रस्तुत पक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"सब जो हैं,
अपनी कुण्ठाओं के स्वामी
बेबस हारे लाचार

55) डॉ. राजे सुमन - समकालीन कवयित्रियों का रचना संसार :एक यात्रा , पृ. 35
56) चौधरी कीर्ति - कविताएँ, पृ. 88

जिन्दगी के खेलों में

असफल नामी।" [57]

कवयित्री प्रकृत्ति की मुग्ध आराधना करती है, इस प्रकार उनकी कविताओं में छायावादी संस्कारो को पूरी विविधता में देखा जा सकता है।

6:1:24 कुसुम अंसल :

कुसुम अंसल के 'मौन के दो पल', 'धुएँ का सच', 'विरुपीकरण', 'मेरा होना', ये चार कविता संग्रह प्रकाशित हैं। अपनी कविता के बारे में कुसुम लिखती है - "मेरी कविता और कुछ नहीं एक निरंतर संवाद है अपने से अपने बीच, मन और जीवन के बीच एक भावना को पकड़ पाने का प्रयास है।"[58] वह एक संवेदनशील कवयित्री है।

'विरुपीकरण' की कविताएँ मानसिकता विशेष की कविताएँ हैं। इनमें एक खोज है। अपने विस्तृत 'स्व' की, जो निरंतर चलती रहती है तथा मन का गोपनीय भी है जो सम्मुख आ खडा हुआ है। कुछ स्थलों पर अपने को अपने से अलग करके सारी स्थिति का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है।

नारी का जीवन सामाजिक रुढि, परंपरा के कारण पिंजरे में कैद तोते के समान हो गया है। वह शून्य को सत्य समझती है और जीवन का स्वीकार करती है। विज्ञान के युग में यांत्रिकता के बल पर तो कुछ उन्नति हो रही है, उस पर आज के मानव का अटूट और अदम्य विश्वास है किन्तु उसकी भावनाएँ, इच्छाएँ, भय और आतंक से मरोड़ी जा रही है। आज उनकी भावनाएँ जवान नहीं बल्कि बुढापे को ढक रही है। इस तथ्य को मद्य मानकर हम कुसुम अंसल के काव्य संग्रह में नारी सामाजिक विचारों से कितनी जुडी है, इसे देख सकते हैं ।

कुसुम के 'मौन के दो पल' काव्य संग्रह की कविता 'वह अंधेरी बस्तियाँ' में नारी की दृष्टि एक असुविधाजनक बस्ती की ओर गई है। वहाँ के लोग सुविधाओं के बिना जीवन गुजरते हैं। इस असुविधाजनक बस्ती में आनेवाले पीढी का क्या होगा, उनकी उन्नति कैसे होगी आदि संबधी इस कविता की नारी सोचती है। वहाँ वह सामाजिक सुधार करना चाहती है। कई लोग उन्हें आश्वासन देते हैं, वादे करते हैं। बस्ती के मुखिया के पास पैसे देते हैं। स्कूल खोलने की, स्वास्थ के सुविधा देने की घोषणा करते हैं और चले जाते हैं। बस्ती का

---

57) चौधरी कीर्ति - कविताएँ, पृ. 35

58) अंसल कुसुम - 'धुएँ का सच', पृ. प्राक्कथन

मुखिया अकेला लोगों के पैसे हड़प करता है। वहाँ, न कोई सुधार, न कोई सुविधा उपलब्ध होती है। कविता की नारी कहती है -

"चाहत का क्या मोल है,
जीवन का कैसा रूप है,
मैं यहाँ आयी हूँ
यहाँ सुधार कर सकूँगी या नही ? " [59]

इस कविता की नारी ने कहा है कि जहाँ सुविधा की आवश्यकता है ऐसे स्थल पर सुविधाओं का निर्माण करा देना आवश्यक है। इसी स्थिति में नई पीढी का विकास हो सकता है अन्यथा नई पीढी विकास से वंचित रहेगी और मुखिया के माध्यम से शोषण पहिया बढता रहेगा।

प्रस्तुत संग्रह की 'वह चाँदनी' कविता में नारी ने समाजहीत, सुख संबंधी सोचा है। वह सुखी संपन्न समाजहीत के लिए उन दिनों का इंतजार करती है -

"जिस दिन बरसेगा सुख का सावन
जिस दिन होगी पूर्ण मासी,
कहीं कोई दु:खी न होगा
कोई पेट न होगा खाली,
जीवन न होगा बरबाद।[60]

इस कविता की नारी ने भूख की समस्या के प्रति सोचा है। भारत में एक भी बच्चा या व्यक्ति भूख के कारण न तड़पता रहे इस सामाजिक विचारों को वह बढावा देती है।

'वह पत्थर पर बैठा है' कविता में नारी दीन-हीन भिखारी को देखती है, उसके तनबदन के पुराने तथा जीर्ण कपडे देखती है, ये लोग समाज तथा विज्ञान के उन्नति के कोसों दूर हैं। महानगर, नगर में सुविधा सुधार हो रहा है लेकिन आज भी गाँवों में, कई बस्तियों में, कसबों में रहनेवाले लोग, तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिक, विज्ञान से दूर हैं। मानव चाँद और धरती के बीच का अंतर नाप रहा है। लेकिन भोला-भाला, भिखारी व्यक्ति गाँव में जन्मा, धूप में खेला, तूफानों से जिया, पोखरे के पानी में डूबा परंतु उसे प्यार नहीं मिला, वह विज्ञान की क्रांति से दूर रहा है। इस कविता की स्त्री स्पष्ट कर देती है की भारत

---

59) अंसल कुसुम - मौन के दो पल, पृ. 17
60) अंसल कुसमु - मौन के दो पल, पृ. 44-45

में सुविधाओं से कई गाँव दूर हैं। वहाँ के लोगों का जीव दयनीय तथा शोचनीय है। वे ज्ञान-विज्ञान से अनभिज्ञ हैं। रुढि, परंपरागत जीवन में ही जीवन यापन करते हैं। कविता की स्त्री सामाजिक सुधारवादी दृष्टिकोण से विचार प्रस्तुत करती है। वह चाहती है कि जब तक ज्ञान , विज्ञान तथा वैज्ञानिक सुविधाओं से बस्तियों को, गाँवो को जोडा नहीं जाएगा तब तक एक विकसित एवं बलशाली भारत का निर्माण नहीं होगा। उसके विचार सुधारवादी एवं प्रगतिवादी प्रतीत होते हैं। ये सब नारियाँ और कोई न होकर कुसुम अंसल ही है।

कुसुम अंसल के काव्यसंग्रह की नारी परंपरागत जीवन को पसंत करनेवाली दिखाई देती है। 'मौन के दो पल' की कविता 'यही जीवन है' में नारी का परंपरागत के प्रति विशाल दृष्टिकोण उभरा है। नारी के मन के विचारों को पुष्टि तथा प्रेरणा प्रियकर की ओर से न मिलने के कारण उसका जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण परंपरावादी बना है। वह सोचती है कि -

"बिन पत्ते की ड़ाली सा हिलता
जीवन इंतरजार में खडा है
किसी वसंत के इंतजार में
जो पता नहीं आता भी है और जिसे लोग जीवन कहते हैं
और मैं (नारी) यहाँ एक कोने में चुपचाप बैठ
सोचती हूँ यही जीवन हैं...। "[61]

कुसुम अंसल के 'धुएँ का सच' काव्य संग्रह की कविता 'उस पार' की नारी की इच्छाशक्ति दृढ है, उसे समाज का अनुभव है, वह नये उम्मीदों के साथ जीना चाहती है, आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन में उभारना चाहती है। 'मेरा मन' कविता में नारी मानवीय संबंधो के बारे में विचार करती है। वह सांसारिक जीवन से टूटना नहीं चाहती बल्कि जुडकर परिवार का नाम रोशन करना चाहती है-

"क्योंकि मेरा मन
उस रास्ते से नहीं जाता
जहाँ अनगिनत पदि्चह्न बिछे होते हैं। "[62]

'तनहाई के पल' कविता की नारी के थके हुए दिमाग में अतीत का स्मरण कर रही है। उसके विचार अपने ही दायरे में रह जाते हैं। वह निराश, हताश बनकर अपनी थकावट

61) अंसल कुसुम - 'मौन के दो पल', पृ. 99
62) अंसल कुसुम - 'धुएँ का सच', पृ. 39

को महसूस करती हुई अपने मन में स्थित यादों का स्मरण कर रही है। वह जिंदगी में शांति चाहती है। इस कविता की नारी ने अपने मन की उलझन को स्पष्ट कर दिया है-

"मैं फिर कभी
जिंदगी से उधार माँगूंगी
वह थोडी - सी शांति
जो मुझे मिल न सकी "[63]

अतीत के स्मरण के दौर में प्रस्तुत काव्य की नारी अपने मन की उलझनों को वाणी दे रही है।

'ताप' कविता की नारी अपना जीवन जैसा भी है, जिस रूप में है, उसे स्वीकारते हुए जीवन जीना चाहती है। जीवन से पलायन या आत्मसमर्पण नहीं करती है। उसकी बिखरी हुई मानसिकता से उभारना चाहती है, नये नये संकल्प करती है, दृढ इच्छा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए छटपटा रही है, जैसे -

"तपने का अन्तर्दहन का, यह एहसास
कितना प्यारा है, क्योंकि आग की इस बीमारी को
मैंने खुद ही स्वीकारा है।"[64]

यहाँ संकल्पशील नारी की अदम्य इच्छाशक्ति के दर्शन होते हैं।

कुसुम अंसल के 'मेरा होना' संग्रह की कविता 'बचपन' में कवयित्री अपनी मातृविहीन होने पर उत्पन्न पीड़ा की घुटन को यहाँ प्रस्तुत करती है। बचपन में मातृछत्र हटने के उपरांत पूरी उम्र भर घुटन उसे बर्दाश्त करनी पडी है। इसलिए कहती है-

"कौन सा बचपन?
तुम्हें लगता है मेरा कोई बचपन था! "[65]

'घर' कविता की स्त्री घर के छत के नीचे खडी होकर विचार करती है की यह तो अपना सपना नहीं है, न ही अपना भावबोध या न ही अपने कल्पनात्मक रुचियों की अभिव्यक्ति। घर किसी के अपने नहीं होते परंतु अपना शरीर अंत तक साथ देता है इसलिए वह अपना है। इस कविता की नारी के विचार हैं कि अपना कार्य ही अपनी पहचान एवं अस्तित्व है। नारी का मन संसारिक जीवन एवं संयुक्त परिवार के कारण घुटता रहता है

63) अंसल कुसुम - 'धुएँ का सच' , पृ. 63
64) वही , पृ. 53
65) अंसल कुसुम - 'मेरा होना', पृ. 11

और अपने अस्तित्व तथा अंतिम पड़ाव की खोज करता है-

"मेरा मूल तत्त्व अन्तर्वस्तु
मेरा पड़ाव है, अंतिम आवास
तो कहाँ है वह ? "[66]

यहाँ स्त्री अपनी अस्तित्व की तलाश करना चाहती है।

6.1.25 सुमन राजे :

कवयित्री सुमन के चार कविता संग्रह तथा चौथा सप्तक में संकलित कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। 'सपना और लाशघर' (1973), 'उगे हुए हाथों के जंगल'(1987), 'एरका' (1990), 'याया देश' आदि। इस संग्रहों की कविताओं का मूल कथ्य सामाजिक विषमता, वैयक्तिक, आंतरिक स्वर है। कई कविताएँ प्रकृति-चित्रण से सम्बन्धित हैं।

कवयित्री सुमन राजे की चर्चा 'चौथा सप्तक' में संग्रहीत कविताओं के माध्यम से होती रही है। 'उगे हुए हाथों के जंगल' की पचपन छोटी बडी कविताएँ उनके कवि रूप को जाँचने और समझने के लिए पर्याप्त हैं।

'उगे हुए हाथों के जंगल' की अधिकतर कविताओं का दायरा विस्तृत है। 'जवाबदेही' कविता में अपनी कविताओं पर भावुकता, सीमित परिवेश आदि आरोपों को व्यक्त करते हुए सुमन राजे ने लिखा हे- "मैंने जो लिखा वही जिया है। वही पहना है जो सिया है "।[67] उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है की अन्तर्राष्ट्रीय साजिशों जैसी बडी बातें उन्हें उतनी रास नहीं आती, जितनी रोजमर्रा की छोटी बातें। इन छोटी बातों में, सेना से रिटायर बुढे की लाचारी, गेंद बेचकर रोटी जुटाता बचपन, रिक्शाचालक, कागजों पर उगी क्रांति, राजनेताओं की शक्ति आदि बहुत से ज्वलंत मुद्दे आ गये हैं। जो भ्रष्ट है, वह सुखी है और जो खुद्दारी और सच्चाई के सहारे जी रहा है, वह गुनाहगार है। व्यवस्था के इस अन्त-र्विरोध को 'गुनहगार' कविता मे व्यंग्यात्मक भंगिमा में कहा गया है।

'खारी वजूद' में गौरैया और समुद्र के व्याज से वर्तमान अव्यवस्था और कुरुपता को बदलने का विश्वास व्यक्त हुआ है। अगस्त्य के मिथक का उपयोग करते हुए कवयित्री ने लिखा है- "गौरैया की खुली हुई चोंच के । संकल्प से । जनमता है अगस्त्य। जो अंजुरियों में भरभर। पी लेता है। ओर-छोर । फैला हुआ पूरा का पूरा। व्यवस्था का सागर। और उसके

---

66) अंसल कुसुम - मेरा होना, पृ. 33
67) समीक्षा - जनवरी - मार्च 1988, अंक 4, पृ. 55

वजूद को खारी कर देता है।"[68]

'भोर' कविता में एक मनोरम सांस्कृतिक दृश्य रचा गया है। पूरी शताब्दी में शत और सितारों की स्थिति को स्याही और असत् के माध्यम से इसप्रकार व्यक्त किया गया है-

"एक साथ फैल जाता है स्याही की
दावात अजाने उस चकित भीत
शिशु से माँ के शिथिल हाथों से
बीने गये चावल की थाली
हिल उठती है और चार-चार चावल
चिपक जाते हैं गीली स्याही पर"[69]

सुमन राजे ने युग बोध और प्रकृति सौन्दर्य को जिस कौशल्य से उभारा है, उसी सलीके से वे रागात्मक अनुभूतियों को काव्यात्मक रचाव दे सकी है।

'एरका' में एक केंन्द्रीय संकल्पना को मध्य में रखकर लिखी गयी कविताओं की सूत्रबद्धता लक्षणीय है । महाभारत की कथावस्तु से चुने गये अनेक व्यक्तियों के मानसिक आंदोलनों का यथार्थ चित्रण सुमन राजे ने किया है। 'एरका' का संदर्भ महाभारत में दिए गये श्रीकृष्ण चरित्र से जुडा हुआ है। शिखण्डी का अना कर समुद्र में फेंके गए शीशे के टुकडे समुंदर के पानी के लहरों के साथ बिखर गए। कालांतर से उसीके फलस्वरुप किनारे पर नुकीली घास उत्पन्न हुई। इसी नुकीली घाँस के कारण यादव वंश का नाश हुआ। उसी नुकीली घाँस का नाम 'एरका' था।

'माधवी', 'एरका' की पहली लंबी कविता है। माधवी ययाती की बेटी है। एक सर्वोत्तम कन्या अपने कुल का उद्धार करने का कार्य उत्तम रीति से करती है यह बताने के लिए माधवी का उल्लेख एक मार्गदर्शक कथावस्तु के रूप में महाभारत में आया है। आ.ह. सांळुखे के शब्दों में " चार पुत्रों को जन्म देने तक की कालावधी में माधवी मन से इतनी एकरुप हो गयी थी कि उस एकरुपता से बाहर आना उसके लिए असंभव हुआ था। मात्र शुल्क का बदला चुकाते रहना ही क्या स्त्री के जीवन की इतिकर्तव्यता होती है? अपने मन में उसने एक प्रभंजन को प्रचंण्ड शक्ति से शायद दबाए रखा होगा इसीलिए शायद अंत में स्वयंवर में भाग ना लेकर वह बनागार में गयी होगी। अपने भीतर छुपे हुए प्रभंजन का वह

68) डॉ. राजे सुमन - उगे हुए हाथों के जंगल , पृ. 42
69) वही, पृ. 20-21

प्रकटीकरण उसने शायद अपना मौन तोडते समय किया होगा।"[70]

सुमन राजे की 'माधवी' मौंन नहीं है किन्तु उसका मौन अंत में टूट गया है। तब तक वह मौन ही है। उसकी अन्तरात्मा विव्हल हो उठी है। वह अपनी अंतरात्मा के साथ ही संवाद करते हुए अपनी व्यथा बता रही है।

माधवी का जमाना पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्था है। ययाती ने उसे उसकी निर्मिति को ध्यान में रखकर गालव को किराए पर दे दिया है। माधवी इस पितृप्रधान या पुरुषप्रधान समाजव्यवस्था के सामने नतमस्तक हो सारे आदेशों का पालन करती तो है किंतु मन ही मन में वह अत्यंत क्षुब्ध है तभी तो वह कहती है-

"मैं चीख पडना चाहती हूँ
नहीं सकती
मेरे होंठ
सिल दिए हैं
सिलें रख दी गयी है
मुझ पर" [71]

परंतु अपने पुत्र को जन्म देना उसके लिए अनिवार्य है। अपने रूदन को पल भर के लिए भी वह भूली नहीं है। पुत्र की उत्पत्ति महत्त्व की, माता की सृजनक्षमता महत्त्व की नहीं इस पारंपारिक मूल्य का वह औपरोधिक उल्लेख कर कहती है -

"अधखुले कंठ का रोदन
माँ के अस्तित्व को
टटोलती हुई
मुट्ठियाँ। [72]

माधवी एक स्त्री है। उसकी अन्तरात्मा में अनेक भावांदोलन चल रहे हैं। वह उस जमाने की साक्षी है जो मात्र एक विनिमय की वस्तु समझी जाती थी। 'पिता रक्षति कौ मारे' जैसे सुभाषित की तरह वह अपने पिता की सत्ता के अधीन है। उसका विनिमय उसके पिता ययाती ने मात्र इसलिए किया है कि वह पुण्य प्राप्त करें। पुत्र उत्पन्न करने के बाद माधवी फिर कुमारी के रूप में ही अन्यत्र हस्तांतरित की जाती है। "हठीलापन अत्यंत दारुण

---

70) साळुंके आ. ह. - महाभारतातील स्त्रिया, पृ. 45
71) राजे सुमन - 'एरका', पृ. 6
72) वही, पृ. 8

(निराशाजनक भयप्रद) होता है। इसलिए हठता करे ऐसा उपदेश दुर्योधन के प्रति करने के लिए पुरातन इतिहास के उदाहरण स्वरुप में नारद ने यह माधवी की कहानी दुर्योधन से कही है।"[73]

किंतु यह स्पष्ट है कि माधवी की कथा में हठीलापन माधवी का नहीं किंतु विनिमय के रूप में उसका उपयोग करनेवाले ययाती, गालव, हर्पश्व, दिवोदास, औशीनर, विश्वामित्र आदि के हठीलेपन की तो है ही परंतु गालव के हठीलेपन की जादा है। यहाँ की माधवी अपनी अस्मिता के प्रति अत्यंत जागृत है। वह अपनी व्यथा का प्रकटीकरण कर नहीं सकती। प्रकट में नहीं किंतु स्वगत भाषण में वह अपनी व्यथा कहती है। घोड़ों के लिए, घोड़ों द्वारा गुरु दक्षिणा प्रदत्त करने के लिए अपना व्यापार हो रहा है इसकी वेदना उसके अंतर्मन को व्याप्त कर चुकी थी। अपनी आंतरिक वेदना का स्वर इस प्रकार मुखरित हो उठता है-

"मैं चीख उठती थी
फिर काँप कर
दोनों हाथों से
थाम लेती
अपना उदर।"[74]

परंतु वह निराश नहीं है। माधवी अकेली नहीं, तमाम महिलाएँ जो अत्याचारित हैं, पीड़ित है, रुढिवाद की शृंखला में बंधी हुई है, पुरुषप्रधान सामाजिक प्रथाओं की बली बन गयी है- ऐसी महिलाओं की प्रतिनिधि बन गयी है। उसने एक अदम्य विश्वास प्रकट किया है। जिस 'एरका' की घास ने .... अत्यंत क्षुद्र दिखनेवाली घास ने जगन्नियंता श्रीकृष्ण तथा उसके बलवान यदुकुल का नाश किया है वही एरका अगर उग आयेगा तो माधवी का अदम्य विश्वास है की ऐसी एरका घास उग आने से उसकी तरह विनिमय के रूप में इस्तेमाल की जानेवाली अनेक स्त्रियों का उद्धार होगा उनका इस्तेमाल कर अपनी स्वार्थ देखनेवाली पुरुषप्रधान सामाजिक, साम्प्रदायिक, पुरातन व्यवस्था का अंत हो जाएगा।

आज तक के अनुभव ले माधवी के मन में स्त्री का जीवन और पुरुषप्रधान सामाजिक व्यवस्था की गुलामी के बारे में इतना असंतोष निर्माण हो गया है, कि वह अपने स्वयंवर के लिए आए हुए सभी राजाओं को वंदन कर बन के लिए प्रस्थान रखती है।

---

73) राजे सुमन - 'एरका', पृ. 26
74) राजे सुमन - 'एरका', पृ. 11

6.1.26 रमणिका गुप्ता :

कवयित्री रमणिका गुप्ता के चौदह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं- गीत-अगीत (1962), 'अब और तब' (1968), 'खूँटे' (1980), 'आम आदमी के लिए' (1982), 'पूर्वांचल एक कविता यात्रा' (1985), 'प्रकृति युद्धरत' (1997), 'कैसे करोगे बँटवारा इतिहास का' (1994), 'विज्ञापन बनाता कवि' (1996), 'आदमी से आदयीनल'(1997), 'भला मैं कैसे मरती' (1997), 'मैं आजाद हुई हूँ' (1999), तिल तिलं मूजन (1999) तुम कौन (1999) आदि।

कवयित्री रमणिका अत्यंत संवदेनशील और प्रगतिशील कवयित्री है। उनकी कविता में ना केवल वर्तमान राजनीति, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में सामान्य लोगों की चिन्ता अभिव्यक्त होती है ना मात्र बेचैनी किन्तु बड़ी मात्रा में विशेष राजनीतिक चेतना, श्रमिकों की पीड़ा और हर स्तर पर रहे विश्वमानवता के शोषण से उत्पन्न पीडा और मानसिक उथल पुथल की अभिव्यक्ति भी हो रही है।

रमणिका की "मैं" आम स्त्री का प्रतिनिधित्त्व करती है। उनकी कविता का स्वर स्त्री के स्वचेतना का स्वर है। आज स्त्री अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है, वह समता चाहती है। अपने कुंठित व्यक्तित्व की मुक्ति चाहती है। मुक्ति के दिन अब दूर नहीं है। सामान्य, दीन-दलित स्त्री के मन में आशा के चिराग प्रज्वलित हो उठे हैं जिनकी ज्योतियों को रमणिका गुप्ता ने सार्थक शब्दो में अंकित किया है-

"आशा की डोर पकड़ उठती हूँ - गिरती हूँ।"[75]

फिर इस आत्मभान को कारुण्य की किनार भी है क्योंकि वह उदासीन होकर कहती है-

"जीने को जीती हूँ।"[76]

दलित स्त्री के सभी भावों को अभिव्यक्त करने का मतलब है उसके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व को प्रस्तुत करना, वह कहती है-

"मैं
अतीत और भविष्य के
बीच लटके वर्तमान की कड़ी हूँ।"[77]

---

75) गुप्त रमणिका - तुम कौन, पृ. 161
76) वही, पृ. 68
77) वही, पृ. 49

सामान्य, दलित, श्रमिक, स्त्री के प्रति कितना दीन दृष्टिकोण होता है इसका प्रमाण कवयित्री ने दिया है। अपने को अपने अभिमान को, सम्मान को कोई पहचानता नहीं अत: उसकी बुद्धि को ठेंस पहुँची है। अपनी प्रतिभा पर कोई नाज ना करने के दु:ख को वह स्पष्ट करती है-

"मैं
समय की स्लेट पर
अनलिखे गीत लिखती रही
जो केवल मैं गढ सकती थी
चूँकि उन गीतों में मेरे ही दर्द भरे थे।
कोई और
उन्हें पढ न सका
इसलिए कोई मुझे जान न सका
न मेरे गीतों को न मेरे दर्दों को।"[78]

परंतु आशावाद उसका स्थायी भाव है। इस तरह की दूसरों से घटनेवाली घटनाओं के बारे में सोचकर वह आत्मविश्वास को सहेजती है, अपने कर्तव्य पर नाज करती है, उसका विश्वास है कि प्रकृति के साथ एक रूप होकर स्वयं अथाह नीले गगन को भी समेट सकती है, सम्पूर्ण आत्मीयता, सृजन, समर्पण, प्रकृति के विशेषों को वह आत्मसात कर चुकी है। अत: उसका सरस्वती को आवाहन है कि अपनी सृजनशीलता पर लगाए हुए प्रतिबन्धो को दूर करें-

"मेरे भावों के पंख खोल दो हे उर्वशी
हे कल्पने!
मैं मुक्त होकर
समेट लूँ गगन को
और गा लूँ ब्रम्हाण्ड के गीत
प्रकृति की लय पर।"[79]

अपने उपर किसी के स्वामित्व की कल्पना को वह स्वीकार नहीं करती वह अपने मन को समझाती है-

---

78) गुप्ता रमणिका - तुम कौन, पृ. 50
79) वही , पृ. 67

"जीवन तो एक कदम

है

सृजन और विनाश की ओर

धरती

आकाश पाताल की ओर

हे मेरे मन

तू क्लान्त ना हो

तू प्रकाश है

मेरी इच्छाशक्ति का पूँज है।"[80]

इस तरह बे सिर पैर की बातों को और भी दृढ बना लेती है। चाहे कभी मौत का सामना ही क्यों ना करना पड़े। -

घर छोड़कर भाग जाते हैं

घर के लोग

पर भागकर मैं कहाँ जाऊँ ?

भागना तो मौत होगी उसीमें रहने

उसे बचाने की कोशिश में

दबकर मरना कहीं अच्छा हैं

बनिस्वत भागकर मरने के।"[81]

रमणिका की कविता में जागृत अस्मिता, सतर्कता, वैश्विक मानव अधिकारों की माँग की बारे में सावधानी बरतने वाली दलित स्त्री दृष्टिगत होती है।

कवयित्री अपना जीवन सामाजिक दायित्व निभाने और स्त्री के बारें में हो रहे अन्याय के विरोध में काम करने के उपयोग में लाती है। वह अपनी विद्रोही कलम द्वारा दलित स्त्री की मनोव्यथा को शब्दांकित करती है।

अदम्य आशावाद आज दलित स्त्री के लिए एक विशेष बना है। पुरुष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के सामने वह हार नहीं मानती-

"तेज है मेरी प्राणशक्ति

हथेलियों में अभी बाकी है जान

---

80) गुप्ता रमणिका - तुम कौन, पृ. 38

81) वही, पृ. 34

मैं टाहे - टाहे कर पहचान लूँगी अपनी राह
और पसीने भरी हथेलियों के
हर मोड पर छोड जाउँगी निशान
पर हार नहीं मानूँगी - नहीं मानूँगी हार।"[82]

आत्मजागृति ने दलित स्त्री को दृढ निश्चयी बना दिया है। अपने अधिकारों के लिए आज दलित स्त्री जागृत हो रही है। उसकी मनोकामनाएँ रमणिका गुप्त की कविता में व्यक्त हुई है। रमणिका गुप्ता की केवल कविता ही नहीं किंतु सारा सृजन श्रमिकों तथा दलितों पर हो रहे अन्याय के विरोध में है। वे मनुवादी, ब्राह्मण्यवादी अभिजनवादी, पूँजीवादी विचारधारा के कडे विरोध में सृजन कार्य और प्रत्यक्ष सामाजिक- राजनीतिक कार्य करते रहती है।

6.1.27 कमल कुमार :

कवयित्री कमल कुमार की, 'बयान' संग्रह में 1970 से 80 ई. के बीच की चालीस कविताएँ संकलित हैं। यह समय देश के इतिहास में काफी उथल-पुथल, उत्थान-पतन, और हर्ष-विषाद का समय था। इस अस्थिर वातावरण में जो सब से उल्लेखनींय दुर्घटना हुई वह है मूल्यों का बिखराव। इसी समय देश के राजनीतिक मंचपर स्वार्थपरता, अवसरवादिता, मूल्यहीनता, और अनैतिकता के नाम पर सामान्य जनता का शोषण हो रहा था। सामान्य लोगों में आदर्श को सामने रखकर चलने की हिम्मत खत्म हो चुकी थी। कवयित्री कमल कुमार की सम्पूर्ण कविता में इसी सच्चाई का उल्लेख मिलता है। कवयित्री की चेतना व्यवस्था विरोधी, संघर्षधर्मी चेतना है। उनकी कविताएँ आज की मूल्यहीनता, मिथ्या आदर्शवादिता, स्वार्थपरता और नैतिकता का
यथार्थ 'बयान' है। कवयित्री "मैं" कविता में आत्मस्वीकृति से कहती है कि -

"अपने परिवेश के कठर दबाव में कुचला
आकांक्षाएँ
रंगीन सपने
सहमती संवेदनाएँ
मिथ्या आदर्शवादिता के टकराव से
खंड़-खंड़ हो टूटी अस्मिता"[83]

82) गुप्ता रमणिका - तुम कौन, पृ. 21
83) कमल कुमार - बयान, पृ. 18

इस देश की राजनीति भ्रष्टाचार ग्रस्त है, नेता तरह-तरह की विकृतियों के शिकार हैं। कवयित्री का दोषारोपण का तरीका बहुत जाना पहचाना है। वादों की आँधी, भाषण की वर्षा, आश्वासन की सपने, सामान्य लोगों को उल्लू बना रहें हैं। नेता आदर्शहीन हैं। व्यवस्था सुविधा भोगी है। कवयित्री की बहुत बारीक पकड़ है। शोषण - विरोधी चेतना का लोगों में अभाव है, यही कारण है कि शोषण बढता जा रहा है। भारतीय राजनीति में सामान्य आदमी की कोई इज्जत नहीं हैं। मजबूरी, अज्ञान, असह्य जनता की पीड़ा का मार्मिक अंकन कवयित्री करती है-

"नेता- लाशों के नारों पर
जय जय देश का झंडा फहराता है

कवयित्री कहती है जो हमारे देश के देशभक्त हैं वह केवल नारे लगाते हैं। उनके लिए न्याय चार दीवारों में बंद है। असहाय जनता इससे पीड़ित है-

"आज रेत के कगार सी ढहती आस्थाएँ
कटघरे के बंद न्याय के
भयानक षड़यंत्र को उजागर कर रही हैं।"[84]

इतना ही नहीं कवयित्री ने अपनी 'रक्तबीज' कविता की ये पक्तियाँ हमारे असफल प्रजातंत्र की त्रासदी का भंडाफोड़ करती है-

"सूली पर लटकते आदर्श
घुटनों के बल रेंगते फिसलते
और मतदान करके भी
आत्महत्या करने को लाचार आदमी
आतें खाकर भी मर मर कर जी रहा है।" [85]

आज चारों तरफ भयावह यंत्रणा व्याप्त है। ऐसी स्थिति में जीना और न जीना एक सा हो गया है-

"एक कसैली गन्ध भर गयी है हवा में
अस्तित्व के रिसते घावों की गन्ध
जले चिपके दिमाग की गन्ध

84) कमल कुमार - बयान, पृ. 25
85) कमल कुमार - बयान पृ. 30

नुचे झपटे विश्वासों की गंध।"[86]

कवयित्री के यह अनुभव निजी न होकर सबके हैं। अन्य कवयित्रियों की तरह किसी सीमित दुनिया में कैंद नहीं है। वह एक संवेदनशील कवयित्री होने के नाते अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ी हुई है।

6.1.28 सुधा गुप्ता :

कवयित्री सुधा गुप्ता के चार कविता संग्रह हैं-1) 'अनचीन्हा परिवेश' (1970) 2) 'रोशनी की शहतीर' (1977) 3) 'ऋतुओं की भाषा' (1981) 4) 'चेतना के फूल' (1977) आदि । सुधा के चारों कविता संग्रहों की कविताओं का मूल कथ्य आम आदमी का दर्द और पीड़ा तथा उनकी संघर्षशील परिस्थिति है। कई कविताएँ प्रकृति चित्रण से संबंधित हैं।

इनकी कविताओं में मानवीय नियति और सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया हैं । यहाँ तक आते-आते कवयित्री इस सामाजिक परिस्थिति से सचेत हो गई है। प्रयाग शुक्ल के अनुसार- "उसने जान लिया है कि कविता चीजों के भीतर निवास करती है और उनमें अनतर्निहित कविता में शरीक होना कविता का लगभग पहला धर्म है।"[87]

कवयित्री कहती है-

" मेरी कविता के शब्द
उस गहराई तक उतरते हैं
जहाँ एक कामगार मजदूर
अपनी जान हथेली पर रख
नीचे बहुत नीचे खदानों में उतर
रोटी खोजता है।" [88]

"मै अभिव्यक्ति देना चाहती हूँ
उन सभी अशक्त और अंधी आंखों को
हाथों की रोशनी
मुंह की आग
और पैरों की ताकत से
खतरनाक होड़ में शामिल होकर

86) कमल कुमार - बयान, पृ. 41
87) शुक्ल प्रयाग - बहने और अन्य कविताएँ, पृ. 76
88) गुप्ता सुधा - रोशनी की शहतीर, पृ. 25

सचमुच एक बार आसन्न मृत्यु का सामना करना
चाहती हूँ ।[89]

इनकी अधिकांश कविताओं का मुख्य स्वर क्रुर अमानवीय, दोगली राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था, निम्नमध्यवर्गीय आक्रोश की कविताएँ हैं। ये कविताएँ आम आदमी की व्यथापूर्ण नियति से साक्षात्कार कराती है और इन व्यवस्था के प्रति संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। व्यवस्था का अमानवीय चरित्र, आम आदमी, संत्रस्त स्थिति और उसकी विद्रोही मानसिकता जिन कविताओं में दिखाई देती है वे 'आगत-अनागत', 'रोशनी की शहतीर', 'भूख का कोई गणित नहीं होता', 'खलिश आंखों में ही नहीं बातों में भी', और 'हवा का रुख' आदि कविताएँ उल्लेखनींय है।

'आगत-अनागत' कविता में कवयित्री ने सर्वहारा वर्ग की वैचारिक सजगता और आगत और अनागत से जकड़ी हुई शोषक पूँजीवादी शक्तियों का मार्मिक चित्रण किया है-

"क्योंकि वे सोचते थे।
जो कुछ वे कहतें हैं ब्रम्ह वाक्य है।
जो कुछ कहते हैं। सर्वश्रेष्ठ है।
फिर आंख मीच अपने को टटोला तो पाया
समय उनको भी तेजी से घसीट रहा है
अनचाहे अनजाने। भय से उन्होंने आंखे खोल दीं
अब वे अपने दाएँ-बाएँ के लोगों से डरे हुए थे
आगत और अनागत
उन्हें जकड़े खड़े थे।"[90]

'रोशनी की शहतीर' में सुधा ने आम आदमी की व्यथापूर्ण नियति का चित्रण किया है। उन्होंने कहा है भूख का कोई गणित नहीं होता। आम आदमी ऐन चौराहे पर खड़े और भूख-प्यास की चादर से मूँ ढापे बैठा है। यह आदमी हर पल भयभीत है। उस आदमी के घर के भीतर और बाहर कुछ बेसूरी आवाज उसका निरन्तर पीछा कर रही है। मंहगाई के कारण अपने परिवारों की वह ठीक तरह से देखभाल भी नहीं कर सकता बच्चों की फीस और बीवी की दवाई में वह सीमट गया है। उसके फेंफड़ों में ताजा हवा लेने लायक शक्ति भी नहीं है। इसी विषम परिस्थितियों के कारण इस 'शरीफ आदमी' ने अपनी मजबूरियों,

89) गुप्ता सुधा - रोशनी की शहतीर, पृ. 68
90) गुप्ता सुधा - रोशनी की शहतीर पृ. 11

व्यथापूर्ण नियति का स्वीकार कर लिया है-

"आज वह कई दिनों बाद
अपनी मजबूरियों को बगल में दबाकर
हर पल हँसने की कोशिश कर रहा है।
बूँद - बूँद आँसू सोखते हुए।
आँखो में चमक पैदा कर रहा है
क्योंकि वह जानता है
उसके सामने इस सब कुछ करने के अलावा कोई चारा
नहीं है।"[91]

इस प्रकार कवयित्री ने अपनी कविता में आम आदमी के दर्द और पीडा को चित्रीत किया है ।

6.1.29 किरण जैन :

कवयित्री किरण जैन के दो कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 1) यात्रा और यात्रा (1969) 2) स्वर परिवेश के । (1981) कवयित्री किरण जैन की - 'बेकारी एक अनुभूति', 'सड़क का वक्तव्य' और 'प्रगति... आदि 'व्यवस्था की कमजोरियों को चित्रित करनेवाली सशक्त कविताएँ है।

कवयित्री के सामने वर्तमान सामाजिक विषमता के अनेक पक्ष हैं। व्यवस्था की अनेक बदरुपताएँ हैं, जैसे आज के जीवन में दिनोंदिन विकसित महानगरीय सभ्यता के प्रति भी कवयित्री की सजगता दृष्टिगत होती है। कवयित्री ने अपनी कविता में महानगरीय जीवन के खोखलेपन का उद्‌घाटन किया है-

" जीवन के तोहफे
नमस्ते जी थैंक्यू जी
रद्दी में लिपटी औपचारिकता
अविश्वास संदेह मतलब के हाथों में पलती दोस्तियाँ।"[92]

वर्तमान व्यवस्था में पनपी नई संस्कृति की देन है, अति स्वार्थपरता, तटस्थता और अकेलापन, जीवन की भागमभाग में कुचल कोमल भावनाएँ और अच्छे भले इन्सान का फाईलों, विज्ञापनों , रेस्तराँ तक सिमट जाना इसी महानगरीय सभ्यता का दण्ड है-

---

91) गुप्ता सुधा - रोशनी की शहतीर पृ. 16
92) जैन किरण - यात्रा और यात्रा , पृ. 25

"हाथ फाइलों में
आँखे विज्ञापनों पर टंग गई है
जीभ रेस्तराँ द्वार पर
कान लम्बे हो टेलीफोन से चिपटा गये हैं।"[93]

हमारी दूषित कानूनी अव्यवस्था अमानवी तटस्थता को बढा रही है जिसके कारण मनुष्य एक -दूसरे के जान के प्यासे बन गये हैं।

आज की जटिल कठिन व्यवस्था ने मानव मन को इतने तनावों से भर दिया है कि वह एक सहज सच्चे स्नेहमय जीवन को जीना ही भूल गया है। 'अस्मिता' कविता की प्रस्तुत पक्तियाँ जीवन की विद्रुप सच्चाई को चित्रित करती है-

"घर अब मकान हो गये हैं
अपनी पहचान खण्डहर
सम्बन्धो की हवेलिया साथ -साथ
करती है।"[94]

'अस्मिता' में कवयित्री ने मजबूरी, अज्ञानी, असह्य जनता की पीड़ा का चित्रण किया है। 'छड़ी' कविता में किसी बड़े अफसर के घिनौने कार्य की सच्चाई का चित्रण है जिसमें वह एक गरीब, बेकार आदमी को नौकरी देने का आश्वासन देकर उसके घर में घूसकर उसकी औरत की इज्जत लूटता है। बेकारी, गरीबी, आन्दोलन, जुलूस आदि के सजीव चित्र भी इस कविता में दिखाई देती है।

6.1.30 इन्दू जैन :

'यहां कुछ हुआ तो था' कवयित्री इन्दू जैन का सन 1994 ई. में प्रकाशित काव्य-संकलन है जिसमें 'बाहर' 'कमरे में' और 'औरत' उपशीर्षकों के अतंर्गत कुल 48 कविताएँ संकलित हैं। साठोत्तरी कविता की अत्यंत सबल हस्ताक्षर इन्दू जैन का यह सातवाँ संकलन है जो नि:संदेह कथ्य और शैली दोनों दृष्टियों से उनकी काव्य यात्रा में एक नया मोड़ है। डॉ. मंजु गुप्ता के शब्दों में- "ये कविताएँ उस सर्जनात्मक उर्जा की परिचायक है जो विराम या विश्राम नहीं, विरल रास्तों पर चलने की आग्रही है। इनमें ताजगी और तीखापन तो है ही, परिवेश की बहुआयामी समग्रता को उलट -पुलट कर देखने समझने की आतुरता भी है। दरअसल, यह काव्य-संग्रह श्यस्क मानसिकता और अंकुराने की क्षमता का एक समवेत

93) जैन किरण - यात्रा और यात्रा , पृ. 28
94) वही, पृ. 30

समर्थ दस्तावेज है। क्लर्ब की सामग्री के अनुसार " बाहर जो घट रहा है, वह बाहर ही नहीं है और कवि अंदर जो घट रहा है वह भी न मात्र बाहर के प्रति प्रतिक्रिया है और न ही केवल आलोचना। वह उसका एकांत संलाप तो कतई नहीं।" [95] 'बीज' कविता में कवयित्री कहती है-

"जो बीज / चिड़िया के पेट में / पककर / निकलता है /
मजबूत जंगल उगाता है। मैं कमजोर कविताएँ । लिखना नहीं
चाहती। मैं । अंदर के धुंआते कबाड से । गर्मी पैदा कर । बीज
पकाना चाहती हूँ। झंकाड़ नहीं। जंगल उगाना चाहती हूँ।"[96]

इन कविताओं में कवयित्री ने आम आदमी के दु:ख-सुख, संघर्ष चेतना को महसूस किया है।कवयित्री के विचार साधारण आदमी से जुड़े हैं।'सरोकार'कविता में कवयित्री कहती है-

"मुझे तो मतलब है उससे । जो कुदाल चलाता, गारा ढोता।
टाइप करता बच्चा पुचकारता है। जो गाड़ कर जिंदगी बूँद।
सींचकर फसल की बिसात बताता है।"[97]

जिंदगी की विषमताओं, कटुताओं, विरोधाभासों और विडम्बनाओं को विविध प्रतीकों और बिम्बोद्वारा कवयित्री इस निष्कर्ष पर पहुँचती है-

"आदमी ड़ॉक्टर की तरह। राहत दे। तो । दुनिया में अस्पताल
कम हो जाएं। मरहम में लिपट । घाव भर जाएँ। लोग घरों में सोएं। छज्जो पर मंजन करते हुए। दाना ड़ाल जीवट भरे छाती फुला। ड़ैने पसार काम उड़ जाएं।"[98]

महानगरीय व्यस्तता, आपाधापी, स्वार्थांधता और खोखली चका चौंध को हर वक्त झेलने वाला कवयित्री का शहरी मन सभ्य मानव और आधुनिक जीवन की विड़म्बना को बड़ी बारीकी और समझदारी से रेखांकित करता है -

"खुले आसमान। चाँद तारों के जाल में । फँसे फँसे। साँस
कहाँ है?... धक्कों से घिरी सड़क पर। शहरी मन अपने गाँव में है।"[99]

भारतीय जन- जीवन में अपनी जड़ अत्यंत गहराई तक जमाकर बैठे वर्ग गत वैषम्य

---

95) डॉ. मंजु गुप्ता - 'भाषा', मार्च -अप्रैल 1995, अंक 4
96) जैन इन्दू - यहाँ कुछ हुआ तो था , पृ. 47
97) जैन इंदू - यहॉ कुछ हुआ तो था, पृ. 31
98) जैन इन्दू - यहाँ कुछ हुआ तो था, पृ. 15
99) वही, पृ. 17, 18

को कवयित्री ने सहज ढंग से "सेंध" शीर्षक कविता में चित्रित कर बड़े लोगों से दूर रहने का सलाह दिया है-

"बडे लोगों से दूर रहो। जैसे जन्म दूर रहता है मृत्यु से।
सूर्य दूर रहता है अंधेरे से । पंखों में झपट्टा भरे हुए। दूर रहा
इसी तरह। मोटे पेट वालों। दुनाली बंदूकों। लंबी चाबुक
वालों से दूर रहो।" क्योंकि

"गलत सपनों से बेहतर है, ये बेहिसाब अंधापन,
अत: बहुत छोटे-खोटे बने, बड़े लोगों की छूत से दूर रहों।[100]

आज के वैज्ञानिक युग में जहाँ हर मोड़पर एटम बम है, आतंकवाद जाल लिए बैठी है, कवयित्री प्रश्न करती है- "क्यों जी रही हूँ मैं? " यह प्रश्न सिर्फ उसी का नहीं बल्कि आज के हर समझदार, विचारवान व्यक्ति का है जो वह स्वयं से बार-बार करता है और सही उत्तर न पाकर हताश और लहू लुहान होता है। सारे औदात्य, नैतिकता और जीवन मूल्यों को खोकर भी हम जीवित हैं। इस निरर्थक और खोखले मूल्य को जीवन में विवेकी व्यक्ति क्या करे?

'कुछ न कुछ टकराएगा जरुर' संग्रह में जहाँ एक ओर कम शब्दों में अपनी बात कही गयी है वहीं कई लंबी कविताओं जैसे 'टुकड़ों-टुकड़ों में', 'प्यार का प्रश्न', 'मिलेगा जरुर', 'युद्ध में औरत', 'शिक्षा', 'हमजोली', 'वो खुशबू नहीं', 'मर्जी' आदि में रोचकता एवं सहजता की कमी नहीं होने दी है।

इन्दू जैन 'आस्था का किरण' को कभी ओझल नहीं होने देना चाहती। ये पंक्तियाँ केंद्रीय सूत्र की तरह हैं-

... न देगा अंधेरा कुछ। न रोशनी ।
जब कुछ है ही नहीं। तो मिलेगा क्या?
फिर भी अंधेरे की परछाई को छूने।
बढे हैं हाथ। जानते हैं कि कुछ। टकराएगा जरुर।[101]

इन्दू जैन की कविता में ऐसी गजब की कसावट है जो उसके कथ्य को बिखेरने नहीं देती। शब्दो के रंग - बिरंगे धागों से बुनी इन कविताओं में कहीं स्त्री की मानवीय पीड़ा को महसूस किया जा सकता है तो कहीं प्यार की हिलोर से झुलने का आनंद उठाया जा सकता

100) जैन इन्दू - यहाँ कुछ हुआ तो था, पृ. 22, 23
101) जैन इन्दू - कुछ न कुछ टकराएगा जरुर पृ. 101

है-

"कभी कभी वह सोचती ।

कि।

अगर वह बहुत खूबसूरत होती।

बहस में न चलता उसका दिमाग।

तो उसका पति उसे बहुत प्यार करता

मीन-मेख न निकालता।

न झल्लाता

न कड़वी बाते कहता

अपनी खोटी किस्मत के बारे में।"[102]

इन कविताओं के संबंध में डॉ क्रांति कुमार ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि - " 'कुछ न कुछ टकराएगा जरुर' नामक कविता - संग्रह में इन्दू जैन की 68 कविताएँ पढना जंगल में किसी तेंदू के पेड़ के नीचे बैठकर नासापुटों में तेंदू के पके फुलों की कसैली गंध भरने और आँखो में लदी हुई ड़ाल पर हल्के कत्थई पीले फलों को देखने का तृप्तिदायक एहसास जगाने जैसा है। संग्रह का नाम 'कुछ न कुछ टकराएगा जरुर' इन्दू जैन की जीवन दृष्टि और कविता के प्रति उनकी आस्था का आभास देता है।"[103]

कविता अंतर्मन की पीडा को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम होती है, भीतर की बेचैनी और छटपटाहट का अंतर्नाद इन्दू जैन की कविताओं में स्पष्ट झलकता है-

कितना जरुरी है एकांत। जीने के लिए।

भीतर की भीड़ में। हर एक को छूकर निकलना।

कितना जरुरी है।"[104]

कविता जैसे - जैसे प्रौढ होती जाती है, उसमें उलझन और बिखराव कम होते जाते हैं। इन्दू की कविताएँ अपनी कथानक से हटती नहीं अपितू उसी में पाठकों को बांध लेने की अद्‌भूत क्षमता रखती है। भाषा में प्रवाह एवम् संगीतात्मकता है। इन कविताओं के अंत में अपनी पीड़ा को इस तरह से व्यक्त किया गया है कि वह पीड़ा कवयित्री की अपनी पीड़ा न होकर पाठकों की स्वपीड़ा बन जाती है, और जीवन के सूक्ष्म तम अनुभवों और चिंतन को

---

102) जैन इन्दू - कुछ न कुछ टकराएगा जरुर, पृ. 118

103) डॉ. क्रांति कुमार - 'भाषा',मई - जून 2005, पृ. 205

104) जैन इन्दू - कुछ न कुछ टकराएगा जरुर, पृ. 44

सरल ढंग से प्रस्तुत करने की चेष्टा लगती है।

कथ्य की ताजगी, विषय- वैविध्य और अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की एकात्मता से अद्‌भूत ये कविताएँ अपनी अनूठी मार्मिकता और विलक्षण प्रभाव क्षमता के कारण आधुनिक हिन्दी कवयित्रियों की कविता में अपनी अलग पहचान स्थापित करेंगी।

6.1.31 शांति जैन :

'हथेली का आदमी' कवयित्री शांति जैन का महतवपूर्ण कविता संग्रह है । इसमें भोगे हुए दर्द की ईमानदार अभिव्यक्ति का स्वर सुनाई पडता है। कवयित्री के अनुभव के व्यापक संसार और आत्मा की पुकार को औचित्य की वाणी मिली है। यहाँ समाज की विसंगति, अव्यवस्था, अराजकता, विद्रुपता के विरोध में आक्रमकता के भी दर्शन होते हैं। इसमें समकालीन जीवन-संदर्भो को उभरने का प्रयास हुआ है।

कवयित्री ने लिखा है - "भोगे हुए यथार्थ और झेली हुई जिंदगी को कहीं मैंने गीतों की शकल में ढाला है, कहीं अगीत शैली में छंदो के बंधन से मुक्त होकर अपने आपको अभिव्यक्त किया है। संभव है ये गीत गीत न हो, ये अगीत कविताएँ कविताएँ भी न हो क्योंकि इनमें काव्य- चमत्कार, रसबोध और शब्द-सौंदर्य शायद नहीं है। बस एक पुकार है, मौन विद्रोह है और सीधी बाते हैं।"[105]

कविता संग्रह दो भागो में विभाजित किया गया है - 'हथेली का आदमी', जिसमें पचास छोटी -बडी कविताएँ है और 'सूरज की छाती पर सांवरी घटा', जिसमें दस कविताएँ हैं। संग्रह की शीर्षक कविता 'हथेली का आदमी' कठोर व्यंग्य से साक्षात्कार कराती है। कवयित्री जीवन के कडवे सच चित्रित करते हुए कहा है कि हमारे जीवन में जहर उसी दिन से घुलने लगा, जब हमने अपने आश्रयदाता को ही कष्ट पहुँचाना प्रारंभ कर दिया। जीवन के इस कठोर सत्य का चित्रण करते हुए कवयित्री कहती हैं -

"जिन्हें मैंने हथेलियों पर
बड़े नाज से पाला है,
वे अकसर कील से
मेरी हथेलियों को / छेदा करते हैं।
मेरी हथेलियां कांपती है,
दुखती है,

105) जैन शांति - हथेली का आदमी, पृ. 36

खून से रिसती है
फिर भी मेरी पकड़
ढीली नहीं होती
यह सोचकर। कि हथेलियों पर
पलनेवाला आदमी
क्या धरती का कठोर स्पर्श / सह सकेगा? "[106]

'तुम्हारा देवत्व', 'मैं हूं या नहीं हूं' और 'धरती की बेटी' कविताओं में नारी जीवन के विविध आयाम व्यक्त हुए हैं। इन कविताओं में नारी की पीड़ा, दर्द, युग-युग से पुरुष द्वारा उसके शोषण की प्रवृत्ति, की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। कभी वह कौशल्या के आँसुओं में, सीता की करुणा में, सती की मर्मव्यथा में, पार्वती की तपस्या में जीवन के विविध रंगो का अनुभव करती है, तो कभी गांधारी की सहिष्णुता एवं द्रौपदी की असहायावस्था में अपने अस्तित्व को विलीन होते पाती है। सीता से तुलना करते हुए उसने नारी जाति को व्यथा में देखा है-

छाती खोलकर बड़े लाड़ से। अपने में समा लिया था।
पर मेरे नाम पर धरती
गूंगी, बहरी, निष्प्राण और तटस्थ हो जाती है। [107]

सपनों पर दो कविताएँ बेहद खूबसूरत हैं। एक कविता में वात्सल्य भाव की व्यापकता पर बल है, तो दूसरी में स्पप्न के सहारे विश्वास अर्जित करने एवं आशा को जिलाए रखने का स्वर गूंजता है। वात्सल्य का नाता स्वप्नातीत है - " मेरा उसका नाता । सपनों का नहीं । सपनों के पार का है।"[108]

'सपना' कविता में स्पप्न की महत्ता बताते हुए कवयित्री कहती है -

"आदमी, उन छली सपनों के सहारे
जीवन के एक - एक पल गुजारता है।
एक और
फिर एक और
और उसके बाद फिर एक और...

---

106) जैन शांति - हथेली का आदमी, पृ. 17
107) वही, पृ. 49
108) वही, पृ. 68

इस तरह उम्मीदों की सीढियां चढकर

वह मंजिल को तलाशता है।"[109]

छायावादी कविता में ही केवल प्रकृति कवि की सहचरी नहीं रही है। वहीं वह मनुष्य के हर्ष से आल्हादित एवं विषाद से विषादित नहीं हुई है। कवयित्री शांति की कविताओं में भी प्रकृति के मानवीकरण एवं उसके साथ तादात्म्य का भाव देखा जा सकता है। 'हवा सनक गई है', 'चंदन सी दोपहर', 'दुपहरी का चाँद', 'गिरवी शामें', 'वासंतिका' आदि कविताएँ इसे प्रमाण पुष्ट करती है । हवा के मिजाज बहकने का चित्र कितना मनोरम एवं विश्वसनीय लगता है -

"कल तक यही हवा । हल्के कदमों से । दरवाजे पर । बिना आहट आती थी। थपकी दे सुलाती थी । धीमा - धीमा गीत सुनाती थी । अपने नर्म आँचल की बेनी डुलाती थी । जरुर कुछ हुआ है । कि हवा का मिजाज बहक गया है । और आज हवा सनक गई है।"[110]

इसप्रकार कवयित्री की यह चिंता नितांत स्वाभाविक है। 'मुट्ठी भर भर उजले - उजले दिन लोगोंने बांट लिये । बाँटा नहीं किसी ने काली रातों के अंधियारों को । उसकी अपेक्षा है कि मानव जग में बंट जाएं दु:ख-सुख से और सुख-दु:ख से'।

'एक वृत्त के चारों ओर' शांति जैन की 66 छोटी कविताओं का संग्रह है। कवयित्री ने इसी नाम की कविता में कहा है- 'एक वृत्त है । जिसके चारो ओर । मौत और जिन्दगी । दिन और रात की तरह घूम रही है।'

संग्रह के सारे गीत मौत, जिन्दगी, व्यथा और करुणा, आशा और विश्वास के घेरे में घूमते हैं। इस दृष्टि से कवयित्री का अनुभव संसार बहुत विस्तृत है। उसके कुछ गीतों में स्वानुभूत पीडा का वर्णन है, और कुछ में समाज द्वारा अनुभूत वेदना की अभिव्यक्ति है।

6.1.32 अमृता भारती :

कवयित्री आमृता भारती की 'सन्नाटे में दूर तक' और 'आज या कल या सौ बरस बाद', दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।अमृता भारती अन्तर्मुखी चेतनावाली कवयित्री हैं अपने 'दो शब्द' के प्राक्कथन में अमृता भारती ने लिखा है कि, "मैं और मेरी कविता के बीच फासला इतना कम या नहीं के बराबर है कि कविता के बारे में कुछ कहना अपने बारे

---

109) जैन शांति- हथेली का आदमी , पृ. 69

110) वही , पृ. 70

में ही कहने जैसा हो जाता है और यह एक संकट पूर्ण स्थिति है । जब कविताओं में दुनिया हो, तब कहना आसान होता है, क्योंकि तब दृष्टि बाहर की तरू होती है और चीजों को उस रूप में प्रस्तुत कर देती है जहां वे हैं - पर जब दृष्टि अंदर की तरू होती हो तो चीजों को वहाँ देखना शुरु कर देती है जहाँ उन्हें होना चाहिए - मनुष्य को, समाज को, दुनिया को, सम्बधों को, यहाँ तक कि वस्तुओं को भी इनकी मूल या मौलिक प्रकृति के अन्दर।"[111]

कवयित्री अमृता भारती के कविताओं की मूल चिन्ता है- स्त्री का समाज में समुचित स्थान। इसके लिए वे सतत संघर्षशील दिखती है और पुरुष के अत्याचारों, अन्यायों और उपेक्षाओं से आहत स्त्री में स्वातंत्र्य, स्वाभिमान और समानता का भाव उद्दीप्त करती हैं। वे बड़ी दृढता के साथ अपने रास्ते पर चलने का संकल्प और उत्साह दिखाती है। वे अपनी कविताओं में 'अब मेरी बारी है' जैसे दृढ निश्चयों वाले और नये परिवर्तन को संकेतित करनेवाले वाक्यों का बराबर इस्तेमाल करती है। जैसे -

"और मैं चल दी थी
स्वयं एक उत्तर की तरह
एक प्रतीक्षा के अन्दर से निकालकर
दूसरी प्रतीक्षा में "[112]

'मैं और वे ' कविता में कवयित्री कहती है-

"सब की जिल्दों से बाहर
अब मैं
सचमुच ही प्रेम की एक छोटी सी कविता हूँ
अपने हर अक्षर में
इस दुनिया के सहस्रभ्रम अंध:कार की
बाती बन, उसे
प्रज्वलित करती हुई।" [113]

'निस्कृति' कविता में कवयित्री कहती है-

"अब मैं रुकूंगी कुछ देर
अपनी छायाओं के अंदर

---

111) भारती अमृता - सन्नाटे में दूर तक , पृ. प्राक्कथन
112) भारती अमृता - सन्नाटे में दूर तक , पृ. 23
113) भारती अमृता - सन्नाटे में दूर तक, पृ. 26

और धीरे से निकल आऊँगी
धुंधले पानी से
अपने सारे चित्र लेकर।"[114]

'तीसरा समय'- की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है-

"मेरा समय
मैं उसे अपना संदर्भ दूंगी
अपना वास्तविक अर्थ
अपने- सपने से जुड़ा हुआ।"[115]

'तिसरा घर' कविता में व्यक्त अनुभवों को देखा जा सकता है-

" यहाँ दीवारें नहीं थीं, न द्वार
बस मैं थी
सब जगह मैं
अन्दर और बाहर यह मेरा तीसरा घर था।"[116]

कवयित्री अमृता भारती की ये कुछ कविताओं की लगभग अंतिम और निष्कर्षात्मक पंक्तियाँ हैं जिनमें स्त्री की मुक्ति की बेचैनी, उसका अहसास, संघर्ष चेतना, अस्तित्वबोध आदि की अभिव्यक्ति हुई है।

नि:सन्देह अमृता भारती की कविताओं में बाहरी दुनिया की अनुपस्थिति के बावजूद जिन्दगी की कटू वास्तविकताओं के गहरे अहसास हैं और उनसे उभरनेवाली नयी जिन्दगी की तडप भी है।

'आज या कल या सौ बरस बाद' कवयित्री अमृता भारती की यह दूसरी कृति है। इसमें संघर्ष और विद्रोह की परिकल्पना से जुड़े सामाजिक बोध और उसके अन्तर्विरोध देखे जा सकते हैं।

"जिन्हें साथ नहीं लिया था
उन्हें तो साथ नहीं ही होना था
पर जो साथ थे
वे भी अब कहां है

---

114) भारती अमृता - सन्नाटे में दूर तक,, पृ. 64
115) वही, पृ. 52
116) वही, पृ. 97

वे वस्तुएं, वे लोग"[117]

यह यातना उस लडकी की है-

"जिसने चुटकी भर रंग पाने के लिए
आग के पर्वत को छुआ था।"[118]

स्पष्ट है कि इस यातना का संदर्भ सामाजिक या राजनीतिक नहीं है। इसके मूल में है जडीभूत मनोवैज्ञानिक गुत्थियाँ जिससे बाहर आने के लिए वह छटापटाती है-

"मेरी चाह
और मेरी पीड़ा
लगभग एक ही है
और वह भय भी
जो उसे मुझसे अलग करने के लिए
उस चाकू से जुड़ा हुआ है।"[119]

इस प्रकार कवयित्री अमृता भारती की कविता आत्मान्वेषण से शुरू होती है और वैयक्तिक सामाजिक स्तर तक पहुँचती है ।

6.1.33 अरुणा कपूर :

कवयित्री अरुणा कपूर आंतरिक और बाह्य दोनों धरातल पर गतिशील कवयित्री है। 'तुम झेल नहीं पाओगे'(1992) उनका दूसरा काव्य संग्रह है। 'कब तक' कविता में समाज में प्रचलित सामाजिक रुढियों का विरोध किया गया है। प्राचीन भारतीय इतिहास में ही नहीं तो विश्व के हर देश में धर्म में ही नारियों की स्थिति दयनीय रही है। कवयित्री युगो-युगों से पीड़ित तथा बन्धनो में जकड़ी नारी की मुक्ति चाहती है-

"कबतक
आखिर कब तक
अत्याचारों की आँधी में
उड़-उड़कर गिरती रहेंगी तिनके सी
कभी इस देहरी
कभी उस द्वार

117) भारती अमृता - आज या कल या सौ बरस बाद, पृ. 17
118) वही, पृ. 21
119) वही, पृ. 37

हर दशा में।" [120]

स्त्री जीवन की वास्तविकताओं , विड़म्बनात्मक स्थितियों का कवयित्री ने गहरा अहसास कराया है। कवयित्री भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति पर प्रश्नांकित करती है। स्त्रियों की पूजा करनेवाले संस्कृति प्रधान देश में आख़िर ये उपेक्षित और दयनीय क्यों है?

कवयित्री वर्तमान समाज की नारी जीवन से संबंधित सभी समस्याओं के साथ जुड़ी हुई है। हमारे समाज में नारी की विवशपूर्ण स्थितियों को देख़कर वे आनंद लूटते हैं। उसकी विवशता पर -

"हालात को उनके पीछे डाल
जोर -जोर से हँसेगा
उनकी मजबूरी पर "[121]

स्त्री अपने शोषण का विरोध करती है। परन्तु उसका यह विरोध चार दीवारियों के अन्दर का विरोध है। वह मन ही मन सोचती रहती है। इस शोषण का विरोध करना चाहती है परन्तु कुछ नहीं करती वह केवल दांत किट किटा कर रह जाती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी की स्थिति दयनीय रही है।

इस संग्रह की कविताएँ अनेक समस्याओं पर आधारित हैं जिसमें राष्ट्रीय एकता, पिछड़े वर्ग का दर्द, नारी संबंधी कविता विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है। संसार के हर क्षेत्र में उन्नति हुई है परंतु नारी की स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं। हमारा समाज प्राचीन रुढियों - परम्पराओं से जुड़ा हुआ है। कहा जाता है सती प्रथा जैसी जघन्य हत्याएँ अब नहीं होती है। कभी उसे मिट्टी का तेल ड़ालकर स्वयं पति, ननंद, सास मिलकर उसे जलाया जाता है अपनी जीवित पत्नी का अंतिम संस्कार कर ड़ालते हैं-

"सती - प्रथा का घिनौना
इतिहास
हमारे घरों के भीतर
मिट्टी के तेल के डिब्बे में
आ विराजमान हुआ है।"[122]

कवयित्री ने परम्परागत रुढियों का विरोध कर स्वतंत्र अस्तित्व की मांग की है-

---

120) कपूर अरुणा - तुम झेल नहीं पाओगे, पृ. 13
121) वही, पृ. 87
122) कपूर अरुणा - तुम झेल नहीं पाओगे, पृ. 54

"बंधु
मुझे तुम्हारी दया नहीं
अधिकार चाहिए
तुम सा सामान्य जीवन जीने का
मुझे तुम्हारी दया
अथवा कृपासे
फेंका गया कोई टुकडा नहीं
अपने बाहुबल से कमाया
भोजन चाहिए
तन ढंकने का
अपने छत के नीचे रहने का
वह समस्त सुख
जिसे कदाचित तुम
केवल अपना अधिकार समझते हो।[123]

कवयित्री दुनिया की सच्चाइयों को समझकर निराश नहीं होती। परन्तु वे सच्चाई को भूलना नहीं चाहती। उसे समाज में पुरुषों की तरह प्रतिष्ठा पाने की होड़ है।

'मैं इन्सान का वहशीपन' कविता में पिछड़े वर्ग का दर्द है। राजनीतिक व्यवस्था के भयानक शोषण से आम आदमी परेशान है। वह इस व्यवस्था का विरोध नहीं कर सकता। जो इस विकृति का विद्रोह करता है उन्हें व्यवस्था कुचल देती है। आम जनता इस व्यवस्था से परेशान है। राजनीतिक गंदगी के कारण आम आदमी पिस्तौल का शिकार हो रहा है। झूठी राजनीति ने आदमी को जानवर बना दिया है। व्यवस्था जन साधारण को कुचल रही है। मजदूरों का शोषण कर रही है, व्यवस्था खून की प्यासी बन गयी है-

"भूने जाते हैं असहाय
कुचले जाते हैं निरपराध
....
आम आदमी यहाँ
पिस्तौल से निकलती गोली के आतंक से

123) कपूर अरुणा - तुम झेल नहीं पाओगे, पृ. 54

दुबका रहता है

भूखा प्यासा

अपनी खोली में

खुशहाली से उन्नति करता।"[124]

इसके साथ ही कवयित्री ने बाल मजदूर के व्यथापूर्ण जीवन का मार्मिक चित्रण किया है। समाज की जटिल परिस्थितियों के कारण बच्चे लकवाग्रस्त हो गये हैं। न वे हंस रहे है न वे रो रहे हैं न अच्छी तरह से अपना जीवन जी रहे हैं। विषम परिस्थितियों के कारण बच्चे परेशान हैं। इस देश में रोटी की तलाश में लाखों बच्चे मजदूर हैं। चमकीली कारों पर कपडा मारकर अठन्नी के लिए हाथ फैलाते हैं। इन बच्चों को भूख ने बचपन से ग्रस लिया है। मजदूर बच्चे अभावों से ग्रस्त है। यह हमारे देश की सच्चाई है-

"यह जो नन्हा माधो

चौराहे पर

चमकीली कारों पर

कपडा मार मार

एक अठन्नी के लिए

हाथ फैलाता है

....

जूते पालिश कर

जो दे दीजिए

ले लेता। ....'[125]

भूखमरी के कारण बालक रेलगाडी में गाना गा रहा है। गरीबी और निष्ठुर आजादी के कारण बालकों का गला मीठा हो गया है। उसके जीवन में जीवन और यौवन का दर्द है। हमारे आजाद देश में गा-गा कर भी माँगने वाले बालकों की संख्या कम नहीं है। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ बदलते परिवेश पर तीखा व्यंग्य करनेवाली है।

6.1.34 अर्चना वर्मा :

कवयित्री अर्चना के दो कविता संग्रह उपलब्ध हैं। 'कुछ दूर तक'(1979), 'लौटा है

---

124) कपूर अरुणा - तुम झेल नहीं पाओंगे, पृ. 15

125) कपूर अरुणा- तुम झेल नहीं पाओगे, पृ. 21

विजेता' (1993) इनकी कविताओं की मूल संवेदना स्त्री जीवन की परेशानियाँ, विवशताएँ, आकुलता है। कवयित्री की दृष्टि पति-पत्नी के नाजुक रिश्ते पर केंद्रित रही है।

स्त्री अपने पति के लिए चूल्हा जलाकर चाय बनाती है। अपने हाथों से खाना बनाकर परोसती है। उसके जूते पॉलिश करती है, साँस लेने के लिए उसकी इजाजत माँगती है। उसके कसूर को कसूर मानती नहीं। बच्चे को अकारण मारने पर बच्चे के दर्द को दिल की तरह महसूस करती है। इतना सब कुछ हो जाने के पश्चात् भी अपने थके शरीर को पति को पूर्णत: सौंप देती है। हर दिन दुहराते इस अपमान को कर्तव्य, धर्म, हक्, प्यार का नाम देकर घुटती रहती है-

"आज उसने फिर
तुम्हारा जूता चमकाया
तुम्हारे दुर्भाग्य का जिम्मेदार
अपनी जन्मपत्री को ठहराया।
....
आज भी उसने
थकी हारी देह को
स्वागत में सजाया
जात भी
इस दैनिक धिक्कार पर
कर्तव्य और अधिकार
और प्यार का
ठप्पा लगाया।"[126]

सचमुच ही औरत की तमाम जिंदगी पति सापेक्ष होती है। पति के लिए वह साँस लेती है और उसके लिए ही आखिर दम तोड़ती है।

'सहगमन' कविता में कवयित्री ने जब वधु ससुराल जाने के लिए निकलती है, तब आशीर्वाद के साथ यही सलाह दी जाती है कि हमेशा पति के कदमों पर चलें उसकी अनुचरी रहे। वह जिंदगी भर दो चिताओं में जलती रहती है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में जीती नारी की अवस्था का 'गाय' नामक प्रतीकात्मक

126) वर्मा अर्चना - लौटा है विजेता, पृ. 13

कविता में लिखा है -

"चरने के लिए लालायित एक गाय चारो ओर
घूरकर देखती है
उसकी दुर्बल चीख सुनायी पडती है
कुछ दूर पर प्रेम - भरी दुनिया के मानिंद घास
भरा एक लहलहाता खेत नजर आ रहा है।[127]

लेकिन वहाँ पहुँचने के लिए आँसू का एक सागर पार करना है। उसकी आँखे तो वजनदार चट्टान सी बन गयी है। वह जितनी भी कोशिश करे खुलती नहीं, बंद ही रहती है।

स्त्री अपनी इस त्रासद स्थितियों से सचेत है। वह गुलामी को तोडना चाहती है। लेकिन एक हद तक बेबस एवम् असहाय है। समूचे औरत को समेटते अपने शरीर को आकाश की ओर उठाकर अनन्त विहान में पंख फैलाकर विचरना चाहती है। लेकिन अगला पल महसूस करती है कहीं गतिशीलता नहीं है, सारा परिवेश स्थिर है।

6.1.35 मुक्ता :

कवयित्री मुक्ता की 'जाने क्यों बार बार' की कविताएँ गहरी सामाजिक चेतना से प्रेरित हैं। कवयित्री ने सामाजिक विसंगतियों से आए हुए अपसंस्कृति और उसके प्रभाव को निकट से देखा है। उसने देखा है कि नागर संस्कृति के कारण किस प्रकार मानवीय संवेदनाओं से पूर्ण ग्रामीण संस्कृति और संस्कार नष्ट होते जा रहे हैं। वह आज के प्रगतिशील युग में नष्ट होती मानवीय संवेदनाओं से चिंतित है।

'कठौत' शीर्षक कविता में उसने कठौत की ग्रामीण संस्कृति को प्रतीक रूप में देखा है। आज घर में दही जमाने के लिए काठ की कठौत दिखाई नहीं पड़ती। तब दही जमाने के लिए चम्मच भर जामन किसी से भी माँगा जा सकता था। यह ममत्व घर की सारी खटास सोख लेता था। अब वह कठौत कहीं देखने को नहीं मिलती। दु:ख के साथ कवयित्री कहती है। कभी नहीं सोचा था कठोत ने कि घर-रसोई से बेदखल होकर एक दिन वह पुरा प्रदर्शनियों में पहुँच जायेगी।

शहरी जीवन की व्यवस्था के कारण प्राकृतिक सौंदर्य से कटते जाने के दर्द को भी उसने महसूस किया है। उसने देखा है कि अब प्रकृति की हरी चादर कहीं दिखाई नहीं देती, जहाँ कोयल की कूक सुनाई पड़ती थी, फूलों की सुगंध उड़ती थी वहाँ अब बाजार का शोर

127) वर्मा अर्चना - लौटा है विजेता, पृ. 16

है। कवयित्री ने पकृति के साथ अपने रागात्मक संबंध को गहराई से महसूस किया है। 'गुलमोहर : एक राग संवाद' में प्रकृति की जीवंत चेतना की प्रतीक गुलमोहर के साथ अंतरंग संवाद करती है। ग्रीष्म ऋतु में भी जब दूसरा फूल खिलने की हिम्मत नहीं करता, इसके लाल-लाल फूल हृदय में प्रवेश कर उसकी चेतना को कुरेदते हैं। प्रकृति की शाश्वतता, जीवंतता और सौंदर्य को वह जीवन में उतारना चाहती है। उससे याचना करती है-

"हमे समुह में रुपांतरित करने वाले पूर्वज।
मुझे अंकुर दो। मेरी पीढियों को दो अपनी आग।"[128]

इस कविता संग्रह का एक बड़ा अंश नारी-विमर्श से संबंधित है। मध्ययुग के समान नारी अब भी विलासिता की सामग्री समझी जाती है। वह बलात्कार का दर्द झेल रही है। इसकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता। कवयित्री ने 'चीखें' शीर्षक कविता में इस पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है।

मध्ययुग की पांचाली आज भी निर्वस्त्र होने को बाध्य है। इस संदर्भ में दुर्योधन और दु:शासन के साथ युधिष्ठिर और अर्जुन एक हो जाते हैं। आज भी स्त्री की स्थिति गांधारी की है। नारी की याचना है-

"नारी को शरीर से उपर उठने दो।
मुझे अपने रक्त से बाहर आने दो।"[129]

कवयित्री ने नारी को इन परिस्थितियों का विरोध करने का आवाहन किया है। संर्घष के लिए उसे कृपाण रखना होगा। इस संघर्ष में वह अकेली नहीं होगी। पूरा जन-परिवार साथ होगा।

संवेदनहीन होते वर्तमान युग की पीड़ा को भी कवयित्री ने निकट से महसूस किया है। जगदीश्वर प्रसाद के शब्दो में- "आज के वैज्ञानिक युग में आदमी चाँद तक पहुँच गया है, दूसरे ग्रहों में भी चरण रखने की कोशिश कर रहा है किंतु इससे धरती पर कोई परिवर्तन आने को नहीं। इन परिवर्तनों से पृथ्वी खंड़-खंड़ होकर बिखर रही है। इसे एकसूत्र में बांधने के लिए मानवीय संवेदनाओं को जगाने की आवश्यकता है। उसे आवश्यकता है माँ की गोद की, कंगनों और बिंदियों की और पीड़ा से भीगी आँखों में झांकने की।"[130]

---

128) मुक्ता- जाने क्यों बार बार, पृ. 85
129) वही, पृ. 28
130) जगदीश्वर प्रसाद - चार काव्य संकलन, समीक्षा, अप्रैल-जून 20047, पृ. 43.

इस संग्रह में कवयित्री ने अपने युग की पीड़ा को ही अभिव्यक्ति दी है। अत: यह सामाजिक सरोकार से निकली कविता है। अपनी काव्य रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए उसने 'शब्द नहीं' शीर्षक कविता में लिखा है- 'परिवेश में व्याप्त घावों से उत्पन्न चीत्कार जो उसके भीतर घुमड़ते रहे हैं आज शब्दों में ढलकर नदी के रूप में बह रहें हैं। आदमी के दर्द से ही कविता फूटती है-

"आशा के पौधे को कंधा देती । फूटने लगी है शब्द नदी। एक मुकम्मल कविता।
आदिम हवा, रक्त, मज्जा और दर्द के बीच पैदा होती है।"[131]

किंतू चत्तूर्दिक व्याप्त पीड़ा और दर्द के माहौल में भी कवयित्री निराश नहीं। यद्यपि वह देखती है कि जीवन को बेहत्तर बनाने के हर संकल्प के बीच प्रतिगामी शक्तियाँ सिर उठा लेती है। फिर भी उसे विश्वास है कि आशा के अंकुर अवश्य फुटेंगे। वह बच्चे की आँखों में सुंदर भविष्य का सपना तैरता हुआ महसूस करती है-

"जाने क्यों बार बार हँसती है मासूम लड़की।
उसकी आँखे कहती हैं-। कहीं नहीं जायेगी यह सदी।
बस लौटकर मुड आएगी तुम्हारी ओर-"[132]

संक्षिप्तता, सांकेतिकता, शब्दों का सार्थक प्रयोग, प्रतीकों और बिम्बों की कुशल योजना आदि कविता संग्रह की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

6.1.36 प्रभा मुझुमदार :

कवयित्री प्रभा मुझुमदार की 'अपने-अपने आकाश' संग्रह की कविताएँ अपने परिवेश की विसंगतियों से प्रेरित हैं। प्रभा इन परिस्थितियों के कारण एक मानसिक द्वंद्व और तनाव की स्थिति में दीख्र पड़ती है। वे कभी क्षुब्द होती कभी निराश और कभी उन्हें इन से उबरने में आशा की एक किरण दीख्र पड़ती है।

वे एक ओर अपने में वर्तमान क्षमता की संभावनाओं को देखती है और दूसरी ओर अपनी शक्ति की सीमाओं का एहसास भी करती है। फिर वह अपने को भीड में अलग समझती हैं। वह कहती है-

"मैं अपने वृत्त से निष्कासित। एक बिंदु हूँ।
एक अलग-थलग नीहारिका से दूर।"[133]

---

131) मुक्ता- जाने क्यों बार बार, पृ. 33
132) वही, पृ. 83
133) मुझुमदार प्रभा - अपने अपने आकाश , पृ. 17

परिस्थितियों की विषमता और कुछ न कर पाने की विवशता के कारण उसके जीवन में आशा और निराशा का द्ंवद्ंव सतत चलता रहता है। किंतु निराशा उसे पलायन के लिए प्रेरित नहीं करती, अपितु नये सपने जगाती है। उसे संघर्ष के लिए प्रेरित करती है- आँसुओं के सूखते ही नये सपने जागने लगते हैं।

संग्रह में एक ओर जहां प्रभा ने अपने आत्मसंघर्ष, आशा-निराशा, कुछ कर दिखाने की बेचैनी का चित्रण किया है वहाँ दूसरी ओर परिवेश की विसंगतियों के भी अनेक मार्मिक चित्र अंकित किये हैं।

आज का कोई भी संवेदनशील कवि वर्तमान यथार्थ से मुँह नहीं मोड़ सकता। यथार्थ के चित्रण-क्रम में कवयित्री का ध्यान वर्तमान जीवन की व्यस्तता, यांत्रिकता, मरती संवेदना नारी उत्पीड़न, स्वार्थ वृत्ति, भ्रष्ट शासन तंत्र आदि की ओर विशेष रूप से गया है। इन परिस्थितियों में उलझा मनुष्य जीवन का नैसर्गिक आनंद भूल गया है।हर सुबह उसका एक जन्म होता है और हर शाम एक मौत। फैक्टरियों का साइरन सुबह जगा देता है, आने और जाने के निर्देश देता है। बत्तियां लाल -पीली होती रहती हैं। विश्रान्ति के क्षणों का कोई पता नहीं चलता।

जीवन की इस यांत्रिकता ने आदमी को संवेदन शून्य बना दिया है। किसी के सुख-दु:ख का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता यह वर्तमान युग का विरोधाभास ही है कि प्रगति के इस युग में दुनिया के एक हो जाने पर जाति धर्म, संप्रदाय, देश इत्यादि की दीवारे टूटी नहीं, बल्कि और मजबूत हो गयी हैं। आदमी आदमी से कटता जा रहा है। शोषण, अन्याय और अत्याचार के मूल में आदमी और आदमी के बीच आज का यही अजनबीपन है। इसीलिए शोषण और संत्रास जीवन के प्राय: सभी क्षेत्र में व्याप्त है, किंतु कवयित्री ने इस के दो क्षेत्रों का विशेष रुप से चित्रण किया है। ये हैं- नारी और शासन - तंत्र।

नारी जीवन भर दर्द झेलती रहती है। उसके अस्तित्व को सदा नकारा गया है। बचपन, यौवन और बुढापा सभी अवस्थाओं में किसी न किसी पर निर्भर रहना पडता है। मर्यादा और परंपरा ढोने के लिए पुरुष का कंधा जरुरी होता है। समाज में पुरुष का वर्चस्व आरंभ से ही स्थापित है। अहल्या को शाप देने और सीता को निर्वासित करने का अधिकार पुरुष को ही है। अहिल्या को शापमुक्त करने का गौरव भी उसे ही मिलता है। किंतु आज की नारी यह अधिकार अब पुरुष को देने के खिलाफ है।

कवयित्री देखती है, आज का शासनतंत्र अपना घर भरने और कुर्सी की रक्षा के लिए ही चिंतित है। उसे आम आदमी के सुख-दु:ख की चिंता नहीं। इस शोषण का अंत करने के लिए व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है। किंतु कवयित्री चिंतित है कि इस व्यवस्था में परिवर्तन नहीं हो रहा। राजसिंहासन यों ही सजा है, केवल मूर्तियां बदल रही है। सत्ता प्राप्ति के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। ऐसे लोगों का नैतिकता और प्रतिबद्धता से दूर का भी रिश्ता नहीं रहा। सिंहासन के आगे सिर झुकाना देशभक्ति का पर्याय बन गया है।

सबसे अधिक उपेक्षित है जनता। उसके हाथ में सिर्फ एक मुहर है जिसे किसी चिन्ह पर लगाना है। ऐसे लोगो से न्याय की आशा कैसे की जा सकती है जिनका अस्तित्व ही शोषण की नींव पर वर्तमान है। कानून का शिकंजा सिर्फ दुर्बल पर ही कसता है। उसका डंडा सशक्त गिरोह के आगे टूट जाता है।

फिर भी कवयित्री परिस्थितियों की भयावहता से निराश नहीं। निराशा के क्षणों में भी वह आशा का किरण देखती है। वह देखती है कि जनता की बेचैनी में ही मुक्ति का उपाय छिपा है।

वह इसे ताजा इसलिए बनाया रखना चाहती है कि जंगल की आग एकाएक भड़कती है और हरएक को भस्म कर देती है। हरे-भरे वृक्ष ठूंठ में बदल जाते हैं। उसे विश्वास है कि जनता में जल रही असंतोष और आक्रोश की आग ही व्यवस्था में परिवर्तन ला सकती है। उसे मानवता की छिपी शक्तियों में विश्वास है। पशुता का अतिरेक होने पर मानवता मरती नहीं।

इस प्रकार अभिव्यक्ति की सहजता, मार्मिकता और समसामयिकता बोध के कारण 'अपने-अपने आकाश' की कविताएं प्रभावित करती है।

6.1.37 इन्दू वशिष्ठ :

कवयित्री इन्दू वशिष्ठ के सात कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'संदर्भ अपने-अपने', 'दर्द के नुपूर' 1999। 'धूप के रंग', 'रेत के घरौंदे', 'मैं और मेरा चुप', 'यादों की पुरवाइयाँ', 'टुकड़े टुकड़े जिन्दगी' (1989) आदि। इनके सातों संग्रहों की कविताओं की मूल संवेदना 'आम आदमी' का दर्द तथा राजनीतिक नेताओं पर व्यंग्य है।

'टुकड़े टुकड़े जिन्दगी' (1989) कवयित्री का यह काव्य संग्रह बिना किसी योजना के अचानक उभरने वाले भावों का संकलन है। जिसमें जीवन का हर तत्व विद्यमान है, जीवन

के हर पहलू का उद्‌घाटन किया गया है। जीवन में हर पल कुछ न कुछ घटित होता रहता है। कुछ घटनाएँ जीवन की इच्छा भी नहीं रखती परंतु फिर भी इन घटनाओं से गुजरकर आदमी फिर जीवन जीने में जुट जाता है। जिस प्रकार हर दिन सूर्य नीले आकाश में उगता है, और हर दिन उसे अंध:कार में डूब जाना पड़ता है। इसी चक्र को दर्शाता हुआ मनुष्य का यह जीवन है-

"प्राणमय आनंद
बिखरा है धरा की गोद में
सत्व रज और तम यही
बस योग है ये जिन्दगी।"[134]

सत्व, रज, तम इन तीन तत्वों का योग ही हमारा अस्तिव है। इस कारण हम सबको एक न एक दिन फिर सत्व, रज और तम में ही विलीन होना है। इसी कारण हमने अपने जीवन में दु:खी न होकर सृष्टि में फैला आनंद लूटना चाहिए। क्योंकि, यह जीवन पुन: नष्ट होनेवाला है-

"नित्य कवित की कल्पना में। गीत बनकर ढल रही।
है उसी के बोल की। सुंदर कड़ी ये जिंदगी।[135]

जीवन के क्षणभंगुरता पर यहाँ प्रकाश डाला गया है। जीवन सुख और दु:ख का संगम है। सुख के क्षण हमारे लिए अत्यंत ही कम समय के लिए आते हैं। उनके तुरंत नष्ट होने के कारण यह जीवन किसी जादुगरनी द्‌वारा जादू से छीना गया लगता है-

"रेशमी भावों के छौने
दौड़ते बस दौड़ते
क्या गजब है जादुगरनी
सी लगी है जिंदगी।"[136]

भले ही मनुष्य का मन अपनी विपरीत परिस्थितयों को पाकर टूट जायें फिर भी आशाओं की रोशनी उनके साथ रहती है। मन में नयी आशाएं निरंतर अपना अस्तित्व रखती है और इसी प्रकाश में मानव की जिंदगी समाई सी लगती है -

"रात के डेरे मगर हैं

---

134) वशिष्ट इंन्दू - टुकडे टुकडे जिंदगी, पृ. 8
135) वशिष्ट इंन्दू - टुकडे टुकडे जिंदगी, पृ. 9
136) वही, पृ. 9

चाँदनी की बंदगी
चाँद के पहलु से
कैसी है लजीली जिंदगी।'[137]

आज समाज में हर क्षेत्र में अन्याय, अत्याचार है। जीवन में व्यभिचार फैला हुआ है और इस पूरे चक्र से निकलने के लिए आदमी उनमें से छुटकारा पाने के लिए सोचते रहता है।

"अन्याय अत्याचार है
व्यभिचार है ये जिंदगी
तर्क के जालों
में उलझा
तार है ये जिंदगी।"[138]

गरीबी, बाल मजदूरी पर भी कवयित्री ने कलम चलाया है। गरीबी के कारण माता-पिता अपने बच्चों को दूध भी पिला नहीं सकते, बच्चों का तरसना देखकर उनके आँखो में आँसू बहते हैं। पर मजबूर होने के कारण वह कुछ नहीं कर सकते-

" दूध मुहों के दूध को
अक्सर तरस्ती जिंदगी
आँखों से चुपचाप आँसू
बन बरसती जिन्दगी।"[139]

'टुकड़े-टुकड़े जिंदगी' में कवयित्री ने जिंदगी के हर टुकड़े पर प्रकाश डाला है। राजनीति, दहेज प्रथा, आर्थिक विषमता, भूख आदि जिंदगी के हर पहलू का नक्षा उतारा है।

6.1.38 सुनिता बुद्धिराजा :

'आधी धूप' (1992) कवयित्री सुनिता बुद्धिराजा का कविता संग्रह है। इस संग्रह की कविताएँ पढने के बाद महसूस होता है कि हम सुंदर वाटिका में विचरण कर रहे हैं, ख़ुशबू पा रह हैं, दुनिया के मरु स्थल में हमें बिना उम्मीद के शीतल जल प्राप्त हुआ है । कविता की इन प्रस्तुति में न तो कहीं कुछ रहस्य है और न शब्द चातुरी। जिस आस्था और अनुराग से देवस्थान पर धूप, दीप और नैवेद्य की प्रस्तुति होती है वैसे ही लगती है ये

137) वशिष्ट इंन्दू - टुकडे टुकडे जिंदगी , पृ 9
138) वशिष्ट इंन्दू- टुकडे टुकडे जिंदगी, पृ. 33
139) वही, पृ. 55, 56

कविताएँ। कवयित्री कहती है -

"भटकी हुई धरा को । देकर समुद्र। अंजुरी भर
गहराई तुम्हारे पास बचे। अमावस से जीवन को।
देकर प्रकाश। थोडासा ताप।
तुम्हारे पास बचे। तो वह मुझे देना।"[140]

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में इनका स्थान महत्वपूर्ण है ।

6.1.39 मधुरिमा सिंह :

'खंड़ित पूजा' कवयित्री मुधरिमा सिंह के कविता संग्रह की रचनाओं का मूलाधार संस्कृति और रचनाकार के व्यक्तिगत अनुभव हैं। मधुरिमा सिंह के पास भारतीय संस्कृति की धरोहर है जिसे वे भाषा देने के साथ-साथ नई व्याख्या भी देती है। यह जानकारी और परंपरा पर उनका अटूट विश्वास उन्हें यात्रा की थकान से परेशान नहीं करता। रचनाकार के यहाँ ईश्वर है, घर है, तुलसी और गंगाजल है, आँसुओं की आहुतियाँ है, मित्र हैं, बेटी है, पिता, माँ, बहन और अन्य रिश्तेदार हैं। इन के साथ ही है जिंदगी का मुट्ठी भर सच जिसके सहारे आस्थावादी व्यक्ति अपना पूरा जीवन काट देता है।

रचनाएँ परिवेश की उपज है तभी तो महुआ के फूल, सरसों का वासंती तन, कोयल और आम्र मंजरी उस परिवेश को रचते हैं जहाँ कविता अपने आप प्रस्फुटित होती है। ऐसे मंदिर, गंध, बाल माहौल में भी कवयित्री याद करती है पंजाब की, और कहती है-

"और अब नहीं जिएँगे यह संत्रास। मैं तुम्हारी गुनगुनी हथेली थामकर। तुम्हारा उल्लास, तुम्हारी उर्जा। इस धरती के कोने कोने पर ले जाउँगी। मेरी माँ के आँचल के धागे-धागे में तुम्हारा ही नाम तब। इस देवभूमि पर अंकुरित होगा प्रेम। एक बार फिरसे....।"[141]

वर्तमान के दर्द को व्याख्यायित करते हुए कवयित्री मधुरिमा सिंह ने संभाव्य की ओर भी संकेत किया है। वास्तव में कवि को तीनों कालों में विचरना पड़ता है। दूसरों की पीड़ा को अपनी वेदना के साथ एकाकार करते हुए कवयित्री अपनी सह-अनुभूति में कोई कसर नहीं रखती। यही उसकी शक्ति और विशेषता है।

6.1.40 उर्मिला कौल :

'पथिक आ'(1981) कविता संग्रह की कवयित्री उर्मिला कौल एक संवेदनशील कवयित्री है। उसे हर पल कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। कवयित्री ने जीवन के हर

---

140) बुद्धिराजा सुनिता - 'आधी धूप', पृ. 88
141) सिंह मधुरिमा - खंडित पूजा, पृ 63

संघर्ष का स्वागत किया है। इसीलिए प्रत्येक दु:ख उसके लिए वरदान बन गया है। जो भी दु:ख उनके सामने आया वह-सुख मे बदल गया -

"बढती गई जितनी मुश्किले
उतनी मुस्कराती हुई जिन्दगी
जितने शूल राह पर चुभे मुझे
उतने ही पहाड़ धूल बन गये।"[142]

कवयित्री कौल ने सदैव अनुभव किया की बाधाएँ मनुष्य जीवन को सौंदर्य ही प्रदान करती है। कल्पनाओं एवम् स्वप्नों की अपूर्णता ही मनुष्य का सत्य से साक्षात्कार कराती है-

"जीवन में दो आँसू पाकर
सुख-दु:ख की पहचान हो गई
मेरी पीड़ा विस्तृत होकर
सच मानो भगवान हो गई ।"[143]

कवयित्री ने कल्पना, आदर्श का शाश्वत चित्र आँचल में छिपाए असुंदर को सुंदर रुप में चित्रित किया है। उसके लिए कविता केवल आत्माभिव्यक्ति का माध्यम न होकर प्रकाश और जीवन का उद्‌गम स्थान हैं। उनकी कविता में जीवन के अनेक रंग सहज रुप में व्यक्त हुए हैं। यह व्यक्त भाव जीवन सत्य को खोजने में परेशान हैं। जीवन के अनेक सत्यों का उद्‌घाटन करते हुए जीवन की परिभाषा दी है -

"अतृप्ति अमरता है रे
औ तृप्ति असीम निराशा
रतनारे लोचन कहते
यह जीवन की परिभाषा।"[144]

कवयित्री ने राष्ट्र प्रेम से अभिभूत होकर 'भारत-वन्दना', 'मुक्त भारत देश' कविताओं का सृजन किया। कवयित्री ने यहाँ सामाजिक विषमता का एक कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है।

6.1.41 उषा चौधरी :

कवयित्री उषा चौधरी का 'आस्था का किरण'(1983) कविता संग्रह प्रकाशित हुआ

---

142) कौल उर्मिला - आ पथिक पृ. 9
143) वही, पृ. 9
144) कौल उर्मिला - आ पथिक पृ. 10

है। इस संग्रह की मूल संवेदना 'मानवीय पीड़ा' है। इस संग्रह की प्रथम कविता 'हर घेरा किसी की बपौती है' में कवयित्री ने हर एक के अस्तित्व का अचेतन चेतन मन की अभिलाषाओं का वर्णन किया है। यहाँ कवयित्री व्यक्ति की जिजीविषा तथा अपरोक्ष आहत संवेदनाओं का मार्मिक चित्रण करती है। यहाँ तक की वह व्यक्ति के स्वभाव का बेमानी रूप निम्न पक्तियों में स्पष्ट करती है-

"क्योंकि, कुछ लोग
अंधेरो में बेख़बर
सुख़ की नगरी में जीकर
काल्पनिक दु:ख़ ओढने की चेष्टा करते हैं।[145]

समाज में जीवन-यापन करते हुए हर एक व्यक्ति दोहरे बर्ताव को पुष्टि दे रहा है। हालांकि वह मुख़ौटा ओढे जी रहा है। नगरीय व्यवस्था ने आदमी को एक रंगमचीय बहुरुपिया बना दिया है जो ख़ुद की व्यवस्था पर हँसता, बौख़लाता, यहाँ तक की रोता हुआ नजर आता है। कवयित्री ने इसी मर्म को उक्त कविता की पंक्तियों से परिभाषित किया है। यह व्यवस्था उच्चवर्ग की है।

कवयित्री ने 'आस्था का किरण' कविता में आशावाद को दर्शाया है। 'मुक्ति' कविता में कवयित्री ने मानव और प्रकृति के स्वभाव का चित्रण किया है। यह कविता विविध भावों को स्पष्ट करती है बल्कि विराट और बौनेपन की ख़ाई को पाटती है। यहाँ अर्जुन के विराट रूप के प्रति समर्पण मानव की उच्च महत्वाकांक्षाओं का दमन है बल्कि ब्रह्म के प्रति जीवन का समर्पण है-

"एक बार अर्जुन ने विराट रूप देख़ा,
अपने बौनेपन का आभास पाया था।
महत्त्व की स्वीकृति को,
अर्जुन समर्पित था।
पुरुष और प्रकृति
ब्रह्म और जीवन
अक्षय और समर्पण।"[146]

145) चौधरी उषा - आस्था का किरण, पृ. 9
146) चौधरी उषा - आस्था का किरण, पृ. 20

इसी कविता में कवयित्री ने पीड़ित मानसिकता की सघनता को तरल बनाया है। उसे मुक्त किया है। यही त्रासदी निम्न रूप से स्पष्ट की है-

"मानस में छायी विषाद की सघनता
अकस्मात पिघलने लगती है
बहने लगती है।"[147]

स्त्री का सम्मान मानव जाति का सम्मान है। 'स्त्री' समाज की ज्योति है, जो भटके को राह दिखाती है। स्त्री मुक्त रूप में अपने आराध्य का हित देखती है। किंतु उसका संपूर्ण रूप से सम्मान करना चाहिए। उसके विचार, उसकी महत्वाकांक्षा का आदर करना चाहिए। यदि यह सम्भव हुआ तो वह इस दृष्टि का होगा जो स्त्री को अपने होने का अहसास देगा। कवयित्री कहती है-

"और वह
अँधियारी गलियों से निकलकर
तुम्हारे साथ।
युग के साथ चल सकेगी।"[148]

'जीवन की कड़ी' कविता में अपनी अनुभूति सफल रूप में अभिव्यक्त करती है। जीवन उस धारा के तरह बह रहा है जिसका अवरोध पत्थर तक नहीं कर पाते। जीवन में कहीं शांति दिखाई ही नहीं देती। चारो ओर ध्वनियाँ जिसमें हँसी है, चीख है, एक आवाज यहाँ से वहाँ की परिधि को एक सूत्र में बाँधने के लिए मनुष्य का जंगल एक 'महासभा' बन जाता है। कवयित्री कहती है-

"आस-पास के शोर में मन डूब डूब जाता है।
हर क्षण शांति की प्रतिक्षा में ही उब जाता है।[149]

यहाँ शांति नहीं मिलती महानगरीय व्यवस्था ने मनुष्य को मशीन बना दिया है। फिर भी मनुष्य अपनी ही मंगलमय भावों को फिर से झटकता है, जीवन की एक कड़ी में स्वयं को गुंफता चला जाता है। कवयित्री कहती है-

"मैनें भी सिर हिलाकर कुछ झटक दिया,
और देखा-
नयी आशाओं की तरह ही,

147) चौधरी उषा - आस्था का किरण, पृ. 20
148) वही, पृ. 25

पीपल के पेड़ में कोमल हरी लाल कोंपले फूद रही है।"[150]

कवयित्री ने पीपल का प्राकृतिक प्रतीक मनुष्य के संघर्ष रूपी जीवन के संदर्भ में किया है। वह प्रकृति के नियमों को भी दर्शाता है। और मनुष्य के हारे मन को पुन: स्फूर्ति देता है। वही पीपल जो अपने शाखाओं में कोमल हरी लाल कोंपलों को जन्म देता है वही मनुष्य समय के साथ अपने बोझील कंधो को इटकते हुए नवीन रूप से जीता है।

कवयित्री उषा चौधरी ने 'आस्थ का किरण' संग्रह में अनेक सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, प्राकृतिक संवेदनाओं को अपने सरल, सुबोध तथा प्रयोगधर्मी भाषा में प्रस्तुत किया है।

6.1.42 गगन गिल :

'अंधेरे मे बुद्ध' गगन गिल का यह दूसरा संग्रह है। इसमें आदमी की तकलीफ, उसके आधे सिर का दर्द, उसके सन्नाटे, उसके सपने, उसका घर, उसके पितर, बुद्ध होते होते थके एक बुद्ध, आदि एक शोक गीत की तरह इस कविता में अंकित हुए हैं।

कवयित्री गगन गिल के यहाँ देह का चित्कार और शौक है। यहाँ देह का स्वीकार, देह का कथन और देह का अर्जन और क्रंदन है। नारी के लिए यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि देह का दावा, देह का उत्सव स्त्रीत्ववादी अनुभवों और रचनाओं की वह चौंकाने वाली ताकत है ।

'जैव राजनीति एक : जिस एक काँटे सें' शीर्षक कविता में स्त्री देह के संदर्भ में कवयित्री कहती हैं -

"जिस एक काँटे से
बचने के लए
तैरती रही मछली
संमुदर पर समुंदर
उसकी देह में छिपा था? "[151]

स्त्रीदेह एक दु:ख है। उसका अर्जन ही दु:ख की व्याख्या है। प्रतिरोध है। स्त्री की देह के अर्जन में ही उसकी मुक्ति है। कवयित्री गगन गिल कहती है -

---

149) चौधरी उषा - आस्था कि किरण , पृ 75
150) वही , पृ. 88
151) गगन गिल - अंधेरे में बुद्ध , पृ. 15

"यहाँ

छिपेगी वह

कंकाल में अपने

युवा छवि से बचकर

यहाँ धसेगी वह

संताप से अपने आत्म से छिपकर

नोच ड़ालेगी

यहाँ विक्षिप्तता

देह और स्वत्व (यहां)

'दमन' से 'अर्जन' की यात्रा खासी गहन है।" [152]

इस प्रकार कवयित्री गगन गिल ने स्त्री देह दमन की समस्या को समाज के सामने रखने का सफल प्रयास किया है । कवयित्री के विचार गहन हैं ।

6.1.43 अनामिका :

कवयित्री अनामिका का 'बीजाक्षर' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। इसमें अनामिका की कविताएँ भी स्त्रीत्ववादी देह- विमर्श से संबंधित हैं। अनामिका 'मातृत्व' की एक नई व्याख्या देते हुए कहती हैं -

'मेरे' भीतर कुछ चल रहा है,

नहीं षड़यंत्र नहीं, तंत्र नहीं, मंत्र नहीं,

क्या पता क्या?

पर कुछ घट रहा है

जैसे घटती है घटना- कुछ कर रहा है-

नहीं बढ रहा है भीतर भीतर

बढ रहा है जैसे बढती है नदी

याकि वृक्ष (अंत:सत्व)"[153]

अनामिका की उक्त कविता देह के दावे को जबर्दस्त ढंग से पेश करती है। इस कविता में इसका 'सैलीब्रेशन' है। कवयित्री कहती है कि-

---

152) गगन गिल - अंधेरे में बुद्ध पृ. 13

153) अनामिका - बीजाक्षर पृ. 54

"यह मेरा सातवाँ था,

ठीक ठीक कहिए तो आठवाँ

इसको जानकर थोड़ा पछताई भी थी मैं

खून से लिथडा हुआ

यह मेरी जांघों के बीच पड़ा था,

आँखे नही खुली थी

नाल कटी नहीं थी।

कुछ तो था जो नहीं था

और कुछ नहीं था जो था।

ऐंठ रहे थे मेरे पाँव

बार -बार छाती में

उछल रही थी डाल्फिन मछली

साँसो से गेंद खेलती "[154]

अनामिका की कविता में स्थानीय स्त्री बहुत बार आती है, गृहस्थिन आती है औरा माँ आती है ।

कवयित्री अनामिका के कविता में चित्रित सैक्सुॲलिटी को इस प्रकार देखा जा सकता है-

"कुंड़लिनी सी जमी बैठी थी

लड़की पलंग पर

उसकी सफेद फ्राक और जांघिए पर

किसी परी माँ ने काढ दिए थे

कत्थई गुलाब रात में?

और सात बौने

क्यों गुत्थमगुत्थी

मचा रहे थे

आज उसके पेट में?

अनहद सी

154) अनामिका - बीजाक्षर पृ. 68

बज रही थी लडकी

काँपती हुई

लगातार थे

उसकी जंघाओं में

इकतारे

चक्रों सी

काँप रही थी वह

एक महीयसी मुद्रा में

गोद में छुपाए हुए

सृष्टि के प्रथम सूर्य सा दीपित

लाल लाल तकिया।"[155]

इनकी कविता के संदर्भ में सुधीश पचौरी कहते हैं कि- "यह हिन्दी की शायद पहली कविता है जो प्रथम रजोस्त्राव के अनुभव को एकाग्र करती है और उस वर्जित पद्रेश को विमर्श में ले आती है जिसका आखेट - 'लज्जा' में कैद करके अब तक किया गया है। ऋतुमती होने का ऐसा 'सैलीब्रेशन' मूलत: सैक्युॅअॅलिटी का नया दावा है इस अनुभव को किस साहित्यशास्त्र से समझा जाए।"[156]

इस प्रकार कवयित्री अनामिका ने स्त्री देह का सूक्ष्म अंकन किया है ।

6.1.44 दिनेशनंदिनी ड़ालमिया :

कवयित्री दिनेशनंदिनी डालमिया के 'सारंग', 'मनुहार', 'प्रतिच्छाया', 'उरवाती इति', 'जागती हुई रात है औरत', 'हिरण्या गर्भा', 'शाम्भवी' आदि कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनकी कविताओं की मूल संवेदना नारी जीवन से संबंधित हैं। नैराश्य, असंतोष, मन की व्यथा, आंतरिक गंभीर वेदना तथा निष्फल प्रतीक्षा की असह्य मर्मांतक पीड़ा है।

कवयित्री ड़ालमिया की कविताओं में अपने आस-पास का परिवेश, सार्थक जीवन जीने की तलाश, समकालीन जीवन की वास्तविकताएँ और सबसे ज्यादा स्त्री जीवन के प्रश्न एवम् परेशानियाँ हैं। कवयित्री स्वयं स्त्री है , उन्होंने स्त्री जीवन की विसंगतियों की अभिव्यक्ति बड़ी प्रभावशाली ढंग से की है । नारी जीवन की परेशानियाँ कवयित्री को कई बार उदास बना देती है।

---

155) अनामिका - बीजाक्षर पृ. 76

156) पचौरी सुधीश- 'स्त्री देह के कथन', मधुमती, अगस्त-सितम्बर 1999, पृ.119

'उड़ान' कविता कवयित्री को कई बार उदास बना देती है। इसमें पूर्ण स्थिति का चित्रण किया है। हम आँख होकर भी अंधे, पैर होकर भी पंगु बन गये हैं। हमारा जीवन कैसा है, हमें ही पता नहीं। हम केवल कभी इस द्वार कभी उस द्वार घूम रहे हैं।

"अपने पैरों चलते ही
मैं पंगु हो जाती हूँ
तुमने मेरी कल्पना, साहस और उड़ान
सब बाधित कर दिये।"[157]

कवयित्री की व्यथा बहुत गहरी है उनका मन वर्तमान समाज से भर उठा है, क्योंकि उन्हें कहीं भी कोई आशा की किरण नहीं दिखाई देती। 'जिन्दगी' कविता की प्रस्तुत पंक्तियाँ देखी जा सकती है-

"जिंदगी
तूफान के बाद
सूने स्टेशन पर अंधेरे से बोलती
एक टाँग पर खडी गुड़िया।"[158]

'शब्दों का पुल' कविता में कवयित्री ने नारी मन की आंतरिक वेदना का चित्रण किया है। स्त्री जीवन की विसंगतियों और विड़म्बनात्मक स्थितियों के जरिए कवयित्री ने स्त्री जीवन की वास्तविकताओं का वर्णन किया है-

"तुम
सागर हो
ज्ञान के
और मैं
उस सागर के भीतर
मुक्त बंदी
छटपटाने वाली मछली की छाया।"[159]

इसी तरह 'थोड़ी देर और' कविता में कवयित्री अपने आप को समाज से अलग महसूस कर रही है। मैनें अपने टूटे हुऐ शरीर को आँख की अँगुलियों से जोड़ दिया है-

157) डालमिया दिनेशनंदिनी - जागती हुई रात है औरत, पृ. 16
158) डालमिया दिनेशनंदिनी - जागती हुई रात है औरत, पृ. 10
159) वही, पृ. 25

"बाहर की दुनिया से सभी नाते तोड़
फूटे हुए उस देह को कच्चे छट को
आँख की अँगुलियों से जोड।"[160]

चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ है। इस अंधेरे में बुझे हुए दीप को हाथ में लेकर प्रकाशमय किरण की रेखा ढूँढ रही है-

"बुझा हुआ दीपक हाथों में लिए मैं
समुद्र की ओर बहने वाली
स्त्रोतस्विनियों के उद्‌गम को
ढूँढना चाहती हूँ।"[161]

'निषेध की राहें' कविता मे कवयित्री खुद ब्रह्मा बनकर स्वयम् भविष्य रचने की परिकल्पना की है-

"अपनी परिस्थिति का
विधाता बनकर, मैं
अँधेरों में जोड़ती हूँ
भविष्य-अंकों की संख्याएँ।"[162]

ये कविताएँ केवल उनकी निजी व्यथा की तीव्रता के कारण ही विशिष्ट नहीं है। बल्कि इनमें औरत की सम्पूर्ण त्रासदी, मनोदशा का कवयित्री ने चित्रण किया है। इनकी सभी कविताएँ नारी मन की निराशा, असंतोष, मन की व्यथा, आंतरिक वेदना का चित्रण करती है।

6.1.45 कीर्ति केसर :

कवयित्री कीर्ति केसर की दो कविता संग्रह उपलब्ध हैं- 'मुक्त कर दो' (1991), 'मुझे आवाज देना'(2002)। मुझे आवाज देना कीर्ति केसर की सैंतीस कविताओं का संग्रह है। इसकी पहली ही कवता में कवयित्री निजी काव्य-धारणा प्रस्तुत करती है।

"मेरे लिए कविता । अंहिसा है। अनुराग है। योग है।
उपवास है। मेरे लिए कविता भोग में सन्यास है....। "[163]

160) डालमिया दिनेशनंदिनी - जागती हुई रात है औरत, पृ. 25
161) वही, पृ. 30
162) वही, पृ. 40
163) केसर कीर्ति - मुझे आवाज देना , पृ.

इस संग्रह की, ख़ासतौर से छोटी कविताओं में एक ऐंद्रिक आमंत्रण है, प्रेमाकुल आव्हानी भी। इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ प्रेम-प्रक्रिया की संरचना है। वे प्रेम करते हुए लिखी गई है या प्रेम जल में डुबकी लगाते हुए। 'अजनबी पल', 'स्पंदन', 'साथ साथ', 'सरगोसिया' और 'ख़ामोशी' रागात्मक संवेदना की धड़कती कविताएँ है।

कवयित्री का तर्क आनंद की सिद्धावस्था का तर्क है। उनकी काव्यानुभूति की बनावट में मनोगत संघर्ष, ख़ासतौर से मनोवेगों की ही जगह है। रेवती रमण के शब्दों में- " वड्र्सवर्थ बड़े कवि इस वजह से हैं कि संवेदनात्मक ज्ञानधारा में होकर भी उनकी कविता भाषा के स्तर पर एक ऐसे मनुष्य की अभिव्यक्ति है जो ढेर सारे मनुष्यों को संबोधित है। संवाद प्रक्रिया केंद्र बिंदु से शुरु होकर वृत्त परिधि तक जाती है। यीट्स वर्ड्स्वर्थ नहीं हो सके, क्योंकि उन्होंने आत्मा से आत्मा के संवाद- विवाद तक ही अपनी कविता को सीमित रखा। बड़ा कवि होना और बात है, सच्चा कवि और । यीट्स की सच्चाई भीतर तक जाती है। कीर्ति केसर का अनुभूति क्षेत्र परिमित है, पर अनुभूति निश्चल।"[164]

काव्यानुभूति के अनुरुप कवयित्री मुहूर्त को श्रेय मानती है। उनका क्षणवाद सुसज्जित होकर व्यक्त हुआ है।

6.1.46 मंजु गुप्ता :

कवयित्री मंजु गुप्ता की मिट्टी की वर्णमाला (1992) और रोशनी का दस्तावेज (2002) कविता - संग्रह उपलब्ध हैं।

कवयित्री के काव्य-संग्रह अलग-अलग एक से अच्छे और परिपक्व भावों से समृद्ध हैं। दो भागों में प्रस्तुत इस संग्रह के प्रथम भाग में, भौतिक एवं मानसिक दोनों स्तरों पर, आज प्रदूषित सामाजिक एवम् राजनैतिक परिवेश की विडम्बनाओं के बीच मानवीयता के एकाकीपन का चित्रण हैं।

जीवन में 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के मूलमंत्र का अनुसरण करते हुए इन कविताओं में 'रोशनी का दस्तावेज' पेश कर रही है। प्रथम कविता अंधेरे से जूझते हुए दीपक का दस्तावेज है तो दूसरी में वे अपनी घुटती हुई, सिर धुलती हुई चिथड़ा-चिथड़ा आवाज की बूँद को सम्हालकर चुप्पी तोड़ ड़ालने की स्थिति में आ जाती है। यह आवाज धुंध और कुहासे के अंधेरे से निकलकर, मुखरित हो, प्रकाश पथ पर चल पड़ती है।

तीसरी कविता हाथ में खिंची भाग्यरेखाओं के ठहरते हुए अंधेरे से निकालकर, अपने

164) रमण रेवती- 'समीक्षा' पत्रिका - जनवरी - मार्च 2006, पृ. 33

अधिकार प्राप्त करने की ओर अग्रेसर करती रोशनी की कहानी है। राजनीति के अंधेरे को भेडों और भेड़ियों के माध्यम से अभिव्यक्त करते हुए वह नेताओं के शब्दो की अर्थहीनता को बेनकाब करती है। 'गृहस्थी की वेदी पर' जिबह होती औरत का दस्तावेज तो हृदय पर अंकित ही हो जाता है-

"गृहस्थी की वेदी पर
जब कोई औरत होती है शहीद
निखरता है घर का रंग
हर सफल पुरुष के पीछे
कोई औरत
खुद अपने हाथों
होती है जिबह" [165]

'मुखौटे', 'बहुरुपिये', 'रिश्ते', 'सब', सच का मर्सिया गाते हैं -

"हम सिर्फ
सच की प्रशंसा में
लिखते हैं कसीदे
उन्हें नामपट्टो पर
स्वर्णिम अक्षरों में खुदवाकर
लटकाते हैं सलीब पर
और फिर उँचे स्वर में
गाते हैं।
सच का मर्सिया।" [166]

लेकिन इस अंधेरे में कविता सुबह की रोशनी लेकर आती है। उपर से अंधेरों को उजागर करती बारह कविताओ के उपरांत कवयित्री 'मंजु' हमें उजाले की ओर ले जाती है-

"बंद आँखो देखना। बिन बोले सुनना । रोम रोम महसूसना।"

नदी के दृष्टांत से विछिन्न होते सामाजिक जीवन में एकता की अनिवार्यता को प्रतीकात्मक रुप में प्रस्तुत करना एक बडी उपलब्धि है। प्रश्नों की व्याख्या में मंजु तार्किक प्रतिभा का प्रयोग करते हुए, सच को ढूँढने की आशा में चल देती है। उस सच से रु-ब-रु होने को उनका मन लालयित बना रहता है। जब लालसा मन में है, तब कहीं न कहीं तो

---

165) गुप्ता मंजु - रोशनी का दस्तावेज, पृ. भाग 1
166) वही, पृ. भाग 1

होगा वह सच इसी आशावादीता के साथ प्रथम भाग समाप्त होता है।

दूसरे भाग मे पूरा माहौल बदल जाता है, जिसमे अंधेरे का नामो निशान मिट जाता है। ऐसा लगता है जैसे कि हर सांझ को रोती हुई चकवी वास्तव में एक ऐसे देश में पहुँच जाती है जहाँ रैंन कबें नहिं होय (चल चकवा देश को जहाँ रैन कबै नहिं होय) 'अभ्युदय' को बाहो में उठाए जैसे चाँद पर पहुँच जाती है। वात्सल्य रस से ओत-प्रोत इन कविताओं की बाल-लीलाओं के वर्णन में सूर सागर सा छलकता दिखलाई देता है लेकिन दूसरी ओर यही नन्हा 'अभ्युदय' उन्हे ब्रह्म की भाषा समझता है, समझाता है, वेदमंत्रों की याद दिलाता है और अनहद नाद के ज्ञान तक ले जाता है। उतनी सुंदर नैसर्गिक भेट पाकर वे सब दीन दुनियाँ भूलकर समोहन की अवस्था में आ जाती है। उसी की ओर रह जाती है।

'अभ्युदय' के आगमन के बाद से अपनी ही पुत्री के मातृवत व्यवहार से वे अंचभित, विस्मित और आश्चर्यचकित रह जाती है-

"नन्हें चाँद को गोद में उठाए
तारों भरी रात सी
कितनी भरी भरी लगती है मेरी बेटी
कल तक जो फूल थी
तितली थी
आज भरी - पुरी वसुंधरा हो गई है।"[167]

दूसरी ओर माता मही होकर उनका अपना मातृत्व जैसे कई गुना बढकर उनके मन-मस्तिष्क पर ऐसे छा जाती है, जिस की कल्पना भी नहीं कर पाई होगी अभ्यु का हँसना-रोना मुँह खोलना, किलकारी मारना, सबकुछ क्षण बलदते सौदर्य से एक नूतन संसार की सृष्टि करता चलता है। यह संसार उनके समग्र अस्तित्व को समेटकर अपने में आत्मसात कर लेता है। रूप, रस, गंध, सब बालक की छोटी सी मुट्ठी में समा जाते है। फूल, तितलियाँ, चाँद तारे सारे उपमानों का उपमान बन जाता है वह।

सारी समस्याएँ, चिंताएँ भुलाकर उसका हँसना ही नहीं सोना जागना भी, चलना फिरना ही नहीं, रोना भी, उसका हिलना-डुलना, उसकी एक एक स्थिति, उसके शरीर के एक एक अंग की हरकत उनके लिए एक महोत्सव बन जाती है। दौहित्र के रूप में उनका लौटा हुआ बचपन, वर्षों से गहरी निराशाओं हृदय में बैठे, दबे हुए अवसाद से मुक्ति

167) गुप्ता मंजु - रोशनी का दस्तावेज, पृ. भाग 2

दिलाकर एक एक रोशनी की ओर ले जाता है जिसके इंद्रधनुषी रंगो में सराबोर होकर वे मीराँ की तरह दीवानी हो जाती है और मुट्ठी से रेत की तरह सरकती जिंदगी उनके आगोश में आ जाती है।

इसप्रकार अभी तक हिन्दी साहित्य में मातृत्व का वात्सल्य वर्णन ही किया गया था। मातामाही द्वारा दोहित्र को विषय बनाकर रचा गया बाल-लीला का यह प्रथम और अनूठा संग्रह है।

6.1.47 प्रभा खेतान :

'अहल्या' कवयित्री प्रभा खेतान का महत्वपूर्ण कविता संग्रह हैं । 'अहल्या' की कथा भारतीय पौराणिक कल्पना की अद्भूत सृष्टि है। कवयित्री प्रभा खेतान ने 'अहल्या' को केन्द्र में रखकर नारी की चिरन्तन पीड़ा को व्यक्त किया है। अपनी लम्बी कविता में उन्होंने 'नारी' के अभिशप्त जीवन की व्यथा का सीधा साक्षात्कार किया है।

कवयित्री की चिन्ता का विषय यह है कि नारी को पुरुष के चरणों में ही मुक्ति खोजनी पड़ी है-

"हाय, शाप ग्रस्ता ऋषि पत्नी
फिर भी खोजनी पड़ी तुम्हें मुक्ति
पुरुष के ही चरणों में
जागती रही अकेली
जागते रहे तारा मण्डल
लेकिन कब मिल पाई
नारी को मुक्ति
तुम्हारे पथराये मन से "[168]

लेकिन क्या आज भी वह मुक्त हो सकी है? मुक्ति किसी के देने से नहीं मिलती। उसके लिए पहले मरण का रहस्य जानना होता है। यदि नारी को मुक्त होना है तो उसे अपने को मिटाकर एक दूसरी नारी को 'एक सवथा नवीन अहल्या' को जन्म देना होगा।

"चाह और रोशनी के लिए
समझना होता है पहले
मरण का रहस्य

168) खेतान प्रभा - अहल्या, पृ. 54

समझना होता है

पुनर्जन्म के लिए

कैसे

रोज सुबह सूरज के साथ

जगमगाती है और भी कोई सफेद शान्त ज्योति

हृदय की प्रतीक्षा में।"[169]

इसीलिए कवयित्री अभिशप्त अहल्या का आह्वान मुक्ति की सही यात्रा के लिए करती है -

"आओ अहल्या !

चलें हम
अल्प से महत् को
करते हुए अति क्रान्त
सीमा को भूमि से
झेलें हम
जीवन की त्रासदी

परम चेतना की साक्षी, अहल्या तुम!"[170]

अहल्या की कथा दलित मानवता की चरम अभिव्यक्ति की कथा है। कवयित्री को विश्वास है कि अहल्या के जीवन की त्रासदी ही एक नये संसार की रचना कर रही है। सर्वथा नये आदमी को जन्म दे रही है। एक सर्वथा नवीन नारी का चेहरा अहल्या के पथराये जीवन के भीतर से उभर रहा है। निश्चय ही नये संसार की यह नवीन नारी सभी प्रकार के अवांछित बन्धनों से मुक्त शुद्ध मुक्त परम चेतना की साक्षी होगी।

6.1.48 कामिनी भटनागर :

'निजी गंध' की कवयित्री 'कामिनी भटनागर' का यह पहला कविता संग्रह है। इनकी कविताएँ अपने आस-पास का परिवेश और समाज में व्याप्त विषमता सबसे ज्यादा स्त्री जीवन के प्रश्न, पारिवारिक जीवन से सम्बन्धित हैं। इसके साथ ही कवयित्री ने पति पत्नी सम्बन्ध के अन्तर्विरोधों तथा विसंगतियों को चित्रीत करने का कोशिश की है।

'आजीवन कैद' कविता में इस कटु सत्य का चित्रण किया है कि शादी के कुछ वर्षों

169) खेतान प्रभा - अहल्या, पृ. 54
170) खेतान प्रभा-अहल्या, पृ. 54

बाद पति-पत्नी अच्छी तरह जानते हैं कि छूने से लेकर आवरण भेदने तक के सभी दरवाजे कितने असंगत हैं। जीवन को रंगीन बनाते हुए दोनों एक दूसरे को छलते हैं। एक सा मौसम जीते हुए भी अनजान रहते हैं। यह कितना कडुवा सत्य है कि घर एक होते हुए भी दोनों का आकाश अलग अलग रहता है-

"जीवन रंगीन है,
यह कह कर
एक-दूसरे छलते हैं।
एक-सा मौसम जीते हुए
कितने अनजान बने रहते हैं
उपेक्षा और ऊब से भरे हुए
हम दोषी नहीं ठहराते
किसी एक को
कितना भी एक रहें
अनजाने हट कर चल पड़ते हैं
कैसा कड़वा सच है कि
घर एक होते हुए
हम दोनों का आकाश
अलग अलग है
और अर्द्ध-अर्द्ध के समन्वय से बने
पूर्णत्व के पीछे
अपने अपने मन की सीमाओं में
आजीवन कैद काटने का दंड भोगते हैं।"[171]

यही सही है कि नारी अब अबला नहीं रह गयी है। वह पुरुष के समान ही सभी अधिकारों की हकदार है। प्रशासन, राजनीति, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में उसकी सक्रिय भागीदारी है फिर भी वह अनाचार, अत्याचार एवम् बलात्कार की शिकार बनती है। इस समाज में स्त्री को निन्दा ही सहनी पड़ती है। उसे कभी लात से मारा जाता है तो कभी पैरों तले रौंदा जाता है, कभी पानी में डुबा दिया जाता है, तो कभी तलाक दिया जाता है। जन्म

171) भटनागर कामिनी - निजीगंध, पृ. 19

लेते ही सिर्फ लड़की होने के कारण दफनाया जाता है। उसे पाप की हेतु मानते हुए तिरस्कार करके दूर रखा जाता है। अब नारी अपनी त्रासद स्थितियों से जरुर सचेत है। वह इसे तोड़ना चाहती है परन्तु वह बेबस एवम् असहाय है।

"अंधेरे से
उजाले की ओर बढना
उतना ही मुश्किल है
जितना कि दीवार पर पकड़ना।"[172]

नारी का जीवन बोतल में बंद कीड़ों सा है। उसे केवल लड़ना झगड़ना ही है नहीं तो उस बंद कीड़ों सा अन्दर अन्दर घुट घुट कर जीना है। परन्तु हमें इस भीषण स्थितियों में भी सुख से जीना है और इस स्थितियों में से बाहर निकलकर हमें एक नक्षत्र बनना है। सब की सुरक्षा करने के लिए एक साथ आना है।

6.1.49 मंजु 'महिमा' भटनागर :

'बोनसाई सम्वेदनाओं के सूरजमुखी' की कवयित्री मंजु 'महिमा' की यह प्रथम कृति है। इनकी कविता में स्त्री स्वतंत्र न रह पाने का क्षोभ है, उसके विवश होने की व्यथा है, उसे दहेज के लिए जिंदा जलाये जाने की गहन पीड़ा है। इनकी सारी रचनाओं में स्त्री जीवन के प्रश्नों की अभिव्यक्ति बडी सश्यक्तता से हुई हैं। 'कपड़ा नहीं' कविता में कवयित्री ने सारे जीवन की गहन व्यथा का चित्रण किया है। यह दु:ख एक दो दिन का नहीं है सारे जीवन का है इसे निकाल कर कहीं बक्से में नहीं रख सकती। प्रस्तुत पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं-

"दर्द है यह
जिन्दगी का
कपडा नहीं जो
समेटकर रख दूँ
अटैची में।"[173]

'सिमटे हुए दायरे' मे भी कवयित्री की दृष्टि यही है। इसी कारण सारा जीवन इसी व्यथा में जीना है इसमें स्वतंत्र न रह पाने का क्षोभ है -

"सिमटे हुए दायरे में

172) भटनागर कामिनी - निजीगंध, पृ. 10
173) भटनागर मंजुमहिमा- बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी पृ. 74

उम्र का सफर
चलेगा कब तक
कौन जाने।"[174]

आधुनिक चेतना से सम्पन्न कवयित्री ने विभिन्न प्रसंगों को लेकर इस सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया जो युगों से (अहिल्या, सीता) पतिव्रता का पालन करती आ रही है, अपितु आज की नारी, (सीता, अहिल्या, गांधारी) बनकर नहीं रहना चाहती क्योंकि अब तक नारी मर्यादाओं का पालन करती आ रही है, जिन मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा ने उसे सदैव ही भटकाया है। कवयित्री की यह चेतना पौराणिक कथाओं पर विश्वास नहीं' करती। आज के जीवन में व्याप्त विसंगत स्थितियों को मिटाना चाहती है-

"मैं सीता नहीं,
अहिल्या नहीं,
न ही गांधारी।
मैं तो हूँ केवल
वर्तमान नारी
अपनी अस्मिता
के साथ।"[175]

कवयित्री का दु:ख बहुत गहरा है। उनका मन इन सामाजिक स्थितियों से भर उठा है क्योंकि उन्हें कहीं भी तो स्त्री स्वतंत्रता की किरण नहीं दिखाई देती। कवयित्री भारतीय सभ्यता संस्कृति रीति-नीति को नकारती नहीं तो अगाध श्रद्धा भी रखती है। जिन परम्परागत रुढियों की शृंखलाओं में उसे बन्द रखा है इस जुल्म की लक्ष्मण रेखा को तोड़ना चाहती है। कवयित्री को आत्मविश्वास है 'तीर वह आग है जिससे दूषित धरती शुद्ध हो सकती है।' 'कन्दरा' में स्पष्ट किया हैं-

"कन्दील के सहारे
कर रही हूँ,
प्रयास
अंधेरे को
तोड़ने का।

174) भटनागर मंजु महिमा - बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी , पृ. 75
175) भटनागर मंजु महिमा - बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी, पृ. 47

जानती हूँ
यह भला
इतनी -सी
कन्दील से,
टुटेगा नहीं,
पर
इतना है विश्वास
कि जायेगा
चटख जरुर
और रोशनी की एक
किरण
फूट पड़ेगी
इस सघन अंध:कार में।"[176]

कवयित्री ने 'तड़क गई जिन्दगी' कविता में नारी जीवन के टूटती स्थितियों का बहुत गहरा चित्रण किया है। कवयित्री ने नारी के जीवन का दु:ख, उनकी परेशानियाँ, यातना आदि को अभिव्यक्त किया है। बेटी कहीं अपनी यादों के जरिए माँ की संघर्षमयी जिन्दगी से जीने का मंत्र सीखना चाहती है, तो कहीं प्रेम न पाने का दु:ख है, कहीं उदासी, तो कहीं सच्चे साथी न मिलने का पश्चाताप। 'ललक' कविता की प्रस्तुत पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"तुम
पति हो मेरे
साक्षात देवता समान
एक आदर्श पति
हर खूबी हैं तुम में
कोई कमी नहीं

---

176) भटनागर मंजु 'महिमा'- बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी , पृ 22

जिसे मैं नकार सकूँ
हर कर्तव्य तुम
बखूबी करते हो
लेकिन, काश। तुम
पति के साथ
प्रेमी भी रह पाते।"[177]

कवयित्री ने नारी मन की सही तस्वीर 'एक ही फर्क' कविता में उपस्थित की है।

"यही फर्क
कितना
कुछ कर जाता है
पा जाते हो
मेरा
सब कुछ
खो जाता है।"[178]

कवयित्री ने नारी जीवन की सामाजिक विसंगतियों का ही चित्रण नहीं किया तो नारी जीवन के वास्तविक जीवन का भी वर्णन किया है जिस समाज में उसे देवी मानकर उसकी पूजा की जाती थी, उसी समाज में उसकी स्थिति आखिर दयनीय क्यों। 'मनीप्लांट' कविता इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं। मंजु ने 'विजय पर्व' कविता में नारी स्वतंत्र न रह पाने की व्यथा का चित्रण किया है, उन्होंने स्पष्ट कहा है कि केवल एक रावण को मारने से क्या होगा। यहाँ तो अलग-अलग भेष लेकर बैठे हैं। नारी का शोषण कर रहे हैं उन्हें पहचानना असभ्भव हैं अपितु बदलना चाहिए और अपने शोषण, अन्याय के विरुद्ध तुम्हें लढना चाहिए। वे कहती है-

राम नहीं
बनना होगा
अर्जुन!
और
लड़ना होगा,

177) भटनागर मंजु 'महिमा'- बोनसाई संवेदनाओं के सूजरमुखी, पृ. 62
178) भटनागर मंजु 'महिमा'- बोनसाई संवेदनाओं के सूजरमुखी,, पृ. 02

अन्याय व

भ्रष्टाचार के

खिलाफ।"[179]

युगों से नारी उस परम्परागत रुढियों की शृंखलाओं में जकड़ी हुई है उसे उससे बाहर आना असम्भव है। कवयित्री में पीडा का अन्त स्त्रोत है, छिपी हुई वेदना का अव्यक्त अश्रू है लगता है जैसे फूलों की शैय्या पर कोई अदृश्य काँटे की त्रासदी जी रहा है। 'बिके हुए हाथ' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"बन्दूक

किसी समस्या का

हल

नहीं बन सकती

न ही

गोली

बन सकती

बीज धरती का।"[180]

कवयित्री का कहना है कि जिस देश में एकता की भावना थी, उसी देश में नारी की स्वतंत्र अस्तित्व की केवल बाते होती हैं। दोपहर की दहलीज, शर-शय्या, माँ का शाप, इन पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी का युगों से शोषण हो रहा है। यह सब सहन कर भी नारी पुरुष के प्रति त्याग, सेवा और उदार भवना की सेवा मूर्ति बनकर रह गयी है। कवयित्री का कहना है-

"त्याग और सेवा के

इन शब्दों को

कौन पहचानता है?

ये शब्द तो

इतिहास के पृष्ठों पर ही

अंकित रह गये हैं,

आज की पीढि,

---

179) भटनागर मंजु 'महिमा' बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी, पृ. 41

180) भटनागर मंजु 'महिमा' बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी , पृ. 38

इन्हें वही पढ लेती हैं।"[181]

कवयित्री ने अपनी कविताओं का प्रारंभ एक सहज आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति में किया है, जहाँ एक समाज है, पुरुष है। कवयित्री की निजी कुंठा एक दबाव विश्वासघात की चिन्ता से ग्रसित है। नारी की इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है कि वह अपने ही रूप में न जी पा रही है। कवयित्री कहती है नारी संघर्षशील है परन्तु पुरुष ने अपने दबाव में उसे दबा रखा है। समाज में पूरी तरह जहर फैला है। इसके पीछे जो कारण है वह चौखट के अंदर का संघर्ष है। 'मंजु महिमा' के नारी सम्बन्धी विचार, नारी की स्वतंत्रता और समाज में पुरुषों की तरह प्रतिष्ठा पाने की होड़ है।

6.1.50 शशि शर्मा :

कवयित्री शशि शर्मा का 'मौसम से कह दो' यह दूसरा कविता संग्रह है। कवयित्री ने स्त्री के गरिमामय अलग व्यक्तित्व उभारने की बेहद कोशिश की है। पुरुष हमेशा स्त्री को माँ, बहन, प्रेमिका या पत्नी जैसे सम्बधों के दायरे में देखने और मूल्यांकन करने का श्रम ही करता आया है। इससे बाहर उसके स्वतंत्र वजूद को पहचानने की जुर्रत कभी नहीं की। स्त्री-पुरुष रुपी सूरत को सूरज बनाती है। वैसे पुरुषत्व का आधार स्त्री है। स्त्री ही पुरुष को पुरुष की हैसियत प्रदान करती है।

'तुमने कहा' कविता में नारी जीवन की विवशताओं का मार्मिक चित्रण किया है। आज तक नारी पुरुषों की इशारों पर नाचती आयी है। उन्होंने जैसा कहा वैसा ही करती है। नारी ने उसका विरोध नहीं किया। पुरुषों ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को पतझर की तरह झाड़ दिया है। आज तक वह पतझरों के तरह वैसी ही है। वह फूली नहीं। नारी उन्हीं विवशताओं में जी रही है। वह उससे बाहर नहीं निकल सकी।

"तुमने कहा बारीश में भीगो
वह भीगी और
सिहर गई
तुमने कहा धूप में जलो
वह जली और
तप गई
तुमने कहा वसंत में फुलों

181) भटनागर मंजु 'महिमा'- बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी , पृ. 40

वह फुली और
गंधा गई
तुमने कहा पतझर में झड़ों
वह झड़ी और फिर
आज तक नहीं फूली।"[182]

कहीं-कहीं इनकी कविता में संघर्ष चेतना भी दिखाई देती है। अब नारी उन परम्परागत रुढियों का विरोध कर रही है। जिस कारण उन्हें सदैव ही भटकाया है। वे लक्ष्मण रेखा को लाँघकर बाहर आना चाहती है। इन चार दीवारियों में वह बंद रहना नहीं चाहती। अब नारी शोषण से मुक्त होना चाहती है इस शोषण से बाहर आने का इन्तजार नहीं करती। अपनी स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान देने के लिए वह जागृत हो गयी है। अब वह मुड़कर वापस नहीं आती। अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गयी है। संघर्ष करने के लिए तयार हैं-

"अब नहीं खींचने देगी तुम्हें
कोई रेखा
और नहीं करने देगी विवश
बाहर आने की
यह नहीं बनेगी इन्तजार करती
शिला तुम्हारे स्पर्श का
चलने दो उसे अपना मार्ग
पकड़ लेगी तुम्हारी गति
सहचरी बना।"[183]

इसके साथ ही कवयित्री ने अपनी कविता में वर्तमान समाज की ओर संकेत करते हुए कहा है आज के वर्तमान समाज की सबसे बड़ी विडम्बना, मानवीय सम्बन्धों की है। मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन गया है। किसी का दु:ख या किसी का सुख से काई लेना देना नहीं है। यह हमारे समाज की विडम्बना है। मौत भी उनके लिए एक घूटन बन गयी है। इससे अधिक विडम्बना और क्या हो सकती है-

"मौत अब एक दर्द नहीं
घटना बन गई

182) शर्मा शशि - मौसम से कह दो, पृ 31
183) शर्मा शशि - मौसम से कह दो, पृ. 27

बड़ा अजीब लगता है

आदमी आदमी के बीच

करते रिश्तों का खुदगर्ज हो जाना।"[184]

कवयित्री ने प्रकृति-चित्रण के माध्यम से आज की सबसे बड़ी विड़म्बना मनुष्य मनुष्य से कटता जा रहा है प्रकृति, समाज और उससे भी अधिक अपने प्रति अहसासों का धीरे धीरे मरते चले जाना।

"मौसम से कह दो

दस्तक देकर आए

उसका अचानक दबे पांव

बिल्ली-सा आंगन में चले आना

एक दबाव-सा लगता है।

कबूतरी मन पर, मौसम से कह दो।"[185]

आज मानवीय सम्बन्धों एवम् जीवन की अस्मिता को एक नयी पहचान और व्याख्या की आवश्यकता है। 'कींकर' कविता की पक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं-

"तुम तो कींकर हो

पानी दो न दो

छाया दो न दो

अतृप्त इच्छाओं सी

बढती ही जाओगी।[186]

इस कविता में कवयित्री ने अनेक प्रश्नों को उठाया है। इस व्यवस्था में जिनका उत्तर केवल खामोशी है।

इनकी कविताओं की मूल संवेदना मुक्त जीवन जीने की तड़प और स्त्री स्वतंत्रता की कामना है। आपसी सम्बन्धों के बीच दरार का या उनकी दूरी का बोध ही अधिक है।

6.1.51 मणिका मोहिनी :

कवयित्री मणिका मोहिनी का 'मेरा मरना' कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है। मणिका में आक्रोश की मात्रा आश्चर्य ढंग से सीमित और संयत मात्रा में मिलती है।

184) शर्मा शशि- मौसम से कह दो, पृ. 42

185) शर्मा शशि - मौसम से कह दो, पृ. 37

186) शर्मा शशि - मौसम से कह दो ,पृ. 45

मणिका ने युगीन परिवेश को देखकर जहाँ भी असंतोष प्रकट किया है वहाँ पर यह आक्रोश स्वत: उनके काव्यात्मक सन्दर्भो के साथ जुड जाता है। आक्रोश को अपनाते समय मणिका अनावश्यक रूप से प्रतिबद्ध नहीं रही हैं। और यह बात उनके काव्यात्मक सन्दर्भों के पक्ष में जाती है। वह हमेशा मानवीय पक्षों पर घ्यान देती है। धुमिल के बाद मणिका मोहिनी ही वह अकविता की दूसरी रचनाकार है जो शहरी संवेदना को मानवीय संदर्भो के आलोक में लताड़ सकी हैं कवयित्री कहती है-

"आज मेरे मन में
इस नई सभ्यता के नाम से
उबकाई आती है
और मैं सोचती हूँ
हम गंवार क्यों न हुए।"[187]

निम्न पंक्तियों में मणिका ने यह सोच दिया है कि विकृतियों के कुरुप चेहरे कुण्ठाओं के चिडचिडे स्वर ममत्व और प्यार की प्यासी पुकारें ज्यादा देर तक नहीं रुकेंगी।

"बासीपन लिए हुए जिंदगी का पाथेय
चिडचिडाहट से बुझे हुए स्वर
नफरत से भीगे हुए रिश्ते
वे समय पनप उठनेवाले उपेक्षा भरे स्वप्न
ये सब और अधिक
झूठे आश्वासन की बंजर भूमि में अंकुरित नहीं होंगे।"[188]

कवयित्री को ओढी हुई सभ्यता और छद्म आधुनिकता के प्रति नफरत है, वे कहती हैं -

"हमारे सभ्य मुखौटों के भीतर से
रोज एक शैतान चीखता है
इतिहास ग्रथों में लिखे हुए
आदिम जंगली पशुत्ववादी
मानवता की भौतिक
प्रगति के नाम पर हम अधिक

187) मोहिनी माणिक - मेरा मरना, पृ. 11
188) मोहिनी माणिका - मेरा मरना पृ. 17

आधुनिक होने का गर्व करते हैं।"[189]

यह सामाजिक विड़म्बना है आज के समाज की जहाँ पर नारी गोश्त है तथा पुरुष खरीददार। आज हर व्यक्ति बिकने के लिए तैयार है उसकी बोली आज समाज में लग रही है।

कवयित्री यह जानती है कि कलम लेकर अन्याय के विरोध में लड़ा नहीं जा सकता। अनिश्चय की स्थिति जब बराबर बनी है तो हम अपने को कब तक भुलावे में रख सकते हैं। तब वह सफेद झूठ को ललकारती है-

"मैं चाहूँ तो क्या कुछ नहीं कर दूँ
तुमने मेरे सामर्थ्य को चुनौती दी है
अब देखूगी मैं
एक बिल-बिलाते हुए कीड़े का
किसी आड में छुपने का प्रयास
और चुल्लू भर पानी
में डूब मरने की
तीव्राकांक्षा।"[190]

मणिका का यह आक्रोश किसी विशेष सम्बन्ध या सन्दर्भ को व्यंजित करता है साथ ही वह परम्परा के प्रति भी बहुत उदार नहीं हैं।

"तुम्हारे चेहरे से
सभ्यता का मुखौटा उतरा
कीचड़ में उछाल दूँ
तुम्हें नंगा कर
तुम्हारे सफेद कपडों को
चौराहे पर टांग दूँ।"[191]

उक्त कविताओं में आक्रोश के साथ-साथ प्रलाप भी है। मणिका अपने देश को गरीब नहीं मानती। कारण इस देश का गरीब देश का प्रतिनिधि हैं ही नहीं -

"देश के आम आदमी

189) मोहिनी माणिका - मेरा मरना, पृ 38
190) मोहिनी माणिका - मेरा मरना, पृ. 70
191) मोहिनी मणिका - मेरा मरना, पृ. 76

गरीब सिर्फ तुम हो

देश नहीं

क्योंकि तुम नहीं जानते

पैसा कहाँ से आता है? देश जानता है

पैसे का आना और जाना।"[192]

देश खर्चीले आयोजन करता है। उसे गरीबों की चिन्ता नहीं है। इसीलिए गरीबों ने देश से यह उम्मीद भी नहीं लगानी चाहिए कि उनके हालात बदल सकते हैं।

"गांवों से भागकर शहर आए लोग। पैसा कमाते हैं या अपमान। बेहतर रहते हैं या बदतर। मरी हुई जिंदगी जीते हैं या जिंदा मौत। इन प्रश्नों के पचड़े में पड़े बिना । फैक्टरियों को उठाकर रोंप दो। गांव की धरती पर। उद्योगों के बीन छितरा दो खेतों में। लेकिन सबसे पहले मुक्ति पानी है। अकर्मण्यता से । अदूरदर्शिता से। और अनपढता से।"[193]

किताबी ज्ञान और फाईलों के ज्ञान के जरिये जीवन का काव्यशास्त्र या व्याकरण नहीं गढा जा सकता और इसीलिए जहाँ एक ओर समाज के प्रति आक्रोश है वहीं दूसरी ओर अपने पर भी कम आक्रोश नहीं है। मणिका मोहिनी जानती है कि विश्वास की दीवार भी सीलन भरी है।

6.1.52 निशा निशांत :

'पगड़ण्डी का सफर' निशा निशांत का पहला काव्य संग्रह है (1994) इनकी कविताएँ अपने आसपास का परिवेश परिवार और समाज के बदलते मूल्यों, बदलते माहौल जीवन की आपाधापी की भागदौड पर चोट करती है। इनमें सार्थक जीवन जीने की तलाश है। इनमें प्रगतिशीलता का स्वर है, सम्बन्धों के लगातार ठण्डे होने का अहसास है, समकालीन जीवन की वास्तविकताएँ और सबसे ज्यादा स्त्री जीवन के प्रश्न, आकुलता एवम् परेशानियाँ है। कवयित्री ने स्त्री जीवन की विसंगतियों की अभिव्यक्ति बड़ी प्रभावशाली ढंग से की है। कवयित्री को जीवन की परेशानियाँ कई बार खिन्न और उदास बना देती है। लेकिन जीवन की इच्छा उन्हे संघर्ष के लिए निरन्तर प्रेरित करती है। 'जीवन : कुछ आयाम' कविता में कवयित्री ने खुद सूरज बनकर स्वयम् प्रभात बनने की परिकल्पना की है, स्वालंबन और दुनिया को प्रकाश बाँटने की इच्छा की है।

---

192) मोहिनी मणिका - मेरा मरना, पृ. 32

193) वहीं पृ.35

"राह किस की देखता तू
किसकी जोहता तू बाट
अपना सूरज
खुद ही बन
खुद ही बन
अपना प्रभात।"[194]

एक अन्य कविता 'पथिक ' में भी उनकी दृष्टि यही है इसलिए वे अनजान ड़गर के सफर में बिना उदास हुई छांव की तलाश तथा अच्छे साथी पाने की आशा से आगे बढने की बात कहती है -

" पथिक
न थक चलना होगा
अनजान डगर है
उदास न हो
कहीं तो मिलेगी छाँव
कहीं तो कोई अपना होगा।"[195]

आधुनिक चेतना से सम्पन्न कवयित्री राम कथा के विभन्न उज्ज्वल प्रसंगो को लेकर अनेक प्रश्न करती है और मर्यादा पुरुषोत्तम राम को प्रश्नों के कटघरे में खड़ा कर उत्तर ही नहीं माँगती, परन्तु उन्हें आज के जीवन की वास्तविकताओं से सचेत कर चुनौती देती है -

"आज का युग
उस युग से
अधिक व्यथित और विघटित है।
आज मानव - जाति
दु:खों से ग्रस्त है
भयावह वातावरण से ग्रस्त है
पौराणिक बातों में मुझे तो विश्वास
नहीं
तुम

194) निशांत निशा - पगडंण्डी का सफर, पृ. 37
195) निशांत निशा - पगडण्डी का सफर, पृ. 27

इस युग में लो अवतार लो जाने।

फिर से।

सबको एक सूत्र में बांधो तो मानें।"[196]

कवयित्री की यह संवेदना पौराणिक कथाओं पर विश्वास नहीं करती तो यह चेतना तर्क पर आधारित है। आज के जीवन में व्याप्त व्यथा को और विघटन को मिटाने के लिए राम को पुन: अवतार लेने की चुनौती देती है। कवयित्री का मन वर्तमान परिवेश से भर उठा है, वह आज टुकड़ों में जीने की व्यथा को उभरती हुई कहती है -

"अपनी अपनी चिन्ताएँ

अपने-अपने ड़र हैं।

अपनी-अपनी राहें

अपने अपने सफर हैं।

एक ही छत के नीचे रहते हैं

फिर भी

सबको अपने-अपने घर हैं।"[197]

कवयित्री की व्यथा बहुत गहरी है। उनका मन वर्तमान समाज से भर उठा है ; क्योंकि उन्हें कहीं भी कोई आशा की किरण नहीं दिखाई देती। मूल्यों के टूटने से सारा समाज ही बदल गया है - 'आज का सूरज' कविता में वह कहती है-

"झाँकती हूँ हर एक की आँखों में कि

कहीं पा सकूँ नेह का कोई सूत्र।

देखती हूँ व्यस्त है सभी

भैतिकवाद की अंधी दौड़ में,

और चुपचाप कर लेती हूँ बन्द अपनी

आँखें।"[198]

कवयित्री निशा की 'हैरानियत' कविता जीवन का वास्तविकता और आपाधापी की इस दौड़ में आदमी की टूटती स्थिति का गहरा साक्षात्कार करती है -

"आदमी नहीं रहा आदमी,

---

196) निशांत निशा - पगडण्डी का सफर, पृ. 60

197) निशांत निश - पगडण्डी का सफर , पृ. 35

198) वही , पृ. 50

अनिश्चित - सा है सब कुछ

सबके लिए

फिर

तू ही क्यों हैरान है।"[199]

'तू ही क्यों हैरान है', इसमें कवयित्री निशा की हैरानी समझी जा सकती है।

इस संग्रह की ज्यादातर कविताएँ नारी चेतना से परिपूर्ण हैं। कवयित्री ने अपने यह अनुभव किसी राजनीतिकता से प्रेरित होकर नहीं लिखे तो उनसे परिचालित होकर नारी का जीवन अभावों, उनकी आकुलताओं, यातनाओं, प्रश्नों, एवम् परेशानियों आदि को अभिव्यक्ति दी है ा कहीं माँ का संघर्ष है जो घर बनाये रखने के लिए दिन रात मेहनत करती है तो कहीं ममतामयी माँ की आँखे प्रतीक्षा से परेशान हैं, कहीं बेटी अपनी यादों के जरिए माँ की संघर्षमयी जिन्दगी से जीने का मंत्र सीखना चाहती है, बचपन के जड़ होते जाने का संकट है तो कहीं अकेलापन परेशान करता है। कहीं प्रेम न पानें का दु:ख है तो कहीं उदासी कहीं सच्चे साथी न मिलने का पश्चाताप। कवयित्री ने स्त्री मन के प्रश्नों की नयी तस्वीर ही यहाँ उपस्थित की है।

"इस संदर्भ में। याद है मुझे । मेरा बचपन ।

अगर तुम जान पाती । 'प्रतीक्षा' ।"[200]

ये कविताएँ संदर्भित की जा सकती है।

6.1.53 पुष्पा राही :

'एक युग के बाद' कवयित्री पुष्पा राही की काव्य यात्रा का पहला पड़ाव है, जो उसकी सृजनात्मक संभावना का एक नया विश्वास जगाता है। उनकी कविताएँ अपने आस-पास परिवेश और समाज के बदलते मानव मूल्यों से अपना रूप ग्रहण करती है। इस संग्रह की कविताओं में सुख-दु:ख, आशा-निराशा, अन्ध:कार प्रकाश, संयोग-वियोग, व्यथा-वेदना आदि इसकी कई कविता पढते समय जीवन के अनेक तथ्य आँखों के सामने दिखाई देते हैं। ये कविताएँ समकालीन जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण है। स्वयम् कवयित्री ने अपनी भूमिका में लिखा है- "मेरे गीतों में और कुछ चाहे हो न हो ओढी हुई अनुभूतियाँ और आरोपित मन:स्थितियाँ नहीं हैं। मैंने जो कुछ लिखा है पूरे मन और आस्था

---

199) निशांत निश - पगडण्डी का सफर, पृ. 52

200) निशांत निशा : पगडण्डी का सफर, पृ. 25

के साथ लिखा है।"[201]

कवयित्री ने आत्मविश्वास और दृढता के साथ अपनी कविताओं को अनुभूतियों और मन:स्थिति के स्तर पर मौलिक कहा है। बहुत लम्बे समय तक अपनी कविता को मुद्रण यंत्र तक न पहुँचाने का कारण आलस्य, संकोच और लापरवाही हैं। इसे कवयित्री ने अपनी पहली कविता 'एक युग के बाद' में इसका चित्रण किया है-

"एक युग के बाद यह उन्माद जागा
कुछ समय तो साथ इनके झूम लूँ मैं।
घोल दे जब तक न कटुता जहर इनमें
इन मधुर अनुभूतियों को चूम लूँ मैं।"[202]

कवयित्री समाज में जीवन जीनेवाले मनुष्य की परेशानियों को देखकर उब चुकी है। यह मनुष्य भीतर-बाहर घिरे हुए सन्नाटे, जीवन की अनन्त व्यस्तताएँ और धरती पर धुँए का काला बादल होने पर भी गीत का मादक पुकार कान में आ ही जाती है। यह मनुष्य जीवन की नियति का शाप है। इसे प्रत्येक मनुष्य को झेलना पड़ता है। इससे कोई भी बच नहीं सकता। नियति के शाप को हम टाल नहीं सकते। वे कहती है-

"व्यर्थ ही उपलब्धियों के द्वार हम ने थपथपाए,
सफलता के शिखर तो क्या चरण तक भी धन पाए।"[203]

इस संग्रह की कई कविताओं में आशा-निराशा, सुख-दु:ख, व्यथा-वेदना, मिथ्या-मोह, दंभ, पाखंड आदि का मार्मिक चित्रण दिखाई देता है। कब तक, नहीं चाहिए, कभी - कभी हँसलों आदि कविता इस संदर्भ में देखी जा सकती है- 'नहीं चाहिए' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती हैं -

"कुंठित इच्छाओं का रोग
सपनों की छाया का भोग,
अपने ही मन का विस्मरण
नहीं चाहिए।"[204]

इनकी कुछ कविता इतनी मार्मिक और हृदयस्पर्शी हैं कि उन्हें पढते समय जीवन के अनेक तथ्य आँखों के सामने दृष्टिगोचर होते हैं। कवयित्री अपने आस-पास का परिवेश

201) राही पुष्पा - एक युग के बाद, पृ. प्लैप पर
202) राही पुष्पा - एक युग के बाद, पृ. 19
203) वही , पृ. 28
204) वही , पृ. 24

और अनुभूतियों के आधार पर लिखना चाहती है। उन्हें दूसरों के अनुभूतियों पर कहने की रुची नहीं है। 'क्यों लिखूँ' इस कविता में स्पष्ट किया है -

"मौलिकता है पास
तो अनुकरण क्यों?
अनुभव ताने हैं
तो संस्मरण क्यों?
दिखाए गए औरों के
आदर्शों पर क्यों टिकूँ?
मैं उधार की कविता क्यों लिखूँ?"[205]

अनुभव हमेशा प्रसन्नता का मार्ग नहीं खोलते तो कभी-कभी नैराश्य और जडता को सघन बना देते हैं। कवयित्री के सामने वर्तमान सामाजिक विषमता के अनेक पक्ष हैं। आज के जीवन में दिनों-दिन विकसित महानगरीय सभ्यता के अभिशापों के प्रति कवयित्री की सजगता देखी जा सकती है। 'पथराए अनुभव' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"दिन-भर-दफ्तर, सड़क गली
बस की भीड़ में जीकर
रात बीतती थकन और बेचैनी
की सूली पर।"[206]

कवयित्री ने इन पंक्तियों में महानगरीय जीवन के खोखलेपन को उजागर किया है। जीवन की भागमभाग और अनेक समस्याओं से घिरे मानव के लिए स्वाभाविक रूप से नींद लेना भी असम्भव हो गया है। इनकी कविता में नैराश्य की भावना तो है परन्तु वह नैराश्य कुंठाजनित न होकर आधुनिक युग की मूल्यहीन जीवन-दृष्टि का है। अब कवयित्री को अपना जीवन एक भारी ग्रंथों की तरह लग रहा है जिसके पृष्ठ खोलना भी हमारे लिए असम्भव है। कवयित्री ने कुहरे भरे प्रभात के व्याज से अपनी मन:स्थिति का इस कविता में सुन्दर चित्रण किया है। यह कविता प्रकृति से जुडी हुई है।

नारी का जीवन पतझड़ के समान है। न कभी मौसम बदलता है, न वातावरण । अब तक हमनें जितना भी जिया है वह शोषण मुक्त नहीं। उन्हें जीतना भी सुख-दु:ख मिला

205) राही पुष्पा - एक युग के बाद, पृ. 79
206) राही पुष्पा - एक युग के बाद, पृ. 36

वह अपने ढंग से नहीं। नारी का जीवन झरते हुए पत्तों की तरह है। वे अपने मन से कभी जीती ही नहीं। 'बेबसी' कविता इस संदर्भ में देखी जा सकती है।

समाज में प्रचलित पुरुष प्रधान संस्कृति होने के कारण प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी पुरुषों के मुट्ठी में बंद थी। मुट्ठी में बंद रेत की तरह उन्होंने अपना जीवन जी लिया है। इसी शोषण से मुक्त होने के लिए मैं कहाँ शरण जाऊँ किसे कहूँ अपनों ने ही मुझे कहीं का नहीं छोड़ा।

6.1.54 शीला गुजराल :

'बर्फ के चेहरे' के आवरण पृष्ठ पर दी गयी सूचना के अनुसार कवयित्री शीला के अँग्रेजी, पंजाबी और हिन्दी में पन्द्रह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'बर्फ के चेहरे' उनका पहला कविता संग्रह है। सबसे उल्लेखनींय विशेषता यह है कि इस संग्रह की सारी कविताएँ किसी न किसी रूप में प्रकृति से संबंधित हैं। शीला विदेशों में खूब घूमी है। अत: विदेशी प्राकृतिक दृश्यों की प्रचुरता उनकी कविताओं में दृष्टिगत होती है। पर कवयित्री ने अनेक जगह उनके माध्यम से जगी प्रतिक्रियाओं के अंकन में मानवीय सोच और प्रतीकों का ही उपयोग किया है। विदेशी प्रकृति और भारतीय मन का यह मेल अच्छा प्रभाव पैदा करता है -

"बर्फ की फुही जब धीमे से धरा को छूती है
तब दिखता है- मानो सैंकड़ों मील बैठी
बन्नों के कंगन की झंकार
खनकती मचलती, उभरती, अनिल की
बगिया में बैठ
मेरे कानों में अमृत रस घोलने आ
पहुँची हो।"[207]

कवयित्री ने प्रकृति-चित्रण के लिए ठोस बिम्बों का भी अधिक प्रयोग किया है। 'हिमपात' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"एक सुबह मैंने देखा
नटखट आँगन
भीगी बिल्ली की तरह

207) गुजराल शीला - बर्फ के चेहरे ,पृ. 9

श्वेत ओढनी की

कई परतों में लिपटा

बेसुध पड़ा था

मीठी निंद में मगन

सपनों की दुनिया में खोया

न जाने कब तक सोया रहा।"[208]

यहाँ एक उल्लेखनींय बात है कि कवयित्री ने प्रकृति चित्रण में काम, हिंसा और बलात्कार के बिम्बों का अधिक प्रयोग किया है। यह पुरानी कविता के कोमल, कमनीय और गुदगुदाने वाले बिम्बों की प्रतिक्रिया है ।

"मदिर मस्त पवन

पन्तियों की ओढनी को पीछे धकेलता

फूलों के लहँगो की झालर उघाड़ता

नटखट नृत्य भंगिमा दिखाता कपट मुस्कान

से पंखुडियों का हृदय फँसा

चुपके से रोशनदान की राह

उन्हें बैठक में ले आया

वहाँ घंटों जी भर मौज मना

श्लथ प्रेमिकाओं को वहीं सुला

रातों-रात व्यभिचारी पवन

दूसरे शिकार की खोज में निकल पड़ा

सुबह किबाड खोलते ही मैंने देखा

चारों ओर फैला

शवअम्बार।"[209]

इनकी अनेक कविताओं में हिंसक बिम्बों का चित्रण दृष्टिगत होता है। हत्यारा, ड़कैती, बाढ, प्रलयमेघ आदि कविताएँ उल्लेखनींय हैं। कहीं कहीं कवयित्री ने प्रकृति दृश्यों के माध्यम से अपनी ईमानदारी सच्ची प्रतिक्रियांओं की अच्छी अभिव्यक्ति की है ।

208) गुजराल शीला - बर्फ के चेहरे , पृ. 13

209) गुजराल शीला - बर्फ के चेहरे, पृ. 41

6.1.55 शशि सहगल :

'टुकड़ा-टुकड़ा वक्त' की कवयित्री शशि सहगल का यह दूसरा संग्रह है(1977)। यह कवयित्री आन्तरिक और बाह्य धरातलों पर गतिशील हैं। 'सैलाब' कविता में कवयित्री ने नारी जीवन के पुराने तस्वीर को उजागर करके आज की वर्तमान नारी अपनी स्वतंत्र अस्तित्व की पहचान दे रही है। युगों -युगों से नारी पर हुए अन्याय, अत्याचार, शोषण, यह सब देखकर कवयित्री मन ही मन उदास हो गयी है -

"उम्र के इस पड़ाव पर खड़ी
मैं पलटती हूँ पूराने पन्ने
तो तस्वीरों के रंगों में आया फर्क
वक्त का बदलाव समझता है मुझे
इधर की तस्वीरों की पृष्ठभूमि में
सहमें हुए रंगों का सैलाब है
पीला, सलेटी और काला रंग
मुझे भीतर तक उदास कर जाता है।"[210]

कवयित्री ने वर्तमान जीवन की सभी सामाजिक समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है। आज भी लडकी, माँ, बाप को एक बोझ की तरह लगती है केवल एक बोझ ही नहीं तो पूर्वजन्म का पाप समझते हैं। कभी-कभी जन्म देनेवाली माँ को भी घर में ताने सुनने पड़ते हैं। इतना सब होने के बावजूद भी यह माँ अपने बच्चे के लिए भगवान को दुँवा मांगती है। आज भी हमारा यह समाज उसी परम्परागत अंधविश्वासों, खोखली मान्यताओं में जी रहा है -

"कुछ भी नहीं भूला मुझे
आज, जब तुम मेरे साथ नहीं हो
कैसे दिलाऊँ तुम्हारे उन बौने हितौषियों को
जो आज भी सड़ रहे हैं
अपनी अंधी, खोखली और जर्जर मान्यताओं
के गहर में।"[211]

---

210) सहगल शशि- टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 11
211) सहगल शशि- टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 17

इस विषम परिस्थिति को बदलने के लिए नारी अपने अन्दर ही अन्दर लड़ रही है। इसी परिस्थितियों में जीना उसे असंभव लग रहा है। वह विवश हो गयी है इस विषमता के साथ लढना भी बेकार है। स्थिति जैसी थी वैसी ही है उसमें कुछ भी परिवर्तन नहीं। 'जन्मदिवस', 'तकलीफ', कविता इसी संदर्भ में देखी जा सकती है-

"खुद से जुझते हुए, तुम्हें
कई बार देखा है मैंने
कभी विवश और कभी निरुपाय
तो कभी आवेग और आक्रोशी मुद्रा में
पर, किसी भी तरह
परिस्थितियाँ नहीं बदली।"[212]

जिस तरह पतंग हवा के साथ आकाश मे उंची उडाने भरता है। इधर-उधर मंड़राता है और अपना अधिकार चलाता है। उसी तरह नारी भी अपने समाज में इधर-उधर ठोकरे खाती हुई फिरती है। उसे एक लावारिस पतंग की तरह छोड दिया। पतंग उँच्चे उड़कर हवा का रुख बदलने से नीचे गिरता है और अनजाने झकझोरों पर गिर जाता है हवा आने से फड़फड़ाता है। उसी तरह नारी भी चार दिवारियों में बंद है वह अधिकार पुन: प्राप्त करने के लिए वक्त का इन्तजार कर रही है -

"हवा का रुख बदलते ही, पतंग
धीरे - धीरे
अनचाहे झकझोरों से घिर जाती है
गिद्ध की चोंच - सी इठलाती दूसरी पतंगे।
छोड़ देती है उसे भटकने के लिए
महत् आकांक्षा, अब
लावारिस, कटी पतंग-सी
अटकी पेड़ में फडफडा रही है
तार होने का
इन्तजार कर रही है।"[213]

212) सहगल शशि- टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 20
213) सहगल शशि - टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 21

'नारी एक दृष्टिकोण' कविता में पारिवारिक सम्बन्धों का चित्रण किया है। नारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हो या ना हो वह अपने परिवारों से अलग नहीं रहना चाहती। उसके लिए परिवार ही सब कुछ है। हर एक स्त्री में माँ की ममता, पत्नी का प्यार, हमेशा जागृत रहता है। परिवार उसके लिए एक सीमा नहीं तो उपासना है। वे अपने घर को भगवान का मंदिर मानती है। इससे वह अलग नहीं होना चाहती-

"मन पर
विज्ञान, कला और साधना की परतें
कितनी ही गहरी क्यों न हों
पर इन सबके नीचे
गृहिणी, माता, पत्नी
हमेशा जागृत रहती है।"[214]

इन शोषण से नारी परेशान है परन्तु समाज में उसे रहना है और दिखाना है हम कितने खुश हैं। यह सब नाटक करने का किसी स्कूल, कॉलेज में पढाया नहीं जाता। वह चूप रहकर भी बहुत कुछ बोल सकती हैा मगर वह चूप है। जीवन के अनुभव उन्हें खूली किताब की तरह सब कुछ शिखा देते हैं। 'सबक', 'अभिष्ट' आदि कविताएँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है।

कवयित्री परम्परागत धार्मिक रुढियों का विरोध ही नहीं करती तो उसे तोड़ना चाहती है। 'राज' कविता में कवयित्री ने पारिवारिक सम्बन्धों का सुन्दर चित्रण किया है। परिवार में नारी को किस तरह से रहना चाहिए। इसका मार्मिक चित्रण किया है-

"मेरा घर, मेरी गिरस्ती
चलती है हँसती - हँसती
हँसने में है
कितना मजा
कभी इसे समझना न सजा
सजा मिले, समझो इनाम
इससे होगा तुम्हारा बड़ा नाम
अगर कभी तुम हँस ना सको

214) सहगल शशि- टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 23

लाख मुसीबत में जा फँसो
तब भी हँसते रहना यार
करना इस मुखौटे से
हमेशा प्यार।"[215]

समाज में रहना है तो इस शोषण से मुक्त होना चाहिए इस चार दीवारियों से बाहर आना जरुरी है। यहाँ कवयित्री ने नारी को संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है। तुम्हारी नजर जटायू पक्षी की चोंच की तरह होनी चाहिए। तुम कबूतर की तरह पींजरे में बंद रहना छोड़ दो उस पींजरे से मुक्त हो जाओं और अपने अस्तित्व की पहचान बनाने में लग जाओं। 'तलाश' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"इस शहर में जीने के लिए
आगे आने के लिए जरुरी है
गिद्ध सी पैंनी नजर
बगुले-सी मक्कारी
चील-सी होशियारी।"[216]

कवयित्री यहाँ समय के साथ बदलना चाहती हैं ।

6.1.56 सावित्री डागा :

'अपना अपना मोक्ष' कवयित्री सावित्री डागा का दूसरा कविता संग्रह है। इसकी कविताएँ अपने परिवेश और समाज के प्रति एक अशान्ति का स्वर है। मानवी मूल्यों का ऱ्हास, नारी जीवन की त्रासद स्थितियाँ, अशान्ति, आक्रोश का भाव उनकी कविता में हमें दृष्टिगत होता है। इसके साथ ही कहीं-कहीं संघर्ष चेतना भी दिखाई देती है। उनकी मूल चिन्ता मनुष्य के लिए बेहतर जिंदगी की तलाश हैं। उन्होंने दुनिया की सच्चाईयों को समझ ाने का प्रयत्न किया है। वे निराशावादी नहीं है- परन्तु सच्चाई को भुलना नहीं चाहती स्वयम् स्त्री होने के कारण उन्होंने जिंदगी को 'सदा बहार' के पौधे के रूप में देखा है जिसमें हर रोज दर्द का नया फूल खिलता है। वे मानती है कविता का सम्बन्ध वेदना से है और वेदना को हू-ब-हू कागज पर उतारा नहीं जा सकता। उसे समझने के लिए मन में गहरे उतरना पड़ता है।

'कब तलक' कविता में इसी वेदना को चुनौती देती हुई कहती है-

---

215) सहगल शशि- टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 41
216) सहगल शशि - टुकडा टुकडा वक्त, पृ. 45

"कब तलक
जिन्दगी तू मुझको पछाड़ेगी यूँ
मैंने मर-मर के भी
जीने की कसम खाई है।"[217]

कवयित्री की मूल चिन्ता मनुष्य के लिए बेहतर जिन्दगी की तलाश है। मनुष्य से कई चीजे अटूट रूप से जुड़ गयी है, जैसे धर्म, समाज राजनीति, अर्थ, संस्कृति आदि। यह सब चीजें मिलकर ही मनुष्य को हाड़-मांस का मनुष्य बनाती हैं। परन्तु जब इन चीजों में विकृत तत्त्व प्रवेश कर जाता हैं तब मनुष्य का अवमूल्यन होने लगता है। कवयित्री की अनेक कविताओं में यह चिन्ता दिखाई देती है। कवयित्री 'अर्थ सत्य-जगत् मिथ्यां' कविता में मूल्यों के ह्रास एवम् अर्थ केंन्द्रित सभ्यता पर कटाक्ष किया है -

"एक ओर
रोटी नहीं, छत नहीं, कपडा नहीं
मनुष्य के ढेर-ढेर हिलते कंकाल
दूसरी ओर
इसी भारत के लोग
इतने मालामाल
कि माल जो समाता नहीं
वही में ना बैंकों में
बंगलो में
ना महलों में।"[218]

कवयित्री ने आधुनिक मोक्ष के भिन्न-भिन्न रूप हमारे सामने रखी है। ईश्वर, धर्म, प्रेम, धन, पद, प्रतिष्ठा आदि के संदर्भ में कवयित्री ने सवाल किया है। मनुष्य का यह एकांगी सोच
कहाँ ले जाएगा-

"उस पुरातन मोक्ष को
वर्तमान सन्दर्भो में
नया अर्थ दिया गया

---

217) डागा सावित्री - अपना अपना मोक्ष , पृ. 44
218) डागा सावित्री - अपना अपना मोक्ष, पृ. 15

किसी महत् लक्ष्य
या ऊँचे आदर्शों
विचारों विश्वासों की मान-रक्षा के लिये
हँसते-हँसते फाँसी पर चढ जाने
यातनाएँ सहने
मानवी मूल्यों के लिए नि:स्वत्त्व हो जाने को
एक सच्चे मोक्ष का रुप स्वीकार किया।"[219]

इस संग्रह की कई कविताएँ नारी जीवन को केंन्द्र में रखकर लिखी गई कविताएँ हैं जो नारी अस्तिमा, उसके वर्चस्व और वर्तमान में मुक्त त्रासद स्थितियों की ओर भी संकेत करती है। संग्रह की 'नारी', 'नारी की आत्मकहानी', 'मीराँ', 'फाटक के अंदर:बाहर' आदि कविताएँ इससे सम्बधित हैं।

6.1.57 सुशीला कपूर :

'नारी-नारायणी' की कवयित्री सुशीला कपूर की यह सातवीं कृति है। यह कृति 1999 ई. के 'पवैया' पुरस्कार से पुरस्कृत है। इसमें सैंतालिस कविताएँ संकलित की गई है। इस संग्रह की ज्यादातर कविताएँ नारी से सम्बन्धित हैं।

कवयित्री कहती है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' जहाँ पिता से सहस्त्र गुणी श्रेष्ठ माता की मान्यता है। परन्तु अभी भी नारी दीन-हीन ही है। कवयित्रीने वर्तमान समाज में नारी जीवन से जुड़ी सभी समस्याओं पर आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

कवयित्री ने नारी के प्रति हो रहे सभी प्रकार के उत्पीड़न, शोषण और अन्याय, अत्याचार का मार्मिक चित्रण किया है। चाहे वह कन्या भ्रूण की हत्या हो या कन्या जन्म, या बेटी के दहेज से सम्बन्धित हो, विधवा, वृद्धा के निष्कासन से सम्बन्धित हो। कवयित्री परम्परागत, बन्धनों, आत्मपीड़न और दासताँ से नारी को मुक्त करना चाहती है। नारी सदियों से पुरुष की उन्हीं मर्यादाओं का पालन करती आयी है जिन मर्यादा की लक्ष्मण रेखा ने उसे सदैव ही भटकाया है।

"गुण कर्म कारनामों से, अब रच गई कहानी।
कर सिद्ध स्वयम् बलबूते, हैं कम न किसी से नारी।"[220]

---

219) डागा सावित्री - अपना अपना मोक्ष , पृ. 26
220) कपूर सुशीला - नारी नारायणी, पृ. 6,10

कवयित्री वर्तमान समाज में नारी जीवन से जुड़ी उन समस्याओं का उल्लेख करती है जो शहरी एवम् ग्रामीण भागों में दिखाई दे रहा है। जब कोई माँ अपनी बेटी को जन्म देती है तो वह स्वयम् उसे तिरस्कार की भावना से देखती है, और पूर्वजन्म का पाप समझती है। क्योंकि दहेज के कारण नारी की हत्या की जाती है, उसे जलाया जाता है। कवयित्री इन्हीं सोच को मिटाना चाहती है। नारी की दीन-हीन दशा, दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का चित्रण कवयित्री ने 'नारीनामा' 'पराए मन की पीड़ा', 'कटे पर ऊँची उड़ान', 'आहुत्ति की लीक', 'दबी आवाज की गूँज', 'बोझ' आदि कविताओं में की है । बाल विवाह, बाल विधवा समस्या, नारी का मूक रुदन आदि समाज की बढती हुई सभी समस्या का कवयित्री ने खुलकर विरोध किया है। कवयित्री ने विधवा और परित्यक्ता नारी का मार्मिक चित्रण किया है।

कवयित्री ने अपनी कविता में समाज में प्रचलित परम्परागत रुढियों का विरोध किया है। युगों युगों का मौन संकोच छोडकर नारी को खुद का उद्धार खुद ही करना होगा । प्रस्तुत पंक्तियाँ इस संदर्भ मे देखी जा सकती हैं-

"पर अब समय आ गया है
युगों का मौंन, संकोच छोड,
नारी को स्वयम् उठना है
इसके प्रतिकार का बीड़ा,
दीना से दुर्गा, अबला से अंबिका बन,
लेनी है क्रुर आकांक्षा-महिषासुर से टक्कर,
पाना है इस छोर अन्याय शोषण से पार,
स्वयम् करना होगा, आत्मोद्धार ।[221]

इनकी कई कविताओंमें नारी जीवन की परेशानियों ने स्थान पाया है। नारी नौकरी करती हुई घर का काम करती है। उसके साथ ही परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल करती है। अपनी थकान को भूलकर वह मशीन की तरह व्यस्त रहती है। नारी को जीवन यापन करने के लिए नौकरी तो करनी ही पड़ती है उसे एक साथ दो नावों पर सँवारना है । इतना सब कुछ करने के पश्चात् भी नारी का जीवन पंख कटे पक्षी की उंची उडान-सा है । 'कटे पर, ऊँची उड़ान' कविता की पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

221) कपूर सुशीला - नारी नारायणी, पृ. 48

"घर बाहर दो नावों पर संग सवारी
नौकरी पेशा नारी जीवन को
और भी प्यासा,
आधा-अधूरा बना जाती है,
पर कटे पक्षी की उंची उड़ान सी।"[222]

परम्परागत रुढियों के बीच नारी बुरी तरह से जकडी हुई है। सती प्रथा, दहेजप्रथा, अग्नि दाह आदि समाज की बढती हुई बुराईयों का कवयित्री ने खुलकर विरोध किया है।

स्पष्ट है जहाँ इन कविताओं में आँसू बहानेवाली अभाव ग्रस्त नारी है, वहाँ वह नारायणी रुप भी ले सकती है। आँसू अभाव का प्रतीक है। जब स्त्री की कार्यशक्ति बढेगी तो वह समर्थ होकर अपने अभावों की पूर्ति कर सकेगी वही अभाव पूर्ति प्राप्ति की भावनाएँ नव निर्माण में सबल बन जायेगी। 'नारी नारायणी' की नारी, सीता, परित्यक्ता नारियाँ है। परन्तु वह कहीं कहीं कर्मठ स्वाभिमानी, स्वावलम्बी, आदर्श माँ हैं। समय के साथ वह देश-समाज की प्रगति में सार्थक भूमिका निभाती है । शहर एवम् ग्राम में संघर्षरत नारी की अवस्था, तन-मन की कसमसाहट, अस्मिता की तलाश का सजीव चित्रण इन कविताओं में स्पष्ट किया गया है।

कवयित्री कहती है कि नारी के बिना पुरुष सृष्टि की रचना नहीं कर सकता। नारी ही घर-परिवार का एक अच्छा-स्वरुप बनाती है। इसीलिए वैदिक काल में उसे महान माना गया। किन्तु धीरे -धीरे सब कुछ परिवर्तित होने लगा और नारी के प्रति लोगों की श्रद्धा भावना सिर्फ किताबों में सिमटकर रह गया।

6.1.58 पद्मा पाटील :

पद्मा पाटील मराठी प्रदेश की हिंदी कवयित्री है। इनका 'कादम्बिनी' कविता संग्रह और अनेक कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इनकी कविताओं में बहुरुपता और सम्वेदना का बहु-आयामी प्रसार है तथा कविताओं के अन्तर्गत प्रकृति-प्रेम, एवं सामाजिक भावों के संतुलन का प्रयास है साथ ही साथ 'स्व' की अनुभूति ज्यादातर दिखायी देती है किंतु यह अनुभूति अभिव्यक्त रूप में समष्टि के प्रति अपनी आभा अवलोकन करती है।

कवयित्री ने 'चाहत्' कविता के अन्तर्गत अपने मनोंभावों को व्यक्त किया है। उनकी इच्छा है कि नारी पूर्व परम्परानुसार अबला नहीं हैं ना ही उसे समझना चाहिए, वह सबला

---

222) कपूर सुशीला - नारी नारायणी, पृ. 61

है। आज वह जानती है कि घर और दुनिया में जिया कैसे जाता है। उनकी दृष्टि से -

"आज
नहीं है वह अबला
सबला बन
घर से दुनिया तक
विन्यास करेगा
अगर
हो जाय एख्राद निष्फल
फिर भी
है उनका भविष्य उज्ज्वला।"[223]

कवयित्री पद्मा कहती है कि यदि जीवन में सघर्ष करते हुए कोई कगार ढल भी जायें तो वास्तु का निर्माण होगा एक ऐसा वास्तु या एक ऐसा भविष्य जिसका श्रम निष्फल कभीं नहीं जायेगा। कवयित्री अपने कविताओं के माध्यम से साँस को रोककर तीक्ष्ण मेघा में जीवन समर का आह्वान करती हुई बिलकुल 'कादम्बिनी' सी कड़कती है।

यही कवयित्री आवेग और उपदेश की चौकट से निकलकर आँगन की सतह पर अपनी नानी माँ के शब्द एवं आँखों से दिखाये गये, कहे गये संस्कारों पर चलती हुई नजर आती है। उनकी ही शब्दों में -

"तुम्हारी आँखें
तुम्हारे शब्द
छा जाते हैं मन पर
सम्वेदनाओं को समेटकर
तुम्हारी याद
जीने का रास्ता
अपने आप आसान बना देती है...।"[224]

इन्हीं संस्कारों के कारण कवयित्री कहीं गम्भीर, कहीं वैचारिक, कहीं सामाजिक, कहीं मनोवैज्ञानिक तो कहीं प्राकृतिक धरातल को एक नए एवं सतर्क अंदाज को स्नेहमय ढंग से प्रस्तुत करती है। 'नानी माँ' के बताए हुए संस्कारों पर चलनेवाली कवयित्री 'संघर्ष'

223) पाटील पद्मा - कादम्बिनी, पृ. 18
224) पाटील पद्मा - कादम्बिनी, पृ. 20

कविता के अन्तर्गत शब्द को महत्त्व दिया है। शब्द ही संघर्ष का निर्माण करते हैं, वहीं कविता में होते हैं।

इसके साथ ही इस कविता में मनोभावों को भी दर्शाया है। कुछ सूक्ष्म संवेदनाओं का चित्रण इस कविता से हुआ है। 'शब्द' के संदर्भ में संघर्ष और संघर्ष ही जीवन है। कवयित्री के शब्दों में-

"शब्द ही जीवित रखते हैं मुझे
समय का अनवरत अथक चलना
संघर्ष सीखा रहा है जीना।"[225]

कवयित्री पद्मा पाटील की कविता के संबंध में डॉ. शिवकुमार मिश्र ने लिखा है कि- "इनकी कविताओं में मुझे निश्चयही एक उभरती हुई, ऐसी संवेदनशील कवि-प्रतिभा के दर्शन हुए हैं जिसमें अनुभूति और अभिव्यक्ति, दोनों स्तरों पर अपने को बराबर मांजते-निखारते रहने की एक इमानदार कोशिश और दृढ संकल्प का भाव है। मातृभाषा हिंदी न होने के बावजूद कवयित्री में हिंदी भाषा को उसकी पूरी रचनात्मक सामर्थ्य के साथ पाने की एक गहरी कशिश है।"[226]

दु:ख, असहय् पीडा, संघर्ष, असफलता आदि को कवयित्री जीवंतता का प्रमाण मानकर जीवन में संघर्ष करते रहने की चेतनावनी देती है-

"असहनीय
पीड़ा की कराह
जिंदगी के दु:खों की आह
इनसे पाने की छुटकारा
कहते हैं लोग
आजा, ए-मौत
असफलता से छुटकारा
मौत को निमंत्रण
है पलायनवाद
दु:ख नहीं, निराशा नहीं
दु:ख, पीड़ा, असफलता

---

225) पाटील पद्मा - कादम्बिनी, पृ. 29
226) डॉ. मिश्र शिवकुमार - कादम्बिनी, पृ. फ्लैप पर

प्रमाण हैं जीवन्तता का । "[227]

इस प्रकार कवयित्री जीवन को एक संघर्ष के रूप में स्वीकार कर सुख-दु:ख में आशा-निराशा में चलते रहने की प्रेरणा देती है ।

6.1.59 कात्यायनी :

कात्यायनी का "सात भाइयों के बीच चम्पा" कविता संग्रह में स्त्री के सम्बन्ध में ऋग्वेद से लेकर आज तक का उसका समाजशास्त्र, उसके स्वप्न और यथार्थ जीवन के बीच की खाई, उसकी सामर्थ्य और विवशताएँ, उसकी अदम्य आकांक्षा आदि की अभिव्यक्ति प्रखरता और हार्दिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। यह कविता संग्रह छह शीर्षकों में विभाजित किया गया है । जिसमें 66 कविताएँ हैं।

हर शीर्षक की कविताओं का अर्थ एवं क्षेत्र अलग-अलग है। कात्यायनी की कविताओं में सयानी लडकियों का विवाह पूर्व जीवन तथा विवाह उपरान्त उसकी त्रासद जीवन गाथा एवं मुक्ति का संघर्ष आदि का चित्रण इस कविता संग्रह में नजर आता है।

कवयित्री ने इस संग्रह की 'हॉकी खेलती लडकियाँ' कविता में हॉकी खेल में खेलती लडकियों का वर्णन मुक्त रूप में किया है। उस खेल की आजादी उनकी खुशी, उनकी दुनिया और वह जमीन एक नया विश्व है। वही लडकियाँ अपने घर लौटती है तो भाई का बर्ताव पिता का कोसना, सुनना होगा। कवयित्री ने इस कविता के अन्तर्गत आधुनिक लडकियाँ तथा परम्परा से चले आए संस्कार को ओड़े, जीवन जीनेवाली लड़कियों का चित्रण किया है । इन लड़कियों के लिए हॉकी का गोल या पृथ्वी का दूसरा छोर स्त्री के मर्यादाओं का विवर्त ही है। कवयित्री कहती है। जैसे-

"गोल - गोल चिल्लाती हुई
एक-दुसरे को चूमती हुई
लिपटकर
धरतीपर
गिर जायेगी।"[228]

इन लड़कियों की मुँह दिखाने की रस्म में उसके अस्तित्त्व को नकारा गया है। ऐसी ही एक अन्य कविता 'सात भाइयों के बीच चम्पा' समाज में स्त्री त्रासदी का प्रतिनिधित्त्व करती है। कविता की प्रथम कुछ पंक्तियों में ही चम्पा के अस्तित्व की परख की गई है। जैसे-

---

227) डॉ. पाटील पद्मा - कादम्बिनी, पृ. 68
228) कात्यायनी - सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 20

"सात भाइयों के बीच
चम्पा सयानी हुई।
बाँस की टहनी - सी लचक वाली,
बाप की छाती पर साँप-सी लोटती
सपनों में
काली छाया-सी ड़ोलती
सात भाईयों के बीच
चम्पा सयानी हुई।[229]

उक्त पंक्तियों में लड़की के सयानी होते ही उसके पिता की परेशानीयाँ बढने लगती है। वह लड़की पिता के छाती पर सांप-सी लोटती है और सपनों में भयानक रूप में आती है। सात भाई होते हुए भी उसका विशेष महत्त्व नहीं रहा। पुरुष प्रधान संस्कृति में अपने ही हाडमाँस से बनी स्त्री का अस्तित्व बोझील लगने लगता है। कवयित्री ने हर पैरा में स्त्री के जीर्ण अस्तित्व को रेखांकित किया है जो समाज की घृणित धारणाओं में आ जाता है। यहाँ वजूद की कोई महिमा ही नहीं है सिर्फ बाकि है तो घृणा, द्वेष आदि लांछन।

यही सयानापन यदी पागल बन जाता है और विशिष्ट मानसिकता लेकर नंग-धडंग बेहवास सड़कों पर कोई स्त्री निकलती है तो वहाँ शिष्टता जागृत होती है। ऐसा महसूस होता है मानो नंगा हो जाना सृष्टि की सभी शिष्ट लिपियों का एकत्रित आ जाना है। यही बोध पर्याप्त मात्रा 'शहर के चुनौति' कविता में दिखाई देता है।

इस कविता में निर्वस्त्र पागल और पूरे शहर की सभ्यता को चुनौति देता है। कवयित्री कहती है-

"शहर के इस चौराह पर
जो विजय चौराहा कहलाता है,
विजय गर्व के साथ खड़ी है
वह निर्वस्त्र पागल औरत-
निस्संग-निर्द्वन्द्व, एक चुनौति की तरह।"[230]

इस कविता के अन्तर्गत सारा समाज, राजनीति, नैतिक मूल्य आदि मापदण्डों का ऱ्हास हुआ नजर आता है क्योंकि जिस नग्नता का पुरुष वर्ग कायल होता है और जिसकी

229) कात्यायनी - सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 21
230) कात्यायनी - सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 231

शर्म पर स्त्री का अस्तित्व होता है उसका खुलेआम पागल होना वर्तमान मानसिकता के चेहरे पर कालिक पोतता है। यह कालिक हर शक्य की भीतरी चेतना है जो हर नग्न सड़क की तरह शहर को चुनौति देती है। वह शहर जो सभ्यता का मुखौटा है।

कवयित्री ने इसी संवेदना को देखते हुए अन्यत्र भी इससे अनोखी प्रार्थना की है , जो इनकी 'प्रार्थना' नामक कविता की अंतिम दो पंक्तियाँ में पिरोयी गई है । जैसे -

" मेरी आत्मा प्रायश्चित करने के लिए
तडप रही है ,
मुझे पाप करने के लिए
एक और दो ।[231]

कवयित्री ने पुरुष प्रधान संस्कृति के विरोध में बहुत-सी कविताएँ लिखी है जो स्त्री के वेदना का उत्तर माँगती है । इस संस्कृति में स्त्री के प्रति आस्था कम शोषण ही ज्यादा मात्रा में दिखायी देता है । एक ऐसा शोषण जो धर्म के नामपर भी होता है । कवयित्री की 'अपराजिता'नामक कविता में मनु के कुछ नारी सम्बन्धी कोष्टक दिया है जिससे नारी के अस्तित्व का तत्कालीन बोध होता है । "सृष्टिकर्ता ने नारी को रचते समय उसे बिस्तर , घर , जेवर, अपवित्र इच्छाएँ, ईर्ष्या, बेईमानी और दूर्व्यवहार दिया - किन्तु कवयित्री नारी को ' अपराजिता' नाम से सम्बोधन देती हुई शोषण करनेवाले के विरुद्ध कहती है कि -

"आज भी वह संघर्षरत है
नित-निरन्तर
उनके साथ
जिनके पास खोने को सिर्फ जंजीरे ही हैं
बिलकुल हमारी ही तरह ।[232]

कवयित्री अपने कुछ कविताओं में संघर्ष से हारती हुई जीवन के अग्निकुण्ड में भस्मसात होती है । उसके जीवन की बड़ी दाहक कहानी है । उसे संपूर्ण रूप से दु:खी एवं प्रताडित किया जाता है और वह उसी बेवफाई में घुटते-घुटते कण-कण जलने लगती है । 'दाहक जीवन-दाह' कविता के अन्तर्गत स्त्री की मुक्ति निम्न रूप से दिखायी देती है। जैसे -

"जिन्दगी की सरहदों में
लपलपाती रहती है
अग्नि की लाल बिछूएँ ।

231) कात्यायनी - सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 25
232) कात्यायनी साता भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 29

मृत्यु में ही मुक्ति
बार-बार
वरती है
उसे ।[233]

वही स्त्री राख कर देती है उसी भरे-पूरे को जिसे पुरुष जीवन कहता है । कवयित्री ने जीवन की त्रासदी , गुलामी , संघर्ष, जीने की ललक एवं मृत्यु- बोध को दर्शाया है और कहीं-कहीं 'स्त्री से ड़रो' की माँग भी की है। उनकी 'सात भाइयों के बीच चम्पा' कवितासंग्रह की प्रथम कविता में 'इस स्त्री से ड़रो' की भावभूमि में एक आधुनिक स्त्रीत्त्व का वर्णन किया गया है जो स्त्री ऋग्वेदकाल से आजतक संघर्ष में जी रही है। कात्यायनी की कविताएँ जीवन बोध, मृत्युबोध, संघर्ष, समता, प्रेम, घृणा आदि अनेक संवेदनाओं को जागृति देती है।

6.1.60 रमा सिंह :

'समुद्र फेन' की कवयित्री रमा सिंह है। उनका यह पहला कविता संग्रह है। कवयित्री अनेक संवेदनाओं से जुडी हुई है। उनकी मूल संवेदना समाज में व्याप्त जड़ता और रुढियों को तोड़ना है। कवयित्री एक ऐसा समाज बनाना चाहती है जहाँ विषमता न हो जिसका आधार समानता हो 'समुद्र' को एक प्रतीक के रूप में लेकर कहती है-

"इस समुद्र के भीतर जलती है बड़वानल
वह गर्म रखती है इसकी धमनियों
का प्रवाह,
इस आँच के बिना, समुद्र
समुद्र नहीं
इस आँच के बिना
ज्वार नहीं
न आन्दोलन, न उद्वेलित
आन्दोलित होने की शर्त सिर्फ आँच है।
और यही समुद्र
मेरे जीवन का पर्याय है,
जीवन की परिभाषा है।

233) कात्यायनी - सात भाईयों के बीच चम्पा, पृ. 15

मेरे अस्तित्त्व का केन्द्र बिन्दु है।

यही समुद्र।"[234]

कवयित्री ने समजा की ओर बहुत गहराई और सूक्ष्मता से देखा है। उन्होंने अपनी कविता में रेती में काम करनेवाली श्रमिक नारी का चित्रण किया है जो कर्मशील है और अत्यन्त व्यस्त है।

"ओस की बूँदों में

सबेरे नहाई

उगते हुए सूर्य की बिन्दी

माथे पर लगाई

किरनों की बुनी हुई

साडी पहनी

कलफदार धुली धुलाई

नदियों के फुल साईज आइने में

अपनी साड़ी की चुन्नटें ठीक करती

इसी बीच

हवा के टेपरिकार्डर पर

चिड़ियों की गाई प्रभाती सुनती

फिर रोजमर्रा के कामों में जुटती।"[235]

अनेक कविताओं में कवयित्री ने मिथकों का आधार लेकर उन्हें आधुनिक परिवेश से जोडा है। 'छद्मवेदी' कविता में उन्होंने युग को खबरदार किया है कि अति महत्वाकांक्षा के चक्कर मे हमें अपने सहज मूल्य नहीं भूलने चाहिए क्योंकि किसी दिन हमारे भौतिक सपनों को कोई वामन नाप लेगा।

"और.... जो हम सिद्धि के कामी

या कि जो हम दंभ के पुतले

कदाचित् - कल धसे गहरे रसातल में

या बनें पाताल के स्वामी

क्या पता ?

---

234) रमा सिंह - समुद्र फेन , पृ. 15

235) रमा सिंह - समुद्र फेन , पृ. 22

कल छद्मवेषी एक वामन: नाप ले त्रैलौक्य
केवल तीन ही पग में,
और हमारे दंभ के विस्तार को
बरबस समेटे लघु कलेवर में।"[236]

इनकी अनेक कविता में सामाजिक विसंगति के चित्र और उन पर प्रहार है। कवयित्री ने व्यंग्य के माध्यम से युग की खोखली प्रवृत्ति का चित्रण कर उस पर चोट की है। आज की जो दुमुँही सभ्यता है उस पर व्यंग्य करते हुए वे कहती है-

"शब्द कुछ और
अर्थ कुछ और
युग धर्म का मन्त्र बना
कुछ और, कुछ और
भीतर कुछ और
बाहर कुछ और।"[237]

'लकीर के फकीर' कविता में परम्परागत रुढियों का विरोध किया गया है। कवयित्री समाज में व्याप्त जड़ता और रुढियों को तोडना चाहती है।

"किन्तु - कैसे मिले केन्द्र
हमारे पैरों में बंधी है, परिधि की जंजीरे
और हम हैं लकीर के फकीर।"[238]

इनकी कविताओं में जीवन की गहरी पकड़ है। समाज में प्रचलित पारम्पारिक रुढियों तथा खोखली प्रवृत्ति, मान्यताओं का विरोध किया है।

6.1.61 डी. माधवी :

'जिंदगी के हाशिये पर कुछ लम्हे' की कवयित्री डी. माधवी की यह प्रथम कृति है। उनकी कविताएँ अपने आस-पास का समाज और बदलते मानव मूल्यों से अपना रूप ग्रहण करती हैं। इस संग्रह की कविताओं में सार्थक जीवन जीने की तलाश है, समकालीन जीवन की वास्तविकताएँ हैं और सबसे ज्यादा स्त्री जीवन के प्रश्न, आकुलता एवम् परेशानियाँ हैं।

कवयित्री स्वयम् स्त्री है, अत: उन्होंने स्त्री जीवन की विसंगतियों की अभिव्यक्ति

236) रमा सिंह - समुद्र फेन, पृ. 25
237) रमा सिंह - समुद्र फेन , पृ. 40
238) वही , पृ. 35

बड़ी प्रभावशाली ढंग से की है। कवयित्री कहती है कि नारी सम्पूर्ण मानव जाति की जननी होने के बावजूद भी युग-युग से शोषण, उत्पीड़न और उपेक्षा सहती आई है। स्वयम् कवयित्री भूमिका में कहती है मैं एक नारी हूँ। मुझे बचपन से ही एक सीमा में बांधा गया। इसी सीमा में मेरे विचार, मेरी स्वतंत्रता, मेरा अपना जीवन है। मुझे पुरुषों की तुलना में कम नजरिए से देख गया। मैं उड़ना चाहती हूँ। मगर मैं उड नहीं पाती हूँ। जमीन का आकर्षण मुझे हमेशा नीचे की ओर खींच लेता है और इसी उडान के लिए मेरे दिल में छटपटाहट है। मैं बहुत उँची उड़ान भरना चाहती हूँ और ये भी मैं बताना चाहती हूँ कि मैं भी पुरुषों से कम नहीं हूँ। मेरे प्रति जीवन में न्याय के बजाय अन्याय ज्यादा रहा है। जीवन की परेशानियाँ उन्हें भी कई बार खिन्न और उदास बना देती हैं लेकिन जीवनेच्छा उन्हें संघर्ष के लिए निरन्तर प्रेरित करती हैं। 'नारी' कविता की निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"मैं नारी जरुर हूँ
लेकिन हारी नहीं हूँ
इसीलिए मेरे मौंन पर
तुम अपने शब्दों की
आरी मत चलाओं इस तरह
क्योंकि
यदि मेरा मौंन टूटेगा
तो तुम्हारा बसा बसाया
उपवन बिखर जायेगा।"[239]

एक अन्य कविता 'विष' में भी उनकी दृष्टि यही है इसीलिए वे तुम्हारी झूठी आशा के पीछे भागनेवाली नहीं है। कवयित्री यहाँ निराश नहीं है, वे स्वतंत्र अस्तित्व पाने की आशा से आगे बढने की बात कहती है। वे कहती हैं-

"तुझे मुझे
झूठी आशा दिलाकर
बहकाने की
कोशिश मत करना
क्योंकि

239) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें , पृ. 113

मैं आस्तिनों के

साँपों का

विष पी चुकी हूँ।"[240]

कवयित्री की व्यथा बहुत गहरी है। उनका मन वर्तमान समाज से भर उठा है। 'शीशा' नामक कविता में कवयित्री ने स्त्री जीवन की विसंगतियों और विडम्बनात्मक स्थितियों के जरिए स्त्री जीवन की वास्तविकताओं का वर्णन किया है। भारतीय समाज मे स्त्रियों की स्थिति दयनीय है। जैसे नारी चार दीवारों से बाहर निकलकर अपना भला बुरा समझने लगती है तब समाज

उसे विरोध करता है और उसे चार दीवारियों में बंद करता हैं। वह कहती है-

"सदियों से शीशे में

कैद की गई

एक औरत हूँ मैं

जहाँ, शीशे का ढक्कन

समाज है।

इनके इशारों से

शीशे का ढक्कन

जब खुलता है

तब मैं शीशे से

धीरे-धीरे बाहर निकलकर

परी बन जाती हूँ

और आसमान की ओर

उडने लगती हूँ

तब मेरी उडान को देख

समाज के लोग

मुझे अपनी बोलियों से

बाँधकर पुन: शीशे में

बंद कर दिया करते हैं

240) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें , पृ 45

जहाँ से मेरी आवाज
बाहर सुनाई नहीं देती
सिर्फ शीशे से
टकराकर ही रह जाती है।"[241]

इस संग्रह की अधिक तर कविताएँ नारी चेतना से सम्बधित हैं। कवयित्री के ये अनुभव स्वयम् के हैं। इसके साथ ही नारी जीवन के अभावों, उनकी आकुलताओं, यातनाओं एवम् परेशानियों आदि की अभिव्यक्ति दी है। कवयित्री नारी जीवन की यातनाओं और पेरशानियों तक सीमित नहीं रहती तो उनकी कविता में कहीं माँ का संघर्ष है जो घर बनाए रखने के लिए दिन रात कठोर परिश्रम करती है, तो कहीं ममतामयी माँ कहीं आँखें प्रतीक्षा से परेशान हैं। कवयित्री ने स्त्री मन के सभी सवालों की सही तस्वीर ही यहाँ चित्रित की है। 'भविष्य खोजती निगाहें' इस कविता में यह देखा जा सकता है-

"उँचाई पर खड़े होकर देखना
कितना आसान है कि
झोंपड़ियों में लिपटे साँसें
दिन गिन रही हैं
सबेरे की तलाश जारी है
रोजी रोटी की आस
आरी की तरह चिरती
चली जा रही है
कहाँ पर पत्थर
तोडना होगा ?
उनके मासूम बच्चों का
भविष्य खोजती निगाहें
एक चिनगारी है
जो
रुक - रुक कर
आँखों में आँसू

241) डी. माधवी जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें, पृ. 22

कि जगह खून भर देती है।"[242]

कवयित्री खुद सूरज बनकर स्वयम् प्रभात बनने की परिकल्पना में खुद्दारी है, स्वावलंबन और दुनिया को प्रकाश बाँटने की सदिच्छा हैं। 'छाले' कविता की निम्न पंक्तियाँ इस संदर्भ में देखी जा सकती है-

"अपने को जलाकर
दूसरों को रोशनी देना
जनम से समझाया गया।"[243]

कवयित्री माधवी ने जीवन में अनेक उतार-चढाव देखे हैं, संघर्ष ही उनके वर्तमान जीवन का निष्कर्ष है। कहीं - कहीं वह भाव विव्हल होकर दार्शनिक बन गई है।

"अंध:कार को मिटाने के लिए
हृदय में एक दीप जलाना होगा
तभी फैलेगा
जीवन में प्रकाश।"[244]

अन्याय और अत्याचारों के खिलाफ कवयित्री की आवाज बुलन्द हो गयी है। वह कहती है कि मन की शांति के लिए मंदिर, मस्जिद, जाने की कोई जरुरत नहीं है। उसकी खोज करना भी व्यर्थ प्रयास है। मन के दिये जलाने पर अपने आप अंधकार, दु:ख, संकट दूर हो जाते हैं और जीवन का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

यह स्पष्ट है कि पुरुषप्रधान सामाजिक रुढि परम्पराओं के विरोध में सक्रिय होने की इच्छा कवयित्री स्पष्ट रूप में व्यक्त करती है, वह विद्रोह करना चाहती है। परम्परागत मूल्यो से संघर्ष करने की कवयित्री की प्रवृत्ति अनेक कविताओं में दृष्टिगत होती है।

'रहस्य' कविता द्वारा कवयित्री की संघर्ष करने की प्रवृत्ति अधिक तीव्रता से दृष्टिगत हुई है। अपने ही भीतर अपनी आँखों से परीक्षण करते समय कवयित्री के मन में अनेक सवाल पैदा हुए हैं। कवयित्री अपने आपसे संघर्ष करती है। संघर्ष मन की गहराईयों में होता है। कवयित्री ने अपनी कविताओं में समाज के दु:ख और अपनी पीड़ा को इस तरह प्रस्तुत किया है कि दोनों का रंग एक जैसा होने पर भी प्रभाव अलग-अलग होता है।

"हमने भूला हैं

242) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें, पृ. 51
243) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें, पृ. 15
244) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हें,, पृ. 80

फूलों को
चम्पा, चमेंली को
याद तो सिर्फ
रह गई है शूलों की।"[245]

वह कहती है कि आशा, निराशा, दु:ख - सुख, जय पराजय जीवन के अभिन्न अंग हैं। इनका एक के बाद एक का आना-जाना नियति का नियम है। इसे कोई टाल नहीं सकता।

इस संग्रह की कविताओं में कवयित्री ने झील, सागर, लहरें, नदी को अलग - अलग अर्थों में प्रस्तुत किया है। जल के विभिन्न रूप, विभन्न परिस्थितियों मे विभिन्न भूमिकाएँ निभा रहे हैं। पल में क्रान्ति भी है, शान्ति भी है ओर सहनशीलता के साथ रहते हुए भी समय आने पर सब कुछ बहा ले जाने की क्षमता। भारतीय नारी की अस्मिता और उसके भीतर कहीं शून्य में पल रही आशा को चित्रित करती है कविता-

"झील सी आँखों की
पुतलियों में
रोशनी थी
और
आँखों की कोर में
समाज का दिया हुआ कीचड।"[246]

कवयित्री संग्रह में किए प्रतिपादन के अनुसार अपने मन में धुले हुए किसी अनाम दु:खों का इलाज कवयित्री ढूँढ रही है। कवयित्री की सजग चेतना बाह्य परिवेश के साथ मेल खाना चाहती है।

इनकी अधिकतर कविताओं में नारी चिन्तन की सुलभ सोच है। ऐसी स्त्री की सोच है जो एक नये धरातल की तलाश में है।

6.1.62 सुनिता जैन :

कवयित्री सुनिता जैन दो भाषाओं - हिन्दी और अंग्रेजी में लिखती रही है। 'अबतक' में केवल हिन्दी में लिखी रचनाएं ही संग्रहीत हैं। उनकी शब्दयात्रा लंबी ही नहीं, वैविध्यपूर्ण और प्रचुर भी है। उनका लेखन उनके संपन्न, सशक्त और वैविध्यपूर्ण व्यक्तित्व का

245) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हे, पृ. 20
246) डी. माधवी - जिंदगी के हाशिए पर कुछ लम्हे, पृ. 66

प्रतिफलन सा दिखाई देता है। मृदुला गर्ग ने उनके व्यक्तित्व को इन शब्दो में व्यक्त किया है-

"उसकी तीक्ष्ण बुद्धि और प्रबंधन की समझ को देखते हुए, मुझे काफी बार खयाल आता था- विदुषी और कार्यदक्ष महिला, आई, आई.टी में प्रोफेसर, ह्युमेनिटीज विभाग की अध्यक्षा, व्यावसायिक क्षेत्र में भरी-पूरी पहचान लिये हुए, आखिर वह किस मोहजाल में फंसकर साहित्य के दु:खदायी क्षेत्र में विचरने आयी होगी? "[247]

'सुनिता जैन : अबतक' में सबसे अधिक संख्या कविताओं की है। कविताएँ उन्होंने बहुत लिखी है लेकिन अपनी लिखी सभी कविताओं को उन्होंने संग्रहों के रूप में प्रकाशित कर दिया है । पुस्तक रूप में उनकी कविताओं का प्रकाशन 'हो जाने दो मुक्त' (1978) से प्रारंभ हुआ और 'जो मैं जानती' (2003) तक पहुँचा है। इस लम्बी काव्ययात्रा से गुजरने पर कहा जा सकता है कि उनके भीतर भावनाओं का ज्वर बहुत तीव्रता से उमड रहा है, जिसे शब्दबद्ध करने के लिए वे विवश हैं। उनकी इन भावनाओं का विषय प्रेम, परिवार, प्रकृति और परमात्मा है। उन्होंने अपनी कविताओं में उन लोगों की व्यथा कथा भी कही है, जो वंचित और शोषित हैं। उनके प्रति उनकी सहज सहानुभूति है, किसी विचारधारा विशेष से वह संचालित नहीं है। उन्होंने वंचितो और शोषितों की पीड़ा को सहज मानवीय दृष्टि से देखा है। इसीलिए उसमें कृत्रिमता या फार्मूलाबद्धता का अभाव है।

सुनिता जैन की कविताओं में व्यक्त प्रेम बहुआयामी और बहुरुपी है। सबसे अधिक तो दाम्पत्य प्रेम या नर-नारी विषयक प्रेम है। इसे इन्होंने अपनी अनेक कविताओं में स्वीकार किया है।

'कौनसा आकाश' सुनिता जैन का दूसरा कविता-संग्रह है। सुनिता जैन का दृष्टिकोण अपनी कविता के बारे में बेहद साफ है, जिसे वे संग्रह में इस तरह व्यक्त करती है-

"मुझे कविता को । शब्द नहीं देने । नहीं कहने
गंध रस रंगो के । आकार ।... कहना है। हम।
तुम। वे । क्या जीते हैं। क्यों जीते हैं? "[248]

1996 ई. में प्रकाशित 'जाने लडकी पगली' तो पूरा-का-पूरा माँ को लेकर लिखी गयी कविताओं का संग्रह है।

---

247) गर्ग मृदुला - 'सुनिता जैन : अबतक' समीक्षा -पत्रिका , जनवरी - मार्च 2004, पृ. 17
248) जैन सुनिता - कौनसा आकाश, पृ. 36

इन कविताओं में एक माँ के अपना सबकुछ दे देने के बाद अपनी बेगानी बनती गई संतानो की भरी -पूरी गृहस्थियों के बीच नितांत उपेक्ष्या और पराई बनते जाने की दारुण कथा है। कवयित्री के अनुभव को इस प्रकार देख सकते हैं-

"जब दो में से एक
रह जाते है- माता या पिता।
तो मरने से पहले
वे कई बार मरते हैं
.... जब वे
सचमुच ही मरते हैं
तब हम उस दिन को
और उसे अगले दिन को
पूरे तेरह गिनते हैं"[249]

आज माँओं से बेटे निरंतर दूर होते चले जा रहे हैं। भौतिकता की चपेट में ये रिश्ते भी आ चुके हैं। कुछ बेटों की मजबूरी, कुछ जीवन मूल्यों का बदलाव। निज से बाहर निकल सुनिता ने घर-घर के इस दु:ख को वाणी दी है।

कवयित्री की इन कविताओं में माँ का, बल्कि माँ के बहाने स्त्री का, उस की गहन पीड़ा का विस्तृत संसार समाया हुआ है। इस संसार में सुबकुछ है- ममता, माया, इच्छाएँ, घर-बार, झागड़े उपेक्षा, और वर्तमान पीढी की माँ के प्रति तटस्थता, माँ के पुराने संदूक और उस संदूक में 'छिपे' किसी अदृश्य खजाने का लालच...। जबकि एक बेटी चाहती है माँ के उस संदूक को कबाड़ी के हाथों बेचे जाने से बचाना। क्योकि यह संदूक उसके लिए न तो 'माल' है और न 'फालतू' सामान। इस संदूक के साथ उसका अपनापन है। इस संदूक से जुडी है माँ। उसका बचपन 'जाने लड़की पगली' नाम से रची इस कविता मे विशेष रूप से ये स्थितियाँ बिम्बित हुई है। कविता के अन्त तक आते - आते यह 'संदूक' भरा पूरा प्रतीक बन जाता है।

ये कविताएँ अपने मूल में वर्तमान जीवन की उस त्रासदी को रेखांकित करती है, जिसमें हमारे मानवीय रिश्ते लहूलुहान हो गये हैं। भला माँ से गहरा रिश्ता और क्या होगा जो माँ हमे इस संसार में लाती है, जिससे हमारा अस्तित्व है, वही हमारे जीवन से दूर चला

249) जैन सुनिता - जाने लडकी पगली , सम्पूर्ण कविताएँ पृ. 390

जाये, तो क्या बचेगा? इस ओर हमारा ध्यान दिलाने के लिए इस संग्रह का संदेश इन शब्दों में निहित है-

"माँओं को । मखमल पे रखो। झूला दो। फूलों पे वे हैं आज।
पर कल होंगी न। सोचो तब । क्या क्या खो जाएगा।
जीवन से ? सोचो न!फिर । सोचो।"[250]

डॉ. हरिमोहन के शब्दो में- "समग्रत: इस संग्रह की सभी कविताएँ मानवीय नियति से हमारा साक्षात्कार कराती है। इनमें जीवन के ऐसे पक्षों को देखने का आग्रह है, जिनकी ओर हमारी पीढी ध्यान नहीं दे रही। बेटों और बहुओं के वर्तमान अमानवीय, भौतिक और व्यस्त संसार में 'माँ' कहाँ है? इसी कठिन पीडा का अनुवाद हैं ये कविताएँ, जिनको स्मृतियों के दरवाजे से लडकी का आत्मा में प्रवेश कहा जा सकता है।'[251]

आज के सुविधाभोगी समाज में हमारी सारी पारम्पारिक मान्यताएँ टूट रही है। इसमे माँ भी लूप्त हो जा रही है। अपने जिन बच्चों को नौं महीने पेट में रखकर, जनकर और फिर पाल पोस कर वह बडा करती है वे उसकी भावनाओं को समझ नहीं पाते। वे नोटों के कुछ पुलिंदे भेजकर ही अपने कर्तव्यबोध का इतिश्री समझ लेते हैं । कवयित्री के अनुभव इस प्रकार प्रस्फुटित हुई है-

"जिस माँ ने कभी कुछ नहीं कहा किसी से,
तब भी नहीं, जब छोटी
भाभी ने भी उनका चूल्हा अलग किया,
उसी माँ ने कहा उस दिन वक्ष चीरकर
" अरे, इस पेट में पसरने को
जगह मिल गई जिन सात को
उसी पेट में रोटी ड़ालने
वक्त नहीं एक को
नोट भिजवा देते हैं, सारे
जैसे नोट चबा लूँ"[252]

250) जैन सुनिता - जाने लडकी पगली, सम्पूर्ण कविताएँ , पृ. 391
251) डॉ.हरिमोहन - वागर्थ पत्रिका , अक्तुबर 1997, पृ. 395
252) जैन सुनिता - जाने लडकी पगली, सम्पूर्ण कविताएँ, पृ. 403

रामदरश मिश्र के शब्दो में- "डॉ. सुनीता जैन की कविताएँ मुझे बहुत प्रीतिकर लगीं। इन कविताओं की अपनी पहचान है। आज की एकमुखी कविताओं और गीतों की भीड में अपनी एक पहचान बना लेना किसी कविता की मै बहुत बडी विशेषता समझता हूँ। इन कविताओं को पढते समय ऐसा अनुभव होता है कि हम कुछ ताजा और विशिष्ट अनुभवों से गुजर रहे हैं। यह सही है कि इन कविताओं की दुनिया बहुत बडी नहीं है। इनमें समकालीन यथार्थ के बहुआयामी स्वर नहीं है लेकिन जो दुनिया है वह बहुत आत्मीय है ताजा है और कवयित्री के प्रामाणिक अनुभवों से बनी हैं।" [253]

इस प्रकार 'जाने लड़की पगली' कवयित्री की पीड़ा का प्रस्फुटन है। अपने ही दर्द का अंकुरण है।

6.1.63 रेखा द्विवेदी :

'हिरण्य गर्भा' कवयित्री रेखा द्विवेदी की 49 कविताओं का दूसरा काव्य-संग्रह है। 'पूर्वा' खंण्ड में 18 कविताएँ तथा 'परा' खंण्ड में 31 कविताएँ संकलित है। 'पूर्वा' खंण्ड की कविताएँ नारी के दु:ख भरे जीवन के अनेक रुपों को संपादित करती है। यह नारी की बेबसी, लाचारी, विवादग्रस्त जीवन, छटपटाहट, अकेलेपन का एहसास नारी जीवन की अनेक विसंगतियाँ उसकी अनेक अबूझ संवेदनाओं को चित्रित करने का प्रयास है।

कवयित्री रेखा 'भोग्या' कविता के माध्यम से कहना चाहती है कि नारी पहले से भोग्या थी, वर्तमान में भी पुरुष के आगे वह निरुपाय और असह्य है। पुरुष की दांभिक सत्ता उसके सौंदर्य का व्यापार करती नजर आती है। समाज के उन वंशों को यह कविता दिशा-बोध कराती प्रतीत होती है, जो केवल नारी को भोग्या समझ बैठे हैं।

संग्रह की 'क्या तुम बिकोगे' कविता सच्चे अर्थों में हृदय की संवेदनाओं को झकझ ोरती है। आज का इंसान बिकाऊ है। वह भौतिकता में विश्वास करता है। उसकी वास्तविकता प्रेम समर्पण एकनिष्ठ होने की भावना मृतप्राय: हो चली है। इन पक्तियों में चुनौती भरे स्वर हैं, हकीकत का दर्पण है जिसमें कवयित्री ने अपनी लेखनी के माध्यम से गिरते जीवन मूल्यों को अपरोक्ष रूप से बनाए रखने का आह्वान किया है-

"अच्छा लिखूँगी मैं
अपने जीवन का
आखिरी प्रेम गीत

253) मिश्र रामदरश - सुनिता जैन की कविताएँ, सम्पूर्ण कविताएँ, पृ. 430

तुम्हारे नाम
और दूँगी तुम्हें तोहफे में
एक हसीन शाम,
क्या मंजूर है तुम्हें
अपना यह दाम" [254]

'पूर्वा' खंण्ड की अंतिम कविता एक लंबी कविता है जिसमें कवि की लेखनी ने 'रेशमी चादर' के माध्यम से जीवन की रुपहली यादों और उससे जुडे क्षणों को जिया है। कवयित्री रेखा की 'रेशमी चादर' हर मौसम में सहारा बनी है। उनकी रेशमी चादर कभी सपने बुनती है तो कभी रूप में बिखेरते ही संत्रास झेलती है। एक बडे फलक पर फैली हुई यह कविता वस्तुत: उनके विस्तृत सोच की ओर इंगित करती है।

कविता संग्रह 'हिरण्य गर्भा' का दूसरा खंण्ड 'परा' की रचनाएँ जिंदगी की उन तमाम सच्चाइयों को उजागर करती हैं । एक संघर्ष जो अनवरत चल रहा है केवल रोटी के लिए। वस्तुत: रोटी प्रतीक है, उस पिसती हुई औरत का, व्यवस्था में हारे हुए समाज का जो सदैव पिसता चला आ रहा है ।

'घर' रचना की औरत वस्तुत: भारतीय समाज की वह औरत है जो पारिवारिक समाज के बोझ तले दबी अपनी जुबान तक खोल नहीं पाती किंतु जब वह अपनी चेतना में लौटती है तो भूचाल आता है। दिन-दिगंत हिल उठते हैं। वस्तुत: कवयित्री ने इन कविताओं के माध्यम से नारी जागृति का शंख फूँखा है।

कवयित्री ने नारी के अनेक रूपों का चित्रण किया है। नारी करुणामय, ममता की मूर्ति एवं कोमलता का प्रतीकात्मक रूप है। नारी सृजनधर्मा है। वह निज का अस्तित्त्व विलीन कर सृष्टि की संरचना में संलग्न है। यह रचना इसी का अहसास कराती है-

"माँ बनकर फिर तुम
कुछ भी न रहीं
मिटी ओर मिटती चली गई।"[255]

'जीवन मूल्य' 'माँ' आदि कविताओं में उस नारी का दर्द है, बेबसी है, जो प्रसव पीडा सहते हुए भी उपेक्षा का शिकार होती रही है। असहनीय यातनाओं के दर्द को झेलती रहती है।

---

254) द्विवेदी रेखा - हिरण्य गर्भा, पृ.187
255) द्विवेदी रेखा - हिरण्य गर्भा , पृ. 59

कवयित्री ने सामाजिक व्यवस्था पर भी चोट की है। 'व्यवस्था' कविता आज के उस मनुष्य की कविता है जो अपने ही बुने जाल में बुरी तरह फँस चुका है। संग्रह की अधिकतम रचनाएँ नारी शोषण, सामाजिक विसंगतियों , विद्रुपताओं पर प्रकाश डालती है।

कवयित्री रेखा दि्ववेदी की 'चादर', 'सेब', 'माँ', 'घर', 'जीवनमूल्य', 'व्यवस्था' कविताएँ संवेदनशील एवं अभिव्यक्तिपरक हैं लेकिन 'प्यार करें', 'खत', प्रिय कविताओं का कथ्य भाव भाषा-शैली के स्तर पर कमजोर हैं तथापि संग्रह की अधिकांश कविताएँ भाव संवेदना काव्यत्त्व के स्तर पर खरी उतरती है।

6.1.64 सुशीला जोशी :

कवयित्री सुशीला जोशी की 'कसैले पात', 'मुट्ठी भर उजाला' और 'अनुभूति के पंख' आदि तीन कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है । 'कसैले पात' और 'मुट्ठी भर उजाला' की पत्र-पत्रिकाओं में काफी चर्चा हुई थी । पाठकों ने इनका स्वागत भी किया था । 'अनुभूति के पंख' कविता संग्रह के प्रकाशन से कवयित्री पाठकों के उत्सुकता पर खरी उतरती है । इस संग्रह की एक विशेषता यह भी है कि कवयित्री ने स्वयं इसे प्रकाशित किया है जो साहित्य के प्रति उनके समर्पण को दिखाता है।

'अनुभूति के पंख' कविता संग्रह में पौराणिक मिथकों का रोचक प्रयोग किया गया है। 'परिताप' कविता द्रौपदी के आक्रोश को व्यक्त करती है-

"स्वयं को । महाधनुर्धर । साबित करने की ललक में। तुमने।लक्ष्यभेद कर । मुझे पा तो लिया । किंतु कुंती के निर्णय के समक्ष। तुम तो तुम । तुम्हारा धर्म भी। मुझे बृहन्नला ही नजर आए।" [256]

कवयित्री कहती है, क्या नारी मात्र एक खिलौना है, जो पुरुष के मन मुताबिक ही कार्य करे। इस भूमिका का वह निर्वाह करती भी है, पर उसकी पीडा तब मुखर हो उठती है, जब उसकी सहमति लिए बिना ही उसे गर्भपात के लिए भी बाध्य कर दिया जाता है-

"और । जारी कर देता है। एक फतवा। गर्भपात का। बिना मेरी पीडा जाने। लेकर निरा एकतरफा निर्णय।" [257]

मानव हो या निर्दोष परिंदे, सभी अपने विवेक - अविवेक के अनुसार कार्य कर रहे हैं, जो सृजन या विंध्वस के रूप में सामने आता है । कवयित्री कहती है-

---

256) जोशी सुशीला - अनुभूति के पंख, पृ. 12

257) जोशी सुशीला - अनुभूति के पंख, पृ. 14,15

"कट रहा है पेड। पर । चिडिया। व्यस्त है। नीड बनाने मे।"[258]

इस संग्रह की 'बसंत' कविता में बाल्यावस्था, यौवन, अधेडावस्था के रोचक वर्णन के साथ-साथ जीवन के आखिरी पडाव को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह संग्रह की सबसे सशक्त कविता है।

कुल मिलाकर 'अनुभूति के पंख' की कविताएँ पाठक को बाँधे रखने में सक्षम हैं।

निष्कर्ष :

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता के कथ्य सौंदर्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि आधुनिक हिन्दी कविता संसार में कवयित्रियों का अपना एक अलग स्थान है। आधुनिक कविता के प्रारंभिक दौर में अनेक कवयित्रियाँ सक्रिय रही है। ये प्रारंभिक दौर की कवयित्रियाँ अधिक मात्रा में भक्ति, देशप्रेम, घर, संसार, परिवार, प्रकृति आदि से ही जुड़ी दृष्टिगत होती हैं। आधुनिक कविता की विकास प्रक्रिया में कवयित्रियों के योगदान को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। इनकी कविताओं में स्त्री जीवन के साथ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मिथकीय, पारिवारिक संदर्भो, प्रकृति परिवेश का अंकन नजर आता है।

आधुनिक काल की स्त्री रुढियों तथा धार्मिकता को मानने के लिए तैयार नहीं है। वे इन परम्पराओं से बाहर निकलना चाहती हैं। कुछ कवियत्रियाँ परम्परा को मानते हुए भी नवीनता का आग्रह रख रही हैं। वे इन बदलती हुई परिस्थितियों से संघर्ष कर सकती है। अन्य स्त्रियों को प्रेरणा दे सकती है, ऐसी स्थितियों का चित्रण कई संवेदनाओं से जुडा हुआ है। इनकी कविताएँ सामाजिक सरोकार के तलाश की कविताएँ हैं। इन कवयित्रियों की कविताओं में कहीं कहीं युग की परिवर्तित परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु इनकी कविताओं का मूल कथ्य व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन ही रहा है। इन कवयित्रियों की कविताओं में हमें कहीं सुख-दुःख की भावना तो कहीं भक्तिभावना, प्रिय मिलन की आकुलता, बच्चों के प्रति ममत्व का भाव, प्रकृति-चित्रण, मजदूर, किसान, विधवा समस्या, संघर्ष चेतना, देशप्रेम की भावना आदि विशेषताएँ आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में दिखाई देती हैं।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में कवयित्री प्रताप कुँवरिबाई ने पारिवारिक जीवन को सर्वाधिक महत्त्व दिया हैं। सुभद्राकुमारी चौहान, शकुंतला माथुर आदि ने भी

---

258) जोशी सुशीला - अनुभूति के पंख, पृ. 27

पारिवारिक जीवन को महत्त्व दिया है। चंद्रकलाबाई, निधि रानी, कमल कुँवर, रत्न कुँवरि बीबी, तोरन देवी शुक्ल लली, कमल कुमारी, रानी रघुराज कुँवरि, हीरादेवी चत्तुर्वेदी, विद्यावति कोकिल, तारा पांडे आदि कवयित्रियों ने अपनी कविता में भक्ति को महत्त्व दिया है। तोरनदेवी शुक्ल लली ने जीवन की प्रगति और विकास के लिए वेदना, पीड़ा, और निराशा की अवहेलना कर हास्य को अपनाया है। हीरादेवी चत्तुर्वेदी, सुमित्रा कुमारी, सिन्हा, शांति मेहरोत्रा, कीति चौधरी, शांति जैन आदि कवयित्रियों ने भी अपनी कविता में वेदना और पीडा का चित्रण किया है। रामकुमारी देवी चौहान ने 'देशप्रेम' को महत्त्व दिया। श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने 'राष्ट्र प्रेम' तथा वात्सल्य भावना को महत्व दिया है। तोरनदेवी शुक्ल लली, हीरादेवी चत्तुर्वेदी, पुरुषार्थ वती, विद्यावती कोकिल, तारा पांडे, आदि कवयित्रियों ने देश प्रेम का चित्रण किया है। श्रीमती महादेवी वर्मा और उर्मिला कौल ने विरह-वेदना और दुःख में सुख को देखा है। श्रीमती होमवती देवी ने 'सामाजिक संवेदना' को स्थान दिया। श्रीमती होमवती देवी रामेश्वरी देवी चकोरी आदि ने विधवा समस्या का चित्रण किया है। होमवती देवी, रामेश्वरी देवी चकोरी, विद्यावती कोकिल, तारा पांडे, सुधा गुप्ता, सुमित्राकुमारी सिन्हा, शकुंतला सिरोढिया आदि कवयित्रियों की कविता में प्रकृति-चित्रण दिखाई देता है। रामकुमारी देवी चौहान, हीरादेवी चतुर्वेदी आदि ने मजदूर और किसान को अपनी कविता में स्थान दिया है। सरस्वती देवी, होमवती देवी, शकुंतला सिरोढिया आदि ने स्त्री समस्या का चित्रण किया है। रामेश्वरी देवी चकोरी, सुमित्राकुमारी सिन्हा, शकुंतला सिरोढिया, सुभद्राकुमारी चौहान, शांति मेहरोत्रा आदि ने अपनी कविता में प्रेम-भावना व्यक्त किया है। समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का चित्रण हीरादेवी चतुर्वेदी, कामिनी भटनागर आदि कवयित्रियों ने किया है। साथ ही और भी कुछ कवयित्रियाँ कविता के क्षेत्र में सक्रिय रही।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर के बाद हिन्दी कवयित्रियों की कविता निरंतर विकसित होती रही, क्योंकि नारी करुणामय ममता की मूर्ति एवं कोमलता का प्रतीकात्मक रुप है। नारी सृजन धर्मा है, वह निज का अस्तित्व निर्माण कर सृष्टि की संरचना में सलग्न है। आधुनिक हिंदी की कवयित्रियाँ इसीका अहसास कराती है। संस्कृति, परम्पराओं की सुरक्षा, कलाओं की वृद्धि उसी की सृजनशीलता का परिणाम है। समाज की सभ्यता का स्तर उस समाज में होनेवाले स्त्री के स्थान पर निर्भर रहता

है। प्रकृति की दी हुई दुर्बलता को झटककर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में स्त्री निरन्तर प्रयत्नशील रही। प्राचीन काल से ही परिवेश, पर्यावरण, कृषिक्षेत्र, वंशवृद्धि पारिवारिक जिम्मेदारी स्त्री पर रही हैं। स्त्री आदिकाल से लेकर आजतक सजग रही है। अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति उसने कविता के माध्यम से प्रकट की है।

प्राचीन काल में स्त्री का क्षेत्र सीमित रहा है। वह कविता या साहित्य की दृष्टि से संवेदनशील होते हुए भी केवल सामाजिक मर्यादाओं के कारण बहुत कम योगदान दे पायी थी। आज परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ है, होता जा रहा है। स्त्री विभिन्न क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बना रही है। कथा साहित्य सृजन में प्रेमचंद युग से ही लेखिकाएँ थी। स्वतंत्र भारत मे नारी जागरण और शिक्षा के प्रचार - प्रसार स्वरुप नयी सशक्त लेखिकाओं की पीढी उदित हुई।

कविता के क्षेत्र में अनेक कवयित्रियाँ अपना पहचान बना चुकी है। उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक संदर्भ, भ्रष्ट राजनेताओं पर व्यंग्यात्मक तीव्र प्रहार, आर्थिक विषमता, पारिवारिक सम्बन्ध, शोषण, गरीबी, भूखमरी, बेकारी आदि के उल्लेख मिलते हैं। लेकिन तीव्र अभिव्यंजना अपवादात्मक ही। इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता की माँग की है तथा लज्जा, संकोच का त्याग करने का प्रयास किया है।

आधुनिक हिन्दी कवयित्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उन परम्परागत मूल्यों का विरोध कर रही है जिनके बोझ से वह स्वनिर्णय की शक्ति को खो चुकी थी। आज वह जमाना नहीं रहा। आज की स्थिति ऐसी है कि पति के दुत्कारने पर उन्हींके चरणों में रोटी की मजबूरी के लिए लिपटी रहना वह पसंद नहीं करती। आज रोटी से अधिक महत्त्व है स्त्री की अपनी प्रतिष्ठा एवम् स्वतंत्रता का। अनेक कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में सामाजिक व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई है और परम्परागत धार्मिक रुढियों का भी विरोध किया है।

कुछ कवयित्रियों ने नारी की स्वतंत्र अस्मिता और अस्तित्व के लिए पुरुष के मेधावी और आक्रमक व्यक्तित्व के साथ निरन्तर संघर्ष कर नारी की उज्ज्वल तस्वीर प्रस्तुत की है। इन कवयित्रियों ने नारी की आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, स्वतंत्र अस्तित्व, परम्परागत मतों द्वारा चित्रित तथा आरोपित अबला व्यक्तित्व को नकारते हुए उसे सबला और पुरुष प्रधान संस्कृति को आह्वान देनेवाली 'स्त्री' के रुप में चित्रित किया है।

कुछ कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में युगीन विषमताओं को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। उनकी अनेक कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संदर्भ आदि के सजीव चित्र भी दिखाई देते हैं। अनेक कवयित्रियों ने तो मिथकों के आधार पर नारी की विवशता दयनीयता को रेखांकित किया है। (सुमन राजे, मंजू महिमा भटनागर, निशा निशांत) आदि कवयित्रियों ने नारी जीवन के अनेक प्रश्नों को उठ खड़ा किया है। कुछ कवयित्रियों में दयनीयता, विवशता भी देखी जा सकती है। परन्तु प्रधानता अलिप्तता तथा आहवान की रही है। (स्नेहमयी चौधरी, पुष्पा राही, मणिका मोहिनी, शीला गुजराल, सुनिता जैन, शशि शर्मा, शांति जैन, उषा चौधरी) आदि।

कुछ कवयित्रियों सुनीता जैन, रमणिका गुप्ता, पद्मा पाटील, सुधा गुप्ता, डी. माधवी की कविता में प्रकृति चित्रण भी दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना तात्पर्य पर्यावरण का असंतुलन मनुष्य के लिए हानिकारक है। मनुष्य प्रकृति का नाश कर रहा है। प्रकृति की सुरक्षा होना अनिवार्य है। इन कवयित्रियों के प्रकृति चित्रण में विविधता है। किसीने प्रकृति के सुंदर रूप का वर्णन किया है तो किसी ने पर्यावरण के असंतुलन पर चिंता व्यक्त की है। ग्रामीण संस्कृति, पर्यावरण , सामाजिक सरोकार आदि का चित्रण मुक्ता की कविता में दिखाई देता है।

आधुनिक काल में इस प्रकार की कविताएँ प्राय: सभी कवयित्रियों ने लिखी है। अब कवयित्रियों के सामने वर्तमान सामाजिक विषमता के अनेक पक्ष हैं। व्यवस्था के अनेक बदलते रुप हैं जिसे आज के जीवन मे विकसित महानगरीय सभ्यता के अभिशापों के प्रति भी इन कवयित्रियों की सजगता देखी जा सकती है। वक्त की अनेक बदरुप सच्चाइयों को इन कवयित्रियों ने समझा और महसूस किया है। आज की भ्रष्ट व्यवस्था में जीनेवाला इन्सान धीरे-धीरे स्वाभिमान शून्य हो गया है। सहज रूप से जीना भूल गया है। इस पर अनेक कवयित्रियाँ अपने मत प्रकट की है। इंदू जैन, इंदू वशिष्ट, उर्मिला कौल, सावित्री डागा, रमा सिंह, कामिनी भटनागर, मणिका मोहिनी, सावित्री डागा आदि प्रमुख है।

कुछ कवयित्रियों ने वर्तमान भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था, भ्रष्ट चरित्र, पर व्यंग्यात्मक प्रहार भी किया हैं। इसके साथ ही अनेक कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में युगीन विषमताओं का चित्रण किया है। उनकी अनेक कविताओं में राजनीतिक

सूझबूझ एवम् सामाजिक व्यवस्था के प्रति जागरुकता की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें प्रमुख हैं, सुमन राजे, कमल कुमार, किरण जैन, अरुणा कपूर, प्रभा मुझुमदार, इंदू वशिष्ट आदि। सुधारवादी दृष्टी कुसुम अंसल में और दलित स्त्री का चित्र रमणिका गुप्त में दिखाई देती है।

स्त्रीवादी दृष्टिकोण को सामने रखकर लिखनेवाली कवयित्रियों मे सुमन राजे, समणिका गुप्त, कुसुम अंसल, कामिनी भटनागर, मंजु महिमा भटनागर, प्रभा खेतान, शांति जैन, अमृता भारती, अरुणा कपूर, मुक्ता, सावित्री डागा, शशि शर्मा, सुशीला कपूर, डी. माधवी, अर्चना वर्मा, दिनेश नंदिनी डालमिया, निशा-निशांत, शशि सहगल आदि प्रमुख हैं। पारिवारिक जीवन का चित्रण कुसुम अंसल, कामिनी भटनागर, शशि सहगल, सुनिता जैन, आदि कवयित्रियों की कविता में हुआ है। वात्सल्य का चित्रण विद्यावती कोकिल और मंजु गुप्ता ने किया है। मजदूर और किसान के दुःख दर्द को जानने का प्रयत्न रमणिका गुप्त, इंदू जैन, इंदू वशिष्ट, अरुणा कपूर आदि ने किया है।

आम आदमी का दर्द और पीडा का चित्रण सुधागुप्ता, इंदू जैन, अरुणा कपूर, इंदू वशिष्ट, उषा चौधरी आदि ने किया है। कवयित्री रमा सिंह ने रुढि परंपरा का विरोध किया है। यांत्रिक जीवन और जीवन की क्षणभंगुरता को प्रभा मुझुमदार और इंदू वशिष्ट ने चित्रित किया है। दहेज प्रथा का विरोध इंदू वशिष्ट और मंजु महिमा भटनागर ने किया है। गगन गिल और अनामिका ने स्त्री देह दमन को अपनी कविता में स्थान दिया है।

शोषण, अन्याय, अत्याचार, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या जन्म, बिना सहमति से गर्भपात आदि समस्याओं का चित्रण कामिनी भटनागर, शशि सहगल, सुशीला कपूर, सुशीला जोशी आदि कवयित्रियों ने किया है। मणिका मोहिनी ने शहरी संवेदना को लताडा है और पुष्पा राही ने आक्रोश प्रकट की है। सावित्री डागा ने मूल्यों का ऱ्हास और अर्थ केंद्रित सभ्यता पर करारा चोट की है। शशि शर्मा स्त्री को शोषण से मुक्त करना चाहती है, उसने स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की माँग की है।

व्यवस्था में स्थित अंतर्विरोध, असफल प्रजातंत्र, आज की राजनीति आदि अनेकविध समस्याओं का चित्रण सुमन राजे, कमल कुमार, किरण जैन, अरुणा कपूर, प्रभा मुझुमदार, इंदू वशिष्ट आदि कवयित्रियों ने किया है।

सुधारवादी, प्रगतिवादी विचारों को बढावा देनेवाली अनेक कवयित्रियाँ दिखाई देती हैं। कुसुम असंल बलशाली भारत के निर्माण के लिए गाँवो, बस्तियों को ज्ञान विज्ञान की सुविधाओं से जोडने का सलाह देती है। महादेवी वर्मा की संपूर्ण सहानुभूति गरीबों के साथ जुडी हुई है। रमणिका गुप्त ने सामान्य लोगों की चिंता, श्रमिकों की पीडा और आम दलित स्त्री का प्रतिनिधित्व किया है। अरुणा कपूर, इंदू वशिष्ट आदि ने बाल मजदूरी के व्यथापूर्ण जीवन का मार्मिक चित्रण किया है।

शांति सुमन का वर्गहीन समाज की स्थापना का लक्ष्य है। इंदू जैन ने आतंकवाद और एटम बम जैसी समस्या पर प्रश्न उठाया है। किरण जैन ने वर्तमान सामाजिक विषमता का चित्रण किया है। कमल कुमार ने भ्रष्टाचार से ग्रस्त राजनीति और चार-दीवारी में बंद न्याय व्यवस्थापर तीखा व्यंग्य कसा है। डी. माधवी जीवन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए, मन शांति के लिए मंदिर-मस्जिद न जाकर मन के दिए जलाने का सलाह देती है।

इस प्रकार ये कवयित्रियाँ अपनी कविताओं में परंपरागत अभिव्यक्ति से आगे बढकर आधुनिक युग बोध या जीवन के यथार्थ से जुड चुकी है। अतः हम स्पष्ट कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता की विकास प्रक्रिया में निश्चित ही इन कवयित्रियो का योगदान महत्त्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय है।

सप्तम् अध्याय

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता : कथ्य सौंदर्य

7:1 भूमिका :

आधुनिक कालीन मराठी कवयित्रियों की कविता के कथ्य सौंदर्य का विवेचन प्रस्तुत अध्याय मे किया गया है । आधुनिक मराठी कवयित्रियों के काव्य का अध्ययन स्वतंत्र रूप में नहीं हुआ है । परंतु इस दिशा में कुछ अल्प प्रयास हुए हैं। 'वनिता सारस्वत' नामक अपने प्रबन्ध में डॉ. सरोजिनी बाबर ने स्त्रियों के समग्र वाङ्मय का परामर्श लिया है। इसमें कवयित्रियों की काव्यरचनाओं का थोडे में आलेख उन्होंने चित्रित किया है। प्रा. मालती किर्लोस्कर ने अपने 'सप्तसरिता' संग्रह को रसग्राही प्रस्तावना लिखकर बहिणाबाई चौधरी, लक्ष्मीबाई टिळक, मनोरमा रानडे, इंदिरा संत, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे और शांता शेळके आदि सात कवयित्रियों के काव्य का संक्षिप्त समालोचन किया है। इसके अतिरिक्त डॉ. अ.ना. देशपांड़े, प्रा.रा.श्री. जोग, प्रा. भ.श्री. पंड़ित, ड़ॉ. वा. भा. पाठक आदि आलोचको ने अपने आलोचनात्मक ग्रंथों में कवयित्रियों की कविता का संक्षिप्त उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका, सत्यकथा, ललित आदि पत्र-पत्रिकाओं में कवयित्रियों के काव्य-संग्रहों का प्रसंगानुकूल निरीक्षण-परीक्षण आयी है।

अंग्रेजी राज्य से पहिले मुद्रणकला अस्तित्व में नहीं थी। उस समय यह कविता (लोकगीत) मौखिक परंपरा से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलते आयी और अक्षर वाङ्मय में समाविष्ठ हुई। समय के अवधि में रचनाकारों की नामो-निशान लुप्त हो गयी। अंग्रेजों के आगमन से महाराष्ट्रीय जीवन में आमूल परिवर्तन हुए। पाश्चात्य वाङ्मय के अध्ययन से मराठी कविता आकार ले रही थी। केशवसुत पूर्व कविता पुरानी लकीर पर चलनेवाली थी। केशवसुत के आगमन से इसमें परिवर्तन हुआ।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में अंग्रेजी समय में एक भी कवयित्री की स्वतंत्र काव्यरचना प्रसिद्ध नहीं हो सकी। स्त्री गीतों के रचनाकार कदाचित स्त्री ही होगी लेकिन उनकी निश्चित रचना कौन सी है इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। केवल

उस में चत्रित विषय और ओवी में स्त्रियों के भावनाओं का अप्रत्यक्ष आविष्कार दिखाई देने के कारण अनुमानत: यह स्त्री रचित कविता है ऐसा तर्क लगाया जा सकता है। बीच में करीब-करीब सौ-ड़ेढ़ सौ वर्षो में स्त्री काव्य निर्माण नहीं हुआ लेकिन अवसर मिलते ही कवयित्रियों ने अपना योगदान देने का प्रयत्न किया है। स्त्री की मूल परंपरा कविता की है इसलिए काव्य क्षेत्र में उसका सहज संचार होने लगा। स्त्री पढ़ने लगी, साहित्य लेखन के प्रति आकृष्ट हो गयी और वह लिखने लगी।

1885 ई. से कवियित्रियों की कविताएँ पाठकों के सामने आने लगी। 1889 ई. के 'ज्ञानोदय' में गृहिणी उपनाम से कवयित्री की कविता प्रसिद्ध हुई। 1900 ई. के बाद स्वतंत्र काव्यसंग्रह के रूप में कवयित्रियों की कविताएँ ग्रंथित होने लगी। पूर्ववर्ती कविताओं का स्वरूप स्फुट गीतात्मक था, पद्धति पुरानी थी । पुरानी पद्धतियों पर लिखनेवाली कवयित्रियों में पार्वतीबाई गोखले, कृष्णाबाई गाड़गीळ, सावित्रीबाई फुले, पद्मावतीबाई भटकळकर आदि उल्लेखनींय हैं। लक्ष्मीबाई टिळक, सारजाबाई बापट आदि कवयित्रियाँ काव्य रचने लगी।

पुराना स्नेह, मायके के प्रति स्त्री की जिज्ञासा आदि पुराने विषय परिवर्तित होकर प्रकृति, प्रेम, देश, समता, स्वातंत्र्य, विश्वबंधुत्व तक उसकी दृष्टि गयी। इस व्यापकता और विशालता के कारण स्त्री दुनिया को खुली आँखों से देखने लगी। पुरानापन समाप्त होकर स्त्री का आधुनिक क्षेत्र में पदार्पण हुआ।

कवयित्रियों ने आधुनिक मराठी कविता में अत्यंत रम्य, भावोत्कट, रसपूर्ण कविता लिखकर मराठी कविता का दायरा व्यापक, विस्तृत और समृद्ध बनाया। इनमें लक्ष्मीबाई टिळक, मनोरमा रानड़े, बहिणाबाई चौधरी आदि कवियित्रियों का व्यक्तित्व चमक उठा। संजीवनी मराठे, शांता शेळके, पद्मा लोकुर, सुहासिनी इर्लेकर, अनुराधा पोतदार, अंजली ठकार, सुशील पगारिया, मल्लिका अमर शेख आदि कवयित्रियाँ सृजनरत रहकर मराठी कविता को संपन्न बनाया।

आज मराठी कवयित्रियों का दायरा बहुत विस्तृत हुआ है। अनेक कवयित्रियाँ आधुनिक काल में सृजनरत हैं। 1885 से 1899 ई. के बीच जो कुछ कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में देखने को मिली इन कविताओं के आधार पर तत्कालीन कवयित्रियों के कविता पर प्रकाश ड़ाला जा सकता है।

'काव्यरत्नावली' पत्रिका में 'एक अबला' उपनाम से कवयित्री की दो कविताएँ

1892 ई. मे प्रकाशित हुए। काव्यरत्नावली में कवियित्री की प्रकाशित पहली रचना है। क्योंकि इससे पहले इसमें कवयित्री की कविता प्रसिद्ध हुई नहीं ऐसा पत्रिका में कहा गया है। ये दोनों कविताएँ सृष्टि वर्णन पर लिखी गयी है। 'प्रभातकाल' इस कविता में कवयित्री ने प्रभातकालीन समय के सुंदरता का वर्णन किया है। 'संध्याकाळ' कविता में सूर्यास्त का मनोहर चित्रण है।

1890 ई. में हरिभाऊ आपटे ने 'करमणूक' साप्ताहिक का प्रारंभ किया । करमणूक साप्ताहिक द्वारा अनेक मराठी कविताएँ प्रकाशित हो गई । कविताओं के अंश भी बडे लुभावने हैं । उनसे तत्कालीन परिवेश, स्त्री मर्यादा, स्त्री जीवन आदि का परिचय भी होता है । परंतु इनमें से कुछ कवयित्रियों के नामोल्लेख प्राप्त नहीं होते । कहीं छात्रों का उल्लेख मिलता है, कहीं केवल स्त्री द्वारा रचित कविता है, इसका पता चलता है । परंतु कवयित्रियों के नामों का नहीं । 1892 ई. में इस पत्रिका में एक कवयित्री की कविता प्रसिद्ध हुई है। कवयित्री का नामोल्लेख नहीं है। यह एक छात्रा की रचना है ऐसा कविता के शुरुआत में कहा गया है। एक बालविधवा के जीवन का दुःखपूर्ण चित्रण इसमें चित्रित है। पाँच वर्ष की अवस्था में एक साठ साल के वृद्ध के साथ उसका विवाह हुआ है। माता-पिता ने पैसा लेकर यह सौदा किया होगा ऐसा लगता है ।

'सीतागीत' काशिताई हेर्लेकर का गीत 1893 ई. में 'करमणूक' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इसमें कवयित्री सीता के संघर्षमय जीवन का चित्रण करती है। पतिनिष्ठा के कारण सीता ने दुःख भोगा, जन प्रवाद के कारण राम ने उसका त्याग किया फिर भी वह संकट का सामना करती है। अपने कुल की मर्यादा रखती है। कवयित्री सहनशीलता की प्रतिमूर्ति सीता का गौरव करती है। 'बालबोध मेवा' पत्रिका 1873 ई. में प्रारंभ हुई । इसमें बाल साहित्य को प्रधानता दी गई। प्रस्तुत पत्रिका में एमिली बिसल, आनंदी तथा बनुबाई पंडित की कविताएँ दिखाई देती है। इनकी कविताओं के धार्मिक तथा प्राकृतिक संदर्भ के विषय रहे हैं। 'मनोरंजन' मासिक पत्रिका में 'फुलांचा हार' कविता एक भगिनी उपनाम से प्रसिद्ध हुई है। इस कविता में गुलाब, शेवंती, सोनचाफा, बकुल आदि फूलों का वर्णन है।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में करीब - करीब तीन दशक तक कवयित्रियाँ

भक्ति से संबंधित काव्य-रचना करती रही आगे भी यह प्रवाह क्षीण नहीं हुआ। 1958 ई. तक कुछ मात्रा में यह प्रवाह प्रवाहित रहा। इन कवयित्रियों पर अंग्रेजी स्त्री गीतों का प्रभाव था, इन्होंने धावा, पद, गौळण के साथ-साथ तत्व चिंतन पर गीतों का भी निमार्ण किया पद्मावती भटकळकर, मथुराबाई पंड़ित, सारजाबाई बापट, लक्ष्मीबाई कुलकर्णी आदि कवित्रियों ने दीर्घ स्वरुप की काव्य-रचना की। गीता जैसी गहन दर्शनिक ग्रंथ को भी उन्होंने मधुर वाणी से काव्यबद्ध किया, ये कवयित्रियाँ भले ही शिक्षा क्षेत्र में पीछे हैं, लेकिन उनमें बहुश्रुतता अधिक थी। आधुनिक काल में मराठी में सृजनरत कवयित्रियों की कविता का कथ्य सौंदर्य इस प्रकार है ।

7:1:1 सावित्रीबाई फुले :

आधुनिक काल की एक सशक्त कवयित्री के रूप में सावित्रीबाई फुले का मराठी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्त्री दास्यमुक्ति आंदोलन की प्रणेती सावित्रीबाई फुले युगस्त्री थी। सेवावृति, धैर्य आदि असामान्य गुणों के साथ सावित्रीबाई एक प्रतिभासंपन्न कवयित्री थी।

सामाजिक कविता का जनकत्व केशवसुत को प्रदान किया जाता है, लेकिन केशवसुत से पहले 'काव्यफुले' (1854) लिखनेवाली सावित्रीबाई की सामाजिक भाईचारे को सामने रखते हुए अग्रपूजा का स्थान देना चाहिए। केशवसुत की श्रेष्ठता सावित्रीबाई के पास भले ही न हो लेकिन तत्कालीन सामाजिक वास्तविकता को देखने की नयी दृष्टि उनके पास दिखाई देती है।

'काव्यफुले' (1854) 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' (1892) आदि दो काव्य संग्रह उनके प्रकाशित हुए हैं। इन काव्य संग्रहों का विचार किया जाय तो सावित्रीबाई एक उत्तम कवयित्री थी ऐसा निर्विवाद कहा जा सकता है।

1848 ई. के 1 जनवरी को ज्योतीराव ने पुणे के बुधवार पेठ में तात्यासाहेब भिड़े के बाड़े में महाराष्ट्र में पहली लड़कियों की पाठशाला शुरुआत की। लड़कियों को पढ़ाने का काम ज्योतीराव ने सावित्री को सौंप दिया। इस कार्य को उतने ही हिम्मत से सावित्री ने स्वीकार कर लिया। मिसेस मिचेल इस मिशनरी महिला ने सावित्री को अध्यापन के लिए आवश्यक शिक्षा देकर उनके उत्साह को बढ़ाया।

सावित्रीबाई स्कूल में बच्चों को पढ़ाते समय सहज गीतों की रचना करती थी। उस काल में किताब उपलब्ध न होने के कारण कथा, कविता मन से ही रचकर बच्चों

को पढ़ाया जाता था। ज्योतीराव के तालीम में सावित्री की सुप्त प्रतिभा के अंकुर फुट पड़े। सावित्री रचित कविता, गीतों का संकलन कर स्वयं ज्योतीराव ने 'काव्यफुले' कविता संग्रह 1854 ई. में शिळा प्रेस मुंबई में छपकर प्रकाशित किया।

'काव्यफुले' में प्रकृति, समाज, प्रार्थना, शिक्षण, जातिप्रथा, इतिहास बोध, आदि विषयों पर सावित्रीबाई ने काव्य रचना की है। ड़ॉ.माधवी खरात के शब्दों में- ''काव्यफुले' में कीचड़ में दबे हुए मानवीय भावनाओं का चित्रण है।'' [1]

'बालकांना सदुपयोग' कविता में छात्रों को सुयोग्य उपदेश देकर ज्ञान का महत्त्व विशद किया है। 'शिक्षण' कविता में प्रकट विचार भी उतने ही मौल्यवान हैं। वैचारिक कविता के साथ साथ प्रकृति प्रेम भी महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। 'सदा हसते रहो' और 'सभी पर प्रेम करो' ये प्रकृति - चित्रण को देखने के बाद पता चलता है-

''सुंदर सृष्टी सुंदर मानव। सुंदर जीवन सारे।
सद्भावाच्या पर्जन्याने बहरुन टाकू वारे।।[2]

'माझी जन्मभूमी' कविता में सावित्रीबाई ने अपने जन्मगाँव नायगाँव के आँचलिकता का सुंदर और जीवंत चित्रण किया है। ऐसे प्रकृति रमणीय भूमि में रहनेवाले इन्सान मन से बड़े हैं, वहाँ का किसान बलिराजा है बलिराजा का चित्र खींचते हुए वह कहती है-

''म्हणे बांध शेती पहा या विहिरी
पहा पीक माझे कशी छान ज्वारी
मला गौरकान्ता तशी गोड पुत्री
असा दंभ ज्याला नसे तो सुपात्री।।''[3]

शुद्र और अतिशुद्रों के परिस्थिति के संबध में सावित्रीबाई को अत्यंत करुणा आती थी। दारिद्रय और अज्ञान से ही उनका मन असंवेदनशील हुआ है। वे दु:ख को सुख के रुप में अपनाती है-

"सुखाची नसते हाव दु:खास सुख मानती
विधाते निर्मित जैसे रहावे बोध सांगती

---

1) डॉ.खरात माधवी-सावित्रीची साहित्य साधना, निरंतर शिक्षण त्रैमासिक, जनवरी 2003, पृ.14,15
2) डॉ. माळी मा.गो. काव्यफुले सावित्रीबाई फुले समग्र वाङ्मय, पृ.17
3) डॉ. माळी मा.गो. बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाङ्मय, पृ.86

ज्ञानाची नसती डोळे म्हणोनि न दिसे दुःख

स्वावलंबी नसे शुद्र स्विकारती पशु सुख" [4]

अपने स्वार्थ के लिए विषम समाज का निर्माण करनेवाले धर्म-पंड़ित और सनातनी लोगों का धिक्कार करती हैं।

ज्योतीराव-सावित्री व्यक्ति दो लेकिन मन, विचार से एक थे, एक-दूसरे पर दोनों का निस्सीम प्रेम था। 'संसाराची वाट' कविता में ज्योतीराव के सहवास में सुखी संसार का स्वीकार करते हुए सावित्री किस प्रकार आनंदित है यह बताती है। विठ्ठल लांजेवार कहते हैं- ''जिस काल में स्त्री शिक्षा पर बंदी थी, उस काल में घर में पढ़ लिखकर कविता करने का सामर्थ्य, संपादन करनेवाली सावित्री निःसंशय अलौकिक प्रतिभा की धनी थी।''[5]

'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' (1892) सावित्रीबाई का यह दूसरा काव्य संग्रह है।

इस संग्रह की कविताएँ 'काव्य-फुले' की कविता से अधिक वैचारिक और प्रभुत्त्वपूर्ण लगती हैं। इन कविताओं में उनके चिंतनशील मन के अधिक व्यापक दर्शन होते हैं। इतिहास को खुली आँखो से देख उससे कुछ बोध लेकर ही अपना राह निश्चित करना चाहिए नहीं तो हम गुलामी से मुक्त नहीं हो सकेंगे, इस विचार से उन्होंने प्राचीन और मध्यकाल का इतिहास बताकर, रावबाजी पेशवा काल में अंद्धःश्रद्धा के कारण निर्माण हुए सडे गले समाज का सशक्त चित्र खींचा है ।

सावित्री अपना बुद्धिदाता ज्योतीराव होकर उनसे ही प्रेरणा प्राप्त हुआ है यह बताते हुए नम्रपूर्वक कहती है-

''जयाचे मुळे मी कविता रचिते

जयाचे कृपे ब्रम्हा आनंद चिते।।

जयाने बुद्धी मिळे सावित्रीस

प्रणामा करिते स्वामी ज्योतिबास।।''[6]

इसे छः विभागो में विभाजित किया गया हैं- 1. उपोद्घात 2. सिद्धता 3. पेशवाई 4. आंग्लाई 5. ज्योतीबा 6. उपसंहार आदि। उपोद्घात में चार कड़वे समाविष्ट

---

4) डॉ.मा.गो.माळी-सावित्रीबाई फुले समग्र वाङ्मय (काव्यफुले) पृ.24

5) लांजेवार विठ्ठल- युगस्त्री : सावित्रीबाई फुले, पृ.38

6) सिध्दता- डॉ.मा.गो.माळी बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाङ्मय पृ.81

होकर इसमें गुलामी से त्रस्त स्त्री शूद्रों कों आह्वान किया गया है। इस रचना का सूत्र समर्पण भाव है। कवयित्री का चिंतन, कृतज्ञता, समृद्धता और भक्ति भावना से भरा व्यक्तित्व दिखता है। कृषिकन्या सावित्रीबाई 'मातीची ओवी' कविता में कहती है-

''काळसर माती पीक पाणी देती फळे फुले शोभती शिवारात
पांढरीला मळून कौले विटा करून राहती घरे बांधून शिवारात।
मातीचा महिमा सांगावा किती हा मातीचे नाते अहा शिवारात।''[७]

सावित्रीबाई ने ग्रामीण जन संस्कृति के संवर्धन के संदर्भ में विधायक और आश्वासक चित्र खींचा है।

'ज्योतीबा' बावनकशी सुबोध रत्नाकर का पाँचवा भाग चौदह कडवों में समाविष्ठ है। इसमें स्त्री शुद्राति शूद्र, कुनबी, किसान और सामान्य जनों के उत्थान का स्वप्न साकार करनेवाले ज्योतिबा का कार्य चरित्र समाविष्ठ है। विपरित परिस्थिति में भी संघर्ष करनेवाला ज्योतिबा का नायकत्व मन को आकर्षित करनेवाला है-

''तुकाराम जैसा तैसा संत जोती।
सुधा ज्ञान देई जना रीतिभाती।।
पुढारी क्रियाशील द्रष्टा प्रसिध्दी।
वंदे जोती रुढी असे ती असिध्दी।।''[8]

'उपसंहार' में केवल पाँच कड़वे समाविष्ट हैं । इसमें ज्योतीबा के जीवन कार्य का चित्र साकार हो उठा है। राजाराम सुर्यवंशी के शब्दों में-''सुबोध रत्नाकर' रचना के पीछे सावित्रीबाई की निष्ठा है इसमें शक नहीं। ज्योतिबा एक युग नायक होने के कारण उनके जीवन विचार, चरित्र, सामाजिक दृष्टिकोण आदि से यह रचना दीर्घ बन गयी है। ज्ञानज्योती युगस्त्री सावित्रीबाई का यह साहित्य निर्मिति यानी मराठी भाषा का सहज सुंदर साहित्य मंजूषा है।''[9]

कुल मिलाकर सावित्रीबाई ने अपनी कविता में संसार, प्रकृति, अंध:श्रद्धा निर्मूलन, रुढ़ि परंपरा विरोध और जातिप्रथा आदि पर मंथन किया है।

---

7) माळी मा.गो. - सावित्रीबाई फुले समग्र वाङमय (काव्यफुले), पृ.24
8) जोतिबा - बावनकशी सुबोध रत्नाकर, सावित्रीबाई फुले समग्र वाङमय, पृ.88
9) सुर्यवंशी राजाराम ङ्क युगस्त्री सावित्रीबाई फुले, पृ.118

संसार के संबंध में कवयित्री कहती है। संसार रूपी रथ के दो पहिए हैं पति-पत्नी, संसार में दोनों को मिलकर ही चलना पड़ता है, इन पर घर की जम्मेदारी होती है। संसार के तान-तनाओं को झेलनेवाली गृहिणी को आत्मीयता से कवयित्री उपदेश करती है। 'संसाराची वाट' कविता में वह कहती है-

''शांतता आपली। ठेवावी प्रपंची
हीच वाट साची। संसारात।।''[10]

सावित्रीबाई ने कुछ कविताओं में प्रकृति का सुंदर अंकन किया है। सावित्रीबाई आद्य पर्यावरणवादी कवयित्री थी। प्रकृति के प्रति उनके मन में दुर्दम्य आशावाद है क्योंकि प्रकृति और मानव एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति से मानव को अन्न, हवा, पानी, औषधी वनस्पती और आनंदमय जीवन प्राप्त होता है। आधुनिक जीवन में बदलते परिवेश में मनुष्य को प्रकृति का खयाल रखना चाहिए। कवयित्री कहती है, प्रकृति और मानव दोनों एक ही शिक्के के दो बाजू हैं इसलिए प्रकृति की शोभा बढ़ाने के लिए मनुष्य को हर पल प्रयत्न करते रहना चाहिए ऐसा संदेश प्रत्येक मानव को देती है।

मानव उन्नति के लिए, स्वार्थ के लिए प्रकृति पर हावी हो रहा है, फलस्वरुप जल, वायु प्रदुषण, बीमारी आदि नई समस्याएँ निर्माण हो रही हैं। प्रकृति को बचाना आज आवश्यक है, प्रकृति अगर जीवित है तो ही मानव जीवित रहनेवाला है। यह संदेश सावित्रीबाई ने डेढ़ सौ साल पहले दिया था। सावित्री कठोर विवेकवादी, बुद्धिवादी महिला थी। किसी भी अंधःश्रद्धा पर उनका विश्वास नहीं था। अंधःश्रद्धा पर तीखा व्यंग कर स्त्री शुद्रातिशुद्रों के लिए अपना स्वर्वस्व अर्पित कर दिया।

अंधःश्रद्धा के साथ-साथ कर्मसिद्धांत पर भी प्रहार करते हुए, 'मनू म्हणे' इस प्रबोधन पर कविता में सावित्रीबाई कहती है-

''नांगर धरती । शेती ती करती । मठठ ते असती । मनू म्हणे
शुद्र जन्म घेती। पूर्वीची पापे ती। जन्मी या फेडती। शुद्रतो
विषम रचनी। समाजाची रीती। धुर्तांची ही नीती। अमानव !!''[11]

10) संसाराची वाट- काव्यफुले, सावित्रीबाई फुले समग्र वाङमय, पृ.8
11) डॉ.माळी मा.गो. सावित्रीबाई फुले समग्र वाङमय (काव्यफुले) पृ.19

सावित्रीबाई की यह कविता कर्म सिद्धांत पर आक्रमण करनेवाली है। मनू ने किसान को अज्ञानी कहकर अज्ञान उन्हें जन्म से ही प्राप्त हुआ है, उन्हें वैसे ही रहना चाहिए कहा था, लेकिन इस धूर्त नीति से दूर रहने का संदेश कवयित्री ने दिया है।

पुराण कहती है ब्रह्म दुनिया का लालन-पालन करनेवाला है, तो शूद्र किसान भी खेती में काम कर अन्न उपजाता है और दुनिया का लालन-पालन करता है वह भी ब्रह्म ही नही क्या? ऐसा सवाल उठाती है । 'ब्रह्मवंती शेती' कविता में कवयित्री कहती है।

''ब्रह्म असे शेती। अन्न धान्य देती।
अन्नास म्हणती । पर ब्रम्ह ।।1।।
शूद्र करी शेती । म्हणुनिया खाती।
पक्वान झोडती। अहं लोक ।।2।।
दारुडे बोलती। तैसे ही वागती।
मतलब नीती। वाचाळांची ।।3।।
जे करिती शेती । विद्या संपादती
तया ज्ञानवंती । सुखी करी ।।4।।''[12]

राजाराम सुर्यवंशी के शब्दों में – "केशवसुत को आधुनिक कविता का जनक कहा जाता है। लेकिन इससे चालीस साल पहले सावित्रीबाई का 'काव्यफुले' कविता संग्रह प्रकाशित हुआ था। मराठी साहित्य का आद्य प्रयत्न, मराठी साहित्य में आद्य आधुनिक कविता के रूप में उनकी कविता का महत्त्वपूर्ण स्थान है।"[13]

सावित्रीबाई का जो साहित्य प्रकाश में आया है उसे देखकर कहा जा सकता है कि, उनके काव्य निर्मिति का प्रयोजन साहित्य निर्माण करना न होकर प्रमुख रूप से 'इंन्सान' के रूप में जीने का हक्क मिला देना है । सावित्रीबाई की काव्यरचना बहुत कुछ श्रेष्ठ न हो तो भी उनके काव्य निर्मिति के पीछे आंतरिक छटपटाहट के कारण रचनाएँ मौल्यवान लगती हैं।

---

12) डॉ.माळी मा.गो. - सावित्रीबाई फुले समग्र वाङमय, (काव्यफुले) पृ.20
13) सुर्यवंशी राजाराम- युगस्त्री : सावित्रीबाई फुले, पृ.84

7:1:2 लक्ष्मीबाई टिळक :

कवयित्री लक्ष्मीबाई टिळक के 'भरली घागर' (1971), 'मी तुझी मावशी तुला न्यावया आले', 'ख्रिस्तायन' आदि रचनाएँ प्रकाशित हुए हैं। ख्रिस्तायन के 12 से 75 तक के अध्याय पति के मृत्यु के बाद पति के प्रति निष्ठा के कारण इसे उन्होंने पूरा किया।

कवयित्री लक्ष्मीबाई टिळक ने देशभक्ति पर कवन, पति-पत्नी संबंध, मायका, विधवा का दु:ख आदि का चिंतन अपनी कवता में की है।

कवयित्री की देशभक्ति पर कवन से राष्ट्र में स्वतंत्रता की आकांक्षा निर्माण हो गयी। स्त्री राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान देने लगी घर गृहस्थि का त्याग कर देशहित के लिए आगे बढ़ गयी। 'देशसेवा हा विसावा', 'वंदेमातरम्', 'एकाचे आमकडवे' आदि उत्तेजनपूर्ण कविताएँ लक्ष्मीबाई ने रची है। 'पुढ़े व्हा' कविता में कवयित्री कहती हैं।

''नच हिंद पुत्र डरणार । पुढे सरणार
जशी शक्ति तसे करणार। पढे सरणार
ये धाव जगाच्या नाथा। तूच होई आमुचा नेता
मग नाही कधी हरणार। पुढे सरणार''[14]

ब्रिटिशों के विरुद्ध लढ़ने के लिए हिंद पुत्र को कवयित्री प्रोत्साहित कर रही है।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर की कवयित्रियों में लक्ष्मीबाई टिळक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कवयित्री का जीवन तत्कालीन स्त्री जीवन से अलग और वैशिष्टयपूर्ण था। उनका बालविवाह हो गया था। कवि रेव्हरंड टिळक ने जब धर्मांतर किया तब उनके मन पर बडा आघात हुआ। इस आघात से उनकी हृदय से जो पहली कविता प्रस्फुटित होकर बाहर निकली उसमें उन्होंने आर्त भावना से ईश्वर से पूछा है। ईश्वर रूप पति के शिवाय दूसरे किसके पास शिकायत की जाती है। पति को ईश्वर रूप में देखने की तत्कालीन दृष्टि यहाँ दिखाई देती है।

हिंदू संस्कृति में पति-पत्नी का रिश्ता अविभाज्य है। स्त्री के बिना पुरुष और पुरुष के बिना स्त्री अधुरी है। स्त्री-पुरुष की जोड़ी जीवन में परिपूर्णता लाती है। दोनों की एकता में सफलता है-

''नर-नारी संगम जिकडे तिकडे पाही ।

---

14) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.139

बघ वरी खालती पहा! जगी कोठे ही।

नर-नारी संगम हीच संस्कृति बाई

विश्वात एकले कुठेच कांही नाहीं।''[15]

हिंदू संस्कृति में पति को परमेश्वर माना जाता है, स्त्री पढ़कर सुशिक्षित हो गयी, महाविद्यालयीन उच्च शिक्षा लेकर बाहर पडने लगी, ऐसे स्त्री को भी पति के प्रति नितांत श्रद्धा है।

कवयित्री 'मी तुझी मावशी' कवता में कम उम्र में विवाहित होकर ससुराल जानेवाली लडकियाँ तीज त्यौहार के दिन मायके में आने के लिए किस प्रकार छटपटाती है इसका भावपूर्ण अंकन किया है। बाल्यावस्था की यह लडकी भैयादूज के दिन मायका जाना चाहती है। मायके की ओर से आनेवालों की वह पागल की तरह राह देखने लगती है। उसके मन में अनेक भावनाओं की खलबली मच जाती है, हृदय धक् धक् करने लगता है। कवयित्री हृदय द्रावक चित्रण करते हुए कहती है-

''ही गाडी वाजे खड् खड् खड् दूर।

हे इकडे उडते धड् धड् तव ही उर ।''[16]

कवयित्री लक्ष्मीबाई टिळक पति रे. टिळक के मृत्यु के बाद विधवा हो जाती है। सात्वंन पर आये हुए खत पर श्रीमती नाम देखकर उसे दुःख होता है, वह कहती है,

''श्रीमती हे नांव मज आले

सौभाग्य लयास गेले''।[17]

कवयित्री पति को सर्वस्व मानती थी, मित्र, सखा, पति आदि । वह कहती है-

''विचार त्यांचे कृति ही त्यांची

गाणे माझे नसे। तयांच्या संगे मी गातसे''।[18]

घर में ही पढ़ लिखकर अल्पशिक्षित होने के बावजूद भी उन्होंने अपनी कविता में समकालीन सामाजिक प्रश्न,स्त्री परवशता आदि प्रश्नों पर विचार किया है। जातिप्रथा, उँच-नीचता मानव निर्मित है। भगवान को किसी के स्पर्श से कुछ नहीं होता यह विचार

---

15) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.41

16) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.72

17) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.33

18) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.35

'रामासी वाट नाही' कविता में अभिव्यक्त हुआ है। अस्पृश्यों को नाशिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश नहीं था। इसलिए वहाँ के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह किया था, उस समय के परिस्थिति को देखकर कवयित्री लक्ष्मबाई टिळक ने लिखा है -

''बहरी फळासी चाखी। शबरी प्रभूस अर्पी।
सानंद ती ही खाई। रामासि वाट नाही।''[19]

लक्ष्मीबाई ने खिस्ती विचारों का स्वीकार किया था। लेकिन राममूर्ति के सामने सभी को प्रवेश मिलना चाहिए ऐसा उनका आग्रह था।

'अनमेल विवाह' का निषेध उन्होंने 'बहिस्कृत याला आधी करा' कविता में किया है। स्त्री-पुरुष प्रश्न पर उन्होंने विभिन्न प्रश्न उठाया है। सामाजिक कविता पर तत्कालीन विचार प्रवाह का परिणाम हुआ है। अनमेल विवाह की संभावना को उन्होंने निम्न शब्दो में व्यक्त किया है –

''जरी सोडुनि गेली अशेव रदनावली।
त्या जागी नवीन कुंदावली।
लोपे न कपोलावरची एकही वेळी।
शुभमंगल तो कुंकुम मळवट, मुंडावळ त्या शिरीं
कुणाला मुंडण्यास तो वरी?''[२०]

इस प्रकार उन्होंने अनमेल विवाह का निषेध किया है। 'मी तुझी मावशी तुला न्यावया आले' कविता में दबी बालिका का चित्र खींचा गया है। भैयादूज के लिए मायका जाने के लिए अधिर हुई अल्प उम्र के बालिका के गूँगे मन का करुणाजनक चित्रण कवयित्री ने किया है। उसकी खाला उसे बुलाने आती है, निष्पाप लडकी की अवस्था देखकर खाला चिंता व्यक्त करती है-

''ही भरली घागर तुझ्या शिरावर बाळे
तूं उभी? लागले कुठे कुठे तव डोळे?''[21]

सहज सरल लगनेवाली यह कविता, 'बाळे' शब्द से कम उम्र को सूचित करती है। कम उम्र में ही घडा भरकर वह आ रही है, यह उस पर असमय ही आयी हुई जिम्मेदारी

19) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर पृ.63
20) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.59
21) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ. 59

को सूचित करती है। तू ठहरी है, यह शक उसके मन में पैदा होता है कि एक पल भी बैठने के लिए समय नहीं है।

7:1:3 सावित्रीबाई जोशी :

कवयित्री सावित्रीबाई जोशी विधवा के दु:ख स्थिति पर प्रकाश डालनेवाली कविता लिखती है। रुढ़ि के कारण स्त्री की अवन्नति होती है इसे सिद्ध करते हुए कवयित्री कहती है -

''ही रुढ़ि मना जाचिते अवनती तयाने होतें।
सत्वरी धैर्य खचविते परतंत्र सदा बनविते।
नसताचि पतिचे छत्र दिर, जावा, सासू स्वसूर।
किती शबूद बोलती क्रूर या परीच ते माहेर।
ही विद्या माऊलि खासी करितसे सबल अबलांसि।
सेवावे तव चारणांसी मय काय उणे सौख्यासी।''[22]

पति के पश्चात् स्त्री की स्थिति दयनीय बन जाती है। ससुराल में उसे सताया जाता है। इसलिए ज्ञान और शिक्षा का महत्त्व समझ में आता है। ज्ञान और शिक्षा से अबला सबला हो जाती है, कवयित्री के ये विचार प्रशंसनीय है।

7:1:4 लक्ष्मीबाई लेले :

कवयित्री लक्ष्मीबाई लेले 'हिंदु स्त्रियांची स्थिती' कविता में नारी के दासता का चित्रण किया है। समाज में स्त्री का स्थान गौण है, वह पुरुष की गुलाममात्र है, उसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। पति के मर्जी के खिलाफ वह कुछ नहीं कर सकती। दुराचारी, व्यसनी पति का भी सेवा उसे करना पडता है। स्त्री, पुरुष की एक भोग वस्तु है, दासी है इससे बढ़कर उसका समाज में कुछ स्थान नहीं-

''जन्म कठीण जगती अबलांचा
वदता नच ये असुन वाचा
मुर्ख पति व्यसनी कैसा ही
मालक स्त्रीच्या सर्वस्वाचा
आवड नावड नाही स्त्रीला
गुलाम जणु पतीच्या मर्जीचा''[23]

---

22) टिळक लक्ष्मीबाई- भरली घागर, पृ.72
23) लेले हेमाबाई-निरांजन, पृ.58

'एक हृदय' कविता में कवयित्री समाज-रचना को दोषी ठहराती है । अबला परित्यक्ता को कोई पूछता नहीं। वह कष्ट सहती है, इसे चित्रित करते हुए कवयित्री कहती है-

'प्रौढा खिन्न परंतु असे शालीनता लोचनी।
होती गाळीत आसवें उभी अशी पाहोती वातायनी।
बाई काय कथूं समाज रचना पुरुषांस हो धार्जीणी।
अबला त्या परित्यक्ता त्यांस जगती नाहीच वाली कुणी।
मांडी संस्कृती डाव नूतन परी जाया दुजी वर्णुनी
कंठी कष्टद आयु निर्मळपणे हालात एकाकि ती।' [24]

पुरुष कैसा भी बरताव किया तो सिर्फ वह पुरुष है इसलिए समाज उसे समाविष्ट कर लेती है ।

1935 ई. के बाद के काल में स्त्री जीवन विषयक प्रश्न का स्वरुप क्लिष्ट बनता गया। इस समय समाजवादी ध्येय-धारणाओं का जोर था, स्त्री को भी इसमें आकर्षण निर्माण हो गया ध्येयवाद के रास्तेपर चलनेवाली स्त्री का जीवन साहित्य में चित्रित किया जाने लगा। इसमें भी कठोर वास्तविकता व्यक्त होने लगी। प्रा.भ.श्री. पंडित कहते हैं- ''जिसमें विषमता की चीढ़ है, स्वयं के सामर्थ्यपर विश्वास है, ऐसी कविता 1935 ई. से अधिकाधिक मात्रा में तेजी से निर्माण होती रही। उसके प्रमुख चार प्रवाह हैं। एक प्रवाह यथार्थवाद की मान ली और दूसरी क्रांतिवादी काव्य की। यथार्थवादी कविता के संदर्भ में वे कहते हैं, उसमें यंत्र युग का दुबला मानव, विशृंखल समाज और कृत्रिम जीवन का यथातथ्य प्रतिबिम्ब साकार हो उठी है। वैसे ही ''क्रांतिवादी कविता में अन्याय के प्रति चीढ़, अमीरों के प्रति रोष, रुढ़िभंजन और समता का गौरव है।''[25]

7:1:5 मथुराबाई पंडित :

'गीताकुंजन' मथुराबाई पंडित का भगवद्गीता का पद्यमय अनुवाद गीता तत्त्वज्ञान पर आधारित ग्रंथ है। कुरुक्षेत्र के मैदान पर अपने ही स्वजनों को देखकर अर्जुन जब गलित-गात्र हो जाता है तब उसे श्रीकृष्ण वेद, उपनिषदादि दार्शनिक ग्रंथो का मंथन कर गीतारुपी नवनीत सामने रखता है। गीताकुंजन में कवयित्री कहती है –

24) लेले हेमाबाई- निरांजन, पृ.56
25) पंडीत भ.श्री. आधुनिक मराठी कविता, पृ.280

''कसे मारु गोत्रजांसी। सांग यदुराया रे।

पाहुनिया अवघे स्वजन। गळे माझा स्वाभिमान।''[26]

'गीताकुंजन' पर ज्ञानेश्वरी का प्रभाव है। यह काव्य रसपूर्ण है। भाषा सरल और मधुर है। गाने योग्य पद होने के कारण अर्थपूर्ण और आकर्षक बन गयी है।

7:1:6 पद्मावतीबाई भटकळकर :

'अध्यात्म अयोध्या' कवयित्री पद्मावतीबाई भटकळकर को श्रीरामचरित दृष्टांत और अभंगवाणी से लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने श्रीधरकृत 'रामविजय' ग्रंथ के आधार पर काव्य लेखन आरंभ कर दिया और वह दस वर्ष में पूरा हुआ।

बालकाण्ड़, अयोध्याकाण्ड़, अरण्यकाण्ड़, किष्किंधाकाण्ड़, सुंदरकांण्ड़, युद्धकांण्ड़ और उत्तरकांण्ड़ आदि ग्रंथ के सात प्रभाग हैं। परंतु प्रस्तुत ग्रंथ में छः प्रभाग हैं क्योंकि उत्तरकांण्ड़ को युद्धकांण्ड़ में ही समाविष्ठ कर दिया गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना 2636 ओवी में किया गया है। कवयित्री गोवा प्रदेश की होने के कारण अपने कुलदैवत मंगेश की भक्ति और श्रद्धा से आरती की है -

''जयदेव जयदेव जय श्रीमंगेशा।

आरती ओवाळू तुज प्राणलिंगेशा।''[27]

इस प्रकार इनकी कविता में भक्ति भावना दिखाई देती है ।

7:1:7 सारजाबाई बापट :

सारजाबाई बापट के 'काव्य रामायण' के पूर्वाध में बालकांण्ड, आयोध्याकांण्ड और अरण्यकांण्ड समाविष्ठ हैं। सारजाबाई की यह रचना सरस और सुबोध है। भाव भक्ति पर उनका अधिक ध्यान है। मानिनी, इंद्रवज्रा, मंदाक्रांता, भुंजगप्रयात, वसंततिलका आदि विविध छंदो का प्रयोग कवयित्री ने किया है।

7:1:8 उमाबाई कोल्हटकर :

उमाबाई कोल्हटकर ने सावित्री आख्यन की रचना की है। सावित्री सत्यवान को वर के रूप में चुनती है। उसे बताया जाता है कि सत्यवान अल्पायुवाला है, लेकिन सावित्री दृढ़ निश्चयी है, अपने संकल्प से वह दूर नहीं हटती, वह कहती है-

''अढळ असे हा ध्रुवासारिखा, निश्चय माझा सदा

---

26) पंडीत मथुराबाई- गीताकुंजन, पृ.4

27) भटकळकर पद्मावती-भक्तिज्ञानपर पद, पृ.56

मम वचन चळे ना कदा।
त्रैलोक्यातील पुरुषसर्वही, तुजसम मम भासती,
एक सत्यवान हा पति।''[28]

कवयित्री इस में दृढ़ निश्चयी स्त्री का वर्णन किया है ।

7:1:9 सावित्रीबाई पाटणकर :

कवयित्री सावित्रीबाई पाटणकर लिखित 'सावित्रीआख्यान' में यम सावित्री संवाद, सावित्री की पति निष्ठा, सास-ससूर की सेवा आदि का सुंदर अंकन हुआ है। सावित्री के चरित्र को देखने के उपरांत एक आदर्श भारतीय स्त्री आँखो के सामने आती है।

बेटी बाप के लिए एक चिंता का विषय है। सावित्री आख्यान में सावित्री अपने पिता से कहती है-

''किमपिही चिंता न करी ताता जावें आता निज सदनीं
पतिसंग मी वडिला सेवुनि मोदें राहिन घोर वनीं।''[29]

यम जब पति के प्राण लेकर चला जाता है तो वह यम से विनंती करती है। वाक्चातुर्य से उसे द्ंवद्वावस्था में डाल देती है। पति के बिना स्त्री का इस दुनिया में कीमत शून्य है, वह पग-पग पर कैसे अपमानित होती है, जननिंदा का विषय कैसे बनती है इसे चित्रित करते हुए कवयित्री कहती है-

''पतिविण सतिला प्रिय नच मोक्ष ही। स्वर्ग तुच्छ हा गणि युवती।
पतिवाचुनि जीवन जगिं त्या अवमानिती, जन हसंती।''[30]

7:1:10 लक्ष्मीबाई दिंगबर :

कुल 117 कडवें में लक्ष्मीबाई दिंगबर ने सावित्री की कथा बताई है। कथानक का आरंभ गणपति के नमन से हुआ है, कथानक रुढ़ ही है, कहीं भी नविनता नहीं। कथानक का थोडा विस्तार हुआ है।

7:1:11 उमाबाई सहस्त्रबुद्धे :

कवयित्री उमाबाई सहस्त्रबुद्धे ने 'स्त्रीगीत लहरी' में नल-दमयंति आख्यान को इने-गिने शब्दो में चित्रित किया है। इस कथानक पर रघुनाथ पंडित के नलदमयंति

---

28) कोल्हटकर उमाबाई-वटसावित्रीचे आख्यान, पृ.7
29) पाटणकर सावित्रीबाई-गीतवैजयंती,पृ.9
30) पाटणकर सावित्रीबाई- गीत वैजयंती, पृ.11

स्वयंवर का प्रभाव है -

''मज रात्री दीर्घच होती। कथिल का कधी दमयंति''[31]

दमयंति श्लोक के आधार पर अपने विरह को व्यक्त करती हैं।

7:1:12 लक्ष्मीबाई कुलकर्णी :

कवयित्री लक्ष्मीबाई कुलकर्णी ने 'चंद्रहास आख्यान' पदबद्ध किया है। संकट में भक्तों को तारनेवाला भगवान किस प्रकार मद्द करता है यही कवयित्री को इस आख्यान के आधार पर दिखाना है। मराठी में श्रीधर कवि ने ''जैमिनी अश्वमेघ'' यह ओवी - बद्ध ग्रंथ का निर्माण किया है। उसके दसवें आध्याय में चंद्रहास आख्यान की कथा है। यह कथा अंत्यत रसपूर्ण बन गयी है।

केरळी राजा का पुत्र चंद्रहास का मूल नक्षत्र में जन्म होता है। तीन वर्ष की अवस्था में शत्रू का आक्रमण होने से राजा की मृत्यु हो जाती है। राणी छोटे चंद्रहास को सहेली के पास देकर सती जाती है क्योंकि उसे संभालने का बहुत बडा प्रश्न उसके सामने है, वह कहती है-

''जतन करु कसा मी ; दीप हा केरळीचा
चहुकडून सुटे हा वात विक्राळ सांचा।
शिरिषकुसुम माझे ताप लाभो न यास।
सुखविन सुकुमारा या जिवाच्या जिवास।''[32]

शत्रूओं से बचकर सहेली चंद्रहास का लालन-पालन करती है, फिर दुर्भाग्य से सहेली भी मर जाती है। चंद्रहास के सामने अनेक संकट खडे हो जाते हैं। संकटो का सामना करता है और अन्त में एक दिन वह विजयी हो जाता है और सुख से राज्य संभालने लगता है। कवयित्री ने काफी सुंदर ढ़ंग से आख्यान में कथानक पिरोया है।

7:1: कृष्णाबाई गाडगीळ :

कवयित्री कृष्णाबाई गाडगीळ लिखित 'गांधारी गर्वहरण' आख्यान में गजगौरीव्रत का उल्लेख है। आगे चलकर इसके लिए 'हादगा' या 'भोंडला' यह नाम रुढ़ हो गया है, लडकियों का एक खेलमात्र रह गया है। कवयित्री को लगता है कि इस खेल के माध्याम से लड़कियों को कुछ बोध लेना चाहिए।

---

31) सहस्त्रबुध्दे उमाबाई - स्त्रीगीत लहरी, पृ.18
32) कुलकर्णी लक्ष्मीबाई- चंद्रहास आख्यान, पृ.3

यह व्रत कुमारिकाओं का न होकर सौभाग्यवती स्त्रियों का है। इस के आचरण से अंखंण्ड सौभाग्य और संपत्ति प्राप्त होती है ऐसा कहा गया है। गजगौरी व्रत प्रथम गांधारी और बाद में कुंती ने किया था। गांधारी जब कुंती का द्वेष करने लगती है तब कुंती कहती है-

''कुंती म्हणे घ्या वायन बाई
कृष्ण कृपेमज उणीवच नाही
करुन का गर्व - हरिजाणे सर्व त्या नसे परवा - घरी भवा बरवा''[33]

कवयित्री ने संवादात्मक ढंग से स्त्री स्त्री का द्वेष किस प्रकार करती हैं इसे कालात्मक ढंग से चित्रित किया हैं।

7:1:14 लक्ष्मीबाई नांदुरकर :

'बुलाबाईची गाणी' के रचनाकार कवयित्री लक्ष्मीबाई नांदुरकर हैं। अनिष्ठ रुढ़ि और परंपरा सामाजिक स्वाथ के लिए किस प्रकार विघातक हैं, यह सिद्ध कर समाज को सही दिशा देने के लिए कवयित्री ने काव्य रचना की है।

तत्कालीन समाज में प्रचलित रुढ़ि-परंपरा पर आधारित व्रत में शंकर पार्वती के मूर्ति को सजाकर उसके सामने ये गीत गाया जाता है। उदा. ''बुलाबाई सासू कशी झाड़ावर बसली घुबड़ जसी सासरा कसा बोकडा जसा'' आदि। इन गीतों से लड़कियों पर अच्छे संस्कार नहीं होते। इसके विपरीत सास - ससुर के संबध में आनादर की भावना उत्पन्न होती है। रुढ़िपर आधारित ऐसे गीतों को उखाड फेंकने हेतु भगवान के गीत गाने चाहिए इसलिए कवयित्री ने सद्हेतु से प्रेरित होकर बुलाबाई के आगे गाने के लिए सुंदर गीतों की रचना की, कवयित्री का यह स्तुत्य उपक्रम है। कवयित्री के ये गीत भक्तिपूर्ण, सरल और सहज चित्रित किए गये हैं-

''प्रभो दया कर सदा आम्हावर
तव कृपेची आस धरोनि। विनविती बाला ठेऊनिया कर।
प्रार्थितसे तव चरण कृपेने
घडो तुझी ही सेवा आम्हावर।''[34]

---

33) गाडगीळ कृष्णाबाई-गांधारी गर्वहरण, पृ.35
34) नांदुरकर लक्ष्मीबाई- बुलाबाईची गाणी पृ.3

जानकीबाई कुलकर्णी, उमाबाई कोल्हटकर, सरस्वतिबाई डोंगरे, राधाबाई काळे, लक्ष्मीबाई दिगंबर, पार्वतीबाई गोखले, अन्नपूर्णा दीक्षित सत्यभामाबाई खरे, आदि कवयित्रियों ने धावा विषय पर पदरचना की है।

कृष्णाबाई गाडगीळ के संग्रह में द्रौपदी को भरी सभा में दुशासन खींचकर लाता है, कृष्ण के प्रति याचना करनेवाली द्रौपदी यहाँ चित्रित है। कवयित्री राधाबाई काळे श्रीकृष्ण को अनेक उपमा देकर कहती है-

''लवकर येई मोहना। सखा श्याम मोहना ।। धृ ।। ''

दुःशासन ओढ़ी, निरी। घाबरी मी होत जरी।

अश्रुलोचना, सख्या। धाव मोहना ।। 1 ।।

भगिनीची लाज जरी। रक्षी बा तूच तरी

विश्वपालना सख्या। श्याम मोहना ।। 2 ।। ''[35]

'मानसगीत सरोवर' में कवयित्री कृष्णाबाई गाडगीळ ने सीता के विरह का अंकन किया है। रावण जब सीता को ले जाता है, तब सीता आक्रोश करती है, अपने दीर लक्ष्मण को बोलने का भी उसे दुःख होता है-

''झणि धावा धावा आता। श्रीरामचंद्र रघुनाथा ।। धृ ।। ''

लंकेश नेतसे सीता । घेऊनी स्कंधी काकुत्स्था।

कळवील कोण ही वार्ता। तुजवीण अन्य न त्राता।[36]

कृष्णजन्म, बाललीला, उसका नटखट जीवन, गोपी विरह, रास-क्रीडा आदि का चित्रण कवयित्रियों ने काफी सुंदर ढ़ंग से किया है।

कृष्ण के खिलाफ गोपियाँ याशोदा मैय्या से किस प्रकार शिकायते करती है इसका सुंदर वर्णन कवयित्री आनंदीबाई ने किया हैं-

''पहिली म्हणे ऐक यशोदेबाई, काल रात्रि नवलचि केले कांही।

वृश्चिक ते आणुनिया। सोडूनि गेला उषाशी ।। 1 ।।

दुसरी म्हणे काल रात्री ग याने। निजलों आम्ही पाहुनि शयनी त्याने दाढ़ी वेणि

घेऊनि याने, गाठचि दिली कैसी ।। 2 ।। ''[37]

---

35) काळे राधाबाई- हृदतरंग पृ.2

36) गाडगीळ कृष्णाबाई-हृदतरंग पृ.28

37 परांजपे आनंदीबाई- सुबोध गाणी, पृ.4

कृष्णाबाई गाडगीळ, लक्ष्मीबाई दिगंबर, द्वारकाबाई गुर्जर आदि कवयित्रियों ने कृष्णजीवन से संबंधित आख्यान पर कलम चलाई है।

कवयित्री जानकीबाई सोनगांवकर, सीताबाई पाटील, कृष्णाबाई पाटील आदिने पंढ़रपुर के विठ्ठल महिमा पर काव्य रचा है। विठोबा महाराष्ट्रीय लोगों का आद्य दैवत है, दक्षिण काशी के रूप में पंढ़रपुर को पहचाना जाता है। विठ्ठल की महिमा अपार है।

कवयित्री कृष्णाबाई पाटील ने 'खानदेशी विठोबा' पर पद रचना कर आँचलिकता को स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है-

पांडुरंग मज दिसला गे बाई । पांडुरंग मज दिसला।
राई रखुमाई घेऊनि संगे । अंजनिच्या तटिं बसला गे बाई।
पंढ़रपुरच्या भक्तजनांवरि काय म्हणुनि रुसला गे बाई ।
नैवेद्येचा थाट विलोकुनी मौन धरुनी मनी हसला गे बाई।[38]

श्रीदत्तपंचामृत में कवयित्री कमलाबाई बापट ने दत्तस्मरण, दत्तपूजन, दत्तपठन दत्तचरित्र आदि का सूक्ष्म चित्रण किया है।

''ज्यांचे नित्य गंगा स्नान, माहुरी करी शयन।
सहयाद्रिवरी आसन। करी ध्यान गाणगापुरी।''[39]

7:1:15 सावित्रीबाई केळकर :

कवयित्री सावित्रीबाई केळकर की 'गणपति स्तवन' से संबंधित पद प्रासादिक और महत्त्वपूर्ण हैं। किसी भी कार्य का आरंभ प्रथम गणेश वंदना से करते हैं। यह हमारी परंपरा है, संस्कृति है। पुराने जमाने की कवयित्रियाँ भी इस परंपरा को निभाया है और गणेश नमन के रूप में काव्य रचना की है-

''पृष्ठभागी तो उंच डोंगर। सन्मुख गर्जतो सागर थोर ।
मध्ये स्वयंभू मयुरेश्वर । सन्निध वाहे जान्हवी नीट।
डोंगर फोडूनी आली बाहेर। जिथे एकदंताचा स्वयंभू अवतार।''[40]

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में प्रत्येक कवयित्रियों ने गीत संग्रह में आरती की रचना की है। इसके पीछे भक्ति की भावना है उन्होंने अंबिका, दत्त, गणपति,

38) पाटील कृष्णाबाई-सुमनांजली, पृ.5
39) बापट कमलाबाई-श्री दत्तपंचामृत, पृ.53
40) केळकर सावित्रीबाई- प्रासादिक पद्यावली, पृ.8

शंकर, श्रीमंगेश, राम, महालक्ष्मी, हरितालिका, मंगलागौरी आदि पर आरती की रचना की है।

दीप प्रज्वलित कर आर्त भावना से की गयी प्रार्थना आरती है, इसमें भक्तिपूर्ण और श्रद्धा युक्त होकर अंतर्मन से गीत गाया जाता है। यह एक विधि विधान है, आरती भावभक्तिपूर्ण पद्य है।

7:1:16 लक्ष्मीबाई बेहरे :

कवयित्री लक्ष्मीबाई बेहरे का 'सुमन माळ' काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल मिलाकर ग्यारह कविता हैं। और इनमें प्रेम कविताओं की संख्या अधिक है। 'सुमन माळ' में कवयित्री का विलक्षण उत्कठ प्रेम प्रकट हुआ है। 'प्रियकरा' अथवा 'स्वप्नांचा पडताळा' कविता में प्रकट होनेवाला प्रेमानुभव पत्र रूप धारण करते हुए दिखाई देता है। कवयित्री काव्यात्म पत्र लिखने की पद्धति को अपनाती है। पत्र का एक उत्तम रूप लेकर कवयित्री की प्रेम कविता प्रकट होती है। प्रेयसी प्रियकर को संबोधित करते हुए काव्य पत्र लिखती है।

प्रियकर के चिंतन से, उसके वियोग से व्याकुल प्रेयसी का भावरूप सुमन माळ में प्रकट होते रही है। 'प्रियकरा' पहले ही कविता में प्रियकर का प्रेमपत्र प्राप्त न होने से व्यथित प्रेयसी यहाँ दिखायी देती है। गलती से अपराध तो नहीं हुआ इस आशंका से उसका हृदय शंकित हो उठता है –

"अपराध काय मी केले ?
का त्यजुनी जाणे झाले ।।प्रियकरा।।
सोडुनि सर्व सांगते
पाठवा प्रेम पत्राते ।।प्रियकरा।।" [41]

कवयित्री प्रियकर के विरह से तड़पने लगती है। वह पागल हो उठती है। सपनें में अपने आप को भूल जाती है। जिसके लिए बकुल फुलों की माला बनायी गयी वही प्रियकर दूर गया है इसलिए वह उदास होती है। बकुल फुलों की माला फेंकने के लिए उठी हाथों को प्रियकर पीच्छे से ही पकड़ता है, प्रियकर के गले में पड़ी माला को देखकर प्रेम साफल्य से आनंदित होती है। 'स्वप्नांचा पडताळा' में वह कहती है –

41) बेहरे लक्ष्मीबाई - सुमनमाळ, (प्रियकरा), पृ.2

"जमविली

फुले, गुंफिली

माळ ज्यांच्यासाठी

मम् आस पुरे ती पडली त्यांच्या कंठी"[42]

सपनें में खोई हुई प्रेयसी की समाधि प्रियकर के प्रेमपत्र से टूट जाती है। परंतु प्रेम पत्र पढ़कर फिर वह खो जाती है। इसप्रकार कवयित्री के विरह का अंत मिलन से हो जाता है।

उत्कट विरह, परस्पर प्रेम, मिलन की जिज्ञासा, दूरत्व आदि विशेषताएँ उनके प्रेमानुभूति से प्राप्त होती है। डॉ. अलका चिडगोपकर इनकी कविता के संबंध में कहती है- "कवयित्री लक्ष्मीबाई बेहरे की कविता में से प्रकट होनेवाला आशय पारंपारिक हो तो भी उनकी कविता आधुनिक लगती है। लक्ष्मीबाई पारंपारिक स्त्री जीवन का आधुनिकता के स्तर पर काव्यात्म आविष्कार साधनेवाली आधुनिक कवयित्री है । कारण कवयित्री के काव्यवृक्ष को एक नयी टहनी फुटने की संभावना उनकी 'श्रेष्ठ कोण, धरा की स्वर्ग' कविता के अहसास से होता है।" [43]

इसप्रकार कवयित्री लक्ष्मीबाई की कविता अल्प हो तो भी मौल्यवान हैं। अल्पकाल में ही उनका दुर्दैवी निधन हुआ। कवयित्री अगर रहती तो और भी मराठी कविता समृद्ध बनाने में योगदान देती।

7:1:17 शांतादेवी परदेशी :

'शांतागीते' लिखनेवाली कवयित्री शांतादेवी की कविता संपन्न और विविधोन्मुखी है। 'शांतागीते'(1928) कवयित्री का पहला कविता संग्रह है। 'महिला रत्नमाला', 'राजेंद्र शतक', और 'मंगल ज्योति' ये तीन काव्यसंग्रह 1955 में प्रकाशित हुए हैं।

बहुविध विचारों को स्पर्श करनेवाली कवयित्री के रुप में शांताबाई को पहचाना जाता है। कवयित्री शांताबाई अनेक राष्ट्रीय और सामाजिक कविता लिख चुकी है। संसार के प्रति देखने का उनका दृष्टिकोन प्रगल्भ रहा है। अन्याय, विषम आर्थिक समाजरचना, देश की परतंत्रता आदि के संबंध में अपनी भावनाएँ उद्वेग से प्रकट की

42) बेहरे लक्ष्मीबाई - सुमन माळ (प्रियकरा) पृ.2

है। राष्ट्र के वीर पुरुष और हुतात्माओं के प्रति उनका दृष्टिकोण उदार रहा है। देश के लिए जिन्होंने बलिदान दिया उन्हे याद कर कवयित्री आँसू बहाने लगती है।

'लोकशाहीचा ध्वज फडकू द्या', 'तयाचे गावे जगी गुणगान', 'नवहिंद निर्मिणाऱ्या', 'श्री भारत जननी', 'निज देशासाठी लढले', 'मानवतेची ज्योत' आदि कविताएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। कवयित्री कहती है-

"जे कारावासी पडले
जे धारातीर्थी लढले
जे सूळावरती चढले
ग्वाही तयाची देण्या। नभी असाच फडकत राहो।" [44]

ऐसा संदेश वह राष्ट्रध्वज को दे रही है।

देश को स्वतंत्र करने के लिए अनेक जवानों ने बलिदान दिया। अनेक बच्चे अनाथ हो गये, अनेक स्त्रियाँ विधवा हो गयी, ऐसे वीर पुरुषों को इतिहास भूल नही सकता। कवयित्री कहती है-

"जे धारातीर्थी पडले। इतिहासात विसर न त्यांना
जा उठा आर्य वीरानों। करण्यास साह्य बंधूंना
तुम्ही छावे नरसिंहाचे
प्यालात दूध सिंहीणीचे
दाखवा तेज शौर्याचे
कवि वदे धन्य नरवीर" [45]

ब्रिटिशों के अन्याय के खिलाफ अग्नि भडक उठी, निरंतर प्रयास से 1947 ई.को देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति मुख्य उद्देश था। लेकिन स्वतंत्र देश में एक बनकर रहने का आह्वान कवयित्री करती है। समता, स्वतंत्रता और बंधूता को वह याद करती है। 'येथे लोकशाही नांदो' यह आशा व्यक्त करती है-

"सोडा आता स्वार्थ क्षुद्रता दंभ द्वेष सोडा
तोडा बेडी जातियतेची मानवता जोडा

---

43) डॉ.चिडगोपकर अलका- अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.71
44) परदेशी शांतादेवी - मंगल ज्योति, पृ.52
45) परदेशी शांतादेवी - मंगल ज्योति, पृ.82

हिंदू-मुस्लिम, शीख्र-इसाई वागा प्रेमाने

लोकशाहीचा ध्वज फडकू द्या गगनी डौलाने।"[46]

कवयित्री जाँति-पाँति भेदभाव से उपर उठकर मानवता जोडने का संदेश देती है। डॉ. अलका चिडगोपकर इनकी कविता के संबंध में कहती है-"कवयित्री शांतादेवी परदेसी की प्रारंभिक कविता का जन्म पारंपारिक नीति-मूल्यों के पुरस्कारार्थ हुई है। इनकी कविता भा.रा.तांबे की कविता की तरह गीत प्रधान है। तांबे की कविता भावप्रधान है तो शांताबाई की कविता विचारप्रधान है।"[47]

इसप्रकार शांतादेवी परदेशी इस काल की एकमात्र ऐसी कवयित्री है जिसने अपनी कविता में सामाजिक समस्या पर विचार किया है। और स्त्री प्रश्न को उठाया है। आशय की दृष्टि से हृदय पर घाव करनेवाली कविता है।

7:1:18 लक्ष्मीबाई चितळे :

कवयित्री लक्ष्मीबाई चितळे की 'कैवल्य गुंजारव' और 'गीत गुंजारव' (1925) नामक दो कवितासंग्रह प्रकाशित हो चुकी है। कैवल्य गुंजारव में गुरूभक्ति, श्री गुरूस्त्रोत और श्री गुरूरूप यही त्रिविध सूत्र प्रमुख रूपसे प्रकट हुई है। कवयित्री की 'गुरूभक्ति' के कारण उनकी कविता लोकप्रिय सिद्ध हुई है ऐसा लगता है।

1925 ई. में प्रकाशित 'गीत गुंजारव' कवयित्री लक्ष्मीबाई का दूसरा कवितासंग्रह है। गीत गुंजारव के प्रारंभ में कवयित्री की काव्यमय अर्पण पत्रिका आती है। श्री सद्गुरू चरणों की दासी कवयित्री लक्ष्मीबाई जीवन में गुरू के स्थान को महत्त्वपूर्ण मानती है। मानव जीवन की नौका भवसागर से पार ले जानेवाला नाविक सद्गुरू ही है ऐसा उसे लगता है। गुरू के प्रति का श्रद्धाभाव उनकी कविता से बार-बार प्रकट होते रहती है। वह कहती है-

"गुरूकृपा ज्यावरी। वैरी नच भूवरी।

लक्ष्मी दृढ़ धरी। गुरू पदा ही ।।"

'गीत गुंजारव' में 'अर्पण' 'पत्रिका', 'ईशस्तवन', 'कॉफी', 'झोप', 'दसऱ्याचे सोने' आदि पद महत्त्वपूर्ण हैं। ईशस्तवन में कवयित्री परमात्मा का स्तवन करते हुए

46) परदेशी शांतादेवी - मंगल ज्योति, पृ.122

47) डॉ.चिडगोपकर अलका- अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.122

कहती है –

"सकल कला निपूण आला। वंदन आमुचे ईशपदाला
अज्ञानाच्या रजनी मधुनि। शिक्षण इच्छा अरूण उगवुनि।
ज्ञानरवी रथ दिसला।।
मन उद्यानी प्रकाश पसरे। अविद्येचे पटलचि घसरे।
पूर्ण आनंदित वेळा। वंदन आमुचे ईश पदाला।।" [48]

स्पष्ट होता है कि कवयित्री के काव्यसृष्टि में परमात्मा व गुरू को विलक्षण महत्त्व प्राप्त हुआ है। श्रीदत्त, श्रीकृष्ण, श्रीराम, सुदामा, लक्ष्मण, सरस्वती, सावित्री आदि पदों के शीर्षक से लगता है कि कवयित्री के ये आराध्य हैं, जीवन की प्रेरणास्थान हैं। ड़ॉ.अलका चिड़गोपकर की शब्दों में – "संसार रूपी चक्रव्यूह में अटके हुये सर्वसामान्य व्यक्ति को उपदेश देने के लिए कवयित्री वेदांत और व्यावहारिक ज्ञान का आधार लेकर मानव को मुक्त करना चाहती है। यही भाव उनकी कविता में दिखता है।"[49]

7:1:19 मनोरमा नावलेकर :

कवयित्री मनोरमा का 'भावकुसुमांजली' (1931) पहला कविता संग्रह है। कवयित्री मनोरमा की कविता तांबे संप्रदाय की कविता है। तांबे की कविता से वह प्रभावित हुई है, उनकी कविता उसे अधिक समिप की लगी। कविता संग्रह की प्रस्तावना में भा.रा.तांबे ने कहा है कि- "गुलाब का मधुर रस चखते समय उसमें कितने तोले गुलाब डाला गया है, चिनी कितनी है, किस दुकान का है आदि चर्चा कौन करते बैठता है ? छंद, रीति, गुण, वृत्त आदि काव्य साहित्य की भवति न् भवति करने से रसास्वाद लेना कभी भी श्रेयस्कर कहना चाहिए।"[50]

प्रकृति का सुंदर अविष्कार कवयित्री ने अपनी कविता में की है। 'पाखरे गेली बघ कोटरी' कविता के प्रारंभ में संध्याकालीन प्रकृति का सुंदर अंकन किया गया है। वृक्ष, लता, हिरन, पंछी आदि का वर्णन करते-करते सांयकालीन सांसारिक सुख-दुःख में कवयित्री समा जाती है-

"संसाराच्या सुख-दुःखाच्या

48) चितळे लक्ष्मीबाई- गीत गुंजारव, पृ.19
49) डॉ. चिडगोपकर अलका - अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.151
50) नावलेकर मनोरमा -भावकुसुमांजली, प्रस्तावना पृ.2

आलो सीमेवरी। पाखरे बघ गेली कोटरी" [51]

तारूण्य सुलभ जीवनोत्साह कवयित्री की कविता में प्रकट होती रहती है। मानव जगत् से प्रकृति विश्व में रमनेवाला उसका मन, प्रकृति यही कवयित्री की काव्य प्रेरणा, अनुभव कोष और प्रकृति सौंदर्य यही उसकी अभिव्यक्ति है। डॉ.अलका चिडगोपकर के शब्दों मे—"कवयित्री मनोरमा का मन पवित्र प्राकृतिक दृश्य, सौंदर्य में खो जानेवाला है। प्राकृतिक सौंदर्य के नानाविध साक्षात्कार से तादात्म्य पाकर सौंदर्य को शब्दरूप देने की आकांक्षा जिसप्रकार बालकवि की कविता में दिखती है वही मनोरमाबाई की कविता में दिखायी देती है।" [52]

कवयित्री मनोरमाबाई की प्रेम से संबंधित कविताएँ भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। उनके लिए प्रेम प्रेरणा है, तो प्रकृति विश्रांती है। 'प्रेमाविण जगती शून्य दिसे' कविता में वह कहती है-

"दरि खोऱ्यातुनि नित्य बसावे
निशिदिनि काव्यामृति रंगावे
प्रेमजीवना प्रेमे गावे
ह्या मधु प्रेमांतच मोक्ष असे।
प्रेमाविण जगती शून्य दिसे"[53]

प्रेम ही मोक्ष, प्रेम ही मुक्ति, प्रेम पर प्रेम करनेवाली कवयित्री की प्रवृत्ति प्रस्तुत कविता में प्रकट हुई है।

प्रकृति प्रेम के साथ वास्तव जीवन का चित्र वह खींचती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कवयित्री कहती है-

"तत्व पटविण्या हे जगताला
सत्यरूप हा ईश्वर आला
परवश भूमि सोडविण्याला
या पाळू त्याच्या वचनाला
ईशा दे आयू गांधीला।"[54]

---

51) नावलेकर मनोरमा - भावकुसुमांजली, पृ.3
52) डॉ.चिडगोपकर अलका - अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.179
53) नावलेकर मनोरमा - भावकुसुमांजली, पृ.11
54) नावलेकर मनोरमा - भावकुसुमांजली, घृ.33

इसप्रकार प्रकृति, प्रेम और सामाजिक वास्तव में जीनेवाली मनोरमाबाई का काव्यानुभव एक तरु प्रकृति रूप में प्रकट हुई है तो दूसरी तरु सामाजिक कुप्रथाओं पर तीखा व्यंग की गयी है। एक अनोखा रूप कवयित्री की कविता को प्राप्त हुई है।

7:1:20 काशीताई नाटेकर :

कवयित्री काशीताई नाटेकर की कविता 'गवाक्षगीत', 'आपुलकी' और 'निवांत' (1958) कविता संग्रह के रूप में बिखरी हुई है। 1932-33 के आस-पास मनोरंजन, यशवंत आदि तत्कालीन मराठी मासिको में से ये कविताएँ प्रकाशित हुई है।

'गवाक्षगीत' कवयित्री काशीताई का पहला कविता संग्रह गीत रूप में प्रकट हुई है। गवाक्षगीत काव्यसंग्रह के शीर्षक से ही करूणा का अहसास होता है। कवयित्री बाल्यावस्था अथवा जवानी के दहलीज पर पैर रखते ही विधवा हो गयी। प्रेम का जगह वात्सल्य ने ले लिया। कवयित्री बालगीत लिखने लगी। 'भजनी बाहुली', 'द्वितीयेस', 'थगल्यांना अथते आई' जैसी कविता में बाल मन के अनुभव व्यक्त हुए हैं। डॉ.अलका चिडगोपकर के शब्दों में – " 'गवाक्ष' से बाहर चराचर सृष्टि के व्यवहार को कुछ कौतुहल और कुछ संकोच से देखनेवाली कवयित्री 'निवांत' कविता में स्थिरता प्राप्त की है ऐसा लगता है।"[55]

प्रकृति के राह पर स्वतंत्र रूप से चलनेवाली यह कवयित्री है। 'समता' कविता में प्रकृति और मानव में जो परस्पर संबंध है इसे चित्रित करते हुए कवयित्री प्रकृति को मानव जीवन का सही आदर्श के रूप में स्वीकार करती है-

"निसर्गतेचा ग्रंथ उघडुनी।
घेइ मानवा पाठ निशिदिनी।
कार्य करी रे कार्य करी। समता, शांती, ऐक्य वरी।।"[56]

इस दुनिया में सही समता प्रकृति में है। प्रकृति सभी को समान दृष्टि में रखकर रूप, रंग, सौंदर्य प्रदान करती है। इसलिए कवयित्री की दृष्टि से प्रकृति ही आदर्श है, श्रेष्ठ है।

---

55) डॉ.चिडगोपकर अलका - अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.206
56) नाटेकर काशीताई - आपुलकी, पृ.48

'निवांत' में कवयित्री वृद्धावस्था की ओर झुकी हुई हो तो भी उसकी कविता जवानी की चेतना से भरी हुई है। जीवन के सभी संघर्ष मिट गये, सुख-दुःख मिट गया, जवानी की चेतना समाप्त होकर कवयित्री का मन 'निवांत' में शांत हो गया। अब कवयित्री आत्माविष्कार से सीधा अपना भाव व्यक्त कर रही है। 'माहेरच्या पाखरा' कविता में कवयित्री मायके का विचार करने लगती है-

"खुशाल का रे बाबा आई।
दादा, वहिनी, बेबी ताई।
निरोप कसला धाडुन देई।
चल सांग करूनिया त्वरा। माझ्या माहेरच्या पाखरा।"[57]

'निवांत' की कविता अंत में अभंग रचना में विगलित होते हुए दिखायी देती है। लेकिन यह अभंग रचना पारंपारिक अभंग रचना से अलग है। काशीताई ने पूरे जीवन में जो सहा, अनुभव लिया उसका सार ही अभंग रूप से प्रकट करती है। अभंग के माध्यम से कवयित्री निर्भयता से जीवन के सुख-दुःख का जमा-खर्च सामने रखती है। मानव जीवन के अंतिम सोपान पर ठहरी हुई कवयित्री पूरा जीवन साथ लेकर परमात्मा से आर्त होकर पुकारती है, निर्भयता से संवाद करती है, मिलन की आतुरता व्यक्त करती है।

कवयित्री विचार करने लगती है जीवन का अर्थ क्या है ? हेतु क्या है ? ऐसा जानलेवा दुःख अपने ही भाग्य में क्यों, दुःखी जीव और भगवान में क्या रिश्ता है ? ऐसे अनेक प्रश्न कवयित्री के मन में उठते रहते हैं। विविध अभंगों के माध्यम से कवयित्री अपने मन की आर्त भाव इस प्रकार प्रकट करती है-

"फाड माझे बा हृदय।
सांग आंत दिसे काय ?
जैसे दिसते बाहेरी।
तैसे नाही का अंतरी ?
मन निर्मळ आरसा।
उजळीला तेजे जैसा।।

---

57) नाटेकर काशीताई- निवांत, पृ.5

करोनिया शांत मन

पहा कसला लावून।।"[58]

इसप्रकार मराठी अभंग के माध्यम से कवयित्री ने अपना चिंतनानुभव, सुख-दुःखात्मक अनुभव, जीवनानुभव चित्रित कर मराठी में अभंग का स्थान किस प्रकार श्रेष्ठ है। इसे और एक बार सिद्ध कर के दिखाने का सफल प्रयास किया है। डॉ. अलका चिडगोपकर के शब्दों में- "भविष्य में मराठी कविता कौनसा भी आयाम क्यों न ले, किसी भी नये प्रांत में प्रवेश करें, जीवन रूप बदले अभंग रचना का स्थान बदलना असंभव है। कारण अभंग से जो साध्य होता है वह अन्य से नहीं यही इशारा कवयित्री काशीताई ने दी है यही उनकी विशेषता और सामर्थ्य है।" [59]

7:1:21 मनोरमाबाई रानडे :

'श्रीमनोरमा' कवयित्री मनोरमा रानडे की कविता संग्रह है। पतिप्रेम से संबंधित कविताएँ उन्होंने लिखी है। 'तुझी मी बांधली पूजा' ऐसा एक कविता में वह पति के संबंध में कहती है। रविकरण मंडल की उच्चशिक्षित कवयित्री पति को अपना परमेश्वर समझती है। 'स्मृति' कविता में वह कहती है-

''माझे प्रेम तुम्हावरी जडतसे हे भाग्य का थोड के;

हा संतोष हिरावयास जगती कोणी न केंव्हा शके।''[60]

मनोरमाबाई रानडे प्रेम के अखंड़ रूप का चित्रण करती है। उनके अनुसार - प्रेम दिखाने की वस्तु नहीं उसकी वाच्चता भी आवश्यक नहीं –

''राहो प्रेम असे अखंड हृदयी का पाहिजे वाच्चता;

आपोआप परस्परास कळते वाऱ्यातूनी हृत्कथा।''[61]

अव्यक्तता से प्रेम व्यक्त करना चाहिए, शालिन प्रेम का चित्रण यहाँ हुआ है। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में वियोग श्रृंगार के दर्शन भी होते हैं। पति के गांव जाने के बाद पत्नी की विरहावस्था का चित्रण कवयित्री मनोरमाबाई रानडे स्वानुभूति से करती है। रात की नीरव शंतता है लेकिन कवयित्री का मन उदासिनता से

58) नाटेकर काशीताई- निवांत, पृ.44

59) डॉ.चिडगोपकर अलका - अर्वाचीन मराठी कवयित्री, पृ.214

60) रानडे मनोरमाबाई - श्रीमनोरमा, पृ. 123

61) रानडे मनोरमाबाई - श्रीमनोरमा, पृ. 116

भरा है। ऐसे में बीते दिनों के सुखमय जीवन की याद आने लगती है। किताब पढ़ने बैठे तो अर्थ स्पष्ट समझता नहीं। वियोग से अस्वस्थ कवयित्री कहती है-

''आहे दुःसह हा वियोग सहणे साहीन कैसी तरी
मुग्धाव्याज सुधेस, का परि अशी द्यावी मनोवंचना''[62]

कवयित्री अपनी प्रेम भावना प्रकृति-चित्रण के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त करती है-

''मधुर स्मिता मृदुशीतल विद्युची प्रभा बघ फाकली
सुख शांतिदायक शुभ्रता उधळोनिया क्षिति मांडली।
मृदु वायुच्या झुळकीसवे तरु-वल्लरी हळु डोलती।
हिमशुभ्र पाहुनी चंद्रिका गुजगोष्टी ती करु लागली;''[63]

प्रकृति विश्व में प्रेम भरती है, जीवन के आनंद को द्विगुणीत करती है मनोरमा की पूरी काव्य- संपदा प्रेम भावना से ओत-प्रोत भरी हुई है।

'हुंडाच' कविता में कवयित्री दहेज से त्रस्त माता और उनके घर का उदास वातावरण इसप्रकार चित्रित करती है-

''स्थिति दुस्सह मज आठवुनी
किती छळणुक मजपासोनी
आई बाप घेति सोसोनी
ईश्वरा। पाव या काली, सुचव मज काही उपाय
संकटग्रस्त पितरांना सोडिव रे धरिते पाय।''[64]

परमेश्वर की प्रार्थना करनेवाली दहेजग्रस्त लडकी का चित्रण कवयित्री ने किया है।

इसप्रकार आधुनिक काल की उदयोन्मुख कवयित्रियों ने स्त्री सुलभ प्रणय के विविध छटाओं का वर्णन अपने प्रेमगीतों के माध्यमसे साकार किया है। रविकिरण मंडल के श्री. बा. रानडे की पत्नी मनोरमाबाई रानडे की कविता का मुख्य विषय 'पतिप्रेम'है। 'जिवाचे सार्थक' में प्रियकर को प्रश्न करती है - तुझी थोरवी कशी गाऊ मी।

---

62) रानडे मनोरमाबाई - श्रीमनोरमा, पृ. 92

63) वही, पृ.123

64) रानडे मनोरमाबाई - श्रीमनोरमा, पृ. 44

प्रणय का मुक्त चित्रण रविकिरण मंडल की कविता में हुआ है। यह प्रणयानुभूति स्वानुभूत और सौंदर्यक्षम है। प्रेम का मुक्त चित्रण करना तत्कालीन समाज के दृष्टिसे यह सामाजिक क्रांति ही थी। मनोरमाबाई रानडे, मनोरमाबाई नावलेकर, विमलाबाई देशपांडे आदि ने स्वानुभूत प्रेम का वर्णन प्रेमगीतो में मुक्त रूप से किया है।

7:1:22 विमलाबाई देशपांडे :

कवयित्री विमलाबाई देशपांडे का 'निर्माल्यमाला' कविता संग्रह प्रसिद्ध है। कवयित्री का प्रेम विवाह हुआ था। 'निर्माल्यमाला' में सुंदर भावनाओं का चित्रण है। पति के दिव्य प्रेम से पत्नी का पुनर्जन्म होता है ऐसा कवयित्री को लगता है। पति प्रेम से जीवन में बसंत का बयार आता है पति प्रेम से ही भाव सुमन खिलते हैं, प्रेम का अद्वैत भाव यहाँ प्रकट हुआ है-

''जीवाचे माझिया केले सहज तू काव्य स्वर्गीय।
जिवाचे काव्य या होता सरस ते काव्य शब्दांचे।
तुझ्यामध्ये एक मी झाले निमाले प्रेम विश्वरसी।।''[65]

चाँदनी को देखकर कवयित्री को लगता है-

''अंतरंगीचे भाव फुलती का निर्मल किरणातुनी''[66]

जीवन में प्रेम की सफलता होने के कारण कवयित्री को लगता है-

'सदा राहुनि राहुनि हा विचार
कशी उजळली भाग्य चंद्रकोर
कुठे माझी योग्यता कुठे प्रीति
आमावशेला भेटली पोर्णिमा ती' [67]

'उषे' कविता में उषा की निर्मिति प्रेम के पहले अनुभव से हुआ है ऐसा कवयित्री को लगता है इसलिए वह कहती है-

'उषे प्रेमले
आता आले

---

65) देशपांडे विमला- निर्माल्यमाला, पृ. 2,3
66) देशपांडे विमलाबाई - भरारी, पृ. 24
67) देशपांडे विमलाबाई - भरारी, पृ. 70

तुजसम बनले

कायेची ही जडता तेजामध्ये तुझ्या विरली''[68]

'वठल्या वृक्षाला पालवी फुटे' और 'कडुलिंबारे की मधुगंधा' इन दो कविताओं में कवयित्री बहुतकुछ बताकर जाती है। सुखे हुए जीवन में भी कहीं न कहीं हरियाली रहती है, समय आते ही नया जीवन प्रस्फुटित हो जाता है ऐसा उसे लगता है।

वात्सल्य प्रेम का चित्रण भी कवयित्री ने किया है। माँ बच्चे के प्यार में तृप्त हो जाती है, तो उसका हृदय हील जाता है, वह जल्द अच्छा हो ऐसा उसे लगता है, वह अपने बच्चे को कहती है-

''तुझ्या तापल्या देहाची पाहुनिया तळमळ

तुझा दाह शमवाया करु कशाचे सिंचन

नयनांचे नयनात दाटुनिया गेले जल''[69]

कवयित्री का वात्सल्य प्रेम यहाँ प्रकट हुआ है ।

7:1:23 इंदिरा तेलंग :

स्पृश और अस्पृश्य परमेश्वर के लिए समान है। उँच-नीच भेद मानव निर्मित है, परमेश्वर के मुख से ही कवयित्री कहलाती है-

''अस्पृश्य स्पृश्य दोन ही बाळें मम असती जाण।

अस्पृश्य दीन जरि असती बाळा ते मी रक्षीन।

ब्रीद हे जगन्मातेचे, बाळे मम सर्व समान।

ऐकुनी तदा हे शब्द

हृदयात उठे पडसाद

हा समानतेचा वाद''[70]

सभी एक ही परमेश्वर के बच्चे हैं ऐसा कवयित्री को लगता है। समता प्रस्थापित हो सकती है क्या ?-

''हे रक्ताचे गोंदण

कैसे जाईल पुसुन;

---

68) देशपांडे विमलाबाई - भरारी, पृ.30

69) देशपांडे विमला- भरारी, पृ. 84,85

70) तेलंग इंदिराबाई - भावना तरंग, पृ. 27

गीतेचे चातुर्वर्ण्य''[71]

रुढ़ि और परंपरा के बधन में जकडा समाज कब मुक्त होनेवाला है, जातियता और विषमता की भावना मन में घर कर बैठें हैं। इसे आसानी से बुझाना सहज संभव नहीं। रुढ़ि के बंधनों में जकडा समाज मुक्त हो सकता है क्या ? इसप्रकार का प्रश्न कवयित्री के मन में उठता है।

7:1:24 बहिणाबाई चौधरी :

आधुनिक मराठी की एक सशक्त कवयित्री के रूप में बहिणाबाई चौधरी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। निसर्गकन्या बहिणाबाई ने वास्तव में जो देखा, परखा, अनुभव किया वही उनके हृदय से प्रस्फुटित हुआ -

''माझी माय सरसोती, माले शिकविते बोली''[72]

बहिणाबाई की कविता अहिराणी बोली में शब्दबद्ध है। ग्राम्य बोली, विनोद और प्रसादपूर्ण मिठास के कारण गीतों में रंजकता आयी है। उनकी कविता पुरानी स्त्री गीतों के लकीर पर लिखी हुई हो तो भी उसमें आधुनिक वाङ्मय के प्रसाद चिन्ह दिखाई देती है। उसमें आत्मीयता, सहजसुंदर शब्द योजना और समर्पक उपमा, उत्प्रेक्षा के गुण दिखाई देती है। उनकी कल्पकता और गहन चिंतनात्मकता 'मन पाखरु-पाखरु' जैसे हृदयंगम गीतो में दिखाई देती है।

अहिराणी बोली की सूक्ष्मता के कारण उनकी कविता की रुचि और बढ़ जाती है; शब्द अधिक ही लाडले लगते हैं, शब्द योजना समझने मे अधिक कठिन नहीं लगती। मराठी के शब्द 'तुला' 'मला' के स्थान पर 'तुले' 'मले', 'ळ' के स्थानपर 'य' और 'ण' के स्थानपर 'न' के प्रयोग के कारण भाषा में मिठास बढ़ गयी है। प्रस्तावना में प्र.के अत्रे कहते हैं- ''जिसप्रकार एखाद बच्चा तुतली भाषा में बोलने लगता है, तो आनंद होता है, वैसे ही बहिणाबाई की कविता पढ़ते समय मन और कान आनंदित हो उठते हैं।''[73]

बहिणाबाई अनपढ़ थी, काला अक्षर- भैंस बराबर की स्थिति थी उनकी लेकिन अनुभव जीवित और वास्तव थे। फलस्वरूप पाठकों के मन में एक आकर्षण निर्माण हो गया।

---

71) तेलंग इंदिराबाई - भावना तरंग, पृ.. 27

72) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी (प्रस्तावना अत्रे प्र.के.) पृ.7

73) चौधरी बहिणाबाई- बहिणाबाईची गाणी (प्रस्तावना प्र.के. अत्रे), पृ. 7

संसार के सीधे गणित को उन्होंने अत्यंत मार्मिक शब्दो में अंकित किया है। एक अशिक्षित स्त्री का यह महत्वपूर्ण कार्य है। सुखी और आदर्श संसार के मर्म को चित्रित करते हुए कवयित्री कहती है-

''अरे संसार संसार
जसा तवा चुल्यावर
आधी हाताले चटके
मग मियते भाकर ''[74]

स्त्री त्याग और भोग की मुर्ति है, उसे सब कुछ सहना पडता है। विधवा के दु:ख और वेदना दाहक होते हैं। विधवा स्त्री के दु:खमय जीवन का चित्रण कवयित्री इसप्रकार करती है-

''लपे करमाची रेखा। माझ्या कुंकवाच्या खाली
पुशीसनी गेल कुंकू। रेखा उघडी पडली''[75]

सास-बहू के बीच के संबंध का चित्रण करते हुए मेरी सास मानो मेरी जन्मदात्री माँ है ऐसा कवयित्री कहती है,

''माले सासरी मियाली
जशी जन्मदाती माय
असे सासरी माहेरी
जशी आंब्याची सावली
झिजे अवघ्याच्या साठी
अशी लाखात माऊली''[76]

सास को माँ माननेवाली बहिणबाई का यह सशक्त चित्र अन्यत्र दुर्लभ है। कवयित्री को अपने मायके का भी अभिमान है उसका मायका ऐसा-वैसा नहीं, अच्छा शानों-शौकत से परिपूर्ण शहर है, अपने मायके का वर्णन करते हुए कहती है -

''माझ्या माहेराच्या वाटे रेलवाईचं फाटुक
आगगाडीच येजानं तिले कशाची अटक? '' [77]

---

74) चौधरी बहिणाबाई- बहिणाबाईची गाणी (प्रस्तावना प्र.के. अत्रे), पृ.7
75) वही, पृ .15
76) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी पृ.76
77) चौधरी बहिणाबाई - सप्तसरीता पृ.69

हर स्त्री को अपना मायका स्वर्ग से बढ़कर लगता है, वह कैसा भी क्यों न हो, उसके लिए वहाँ कुछ भी कम नहीं है, ऐसे संपन्न परिपूर्ण मायके के प्रति वह लगातार खींची जाती है । मायके के रास्तेपर धूँप-छाँव, काँटे-पत्थर, कुछ भी हो तो इसका परिणाम उसके उपर नहीं होता -

''लागे पायाला चटके
रस्ता तापीसनी लाल
माझ्या माहेराची वाट
माले वाटे मख्रमल''[78]

रास्ते में लौकी नदी है, रेल का फाटक है, बबूल बन है, पान की खेती है, पीली चिकन मिट्टी है ।

कवयित्री बहिणबाई की प्रकृति केवल सौंदर्य का अंकन करानेवाली नहीं है तो उस में समृद्धता का महत्त्वपूर्ण स्थान है । पहला बारीश सिर्फ सौरभ देता नहीं तो धरती माता को भिगोता है, नदी भर जाती है, सृष्टि हरी-भरी हो उठती है । धरती माता मानव मात्र की सेवा करती है, सभी को संभालती है, कवयित्री प्रकृति के गोद में पली हुअी है इस कारण उसकी कविता में आँचलिकता का स्पर्श है ।

कवयित्री को परमेश्वर प्रकृति सृष्टि में दिखाई देता है, किसे क्या नही कहना चाहिए इसे बताते हुए वह कहती है-

''विना कपाशित उलें
त्याले बोंड म्हणू नही''[79]

एक के बाद एक प्रकृति के बिम्बो का वर्णन वह करती है, कपास चुननेवाली उँगलियाँ उसे तोते की चोंच लगती है,

''हिरवे हिरवे पानं
लाल फय जसी चोच
आलं वडाच्य झाडाले
जसं पीक पोपटाचं''[80]

---

78) चौधरी बहिणाबाई - सप्तसरीता, पृ. 4
79) चौधरी बहिणाबाई - सप्तसरीता पृ.5
80) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी पृ.69

कवयित्री बहिणाबाई की कविता में प्रसंगानुकूल विनोद भी पाया जाता है । 'खोकली माय' कविता में एक विनोदी कथा का वर्णन आया है। जलगाँव में एक बार खाँशी की बीमारी फैल गयी । दवा लेकर लोग परेशान हो गये । गाँव का मुखिया चिंता में पड गया। रास्ते में भीक माँगनेवाली एक बुढ़ी दिखाई दी । कुछ धर्म करो बाप कहकर कुछ मांगने लगी, तो मुखियाने दान-धर्म के रूप में गाँव के पूरे लोगों की खाँशी ले जाने के लिए कहा -

''माझ्या गावचा खोकला सर्वा दान केला तुले''[81]

बुढ़ी औरत भी समयसूचकता से कहती है -

'घेनच पडीन दान आले जे कर्मात'[82]

प्रसंगानुकूल विनोद में करूणा की झलक है। इस प्रकार बहिणाबाई की कविता में लोकवाङ्मय की सहजता है। सीधी-सच्ची ग्रामीण दार्शनिकता और स्वयं के विश्व की कल्पना यही उनके काव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता है ।

सुबह उठकर कवयित्री चक्की पर पीसने बैठती,पीसते पीसते चक्की से एक ओर आटा पडता था और दूसरी ओर कवयत्री के ओठो से कविता बहने लगती थी-

''अरे घरोटा घरोटा
तुझ्यातुन पडे पीठी
तसं तसं माझं गानं
पोटातून येतं व्होटी''[83]

जन्मजात प्रतिभा प्राप्त किसान की यह कन्या किसान के जीवन का सहज चित्रण करते हुए कहती है -

''येहरीत दोन मोटा
दोन्हीमधी पानी एक
मोट हाकलतो एक
जीव पोसतो कितीक ?''[84]

---

81) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी, पृ. 72
82) वही, पृ.72
83) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी (प्रस्तावना प्र.के. अत्रे) पृ.9
84) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी (प्रस्तावना प्र.के. अत्रे) पृ. 8

कवयित्री को अधिक क्रोध था, मानव के स्वार्थ प्रवृत्ति पर। मनुष्य से तो जानवर अच्छा है, क्योंकि चारा खाकर कम से कम जानवर दूध तो देते हैं लेकिन मनुष्य पेट भरने के बाद सब कुछ भूल जाता है, इसलिए वह कहती है-

''मानसा मानसा,
कधी व्हसीन मानूस
लाभासाठी झाला
मानसाचा रे कानूस''[85]

मानव मन काफी विचित्र है, जहरीली है, इससे बिच्छू, साप अच्छे क्योंकि उन पर उपाय है, औषधि है लेकिन मन पर ऐसा कोई औषधि नहीं है। कवयित्री के शब्दों में-

''मन जहरी जहरी
याचं न्यारं रे तंतर
आरे, इच्चू साप बरा
त्याले उतारे मंतर।''[86]

एक बार सोपानदेव चौधरी ने अपनी माँ बहिणाबाई से पूछा ''तू खेती में काम करती है तेरी नजर धरती की तरफ है यह सब तूझे कैसे सूझता है?'' उस पर माँ ने जवाब दिया था,

''धरत्रीच्या आरशामधी मी सरग पहाते बापा।''[87]

धरती माता के गोद में पलकर धरती के दर्पण में स्वर्ग देखनेवाली, आधुनिक मराठी कविता को संपन्न बनानेवाली बहिणाबाई एक अलौकीक कवयित्री थी। खेती में काम करते समय, घर में चक्की पर पीसते समय जो अनुभव आए उसे उन्होंने शब्दबद्ध किया है।

7:1:25 संजीवनी मराठे :

'काव्य संजीवनी' (1932) कवयित्री का प्रथम कविता संग्रह है। 'राका' (1939), 'संसार', (1943) 'छाया', (1949) 'चित्रा', (1957) 'चंद्रफूल', (1971) 'मी दिवानी', (1981) 'आत्मिय', (1994) 'भावपुष्प', परीमला (गीत) आदि काव्यसंग्रह

85) चौधरी बहिणाबाई - बहिणाबाईची गाणी पृ.91
86) वही, पृ. 20
87) चौधरी सोपानदेव- (प्रस्तावना) बहिणाबाईची गाणी पृ.32

प्रकाशित हो चूके हैं। कवयित्री संजीवनी मराठे अपनी कविता में समाज, प्रेम, प्रकृति का सुंदर अंकन किया है।

कवयित्री के पास सामाजिक दृष्टि है, समाज के विषम अर्थव्यवस्था पर तीखा व्यंग्य करते हुए, 'नर मांस पर नर ही अपना पेट पालता है' इस यथार्थ सत्य को 'मृत्यु पंथाचे वारकरी' कविता में चित्रीत करती है-

''उदरी आमच्या भूकेचा डोंब उसळत वर खाली
आणा-आणा मुठभर दाणा भरा रीती झोळी
निजसत्तेचा ध्यास मागतो रात्रंदीन फिरतो
मृत्यू पंथाचे वारकरी आम्ही रामनाम घेतो
धनवंता: तव कवळ मुखीचा आमुच्या कष्टाचा
नर मांसावर नरच आपले पोट वाढवितो
मृत्यु पंथाचे वारकरी आम्ही रामनाम घेतो''[88]

एक ओर गाडी उडानेवाला धनिक मालिक है और दूसरी ओर अर्धनग्न मजदूरों के बच्चे हैं जो रोटी के लिए तरस रहे हैं- 'लग्नसराई' कविता में एक भिकारी के जीवन का यर्थाथ चित्र खींचती है, उसकी दीनता आँखो के सामने खडा करती है-

''उष्टी भांडी खरडत बसल्या
मोलकरणी मांडवात त्यांची
मोलकरणी अर्धपोटी
वळवळते मांडवात त्यांची
आसुसलेली नजर चोरटी
समारंभ हा पाहत बसली
वढारणीची दारी भुतावळ
तियाची गर्जत ते लग्न स्थळ ''[89]

कवयित्री संजीवनी के प्रेम काव्य में सौंदर्यवादी दृष्टि के दर्शन होते हैं, प्रेम चिरंतन और अक्षय है इसे बताते हुए वह कहती है-

''चिरंतन आहो आपण आपण एकमेकांसाठी
जन्म जन्मीच्या या गाठी नको ताटातुटी''[90]

---

88) मराठे संजीवनी - संसार, पृ.83

कभी कभी कवयित्री के मन में सुप्त अहंकार जागृत हो उठता है, और वह कहती है-

''नाही आता ठेवणार मोहापाशी गुंतवून
नाही काही मागणार मीच आपुली देईन
वेदनेच्या कट्टयामध्ये प्रेमपूर्तिचा गुलाब
कट्टयावीन फूल हाती असा घडविन लाभ''[91]

कवयित्री संजीवनी की कविताएँ प्रणय भावना से ओत-प्रोत भरी हुई है। मिलन, संकोच, प्रतिक्षा, गुस्सा, प्रेम आदि छटाओं का सुंदर वर्णन हुआ है। विवाहोत्तर प्रेम, मिलन, सहयोग आदि का प्रणयपूर्ण चित्रण भा.रा.तांबे के प्रेमगीतो में चित्रित हुई है। संजीवनी की कविता तांबे, रविकिरण मंडल, कुसुमाग्रज, बोरकर आदि को लाँघकर सृजनरत रही। तांबे के प्रेमगीतों का प्रभाव निश्चित रूप से संजीवनी के काव्य पर पडा है। संजीवनी के प्रेम गीत तांबे के प्रेमगीतों से अलग हैं। संजीवनी के अनुभव स्वयं के है, तांबे अनेक अलग, अलग स्त्रियों के जीवन को चित्रित करते हैं।

कवयित्री संजीवनी के प्रेमगीतों में भावनाओं के कोमल फूल खिल रहे हैं, 'राका', 'संसार', आदि में कवयित्री प्रणय का रंग, सौरभ लेकर आती है। प्रेम के लिए कवयित्री अमृत से भी मीठा बनना चाहती है-

''जीवन! छे सखि हे नंदनवन
प्रणय तळयातील चिर संजीवन''[92]

प्रणय के बाद वात्सल्य रस कवयित्री की कविता में बहता है। 'अमृत घट', 'माझी फुलं' आदि कविता वात्सल्य रस से ओत-प्रोत हैं। बालक का स्वागत कैसे किया जाए यह प्रश्न उसके सामने है, कवयित्री कहती है-

''हृदय माझे अंथरोनी घालुं का शैय्या मऊं
दाटले वात्सल्य पोटी पाजुनी का शांतवू?''[93]

बच्चे के बिना घर किस प्रकार सुनसान हो जाता है, बच्चे को छोडकर नौकरी पर चले जाने से मन द्वंद्व में पड जाता है, बच्चा कहीं बाहर जाता है तो घर पिंजडे

---

89) मराठे संजीवनी- चित्रा, पृ. 66,67
90) मराठे संजीवनी- चित्रा, पृ. 14
91) वही, पृ. 47
92) प्रा.कु. कुलकर्णी सरोजिनी - मराठी साहित्य दर्शन, पृ.
93) मराठे संजीवनी - राका, पृ.1

के समान लगता है, बच्चा घर का सहारा किस प्रकार होता है इसे प्रकृति के माध्यम से चित्रित करते हुए कवयित्री कहती है-

''बघत रहावे अवती भवती
झाडाखाली नदी तटावर
नाही किलबिल सारे निश्चल
रिता पिंजरा घरादाराचा जसा सहारा''[94]

आधुनिक काल में स्त्री के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण बदला। पत्नी को एक सहचरी या मित्र के रूप में अपनाया गया। रविकिरण मंडल का यह एक महत्त्वपूर्ण सफल प्रयास है। पति-पत्नी का प्रेम से पूच्छ-ताछ करने लगा। यह पूच्छ-ताछ या प्यार की दो बाते उसके लिए स्वर्ग सुख के समान हैं। पति पत्नी के श्रम को देखकर क्या कहता है इसका चित्रण कवयित्री संजीवनी इस प्रकार करती है-

''ये बैस जरासी मजजवळी
दूर राहू दे काम हातचें
सरायचें ते कधिं न मुळी
चरितार्थाच्या लागुनि मागे''[95]

अपना संसार सुखमय करेंगे ऐसा आश्वासन देनेवाले पति का चित्रण कवयित्री यहाँ करती है, निर्धारपूर्वक पति-पत्नी से कहता है-

''ठेविलेस स्कंधी विश्वासाने शीर
सोडायचा धीर नाही आता''[96]

कवयित्री ने पति के मन में स्थित पत्नी विषयक भावनाओं का कुशल वर्णन अपनी कविता में किया है। पति पत्नी से कहता है- ''मेरे कंधे पर तुमने विश्वास से सर रखा है, अब तुम निश्चिंत रहो'' सजनी, संसार यह मुक्ति का मायका है, इससे अब दूर नहीं हटेंगे ऐसा विश्वास पति-पत्नी को दे रहा है। विवाहोत्तर प्रेम का चित्रण सुंदर अभिव्यक्ति द्वारा यहाँ किया गया है।

कवयित्री संजीवनी ने अपनी कविता में प्रणय के नानाविध पहलूओं पर प्रकाश डालती है। उनकी नायिका केवल हृदय मिलन पर संतुष्ट न होकर प्रणय के विविध

---

94) मराठे संजीवनी- चित्रा, पृ.16
95) मराठे संजीवनी - संसार, पृ.54
96)मराठे संजीवनी - संसार, पृ. 49

छटा व्यक्त करती है। 'मंत्रमुग्ध' कविता में हृदय संवेदना के अनुभूति का मनोज़ शृंगार व्यक्त हुआ है-

''करपाशी बांधूनियाँ मन्मुखास चुंबिलेस
रक्तधुंद लोचनात दाविलीस अमर आस
चुंबुनिया अधर, नेत्र ठेविलेस मज निश्चल

हसविलेस, रुसविलेस रोम रोम करुनि विकल''[97]

संयोग और वियोग शृंगार के दर्शन कवयित्री की कविता में होते हैं। 'तेवता तेवता मंदावली' कविता में विरह शृंगार के दर्शन होते हैं, दिया बुझने की अवस्था में है, पति अभी तक घर नहीं आया नायिका के मन में पति विरह की छटपटाहट है-

''बधीर या झाल्या अंतरीच्या कळा
वाणिची बासरी भंगली शांतली
जन्मजन्मातंरी राहिली जी दूरी
घाल आता तरी दिव्य ती साऊली''[98]

कवयित्री संजीवनी की कविता में प्रकृति की छटाओं का भी सुंदर अंकन हुआ है। 'पारिजात थरथरला' कविता प्रकृति के पार्श्व भूमि पर लिखी गयी है। प्रकृति के प्रांगण में जब पारिजात हवा के कारण हिलता है, तब पलभर के लिए सुंदर वातावरण की सृष्टि होती है। 'ती आशेची कळी' कविता में प्रकृति का सुंदर अंकन हुआ है। नीले परकर पर सफेद फूल का चित्र निकालकर एक सुंदर लडकी बाल बिखेरकर पहाड की ओर दौडने लगी है। उसमें चेतना का संचार है, यह देखकर कवयित्री को जीवन सौंदर्य से परिपूर्ण लगता है, जीवन में मानवता व्याप्त है, ऐसा लगता है-

''निळया परकरावरील काढिली
बेलबुट्टी पांढरी
सुसाट माळावरी धावते
पोर एक गोजिरी''[99]

---

97) मराठे संजीवनी - संसार, पृ.7
98) मराठे संजीवनी - संसार, पृ. 9
99) प्रा.कुलकर्णी सरोजिनी- मराठी साहित्य दर्शन, पृ. 62

'क्षितीजावरती' कविता में चंद्रमाँ युग-युग का सहयात्री लगता है। रविकिरण, फुलों का सौरभ, दश दिशाओं में व्याप्त मनोहर रंग, झरनों का नर्तन, आदि का प्रभाव कवयित्री पर हुआ है-

''भावपुष्प मी जगा वाहिले
मज न कुणाचे भाव राहिले''[100]

इसप्रकार संजीवनी की कविता उसकी 'सपनों का मधुमय जीवन' है। यह मधू कभी भी न समाप्त होनेवाला है। संजीवनी की कविता पैरो में छंदो की घुँगरु बांधकर जन्मी है। सुमधुर स्वरों की उंगली पकड़कर अपना पहला पग इस यक्ष भूमि पर रखी है।

उनकी कविता में मन कमल का समर्पण है, अनुराग की प्रेमगाथा है, जीवन का भग्न सपना, सुखे मोगरे का बहार है, शांत सागर में उठी हुई आँधी है, सपनों का मधुमास है, ये सभी भाव एक विरहिणी के हैं ।

संजीवनी की प्रकृति विषयक कविता उसकी मनस्वी व्यक्तित्व में एकरुप हुई है। भावप्रवण, समर्पणशील व्यक्तित्व का स्थायिभाव प्रेम ही है। संजीवनी के गीतों का अविष्कार उसके संस्कार अतः व्यक्तित्व से सहज और स्वाभाविक होकर प्रस्फुटित हुई है।

7:1:26 इंदिरा संत :

आधुनिक मराठी कविता को वैभव प्राप्त करा देना का कार्य अनेक कवयित्रियों ने किया है। इन कवयित्रियों में इंदिरा संत का स्थान उल्लेखनींय और महत्त्वपूर्ण है। 'सहवास', 'शेला', 'मेहंदी', 'मृगजळ', 'रंगबावरी', 'बाहुल्या', 'मृण्मयी', 'गर्भरेशीम', 'चित्कळा', आदि कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इनकी कविता के संबंध में पुरुषोत्तम पाटील कहते हैं - ''नियति का विपरीत और विलक्षण देन घायल मन से मजबूत कंधो पर स्वीकारने के लिए ही कवयित्री की कविता जीवन की प्रवासिनी बनी। उसका हृदय बोलने लगा, अस्तित्व को हिला देनेवाला चिरवियोग और दुःख से कविता का जन्म हुआ। आत्म मग्न होकर कवयित्री को अकेलापन भोगना पड़ा।''[101]

---

100) प्रा.कुलकर्णी सरोजिनी- मराठी साहित्य दर्शन, पृ. 49

101) पाटील पुरूषोत्तम (संपा) 'कवितारती' (इंदिरा संत विशेषांक) पृ.28

जीवन में मित्र पर, पति-पत्नी पर अंत्यत प्रेम किया जाता है, सब कुछ समर्पित किया जाता है। प्रिय व्यक्ति का चिर-विरह सहा नहीं जाता, इसे पचाना, सहना भी मुश्कील है। कवयित्री इंदिरा ने जीवन में पति निधन के बाद चिर-विरह को सहा है-

''तुझ्यातील सारे तुझे आहे जरी बिलगुन
दिसामाशी तुला परि चालले मी विसरुन''[102]

इंदिरा संत की प्रेमकल्पना मेहंदी के रंग की तरह मन को मोहित करनेवाली है। रोमँटिक कवियों के पास विविध रंगो की विलक्षण आसक्ति रहती है। इंदिरा संत के 'सहवास' से लेकर 'रंगबावरी' तक के प्रवास को देखने से ऐसा लगता है कि, कवयित्री को रंगो की विलक्षण आसक्ति है। पति विषयक अनुभूति यही उनके भाव कविता की आत्मा है । पूर्णरुपेण पतिपरायणता ऐसी उनकी भाव कविता मराठी प्रेम कविता में महत्त्वपूर्ण काव्य सृष्टि है। माधव आचवल कहते हैं- ''भाव कविता स्वाभाविक ही वैयक्तिक अनुभवों की विशिष्टता को खोजनेवाली कविता रहती है। मराठी भाव कविता में इंदिरा संत की कविता वैयक्तिक अनुभवों से पाठकों कों अपने निकट की लगती है।''[103]

भावकविता में भावना की एकग्रता और उससे अधिक आत्मनिष्ठा का महत्त्व रहता है, तो भावगीतों में व्यक्तिगत भावना के अविष्कार को विशेष महत्त्व दिया जाता है । भावगीत में गीत यह शब्द है, गीत याने गेयता। रविकिरण मंड़ल के काल में भावगीत यह शब्द रुढ़ हुआ। इंदिरा संत की प्रेमकविता विशुद्ध भावकविता हैं।

इंदिरा संत के विशुद्ध प्रेम का रमणिय चित्र 'सहवास' है।ना.मा. संत के साथ इनका प्रेम विवाह हुआ था। 'सहवास' दोंनों के सहयोग से लिखा हुआ कव्य-संग्रह है, प्रेम-भावना के स्वप्नमधुर, तरल शब्दचित्रों का अंकन है -

''तुझा सहवास
जसा पहाटेचा वारा
फुले फूल झरझरा
तुझा सहवास
झिरी झिरी चांदण्यांचा

---

102) जोग रा.श्री.- 'काव्य प्रदक्षिणा', पृ. 44
103) आचवल माधव - 'जास्वंद', मुंबई पृ. 85

मधुर उन्मादाचा''[104]

पति के संपर्क में कवयित्री के प्रेमभाव रंगिन हुए हैं -

''अंतरीच्या अंतरात हृदयाच्या गाभाऱ्यात

जीव सख्याची नजर तेवते शांत शांत''[105]

पतिपरायण कवयित्री के काव्य में शारीरिक आकर्षण को स्थान नहीं । अशरीरि प्रियकर का चिंतन, स्मरण का चित्रण बहुसंख्य कविता में हुई है, क्योंकि असमय में ही पति का निधन हुआ, जीवन का प्रेम रंग धूल-धूसरीत हुआ, चिरविरह में वह तडपनें लगी, पति के स्मृति के बिना कुछ नहीं बचा। 'स्मृति' इंदिरा के जीवन का अविभाज्य अंग है। पति के याद में स्मृति जागृत हो उठती है-

''आली अमृताची लाट आली तुझी आठवण

साठवण रक्तामध्ये, डोळे घेतले मिटून ''[106]

कवयित्री इंदिरा संत की बिम्बसृष्टि अत्यंत समृद्ध और परिपूर्ण है। स्पर्श और सौरभ की प्रतीति उनके बिम्बों में झलकती है। उनके बिम्ब अंत्यत संवेदनशील हैं -

''अजूनही जागा आहे

स्पर्श तुझ्या कायेवरी

आणि अंगाचा सुगंध

खेळतसे श्वासावरी''[107]

आधुनिक मराठी की कवयित्रीयों ने पति सहयोग और सुख का वर्णन सुंदर ढ़ंगसे किया है। कवियित्री इंदिरा संत पति सहयोग और संर्पक का चित्रण, पत्नी विषयक पति के भावनाओं को चित्रित करते हुए कहती है-

''चतुर कुशल तू रसिक सहेली,

गोड जिव्हाळा तुझ्या भाषणी

भुलून जाता बोलून कांही

डावलसी ते सहज हसूनी''[108]

---

104) संत इंदिरा - सहवास, पृ. 31
105) संत इंदिरा - शेला, पृ. 62
106) संत इंदिरा - रंगबावरी, पृ. 28
107) संत इंदिरा - बाहुल्या, पृ. 64
108) संत इंदिरा - शेला, पृ. 76

पति के मन की परस्पर विरुद्ध भावनाओं का चित्रण इंदिरा संत ने यथोचित किया है।

संयोग शृंगार के साथ-साथ वियोग शृंगार के भी दर्शन कवयित्री की कविता में होती है। चिरवियोग की अवस्था में ही उनकी कविता साकार हो उठी है-

''कातरवेळेला रिकाम्या दारात
उभी मी राहत केंव्हाहून
श्रमित आतुर, येशील हासत
ओढ ही मनात, वागते का?
येई थंडगार घेऊन अंधार
आणखी अंत गारठते'ओढ ही मनात, वागते का?
येई थंडगार घेऊन अंधार
आणखी अंत गारठते''[109]

अनेक कविताओं में इंदिरा का चिर-विरह प्रकट हुआ है। प्रियकर हमेशा के लिए चला गया है, फिर भी उसे आभास होने लगता है, वह निश्चित आनेवाला नहीं यह उसे ज्ञात है, विरह की तीव्रता से वह तडपने लगती है, पति का यह चिर-विरह उनकी पूरी कविता में व्याप्त है-

''नाहिस तू नाहिस तू
नाहिस तू ने भरले अंबर
भरले तारे, भरले वारे
नाहिस तू चा
प्रचंड पुतळा, उभा राहिला पुढयात माझ्या''[110]

पति नहीं यह भावना उसे हमेशा कुरेदती है।

कवयित्री के भावजीवन में प्रेम का जो स्थान है वही पकृति का। मन की अस्वस्थ अवस्था में वह प्रकृति की गोद में जाना चाहती है, प्रकृति उसे अच्छी लगती है। कवयित्री प्रकृति के साथ एकरुप हो जाती है। भावसृष्टि का सजीव रूप वह चित्रित करती है ।

---

109) संत इंदिरा - सप्तसरिता, पृ. 33
110) संत इंदिरा - मृगजळ, पृ. 31

'मेंहदी' कविता प्रकृति के अलग रंगो को चित्रित करती है। प्रकृति में स्थित मिरीचिका को खोजने लगती है। पुरुषोत्तम पाटील के शब्दो में - ''आधुनिक मराठी कवयित्रियों में काफी मात्रा में काव्य-लेखन करनेवाली कवयित्रियों में प्रभावपूर्ण कविता इंदिरा संत की है, भावनाओं की उत्कटता रमणिय प्रकृति और तीव्र संवेदना आदि विशेषताएँ हैं। चिर-विरह की आर्त भावना सभी कविता में व्याप्त होने के कारण उनकी कविता एकांगी नहीं, ये तीन विषेशताओं से स्पष्ट होता है।''[111]

प्रभावपूर्ण वेदनानुभूति उनकी महत्त्वपूर्ण पहलू है। पूरे अनुभव की व्यापकता उनकी वेदना में समा गयी है-

''तुजविण आता-तूझ्या या संसारी
अंगाराच्या सरी वर्षतात
आत-बाहेरून लागलीसे आग
तुझा घेत माग-येउ कोठे?''[112]

इनकी कविता के संबंध में वा.ल. कुलकर्णी कहते हैं - ''इंदिराबाई की कविता काव्यात्म मन से विशिष्ट भाव स्थिति में प्रकृति के साथ किया हुआ संवाद है।'' [113]

रंगबावरी में रंगरूपी प्रेम और प्रेमरुपी रंग प्रकट करनेवाली कवियित्री का अंत:रंग अति संवेदनशील है। दिवंगत प्रियकर के साथ का संवाद इसमें चित्रित है।

'नको नको रे पावसा' कविता में कवयित्री बारीश को विनंती करती है, बारीश के तांडव नृत्य से सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जाएगा यह उसे डर है-

''नको नको रे पावसा
असा धिंगाना अवेळी
घर माझे चंद्रमौळी
आणि दारात सायली''[114]

सहवास से गर्भरेशीम तक के प्रदीर्घ यात्रा में प्रकृति विविध रूपों से मिलती है।

7:1:27 शांता शेळके :

मराठी की एक जेष्ठ कवयित्री शांता शेळके की 'वर्षा' (1947) 'रूपसी')

---

111) पाटील पुरुषोत्तम- कवितारती, पृ. 121
112) संत इंदिरा - मृण्मयी, पृ. 12
113) कुलकर्णी वा.ल.- मराठी कविता जुनी आणि नवी, पृ. 227
114) संत इंदिरा - रंगबावरी , पृ. 46

(1956), 'तोच चंद्रमा' (1973), 'गोंदण' (1975) 'अनालेख' (1986) 'कळयांचे दिवस फुलांच्या राती' (1986) 'जन्म-जान्हवी' (1990), 'पाण्यावरच्या पाकळया' (हायकू) (1992) 'चित्रगीते' (1995) 'पुर्वसंध्या' (1996) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चूके हैं।

'वर्षा' प्रथम काव्य-संग्रह में उनकी आत्मनिष्ठ, समन्वय कविताएँ प्रकट हुई हैं। विशिष्ट आकांक्षाओं के चित्र, प्रेम, परमेश्वर और प्रकृति आदि का प्रामाणिक अंकन हुआ है। इसमें उनकी वैयक्तिक जीवन के सुख-दुःख की अनुभूति है। इस संग्रह की कविता रविकिरण मंडल की कविता से मिलने जुलनेवाली है।

आधुनिक मराठी काव्य-वाटिका में कवयित्री की कविता पुष्पलता से संपन्न और शुशोभित हुई है। प्रेम, पति, प्रियकर और संसार आदि विषय ही चित्रीत हुए हैं। कारण स्त्री प्यार की भूखी, प्यासी है। कवयित्री के जीवन में चिरवियोग ही नशीब आया। इसलिए दुःख से यह वृक्ष हिल गया।

वर्षाऋतु में जैसे सृष्टि हरिभरी हो जाती है, नये अंकूर फुटते हैं, उसी प्रकार प्रेम रूपी वर्षा के आगमन से कवयित्री के जीवन में प्रेम के अंकुर फुट निकलते हैं। सपना कवयित्री के जीवन का एक अभिन्न अंग है, और कविता उनकी जीवनसखी। 'स्वप्नरंजन' कवियित्री के जीवन का एक अभिन्न मनोभाव है। प्रणयभावना का मुक्त अविष्कार उनकी कविता में चित्रित हुई है।

स्वच्छंदवादी कवियों का एक लक्षण बताते हूए रा.शि. वाळिंबे कहते हैं- ''प्रणय निराशा की व्यथा असहय होने के बाद विश्राम के रूप में कीट्स जैसे स्वच्छंदतावादी कवि कविता करने लगते हैं, और कल्पनाशक्ति की सहायता से सपनों की सृष्टि का निर्माण कर उसमें रत हो जाते हैं।''[115] कवयित्री कहती है-

''तूमच्यावाचून जीवीत होईल दुस्सह कारागार
स्वप्नानों तुमच्याच अभागी जीवाला आधार''[116]

सपनों का आधार कवयित्री को सदैव ही है। कवयित्री अपने प्रियकर के संबंध में कहती है, तुम्हारा सहवास हमेशा रहा तो भी तुम्हारा रहश्य मुझे समझ में आता नहीं। तेरा भव्य व्यक्तित्व मुझे विशाल नयनों में दिखता है। मन की भावना व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है-

---

115) वाळींबे रा.श. - साहित्यातील संप्रदाय, पृ. 206
116) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 102

''घेसी मजला जै करपाशी
हर्ष तेघवा भरे मानसी
आणि नयन मिळता नयनासी
क्षण गेले ऐक्य झाले अपुले''[117]

कभी-कभी प्रेंम का रहश्यानुभव भी व्यक्त होता है। हर्ष, विषाद समाप्त होकर मन शांत हो जाता है। ऐसे समय में प्रेम क्षणिक है क्या? ऐसा लगता है-

''हाती हात तुझे धरून तुझिया डोळयात मी पाहत
तू दूरस्थ अजूनही म्हणुनिया चित्ती धुके दाटते''[118]

प्रियकर के लिए साज शृंगार किया गया था लेकिन कुछ उपयोग नहीं हुआ। फुलमाला लेकर स्वागत के लिए तैयार प्रेयसी को प्रियकर के नेत्रों से पल भर के लिए मिलन हुआ फिर -

''मुर्ती तव अदृश्य जाहली आणि तया काली
चित्तवृति स्थिर होउनी मम भानावर आली''[119]

'योगायोग' कविता में प्रथम पहचान, बाद में स्नेह, मित्रता, प्रेम का आलेख कवयित्री चितारती है। लेकिन दूरत्त्व निर्माण होने के बाद 'दैवाची जर ही कठोर करणी का दोष देऊ कुणा' ऐसा दैव वाद भी व्यक्त हुआ है। यह अपना प्रेम निष्पाप है, अथांग है ऐसा कहते हुए वह अपने मन के भावों को सदैव रहश्यमय रखना चाहती है। प्रियकर के स्पर्श में भावगंगा बहती है, उसे आनंद मिलता है, मौन का सौंदर्य और रमणियता अपूर्व ही है -

''प्रेम तूझे वाचूं हे नेमीच तुझ्या प्रेमाला
मूक जे शोभे तथा वाचाळता आणू नको''[120]

कवयित्री शांता शेळके का काव्यात्म प्रेम निष्पाप और उदात्त है। 'वर्षा' 'रूपसी' आदि में समृद्ध प्रेम गीतों का अविष्कार हुआ है।

कवियित्री शांता शेळके की 'प्रीतिगीत','तेंव्हा आणि आता' प्रेमगीतों में मन का खूलकर वर्णन हुआ है। 'क्षण घेतलेस तू' 'क्षणभर', 'अंधारातील भेट' आदि प्रेमगीतों

---

117) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 72
118) शेळके शांता - रूपसी, पृ. 15
119) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 22
120) वही, पृ. 92

के खुले शृंगार में मादकता के दर्शन होते हैं। 'अंधारातील भेट' प्रेमगीत में उत्कंठा, अधिरता और चंचल भावनाओं का मधुर मिलन हुआ है। मराठी तरूणी के भावनाओं का छटपटाहट वह इस प्रकार चित्रित करती है –

''मराठमोळया सात्विक ही कुळवंताची पोर
निरखून अंधारात अशी बघे कुणास समोर ?''[121]

कवयित्री के संस्कारक्षम जीवन पर माधव ज्युलियन के कविता का प्रभाव पडा है। माधव ज्युलियन के प्रेम का खुला हुआ रूप वह पसंत करती है। 'ओढ़' कविता में कवयित्री खुलकर वर्णन करती है -

''राजसा वक्षावरी तुझिया मला घे ओढुनिया
वेळही साजे कराया प्रीतीच्या विश्रब्ध केली''[122]

अ.ना. देशपांडे उनके गीतों के संबंध में कहते हैं - ''उनके प्रेमगीतों की नायिका केवल हृदय मिलन पर संतुष्ट न होकर संयोग शृंगार में रमनेवाली है''। [123]

संयोग शृंगार के साथ-साथ वियोग शृंगार के दर्शन भी कवियित्री की कविता में दिखाई देती है। कवयित्री शांता शेळके की वर्षा में चित्रित प्रेमगीतों से रूपसी में चित्रित प्रेमगीत विरह से अच्छादीत हैं। विषण्णता 'रूपसी' के विरह गीतों का स्थायिभाव है -

'प्रियतम माझा किती उदार!
प्रतिदिन मजला लेववितो हा अश्रु फुलांचे हार!'[124]

कभी-कभी निराशाजनक अनुभव उन्हें आता है, मन उदास हो जाता है। ऐसी अवस्था में वह कहती है-

''जीवन म्हणजे दीर्घ विरह गीत
क्षण मिलन चिर-वियोग हीच इथे रीत''[125]

अकेलेपन का जीवन सदैव उसे जलाता रहता है, जीवन के अंत में अकेलापन ही आ पडा। कवयित्री के अनुभव स्वयं के होने के कारण उसमें जीवंतता है। पुरानी घटी घटना को भुलकर आगे जाने का भी विचार कवयित्री करती है-

---

121) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 70, 71
122) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 76
123) देशपांडे अ.ना. - आधुनिक मराठी वाङमयाचा इतिहास, पृ.419
124) शेळके शांता - रूपसी, पृ. 12
125) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 66

''आज संसारी नव्या जासी, तिथेही हो सुखी
मात्र जागे विस्मरोनी प्रीतिगाथा ही जुनी'' [126]

शांता शेळके की कविता में चित्रित प्रकृति उनके बाल जीवन का, यौवन का और मायके का है। प्रकृति के माध्यम से उनका व्यक्तित्व झलक उठा है।

कभी-कभी कवयित्री को पूरा जीवन ही निरर्थक लगता है। चंद्र, आकाश, सितारे , चंद्रबिम्ब को देखने के बाद कोई अदृष्य होकर स्पर्श कर रहा है ऐसा लगता है। 'सहजखूप' कविता में कवयित्रयी कहती है- 'फुलों का खिलना', 'हरियाली', 'झरना' समुद्र ये सभी मुंबई के प्रकृति में भी मिलने आती है लेकिन मुंबई की प्रकृति और देहात की प्रकृति में जमीन-आसमान का अंतर है ऐसा कवयित्री को लगता है।

'काळोखपाने' कविता में किरण, छाँव, कोमल शीतल पवन, गौ का पदरज, निगलनेवाला अंध:कार, डरपोक चाँदनी आदि का सुंदर चित्रण कवयित्री करती है तो कभी प्रकृति उसे शत्रू के समान लगती है, मानो प्रकृति ने उसके साथ षड्यंत्र रचा है। जमीन से आसमान तक फैला हुआ वृक्ष, कुँए का अंत:स्तल टहनियों का विचित्र हिलना, लता बेलियों की हरि नागीन आदि उसे शत्रू के समान लगती है। तेजोनिधि भास्कर, बरसात, बसंत का आगमन, फुलोंका सौरभ, विशाल सागर, आदि के माध्यम से कवयित्री को परमेश्वर का साक्षात्कार होता है। कवयित्री के नस-नस में प्रकृति व्याप्त है, क्योंकि नीलगगन, कलकल बहनेवाली झरना, कोकीलगान, फुलोंपर पच्छियों का गुंजारव इन सब में कवयित्री अपने आप को भूल जाती है, उसे लगता है-

''विशाल जीवन निसर्गात
भरुनी राहिले, राहिल पुढ़ती
जीवीत बिंदू क्षुद्र आमुचा
विलिन व्हावा तयात अंती''[127]

'वर्षा' संग्रह के प्रस्तावना में प्रा. रा. श्री. जोग उनकी कविता के संबंध में कहते हैं-''शांताबाई को लगनेवाला प्रकृति विषयक प्रेमभाव कवि-कर्तव्य के रूप में नहीं आया, प्रकृति के प्रति मूल आकर्षण उनमें दिखायी देता है।''[128]

---

126) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 29
127) शेळके शांता - वर्षा, पृ. 104
128) शेळके शांता - वर्षा, (प्रस्तावना रा.श्री. जोग), पृ. 4

'वर्षा' में चित्रित बालजीवन की यादें प्रकृति की सुंदरता के साथ समरस हो जाती है तो 'रुपसी' में सृष्टि नियंता निर्माण करती है। प्रकृति मानव का मार्गदर्शक है, सखा है, यह दृष्टि कवयित्री में दिखाई देती है।

''माझेपण मम निसर्गात गेले या विरुनिया
विविधतेत एकत्व देखिले अद्‌भूत ही किमया''[129]

विविधता में एकता का अनुभव कवयित्री करती है। रोजमर्रा के जीवन की निरसता को त्यागकर कवयित्री प्रकृति के गोद में समा जाना चाहती है।

''अशा एकांती असावी
मला माझीच संगत
आगळया या क्षणालाही
मीच आणावी रंगत''[130]

प्रकृति में पागल बनी कवयित्री अपने मन के सुख दुःखो का प्रतिबिम्ब प्रकृति में देखती है, प्रकृति उसकी सात्वंना करती है ऐसा उसे लगता है, इसीलिए अपने सुख:दुख पकृति की साहाय्यता से कवयित्री कविता में चित्रित करती है। कवयित्री अनुराधा पोतदार इनकी कविता के संबंध में कहती है- ''उनकी कविता स्वाभाविक भावनाओं के तरल संवेदना में नहाकर अधिक परिपक्व बनी है, कविता में संगीत की गंभीर, प्रशांत, माधुरी का मिलन होने के कारण भावगीतों का रसायन कलात्मक बन गया है, लय, ताल, सूर भावगीत के सभी लक्षण इकट्ठे हुए हैं।''[131]

जीवन में सुख दुःख के पल आते-जाते हैं, सहज-सुंदर प्रकृति के माध्यम से कवयित्री आनेवाले समय के साथ किस प्रकार संघर्ष करना चाहिए, सुख दुःख को भुलकर कैसे आगे बढ़ना चाहिए इसे बताते हुए कहती है-

''वाऱ्याची झुळुक बनतो झुला
क्षणात उंच नेत असे मला
सांजेचे रंग धुंद तरंग
पाचही प्राण सुखात न्हाती

129) शेळके शांता - रुपसी, पृ. 44
130) शेळके शांता - रुपसी, पृ. 48
131) पोतदार अनुराधा - सहकंप, पृ.190

कळयांचे दिवस फुलांच्या राती''[132]

इसप्रकार आँखों में सपने लेकर जिनेवाली यह कवयित्री सुख दुःख की लहरों से, आँधी से टकराती है। वह डरपोक न बनकर, स्थिर होकर जीवनगीत गाते रहती है, उसने जीवन के बीते हुए क्षणों को भोगा और जीवित रहीं सपनोंपर।

कवयित्री अपने-आपको भोली-भाली समझती है। मैं भोली-भाली तुलसी की मंजीरी हूँ ऐसा वह स्वयं की प्रतिमा चित्रित करती है। मैं गगन में उड़नेवाला गरुड़ न होकर, छोटी चाँदनी हूँ, मानिनी गुलाब कलीका न होकर, भोली-भाली तुलसी की मंजीरी हूँ कहकर स्वयं का रूप प्रकट करती है।

7:1:28 पद्मा गोळे :

आधुनिक मराठी कविता को समृद्ध बनानेवाली अनेक कवयित्रियों में पद्मा गोळे का स्थान अंत्यत महत्त्वपूर्ण है। उनकी कविता अनेक अंगो से फली हुए हैं। प्रेम, प्रकृति, घर, संसार, मायका,आदि।

रविकरण मंडल के काल से पद्मा गोळे कविता के क्षेत्र में सृजनरत है। 'प्रितीपथावर', 'नीहार', 'स्पप्नजा', 'आकाशवेडी' आदि कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

'प्रितीपथावर' काव्यसंग्रह में प्रेम काव्यों का आधिक्य है। प्रेम के अलग-अलग छटाओं का वर्णन उनकी कविता में हुई है। विवाहपूर्व और विवाहोत्तर प्रेम,आत्मनिष्ठ और परनिष्ठ प्रेम का चित्रण उनकी कविता की विषेशता है।

पुरुष को जैसे स्त्री प्रिय है, वैसे स्त्री को पुरुष, दोनों का एक-दूसरे के प्रति आस है। प्राचीन काल से प्रचलित स्त्री के विविध रूपों की कल्पना कर कविता की नायिका कहती है-

''कधी कधी सति होऊनी यज्ञी
उमा स्वरूपें तुजसि वरावे.
सावित्री कधि बनुनि तुझ्यास्तव
काळासीही हसत लढ़ावे''[133]

---

132) शेळके शांता- कळ्यांचे दिवस फुलांच्या राती, पृ. 26
133) गोळे पद्मा- नीहार,पृ. 25

कवयित्री समर्पण, सेवा, अनुनय, त्याग की भावना व्यक्त करती है, समय के साथ लढ़ने की भी वह तैयारी करती है।

'प्रितीपथावर' संग्रह में प्रेमिका के भाव-भावनाओं के अलग-अलग छटाँए चित्रित हुए हैं। पलभर के लिए तो प्रियकर अपना कहे इस प्रकार की आशा प्रेमिका को हैं।

'नीहार' में 'शुक्रतारा', 'गूढ़ एकांत', 'हिरवी-हिरवी जाई', आदि कविता में प्रियकर के मूर्ति की कल्पना कर प्रेमाभिव्यक्ति की गयी है। चित्त का वास्तविक रेखांकन 'याच कांही क्षणांसाठी' कविता में हुआ है। सफल प्रेम जीवन में पूरा समय श्रम में चला गया तो भी कुछ पल एकांत में बित जाते हैं। यह पल उनके लिए महत्त्वपूर्ण है ऐसा कवयित्री को लगता है।

'स्वप्नजा' और 'आकाश वेडी' में प्रेम कविता की मात्रा कम है। प्रेम का साक्षात्कार राधा-भक्ति के भाव से साकार हो उठी है-

''मी इथली मी इथली, नाही मी कुणी परकी
सखी राधे का बघसी नाही मी अनोळखी
प्राशीत तो मुरलीधर, जो नाही माझ्यास्तव
चुंबित ती पदकमले जी वळली न कधीच
यमुनातटि माझ्यास्तव''[134]

'आकाशवेडी' संग्रह की प्रेमकविताओं कों पढ़ना यानी एक के बाद दूसरा सपना देखना है। पद्मा गोळे की प्रेमकविता कुहरे में लिप्त हो जाती है। प्रेमानुभूति की जीवंत प्रतिक्रिया यहाँ दिखाई देती है -

''केंव्हातरी या स्वप्नातुनि
पडेन का मी बाहेरी ।''
कारण
''पण-पण तू आलाच होतास का?
आठवत नाही;
आठवतं फक्त पहाटेचं धुकं आणि....
आणि त्यात अलगद मिसळू पाहणारा

134) गोळे पद्मा- स्वप्नजा,पृ. 12,13

अंधूक अंधूक शुक्रतारा''[135]

स्त्री जब माँ बन जाती है तब उसके जीवन में परिवर्तन कैसे होता है इसे कवयित्री 'आई झाल्यावर' कविता में चित्रित किया है। मातृत्व प्राप्त हो जाने के बाद माँ के प्रति देखने का दृष्टिकोन किस प्रकार बदल जाता है। स्वयं माँ बनने के बाद माँ क्या चीज होती है, उसका मन कैसे होता है, स्त्री के सहनशीलता को कवयित्री सूक्ष्मता से चित्रित करती है-

''आता कळतो गं आई। अर्थ तुझ्या वेदनांचा
आणि हळव्या सुखांचा। दुःखाचाही
आई आता दिसतो गं। तुझ्या प्रेमळ नेत्रींचा
खेळ उन पावसाचा। हळूवार
आता तुझे वेडे पावले। भाग्ये मला ही लाभले
आणि पूर्णत्व पावले। जीवन हे।''[136]

स्त्री के बिना घर अधूरा है, स्त्री के लिए चाहे मायका हो या ससुराल दोनों की चिंता उसे रहती है। मायका जाने के लिए स्त्री लालायित हो उठती है। तो जाने के बाद पति, सास-ससूर, बेटे-बेटियों की भी उसे चिंता है। दोनों घर की जिम्मेदारी स्त्रीपर है। इस जिम्मेदारी को कवयित्री ने काफी समझदारी से चित्रित किया है-

''तुम्हां पुरुषांचे बाई सारे सारे विलक्षण
मी ना। नाचतेच आहे माहेरच्या आनंदाने
येते, जपा प्रकृतिस, दिस पाऊस पाण्याचे
कुठे काय? गेले वाटे डोळां कण कोळश्याचे ।''[137]

विरह के कारण आँख्यो में आँसू आए हैं। लेकिन वह बहाना बनाती है की आँखों में कोयला गिर जाने के कारण आँसू आए हैं ।

वात्सल्य का भी सुंदर वर्णन कवयित्री ने किया है। 'प्रितीपथावर' संग्रह की 'बाळा! मजसि निरखू दे' 'बाळा उठ', 'माझे बाळ' आदि कविता में बाल - जीवन का सुंदर अंकन हुआ है। 'बाळ उठ' कविता में प्रकृति की सुंदरता और बालक के

---

135) गोळे पद्मा- आकाशवेडी ,पृ. 45

136) गोळे पद्मा- नीहार,पृ. 1

137) गोळे पद्मा- नीहार, पृ.24

सुंदरता को कवयित्री एकरुपता में देखती है। बच्चा जब बोलता है तो मानो घर में आभा छा जाती है। बच्चे के मीठे बोल में वह अपने चित्त को भूल जाती है, बच्चा जब हँसता है तो वह आनंदित हो उठती है। अपने स्वाभाविक अनुभव की अभिव्यक्ति वह इस प्रकार करती है-

''बाळ हासले। ग। तेज फाकले
बाळ धावले। ग। मृग लाजले''[138]

'नीहार' कविता संग्रह के 'असू दे ग सेजी बाई' कविता में कवयित्री पद्मा गोळे काले साँवले बच्चे पर पडौसन को भी प्यार करना चाहिए कहनेवाले माँ दिखती है। बच्चे का हास्य और चिनी का मिठास उसके चुंबन में है। कवयित्री अंत:करण और भावना का सुंदर चित्रण इस प्रकार करती है-

''तुझ्या हसऱ्या डोळयात आकाशाची गे निळाई
काळया केसात श्वासांत दरवळे जाई-जुई
तुझ्या मृदुल कांतिला तान्या दुधाची झिलई
तुझ्या केतकी स्पर्शात चांदण्याची शीतलाई''[139]

सुखी, सफल गृहस्थाश्रम का चित्रण कवयित्री पद्मा गोळे की 'याच कांही क्षणासाठी' कविता में दिखाई देती है। कुछ पल ऐसे होते हैं कि उन्हें पकड़कर रखने के लिए मन छटपटाता है, पद्मा गोळे की कविता में चित्रित स्त्री को लगता है-

''स्तब्ध निश:ब्द भोवती तसे तुझ्या माझ्यामनी
मूकताहि वाटे गोड लाख प्रेम बोलाहूनी''[140]

पति-पत्नी के संयत प्रेम का चित्रण पद्मावति ने किया है, उसमें पारिवारिक सौख्य के दर्शन होते हैं यादों से रोमांचित स्त्री कहती है-

''चार डोळयांच्या मीलनी
राया रंगला रे विडा
आज आठवणीने त्या
मनी वर्दळे केवडा''[141]

---

138) गोळे पद्मा- प्रितीपथावर,पृ. 78
139) गोळे पद्मा- नीहार,पृ. 28
140) वही, पृ. 9
141) वही, पृ. 10

प्रेम को भूल जाना असंभव है। 'लक्ष्मण रेषा' कविता में कवयित्री विरह का सरस चित्रण करती है। प्रियकर को भूल ने के लिए कवयित्री स्वयं ही लक्ष्मण रेखा खींच लेती है, लेकिन रोज जलनेवाला उसका हृदय, उसकी व्यथा अंथाग है। व्यथित अंत: करण से वह कहती है-

''विसरलास तू ते, तेंव्हाचे
सहज, निरामय, मधुर मोकळे,
मलाच का ते क्षणहि न साधे
रोज नव्याने हृदय हे जळे''[142]

अपना प्रेम सफल नहीं हुआ इसलिए कवयित्री दु:खी है, जिस प्रिय पर उसने प्रेम किया था वही भूल गया, उसे दु:ख होता है, वास्तव का कटू अनुभव वह व्यक्त करती है-

''व्याकुळते अन् भिते अंतरी
प्रश्न कराया तुला
विसरुनिया गेलास का रे
सुखी संसारी मला
नकोच उत्तर
प्यारी मजला ही माझी वंचना''[143]

आत्मवंचना और सुप्त अंहकार के दर्शन यहाँ होते हैं। 'सुकलेली अश्रू' कविता में कवयित्री प्रेम में असफल तरुणि का चित्रण करती है। प्रियकर उसे विवाह पत्रिका भेज देता है, सौगात के रूप में वह उसे आँसू भेजती है और इच्छा व्यक्त करती है कि इसके आगे मित्रत्त्व का रिश्ता ऐसाही रहे।

'जीवितहार' में प्रियकर-प्रेयसी का विवाह न होने के कारण निराश न होकर विवेकपूर्ण मित्रत्त्व का नाता जोडकर हृदय पथ पर श्रेय का मार्ग निर्माण कर जीवन पथ पर आगे बढ़ना चाहती है-

''असे न ते जर आपुल्या दैवी
जन्मावरी का खंत करावी?''

---

142) गोळे पद्मा- नीहार, पृ. 27

143) गोळे पद्मा- नीहार,पृ. 4

भविष्यात का नच फुलवावी

सौख्याची सुमने''[144]

ध्येय पथ पर मार्गक्रमण करनेवाली प्रेयसी के मन का खुलकर चित्रण कवयित्री ने किया है।

पद्मा गोळे पति-पत्नी के बीच की निस्सीम भाव को व्यक्त करती है। प्रेम के अनेक छटा उनकी कविता में चित्रीत हुई है। विवाहपूर्व प्रेम, विवाहोत्तर प्रेम, आत्मनिष्ठ प्रेम भावना का चित्रण उनकी कविता में हुई है। 'प्रितीपथावर' और 'नीहार' के प्रेमगीत विशुद्ध प्रेम के साक्षी हैं। 'स्वप्नजा' और 'आकाशवेडी' की प्रेमकविता दुर्बोध लगती है।

कवयित्री पद्मा गाळे की प्रकृति विषयक कविता अनेक अंगो से फली हुई है, चिंतनशील है। प्रकृति सौंदर्य को उनकी प्रतिभा झट से पकड़ती है। प्रकृति पर मानवी भावनाओं का आरोप करना कवयित्री को अच्छा लगता है। सावन को देखकर कवयित्री कहती है-

''घनकुंभातूनी ओतित जीवन

शृंगारीत पांचूनी वनवन

दिशा-दिशांच्या गाली फुलवित

नवयुवतीची लाज''[145]

सावन उन्हें अमरपुरीका नर्तक लगता है। 'ये अवखळ पोरीसमान आज सकाळ' एक चित्तवेधक कविता है। 'सुबह' को कवयित्री चंचल लडकी की उपमा देती है। प्रकृति के माध्यम से प्रेम का सुंदर चित्रण वह इसप्रकार करती है-

''दिशा-दिशांनी केली कुजबुज

हसला वारा डोळे उडवून

नभी उडाली पक्षीण चंचल

क्षणात हिरवे धागे तोडून''[146]

---

144) गोळे पद्मा- नीहार, पृ. 67, 68

145) प्रा. किर्लोस्कर मालती- (संपा) सप्तसरिता, पृ.3

146) गोळे पद्मा- स्वप्नजा,पृ. 15

कवयित्री सौंदर्यपूर्ण भावसंपन्न कल्पना चित्रों का रेखांकन करती है। उसकी प्रकृति चित्रण में वस्तुनिष्ठा से व्यक्तिनिष्ठा अधिक है। प्रकृति के माध्यम से कवयित्री व्यापक प्रेम तत्व, भक्ति का रहस्य और विश्वसौंदर्य का खोज करती है।

''असेच असू दे निरभ्र हिममय हे माझे मन
नको पुन्हा तो सौंदर्याचा ध्यास नि श्रावण:''[147]

सामाजिक स्तर पर कवयित्री के विचार प्रभूत्त्व पूर्ण हैं। 'रशियन सप्ताहनिमित्त' कविता में समाजवाद को स्पष्ट रूप से पुरस्कृत किया गया है।

''अज्ञानाची जिथे जळमटें होती बुजबुजलेली
वाऱ्याची ना झुळुकही जेथे घाम पुसाया आली
भीक मागती कामकऱ्यांची जिथे लेकरें बाळें
जिथे भुकेने अन् रोगांनी पसरियले निज जाळे
धनवंताचे भुवन उजळणे पुरे आता रविराया
झोपडीतल्या श्रमराजाचा येई तिमीर हराया।''[148]

'नीहार' पद्माबाई का दूसरा काव्यसंग्रह है। सामाजिक जीवन के चिह्न इसमें दिखाई देती है। 'मी माणूस' कविता में कवयित्री की स्पष्टोक्ति दिखाई देती है। स्त्री अस्तित्व के संबंध में वह कहती है-

''स्त्री सुंदर चलनी हुंडी
स्त्री म्हणजे नुसती कुंडी
स्त्री म्हणजे केवळ मांस''[149]

स्त्री केवल भोग की वस्तु है, पुरुष के हाथ की कटपुतली है इस बात का कवयित्री धिक्कार करती है -

''नाही मी हो; नुसती नार
पैजेसाठी जी लाचार
शेजेसाठी आसुसणार
नाही मी नुसती मादी

147) गोळे पद्मा- स्वप्नजा, पृ. 56
148) गोळे पद्मा- प्रितीपथावर,पृ. 93
149) गोळे पद्मा- नीहार,पृ. 39

मी माणूस माणूस आधी''[150]

विचारशील स्त्री यहाँ पुकार उठी है। नये युग की स्त्री स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। 'नव्या युगातील युगंधरा' में कवयित्री सुविद्य, जागृत, आधुनिक स्त्री की भावना चित्रित करती है-

''चीड असे मज अन्यायाची
गुलामगिरीची दुर्बलतेची
स्वतंत्र सबला, राष्ट्रशक्ति मी
पर्वा नच मुळि कष्टांची
आधी मानवता मी, मजला
पाहीन दासी ठेविल कोण?''[151]

कल की दुनिया में आत्मविश्वासपूर्ण विचरण करनेवाली स्त्री के ये विचार हैं। उसका आत्मविश्वास महत्त्वपूर्ण है। पति और पुत्र के लिए वह कष्ट सहना चाहती है, उसे इसकी चिंता नही।

केवल सुखमय जीवन और वैयक्तिक सुख-दुःख में कवयित्री जीना नहीं चाहती। समाज में चलनेवाला आर्थिक संघर्ष और फलस्वरुप उद्‌धवस्त होनेवाली समाज व्यवस्था का कवि मन पर तीखा आघात हुआ है ऐसा दिखाई देता है। दिखावा, बाह्य आंडबर उन्हें पसंद नहीं। 'भिकारणीचे भिक्षागाणें' कविता में वह स्पष्ट कहती है-

''दिन जनांची सेवा करु या,
ध्यास लागला सुशक्षित मना
परी मनाच्या स्वरमालेशी,
आचाराचा ताल जुळेना।''[152]

भीक माँगनेवाली भी एक स्त्री ही है, इसलिए उसे न्याय दिलाना चाहती है।

'प्रितीपथावर' में चित्रीत सामाजिक अनुभव 'नीहार' में परिपक्व हुए हैं। सामाजिक दृष्टि और विचार यहाँ स्पष्ट दिखाई देती है। कवयित्री की ये कविताएँ ओठों से नहीं पेट से निकली हुई लगती है। आधुनिक मराठी कवयित्री की कविता में

---

150) गोळे पद्‌मा- नीहार,पृ. 41
151) गोळे पद्‌मा- प्रितीपथावर,पृ. 101
152) प्रा.किर्लोस्कर मालती - सप्तसरिता, पृ. 198

पद्माबाई की सामाजिक चिंतन उनके उच्च विचार और चिंतनशीलता के व्यापक दर्शन होते हैं। दुनिया के व्यवहार का तर्कपूर्ण विवेचन उन्होंने किया है।

कवयित्री पद्मा गोळे की राष्ट्रीय कविता देश के जाज्वल्य अभिमान से भरी हुई है। अपनी राष्ट्रमाता के रक्षा के लिए जिन्होंनें सीने पर गोली झेल ली उन्हें ही कवयित्री 'पंचप्राणाच्या आरतीने मी ओवाळीन' ऐसा कहती है। हम महाराष्ट्र कन्या हैं, हमे जुही की कली कहा जाता है। क्यों न कहा जाय हम भी वीर धर्म जानते हैं। मातृभूमि की रक्षा के लिए वह तत्पर है।

एक वीरमाता अपने लाडले को रणभूमि पर जाने के लिए बिदाई देते हुए कहती है, पराक्रमी वीरों के कंधेपर कल की दुनियाँ की शांति निवास करने लगी है, इसीलिए-

''नाही एकही हुंदका
मुखावाटे काढ़णार
मीच लावूनिया ठेविली
तुझ्या तलवारीची धार''[153]

सुशिक्षित स्त्री की दृष्टि व्यापक होने के कारण उसका सामर्थ्य बढ़ गया, मन गंभीर हुआ इसीलिए बेटा विजयी हो ऐसी आशा व्यक्त करती है। अपना एकमात्र लडका देशहित के लिए अर्पित करनेवाले पिता का चित्रण कवयित्री करती है-

''अतृप्त माझिया आकांक्षाचा निधी
हा पुत्र लाडका हो देशोधारक
विलसू दे जगी जणू तेथे ध्रुवतारक''[154]

एक पिता का यह सपना सच में उतारने के लिए उसका वीरपुत्र मात्रभूमि की सेवा के लिए रणभूमि पर जा रहा है। तत्कालीन जनता में जो देशप्रेम की भावना थी वह यहाँ प्रकट हुई है।

7:1:29 अनुराधा पोतदार :

आधुनिक मराठी की एक जेष्ठ और श्रेष्ठ कवयित्री अनुराधा पोतदार अपने विभिन्न जीवनानुभव से मराठी कविता को समृद्ध बनाया। उनकी कविता तीव्र

153) गोळे पद्मा- आकाशवेडी ,पृ. 13
154) गोळे पद्मा- प्रितीपथावर,पृ. 97

आत्मनिष्ठा से निर्माण हुई है। तीव्रता यही कविता का स्थायिभाव है। प्रेमानुभव के सभी संवेदनाओं को वह देखना चाहती है। उन्हें मुक्त रूप से अंकीत करना चाहती है।

वि. वा. शिरवाडकर कहते हैं- ''कवयित्री अनुराधा पोतदार का आधुनिक मराठी काव्यक्षेत्र में एक स्वतंत्र वैशिष्टयपूर्ण स्थान है। 'घाटे का घर' रविकिरण मंडल का एक आश्रय था, यह वारिस लेकर अनुराधा की काव्य-प्रतिभा आगे के काल में पल्लवित होती रही। सर्वस्वी आत्ममग्न कवयित्री की कविता स्वयं के एक अलग रास्तेपर चलती रही। तरल आत्माविष्कार और अनुभव के मुख्य अंश से कभी दूर नहीं गयी''[155]

कवयित्री अनुराधा पोतदार 'आवर्त' (1969), 'कॅक्टस प्लॉवर' (1979) और 'मंझधार'(1989) आदि कविता संग्रह में अपने मन की भावनाएँ व्यक्त की है। अपने कविता के संदर्भ में वह कहती है- ''जीवन में जब जब बेमेल स्वर छिड गये तब तब मुझे मानवमात्र से कविता नजदीक की लगी।''[156]

जीवन जीते समय उन्होंने जो संघर्ष देखा, दुःख का अनुभव किया उसे उन्होंने चित्रित किया है। उनकी कविता में स्त्री वेदना प्रकट हुई है। उनकी कविता में चित्रित स्त्री प्रेम यह जीवन का श्रेष्ठ मूल्य माननेवाली है, सुंदरता की सपने रंगानेवाली है। प्रियकर को मिलने के लिए वह आतुर हो उठी है। 'आवर्त' में उनके मनकी अधिरता इसप्रकार प्रकट हुई है-

''कोठोकाठ दाटे प्राण
तुला पहावेसे वाटे
तू ही म्हणावे अधीर''[157]

कभी कभी यह स्त्री अपना प्रेम प्रियकर के समझ में आया है या नहीं इस शक से डर जाती है-

''हेच शल्य रे उरात सलते
तुला न कळले मी पण
याच व्यथेने झाले विषमय
जीवन अवघे शापित मृण्मय''[158]

---

155) पोतदार अनुराधा - मंझदार, पृ.(अनुक्रमपूर्व वि.वा.शिरवाडकर)
156) पोतदार अनुराधा - सहकंप, पृ. 205
157) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ. 15

कवयित्री कहती है –''प्रेम ने पीठ दिखाई तो दुःख का आधार खट्टा हो जाता है, जीवन जीने की शब्दातीत मद और उसे जकडी जानलेवा दर्द तुझे कभी दिखाई ही नहीं दिया तो इस जीवन का कौनसा भी भरत वाक्य का तू कभी भी उच्चारण मत कर यही अच्छा होगा ।''[159]

प्रेम जीवन जीने के पीछे की शक्ति है, यह भावना अनुराधा की कविता में दिखाई देती है।

कवयित्री की भावनात्मक कविता में प्रेमाभिव्यक्ति की अलग छटाओं के दर्शन होते हैं। प्रेमाभिव्यक्ति की अलगता मन में भर जाती है। चिर-विरह को भावपूर्ण शब्दों में रेखांकित करती है-

''दूर आता तू मी जळते अन्
शोधित राही स्वप्नातील घन
मी चिर-विरही, शापित आपण
आणि शाप ही उशापाविण''[160]

नियति के खेल को वह भूल जाना चाहती है। नियति के कारण ही ऐसा घटीत हुआ, ऐसा घटीत नहीं हुआ होता तो... इसप्रकार जब तक की भाषा को भुलकर जीवन के अच्छे दिनों की वह याद करती है। फिर उन्हीं दिनों को वह देखना चाहती है-

''त्या मोहरल्या दिवसा खातर
विसरु हे धगधगते वास्तव''[161]

उन दिनों में धधकते अग्नि को भूल जाने की शक्ति है, सामर्थ्य है। ये कुछ दिन जीवन के सपनें थे, कुछ मिनिटो में गायब हो गये, तो याद, स्मृति समाप्त नहीं होती-

''ओठ टेकते कणा कणावर
घडला होता स्पर्श तुझा
भाळ टेकते या वस्त्रावर

158) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ. 29
159) पोतदार अनुराधा - मंझदार, पृ. 44
160) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ. 29
161) वही, पृ. 28

खिळला होता गंध तुझा''[162]

'वाट तुझी पाहण्यात' कविता में बेफिक्र होकर कहती है-

''वाट तुझी पाहण्यात
साठवले सुख अपार
यावे तू ..... येऊ नये
मी न तुला सांगणार''[163]

केवल आत्मनिष्ठ स्वरूप की यह भावकविता अनुभूति की अलगता के कारण अमूर्त सृष्टि में रमनेवाली है।

कवयित्री अनुराधा पोतदार की कविता में चित्रित स्त्री दु:ख के कारण भडक उठती है, तो कभी कभी आर्द्र हो जाती है। क्योंकि वह किसी की तो माँ होती है। कवयित्री ने अपनी कविता में मातृप्रेम के विविध रंग भर दिए हैं। अपने बच्चे के लए माँ प्रेमरुपी छाया निर्माण करती है उसके मुठ्ठी में उसे जीवन के सब सुख प्राप्त होते हैं इसीलिए वह कहती है-

''होरपळत्या उन्हात
माझीच सावली
तुमच्या माथ्यावर धरुन
मी उभी राहिले''[164]

ये कोमल अंकुर ज्वालाग्नि में नष्ट न हो जाय इसलिए वह उन्हें हृदय में रखती है पालती है, पोसती है क्योंकि वे जीवन जीने के लिए प्रेरणा देते हैं।

'कॅक्टस फ्लॉवर' संग्रह की 'अजुनही सारं सोप होईल' कविता में माँ पूर्ववर्ती जीवन को याद करती है। बच्चों के लिए उन्होंने क्या कष्ट सहा यह अगर बच्चे सोचेंगे तो -

''अजूनही सारं सोप होईल''[165]

अब भी आसान हो जायेगा ऐसा उसे लगता है। 'आईपण' कविता में मातृप्रेम के संबंध मे कवयित्री कहती है-

---

162) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ. 44
163) वही, पृ. 28
164) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ. 44
165) पोतदार अनुराधा - कॅक्टस प्लॉवर, पृ. 12

''अंगागावरील त्वचेसारख्ये मला घट्ट
जख्डले होते
एकाच वेळी
मला सांभाळत होते, सावरत होते
आणि
न संपणाऱ्या अथांग वेदनेत लोटित होते
ते मला कधीच सोडणार नव्हते'' [166]

बच्चों के दुःख को देख्कर माँ तडप उठती है, माँ के दुःख को बच्चे भी समझ लेना चाहिए, ऐसी भावना माँ व्यक्त करती है।

माँ बेटी के बीच का सबंध बहुत कोमल और नजदीक का रहता है बेटी को बिदाई देते हुए थकी हुई माँ के मुख से शब्द निकलते हैं-

''जपून जा जपून रहा
कंठातच घुसमटलेलें बोलं''[167]

कवयित्री प्रकृति का सुंदर अंकन करती है। प्रकृति को उन्होंने अधिक कुशलता से, तन्मयता से निकट लायी है। शैशव, जवानी, बुढ़ापा आदि जीवन की अवस्थाओं का चित्रण कवयित्री प्रकृति के माध्यमसे करती है। जीवन में देख्े- भोगे हुए सारे सुख-दुःख बेहिचक प्रकृति के सामने कथन करती है। गहरे जीवनानुभूति से कवयित्री और प्रकृति में अद्वैत भावना निर्माण हो गई वह हमेशा के लिए।

जीवन में अनेक अच्छे-बुरे अनुभव आते हैं। इन अनुभवों को लेकर जीना पडता है। कभी-कभी न आरंभ, न अंत कुछ भी दिख्ाई नहीं देता। दिशाहीन होकर भटकना पडता है,पूरे जीवन का गणित गलत होने लगता है-

''सैरभैर लाटांनाही
झेपावता भेटे तीर
ख्ोल ख्ोल जळालाही
कधी वेढतो ना पुर
सोसवेना अता... सांगू

166) पोतदार अनुराधा - मंझधार पृ.22
167) पोतदार अनुराधा - मंझधार, पृ.31

काठोकाठ दाटे प्राण
चुकलेल्या वाटेलाही
सुंगधाची पटे खूण''[168]

अंतर्मुख होकर प्रकृति का खोज करनेवाली कवयित्री, प्रकृति के लुभावने दर्शन से अंतर्मुख हो जाती है। कवयित्री कहती है- ''किसी भी अनुभव विश्व का सृजनशील लेखन में अनुभव के जीवंत चित्र उभरकर सामने आते हैं। भावना, संवेदना, विचार और कल्पना ये अनुभव के चार अंग हैं। इससे अनुभव जीवंत हो जाते हैं, और उस स्पंदन का प्रत्यय पाठकों को आता है।''[169] कवयित्री का कथन है-

''प्रलयकाळच्या मेघासारखी ही काजळी छाया पसरते आहे सर्व दूर, सर्वदूर
विराट पक्षिणीसारख आभाळाचं छत झुकत आहे खाली... खाली...
धरतीचा अर्धमेला जीव दडपतो आहे
होउ घातलेल्या त्या अटळ ओझ्याखाली''[170]

तटस्थता, अकेलापन और कमाल की संयमता से कवयित्री अपना भावविश्व समृद्ध बनाती है। भावकाव्य में कवि के व्यक्तिगत व्यक्तित्त्व का प्रत्यय आता है यह व्यक्तित्व व्यक्ति के अनेक रूपों का दर्शन कराती है। यह जितना आत्मनिष्ठ होकर किया जाता है उतना ही उसमें समृद्धता, संपन्नता और जीवंतता प्राप्त होती है।

''सांज कलते अन् वा-याच्या पैंजण शेवग्याच्या पानापानातून रूणू झुणू लागतात
तेंव्हा न कळता आयुष्याला क्षमा करावीसी वाटते.''[171]

प्रकृति के रसरसित चेतना को कवयित्री शब्दों में पकडती है। अनेक अनुभवों को अक्षरों में बांधते समय कविता कवयित्री को साथ देती है। जीवन मार्ग में कविता का क्या महत्त्व उन्हें मिला इसे स्पष्ट करते हुए कवयित्री कहती है- ''दो-ढ़ाई दशक के इस प्रदीर्घ काल में, मन जीवन संघर्ष में गूँगा हो गया, कविता भी दूर चली गयी, यह दुःख मन में घर कर बैठ गयी और वही वेदना, दुःख कविता को फिर खींचकर बाहर लायी, जब-जब जीवन में संकट आ गये तब-तब कविता इन्सान से निकट की लगी। नियति के साथ संघर्ष करते समय स्वाभिमानी मन अपने इर्द-गिर्द एक दीवार निर्माण

168) पोतदार अनुराधा - आवर्त पृ.15
169) पोतदार अनुराधा (प्रस्तावना) कुसूमावती वाङमय दर्शन पृ.11
170) पोतदार अनुराधा - कॅक्टस फ्लॉवर, पृ.27
171 पोतदार अनुराधा - आवर्त पृ. 67

करती रही, उसमें से सिर्फ प्रवेश मिला कविता को। और इस बंदिस्त अंतर्मन का सही रास्ता कविता थी।''[172]

मन की बंदिस्त भावनाओं को बाहर लाने के लिए उन्होंने प्रकृति का सहारा लिया है-

''असे रातराणीने
खिडकीसी फुलू नये
गंधमत्त वादळात
एकटीला सोडू नये
.....
असे रातराणीने
जग सीधे फितवु नये
ढ़ासळता तोल तोल
अंगचोर निसटु नये''[173]

कविता कवयित्री के जीवन का एक अविभाज्य घटक बन गयी। प्रकृति ने उन्हें साथ दिया प्रकृति सौंदर्य के अनमोल धन को उन्होंने जीवनभर संभाला-

''आम्राच्या दाटीत हरवले आभाळाचे लोभस रुपडे
मुक्या व्यथेसम झाले जडशिळ वाऱ्यालाही पडे साकडे''[174]

सृष्टि के बीच कवयित्री की गूँगी व्यथा बोलने लगती है, जीवन के अनेक रंग बोलने लगते हैं। अनुभव को एक प्रकार की गहराई प्राप्त होती है-

''या शीतल चांदण्यात हलक्या फूल पिसासारख्री
अस्तित्वाच्या कणाकणातून रुतलेले वेदनेचे अंकुश
कधी कसे गळाले
ते ही आज समजलेच नाही.
.....
लख्ख दिसत आहे समोरचे नक्षत्र खचित आभाळ आज
मीच त्या आभाळातली चांदणी झाले आहे. ''[175]

---

172) पोतदार अनुराधा - सहकंप पृ.205
173) पोतदार अनुराधा - आवर्त पृ.13
174) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ.37
175) पोतदार अनुराधा - मंझधार, पृ. 7

इस प्रकार अनुराधा पोतदार की कविता जीवन के गहराई तक जाकर अंत:स्थल का खोज करती है। तीव्र आत्मनिष्ठा से उनकी कविता जन्म लेती है।

जीवन के इस अंध:कार रूपी यात्रा में कभी-कभी प्रकाश शलाका झलक उठती है। कवयित्री द्वंद्व में पड़ जाती है, विचार करने लगती है- अंध:कार रूपी चिरंतनता सही या पल भर का प्रकाश-

''आता घेतली झेप एकदा
वादळवेडया आवर्तातून
आता घेतला ठाव विलक्षण
गरगरणाऱ्या डोह तळातून''[176]

अंत में कवयित्री स्त्री को कोई भी, कभी भी मुक्त करता नहीं तो उसे स्वयं को ही मुक्त होना पडता है ऐसा कहती है-

''मुक्त करीत नाही कुणीच, कधीच
मुक्त व्हावं लागतं स्वत:लाच''[177]

इसप्रकार 'आवर्त' (1969) में भावगीत लिखनेवाली कवयित्री 'कॅक्टस फ्लॉवर' (1979) और 'मंझधार' (1989) में मुक्तछंद का अधिक प्रयोग करते हुए दिखायी देती है। काव्य के लिए स्वतंत्र रास्ता तैयार कर उन्होंने अपने भावानुभव व्यक्त किया है। उनके प्रारंभिक कविता पर इंदिरा संत, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, आदि के साथ माधव ज्युलियन, कुसुमाग्रज आदि के काव्य-शैली का प्रभाव दिखाई देता है। 'मंझधार' (1989) के अंत में 'कविता और मैं' पर विचार व्यक्त करते हुए वह कहती है- ''इंदिराबाई के भावगर्भ मिताक्षरी कविता से मेरे मन के जो रिश्ते जुड गये, वे हमेशा के लिए जुडे रहे मेरी कविता उनके ही कविता से प्रभावित और संस्कारित हुई, यह खुलकर बताना चाहिए।''[178]

अनुराधा पोतदार की कविता में अभिव्यक्त जीवन की विविध भाव-भावनाएँ अनेक माध्यम से प्रकट हुई हैं।

---

176) पोतदार अनुराधा - आवर्त, पृ.48
177) पोतदार अनुराधा - कॅक्टस फ्लॉवर, पृ.35
178) पोतदार अनुराधा - मंझधार, पृ. 108

7:1:30 सरिता पद्की :

कवयित्री सरिता पद्की की अगस्त 1975 में 'स्त्री' मासिक पत्रिका में 'सात दर्शने' शीर्षक से सात कविताएँ प्रकाशित हुए हैं। स्त्री के संघर्षमय जीवन का चित्रण कवयित्री ने यहाँ किया है-

''कालच ती बाळंतीण झाली
तिचं तान्हं बाळ,
तिच्या खोपटात आहे
चिध्यांत गुंडाळलेले
मांजरा कुत्र्यांनी त्याला खाऊ नये म्हणून
तिनं खोपटाच्या दारासाठी बांधलेल्या पोत्याला
चार बळकट दगड लावले आहेत
ते बाळही समंजस आहे
आई आपल्याच तोंडात चार थेंब दूधाचे पडावेत म्हणून
आणि संध्याकाळी तर्र होऊन
तिला बडवणाऱ्या आपल्या बापासाठी म्हणून
आपल्याला सोडून कामाला गेलीय
हे त्यालाही कळतंय
या त्याच्या शहाणपणाच्या जोरावरच तर
ती काम करते बंगल्यावर
ती
कालची बाळंतीण.''[179]

पेट की आग बुझाने के लिए, बच्चे को जन्म देने के बाद, पहले ही दिन स्त्री को काम पर जाना पडता है। यह विदारक चित्र है। पति का रोज शराब पीकर आना, उसका मार पीट सहना, फिर संसार की चिंता ये सभी समश्याएँ स्त्री के सामने हैं-

''हे काय आई, आज ही भात नाही?
तू रेशनला गेलीस तेंव्हा देखिल आम्ही रडलो नाही, मारामारी केली नाही

179) पद्की सरिता - सात दर्शने, स्त्री, अगस्त, पृ.19

शहाण्या सारख्ये वागलो
तरी ही भात नाही?
तेंव्हा मात्र कोसळलेलं असह्य रडं
गुडघ्यात डोकं खुपसून सुध्दा
तिला आवरता आलं नाही''[180]

समझदार बच्चे और असह्य माँ का चित्रण कवयित्री ने किया है।

कवयित्री सरिता पति प्रेम का सुंदर वर्णन करती है। कवयित्री का पति प्रेम ही कविता में प्रकट हुआ है। इस प्रेम में धूप-छाँव का खेल है, लेकिन पागलपन नहीं । पति के निश्चल प्रेम के कारण एक पल में मायके के बंधन को तोडनेवाली स्त्री का चित्रण 'हाक तुझी घुमली' कविता में की है-

''मी म्हटले होते की । तव एका सादाने
इथले तोडून पाश। धाविन तव रोधाने''[181]

'तू नसताना ही' कविता में पति-पत्नी के एकता को सूचित किया गया है। तरलता के कारण कवयित्री की कविता फलती-फुलती है-

''हे आकाशीचे दीर्घ निळे चुंबन
कान्ताशी वाऱ्याशी कुजबुज
ही आठवणींनी लावलेली वनराई
पायाशी लाघट रस्त्याची मनधरणी
तू नसातानाहि तूच भरुन राहशी
अन् बघता बघता मीच बने नाहीशी''[182]

कवयित्री सरिता पद्की के काव्य में चित्रित प्रकृति एक अलग ही रुप धारण करती है। अभिसारिका का रुप लेकर आनेवाली वर्षा, साँवली प्रभा आदि को प्रकृति का अलग परिमाण प्राप्त हुआ है-

''दाट घनाच्या अंबाड्यावर
माळून घ्यावे हार सरींचे
शिंपुन घ्यावे अंगावर

180) पद्की सरिता - सात दर्शने, स्त्री, अगस्त, पृ. 21
181) पद्की सरिता - चैत्रपुष्प, पृ. 6
182) पद्की सरिता - चैत्रपुष्प, पृ.45

ओले अत्तर
नेसून यावे वसंत लाडके
तलम श्याम तंद्रीचे
एकच प्यावा घोट विजेचा
अवचित यावे तुझ्या मंदिरी
अन रूजवावा तव ओंठावर
वर्षेचा उन्मत तराणा''[183]

प्रकृति के पार्श्वभूमि पर सरिता पद्की एक प्रेमानुभव चित्रित करती है। अनुभव बतानेवाली प्रेयसी अकेली है, करीब प्रिय सखा नहीं, प्रकृति के कण-कण में प्रिय सखा का आभास होता है, वह दिखाई देने लगता है। आकाश, पवन, वनराई आदि प्रियकर का याद कराते हैं। प्रकृति के सफेद दोपहर और नूर दिखाती है-

''भाद्रपदातील गोरी दुपार
सावरीत हिरवे लुगडे
जागोजागी चुरगळलेले
बसवित जागी
बाभुळ फुलांच्या कशिबाची चोळी
वाळवते आहे-
..... रतिकलांतून ..... झेपावून जाता
मनात कांहीसे लोतितून .... बेछूट ..... हिरवा।''[184]

कवयित्री इंदिरा संत को दोपहर कोमल पदकमलों में चलनेवाली स्त्री लगी तो सरिता पद्की को भादों की सफेद दोपहर हरी साड़ी पहनकर चलनेवाली रति लगी।

7:1:31 पद्मा लोकुर:-

कवयित्री पद्मा लोकुर का 'मनोरा' काव्यसंग्रह प्रकाशित हुआ है। कवयित्री पद्मा लोकुर की कविता बहुत ही व्यक्तिगत स्वरूप की है। कविता में वह अपने आपको बोल रही है ऐसा लगता है, इस दृष्टि से 'भातुकली', 'बर्फ गारव्याचा', 'राया संतापताना' आदि कविता मन ही मन स्पर्श कर जाती है-

183) पद्की सरिता - चैत्र पुष्प , पृ. 42

184) पद्की सरिता - चैत्र पुष्प , पृ. 48

''कुठे बीलोरी भिंगरी
किती शोधते सारखी
आता माझ्याच भोवती
चाले माझीच गिरकी''[185]

इस प्रकार स्वयं में ही व्यस्त है यह कविता।

7:1:32 अंजली ठकार:-

कवयित्री अंजली ठकार की 'तुलसीदल' काव्य-संग्रह में 1954 से 1970 ई. तक सत्रह वर्षों की कविता समाविष्ठ हुई है। उनकें कविताओं का विशेष उल्लेख हुआ नहीं। प्रकृति के प्रांगण में विचरण करनेवाला स्त्री मन उनकी कविता में अभिव्यक्त हुआ है। अंजलीबाई के कविता पर तांबे, इंदिरा संत, विंदा. करंदिकर, पाडगांवकर आदि के कविता का प्रभाव महसूस होता है।

'अभंग', काव्यप्रकार का प्रारंभ प्रथम मराठी संतो ने किया और अपने महत्त्वपूर्ण रचनाओं से उसे सुप्रतिष्ठित किया। आधुनिक कवयित्रियों में 'अभंग' रचना का प्रयोग करने का प्रयत्न कवयित्री अंजली ठकार ने किया, लेकिन उसमें उच्च स्तर का अभाव महसूस होता है-

''निर्मिलेस आता। पोसणे आलेच
सोसणे आलेच। सारे कांही।।''[186]

अथवा

''सुख्रासाठी साऱ्या। देहाची आरास
जिण्याची मिरास। सोडवेना''[187]

कवयित्री अंजली ठकार की अभंग रचना के संदर्भ में आलोचक कहते हैं- ''आशय का सामान्यत्व अभंग की स्पष्ट विशेषता है। अभंग की अभिव्यक्ति एक काव्यप्रकार के रूप में सहज साध्य और आसान रहती है। रचना का आकर्षण और नवीनता उसमें सहजसाध्य रहती है। आशय सामान्य रहा तो काव्य पढ़ने से हम पद्य

185) पदमा लोकुर - मनोरा, पृ.3
186) ठकार अंजली - तुलसीदल, पृ. 63
187) वही, पृ. 43

पढ़ रहे हैं यह समझने के लिए अधिक समय नहीं लगता, 'तुलसीदल' के अनाकर्षणकत्त्व का यह भी एक कारण है।''[188]

कवयित्री अंजली ठकार की कविता में चित्रीत प्रेमानुभव 'तेरा-मेरा' के दायरें में घुम-फिरकर उसमें से बाहर पडनेवाली है। प्रकृति के सहवास में फुलनेवाला और झुरनेवाला मन उसमें से दिखायी देती है। प्रेम में स्वयं भी दुर्बलता के साथ प्रियकर के मजबूत शक्ति की अनुभूति उनकी कविता देती है। 'सांज' के रूप में आनेवाले प्रियकर का राह देखनेवाली लीन मनस्वीनी उनकी कविता में दिखायी देती है। उनकी कविता की प्रिया प्रांजल है। इसलिए दम घुटी हुई भावना पाठकों को हाय-हाय सी लगती है।

''मेघ मौनाचा झरेना
घट तृप्तीचा भरेना
ओठ चातकी तहान
चोंच वासली मिटेना''[189]

कवयित्री अंजली ठकार की कविता में लज्जामय प्रेम के भावावस्था का चित्रण प्रकृति के माध्यम से व्यक्त की गयी है।

''खुळया लाघवी दवात
प्रीत उमले कळीची
अन् थबकावी शोधित रवीला
अशीच संध्या बावरलेली ''[190]

इसप्रकार कवियित्री अंजली ठकार 'गीत', 'अभंग', जैसे काव्यप्रकारों का प्रयोग किया है। अपनी कविता को परिणामकारक बनाने के लिए उन्होंने 'रे', 'अरे', 'बापा', 'बाबा', 'गडे', आदि शब्दों का बार बार साहाय्यता ली है-

''बाबा नभा माझी
हरवली राम
एक वेडीपिशी''[191]

188) आलोचना - जनवरी 1973, पृ.14
189) ठकार अंजली - तुलसीदल, पृ.16
190) वही, पृ. 24
191) ठकार अंजली - तुलसीदल, पृ.52

अंजली ठकार के 'तुलसीदल' में कुछ विशिष्ट शब्दों के प्रयोग दिखाई देते हैं। आशय समृद्ध बनाने के लिए ही उन्होंने इनका प्रयोग किया है ऐसा लगता नहीं-

''त्या घरातील ते विराटपण अन् ती हासरी आसवे;
रे अंधार पिसाट तू ढवळिला; मी वेचले काजवे''[192]

'तुलसीदल' की कविताओं को प्रकृतिगत कथन स्तर प्राप्त हुआ है। प्रेमाकुल मन से इस कथन की अभिव्यक्ति हुई है। 'तुलसीदल' में प्रिय का मन स्त्री मन है। यह स्त्रीमन भाव व्याकुल दिखायी देती है। 'तुलसीदल' की कविता एक ही बार कथ्य और संवाद दोंनो को छुती है।

7:1:33 सुशील पगारिया:-

सुशील पगारिया के 'मनवृंदावन' (1970), 'केसर'(1977), और 'दिपकळया' (1993) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कविता में दर्द सहनेवाली सहनशील स्त्री व्यक्त हुई है। आकार की दृष्टि से उनकी कविता छोटी हो तो भी बहुत गहन अर्थ व्यक्त करनेवाली है। 'दु:ख' कविता में कवयित्री कहती है-

''डायरी मिळाली
पेन मिळालं
आणि
आत ओतायचं
दु:ख ही।''[193]

अल्पाक्षरमणियता यह सुशील पगारिया के कविता की विशेषता है। भावना, कलात्मकता और प्रामाणिकता का त्रिवेणी संगम उनकी कविता में हुई है। उनकी कविता से संवेदनशील और अंतर्मुख कवि मन अभिव्यक्त हुआ है। सुशीला के काव्य में चित्रित स्त्री सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है, समर्पण उसका गुण है। इसलिए स्त्री मुक्ति के काल में न्याय दिलाने की शक्ति उसमें होते हुए भी विध्वंस के मार्ग पर न जाकर वह पीछे हटना चाहती है।

'मनवृंदावन'(1870) में चित्रित विवाहिता सफल प्रेमानुभव और पतिस्पर्श से रोमांचित हो उठी है । अपने संसार में वह रम गई है। भावुक साथी को धीर देनेवाली

192) ठकार अंजली - तुलसीदल, पृ.53
193) पगारिया सुशील - दीपकळ्या, पृ. 68

यह स्त्री उसे भविष्य के धोखे की भी सूचना देती है। 'केसर' काव्य संग्रह की प्रेयसी कहती है-

''माझी चोंच इवली सान
कांही थेंबाचीच तर तहान
अरे एवढे देऊ नको
दानात वाहून नेऊ नको''[194]

'आठी-गाठी' कविता की स्त्री दुःख से दबी हुई है। जिस प्रकार बालों को साफ कर लट निकाला जाता है, उसी प्रकार मन के लटों को निकालने आता तो कितना अच्छा होता ऐसा वह कहती है। सुशील पगारिया की कविता प्रमुख रूप से मुक्त छन्दात्मक है।

''माझा पिंजरा सोन्या रूप्याचा
ठेवा लाभला माझ्या भाग्याचा
कारागिरीने असा घडीला
हिऱ्यामोत्याने त्याला जडीला
तार तारेत असे कुसर
कोर कटयार धार विखार
तन ताऱ्यात मन वाऱ्यात
कोर कटयारी रूते उरात''[195]

स्त्री गीत के लकीरपर चलनेवाली यह कविता और उसमें अभिव्यक्त होनेवाला स्त्रीमन उत्कृष्ट पद्धति से चित्रित हुई है। सुशील पगारिया की कविता में चित्रित वेदना के संबंध में गंगाधर पानतावणे कहते हैं- ''दुःख की प्रवृति शास्वत है, दुःख मानव मन का सहज अविष्कार हो तो भी, वही उस मानव का न्यूनत्व है। उसका वाङमयीन अविष्कार बहुत बार संकुचित तथा मिथ्या रहने की संभावना है, इसलिए दुःख में डूबी कविता अनेक बार कच्ची कविता सिद्ध होती है, वह प्रामाणिक होती है, फिर भी वह कविता नहीं रहती, सुशील की दुःखार्त कविता तो संवेद्य, संयमित, प्राजंल और बातूनी है, वह दुःख का नक्षीकाम करती नहीं, तो उसमे सहज वाणी प्रकट होती है।''[196]

194) पगारिया सुशील - केसर, पृ. 16
195) पगारिया सुशील - मनवृंदावन, पृ. 10
196) पानतावणे गंगाधर - अस्मितादर्श, पृ.36

सुशील पगारिया 'सीता', 'द्रौपदी' आदि मिथक और पर्वत पर स्थित 'हरा अंकुर' 'नीलापन' आदि प्रतीकों को लेकर अपनी भावनाएँ व्यक्त की है। 'सीता', 'द्रौपदी' आदि पौराणिक मिथकों में से स्त्री जीवन का दुःख व्यक्त हुआ है-

''शिणली भागली जानकी माई
कुशीत धरतिच्या विसावा घेई
.....
पाच पतींची द्रौपदी राणी
मोकळया केसानं हिंडली रानी''[197]

सीता, द्रौपदी जैसी नारियों को समाज पतिव्रता समझकर देवत्त्व प्रदान करता है लेकिन वे भी हाड़-मांस की ही थी, इसलिए उन्होंने भोगा हुआ दुःख, यातना समझ लेना आवश्यक है। एक स्त्री होने के नाते दूसरे स्त्री का दुःख जानने का प्रयत्न सुशील पगारिया ने किया है। सुशील पगारिया के कविता के संबंध में गंगाधर पानतावणे कहते हैं- ''जीवन को नकारात्मक मानकर आकडों में अटकनेवाली बहुत कुछ कविताएँ आज लिखी जाने लगी है। तंत्र धिक्कार कर नये तंत्र के अवलंब का सफल प्रयत्न भी हो रहा है। परंपरा तोड कर क्रांति करने का आवेशयुक्त प्रवृत्ति भी दिखाई दे रही है। इसलिए जीवन न मानने वाले और आत्मप्रतारण करनेवाले कविता से कवयित्री सुशील पगारिया की कविता अलग है। वह जीवन का अनुभव लेकर जीवन में स्थित विविध प्रवृत्तियों का अनुसंधान करती है।''[198]

सुशील पगारिया की कविता सहज, सुंदर, सरल और स्पष्ट है। वह पाठकों के मन को छूनेवाली है। उसमें व्यवहारसूचकता है। कविता में व्यक्त भावनाएँ प्रामाणिक हैं। उनकी कविता में स्त्री जीवन के सुख-दुःख का अंकन है।

7:1:34 शिरीष पै :

आधुनिक मराठी काव्यक्षेत्र में अनेक कवयित्रियों ने अपने अनुभवों को शब्दरुप देकर, एक स्वतंत्र अस्तित्व निमार्ण कर मराठी कविता का दायरा समृध्द बनाने का यशस्वी प्रयोग किया है। जीवंत भावानुभूति के गहरे रंग चित्रित कर समाज के सामने रखा है। जीवन के सुख-दुःखों कों शब्दरुप देकर दबी भावनाओं को रास्ता दिखाने का काम कवयित्रियों ने किया है इनमें शिरीष पै का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

197) पानतावणे गंगाधर - अस्मितादर्श, पृ.54
198) पानतावणे गंगाधर - अस्मितादर्श, पृ. 35

कवयित्री 'शिरीष पै' के सात कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'कस्तुरी' (1959), 'आईची गाणी' (1963), 'एकतारी' (1965), 'एका पावसाळयात' (1969), 'विराग' (1982), 'गायवाट' (1985), 'हायकू' (1986) आदि।

कवयित्री ने अपनी कविता में प्रेम, संसार, गृहचित्रण, प्रकृति आदि का सुंदर चित्रण किया है। कवयित्री प्रेम की बड्डपन का वर्णन करते हुए कहती है-

''खरोखरच मोठा आहेस तू माझ्यापेक्षा कितीतरी
मी सुध्दा लहान नाही (तुझ्याहून असले तरी)
पण आपल्याहून मोठे आहे आपले प्रेम
आपण निमित्त मात्र''[199]

अमिट माधुर्य का वर्णन, प्रेमवर्षा से भीगे शब्द, प्रियकर के प्रेम पर विश्वास व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है-

''ठेवली आहे मान अशा खांद्यावर निर्धास्त
जिथून होत नसतो विश्वाचा कडेलोट
ठेवले आहे मस्तक अशा बुलंद छातीवर
जिच्यात गर्जत असतात नित्य वादळे
केवळ माझ्यास्तव''[200]

कवयित्री के सशक्त अनुभूति के कारण शब्दों को जीवंतता प्राप्त हुई है।

भारतीय संस्कृति में संस्कार को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। गृहिणी घर का काम करते-करते बच्चों पर संस्कार करती है। घर के वातावरण को प्रसन्न रखने के लिए किस बात की आवश्यकता है, यह भी वह अपने बच्चों को सीखाती है। संस्कार के संबंध में हमारी जो कल्पना है, बच्चों को उपदेश किस प्रकार दिया जाता है इसका चित्रण शिरीष पै की कविता में चित्रित माँ अपने बच्चों से कहती है-

''नका रे बाळांनो करुं किरकिर
तिन्हीं सांज ढळताना
घरी दिवा लावताना
नका रे बाळानों वाजवूं कडीला

199) पै शिरीष - एका पावसाळ्यात, पृ.12

200) पै शिरीष - एका पावसाळ्यात, पृ.16

उंबऱ्यात खोळबूंन

रात्र काळी पडताना.''[201]

दिन के तीसरे प्रहर में घर में दिया लगाया जाता है और कहा जाता है कि इसी समय घर में लक्ष्मी आती है, घर का वातावरण प्रसन्न रखना चाहिए यही कवयित्री को ध्वनित करना है।

कवयित्री शिरीष पै बेटी के सुख में अपना सुख ढूँढ़ने वाली माँ का सुंदर अंकन किया है। प्यारी बेटी के पत्र को देखकर वह स्वयं को धन्य समझने लगती है, मानो चेतना के फूल खिले हैं ऐसा उसे लगता है-

''तुझ्या डोळयात पहाट

चिंब नहाते दवात

तुझ्या चैतन्याला फूल आले

फूल तेजाचे फुलून

धन्य जाहलीस आज

पांग ब्रम्हाचे फेडून''[202]

कवयित्री शिरीष पै को बालजीवन से ही प्रकृति में रुचि रही है। प्रकृति को देखकर कवयित्री तल्लीन हो जाती है-

''सुटे थंडगार वारा

पाने किंचित हालती

डोळे भेटताना ओठ

तुझे हळूच हालती

.....

चंद्र थबकला पाणथळीवर

तृषार्त भिजवत ओठ जळाला

कोण कुणाला पीत राहिले

चंद्र जळाला की जळ चंद्राला?''[203]

---

201) पै शिरीष- कस्तुरी, पृ.51

202) पै शिरीष- कस्तुरी, पृ.34

203) पै शिरीष- गायवाट, पृ.10,11,12

प्रकृति की याद में कवयित्री की कलम रम जाती है। अनेक कविताओं में प्रकृति का सुंदर अंकन हुआ है। कुछ में चिंतन और दर्शनिकता प्रकट हुई है, इन्सान के इन्सानियत को आवाहन किया गया है और एक आदर्श समाज निर्माण की अपेक्षा व्यक्त की गयी है-

''आता उशीर झाला
काळोख दाटलेला
अंधार भोवतीचा
माझ्या घरात आला
.....
कोठून वादळाचा
आला पाहा इशारा
उध्वस्त या ठिकाणी,
येईल ते कशाला''[204]

कवयित्री के नस-नस में प्रकृति समा गई है। अपना सुख-दुःख उन्होंने प्रकृति के सामने प्रकट की है। पागल के तरह बरसनेवाला बारिश, शरद कालीन चाँदनी, ग्रीष्म का तपन, बसंत का वैभव, शिशिर का पर्णहीन वृक्ष आदि को कवयित्री ने अंतःकरण में भर रखा है। अपने मन के भावतरंग को मूर्त रूप देने के लिए कवयित्री प्रकृति का आश्रय लेती है-

''मी गात गात आले
मी पावसात न्हाले
हया धूंद वादळाच्या
स्वाधीन आज झाले
.....
पाऊस हा सरेना
की काळ रात्र आली
निथळून वाहताना
थकले मुळीच नाही''[205]

---

204) पै शिरीष - गायवाट, पृ. 23, 24
205) पै शिरीष - गायवाट, पृ.30,

कवयित्री शिरीष पै का अधिक मात्रा में लेखन हुआ है। अनेकविध जीवनानुभव उन्होंने साकार किया है। 'हायकू' जपानी काव्यप्रकार का अनुसंधान कर, चिंतन कर उसे मराठी साहित्य में ले आयी। यह प्रेरणा उन्हें प्रकृति प्रेम और अध्यात्म शांति से प्राप्त हुआ है। पारिवारिक स्वास्थ बिघाडने के कारण कवयित्री प्रकृति के माध्यम से आध्यात्मिकता की ओर मुड गयी। आचार्य रजनीश,पाँडिचेरी की माताजी, योगी अरंविद आदि के आध्यात्मिक दृष्टि के साथ साथ कवयित्री 'हायकू' काव्य रचना के प्रति आकर्षित हो गयी। ''मैं'' का अंहकार नष्ट होने के बाद अपार शांति मिलती है। 'हायकू' का वह पल, अपार दृश्य समाधान देती है। यह अनुभव अन्होंने 'हायकू' में विषद किया है-

''कळी फुटली एखादीच
तर झाडावर पाखरं आलीच
एक झुळूक एका क्षणात, सगळया पानात''[206]

प्रकृति में मानव दिखता है। बालजीवन में मन में बैठी प्रकृति प्रौढ़ावस्था में 'हायकू' के रूप में अंतरंग में कविता के माध्यम से प्रकट हुई है। 'एका पावसाळयात' कविता में कवयित्री प्रकृति का सुंदर अंकन करती है-

''या प्रसन्न प्रफुलित प्रभातसमयी ....
परमेश्वराची पवित्र सकाळ उगवताना
येशील का माझ्यासह समुद्रावर
ही सकाळ ..... हा समुद्र ..... हा किनारा .... हा एकांत
हे प्रभातमय ..... समुद्रमय समुद्रपक्षी ..... असंख्य .... असंख्य
तू ही बघशील ..... तू ही बघशील केंव्हातरी
माझ्यासह माझ्याच डोळयांनी
पण येईल का होता आपल्याला समुद्रमय.....''[207]

'किसान', 'मजदूर' काम करनेवाले सामान्य लोगों की दीनता का चित्रण भी कवयित्री ने किया है-

---

206) पै शिरीष - गायवाट, पृ. 31

207) पै शिरीष - एका पावसाळ्यात, पृ. 31

''ही बाळाला मारीत सुटली
हाणित बुक्के आणिक लाथा
शब्द अमंगळ तशीच वदते
म्हणाल तुम्ही ही का माता;
कळवळते ते बाळ तिचे नच
तो कण्हतो आणि विव्हळतो
गुदमरेल तिचाच आत्मा''[208]

प्राप्त परिस्थिति में नियति के सामने एक असहय माता कुछ कर नहीं सकती। इस पूँजीपति समाज में उसके समस्या का हल नहीं होता, किसी तरह जीवन जीना पडता है। भगवान ने जन्म दिया है इसलिए जीना पडता है। रास्ते के किनारे, धूल-मिट्टी में झूठा अन्न खाकर जीवन बिताया जाता है। कवयित्री के सामने प्रश्न है-

''मेल्यावर ही जातात कुठे?
स्वर्गात?
कि नरकात?''[209]

शरीर पर रोंगटे खडे होनेवाले विचार कवयित्री की कविता में चत्रित हुई है। सामान्य लोगों के प्रति कवयित्री के मन में दया की भावना है।

7:1:35 हिरा बनसोडे :

स्त्री जीवन का विविधांगी चित्रण हिरा बनसोडे 'पौर्णिमा' (1970), 'फिर्याद' (1984) में किया है। 'पौर्णिमा' में प्रेम की हलकी भावना अभिव्यक्त हुई है। जीवन जीते समय भावना से वास्तवता बहुत अलग है, इसका अनुभव उन्हें हुआ है। इसीलिए 'फिर्याद' काव्यसंग्रह के प्रस्तावना में वह कहती है- ''भावविवश होकर रोनेवाली स्त्री को अब बदलना चाहिए। नये अनुभव लेकर आनेवाली स्त्री के स्वागत के लिए वह उत्सुक है। स्त्री का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रहना चाहिए। स्वतंत्र रूप में अपने विचार व्यक्त करने आना चाहिए। चेतनता से युक्त जीवंत मानव का जन्म उसे आवश्यक है। स्वयं की अस्मिता से सजी हुअी, गुलामी झिडकारनेवाली स्त्री को रेखांकित करने का प्रयत्न मैंने इन कविताओं में किया है।''[210]

---

208) पै शिरीष - कस्तुरी, पृ. 4, 5
209) पै शिरीष - कस्तुरी, पृ. 6
210) बनसोडे हिरा - फिर्याद, पृ. प्रस्तावना

हिरा बनसोडे की कविता आम तौर पर सामाजिक अधिक है और प्रेमानुभव भी उतनीही तीव्रता से प्रकट हुई है। उनकी कविता में चित्रित प्रेमानुभव इसप्रकार है-

''प्यासी, अधीर रात्र
कमलकळीतला सुंगधी प्रणय
तृप्त अतृप्त बावऱ्या क्षणांनी
हरवलेलं विश्व, समर्पित तू मी ''[211]

इस सफल प्रेम के साथ विफलता का दु:ख भी उनकी कविता में दिखाई देती है। उसमें से कवयित्री का आकुल मन प्रकट हुआ है-

''अचानक कसे आले क्रुर हिमवादळ?
भिजून गेले त्यात स्वप्न महाल
पारख्या झालेल्या विरही मिठया
धुमसताहेत कोवळे आसक्त जीव''[212]

उन्होंने अपने भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रमुख रुप से मुक्तछंद में की है। उनकी कविता पुरुषप्रधान, विषमता प्रधान संस्कृति के खिलाफ की क्रांति है, सामाज पर किया हुआ तीख्रा चोट है-

''अपमानाची भीक झोळीत टाकणाऱ्या
त्या अभद्र भूतकाळाला
या पेटलेल्या वर्तमानाचा सुरुंग लावा
जळून जाऊ द्या ही शतकांचे दास्यत्व पत्करणारी
लाचार आगतिक मने
इथल्या प्रत्येक प्रकाश किरणाला
आंधाराचाच शाप आहे.''[213]

दलित स्त्री साहित्य के क्षेत्र में गूंगी थी। इस अपवाद को हिरा बनसोडे ने झूटा साबित किया है। स्त्री वेदना को उन्होंने समाज के सामने सही रुप में रख्रा है। जीवन जीते समय आए हुए दर्दभरे अनुभव उन्होंने अपनी कविता में चित्रित की है।

---

211) बनसोडे हिरा - फिर्याद, पृ. 18
212) बनसोडे हिरा - फिर्याद,, पृ.17
213) वही, पृ.30

प्राचीन काल से दलितों पर जो अन्याय अत्याचार हो रहे हैं, इसके खिलाफ क्रांति कर उठनेवाले विचार कवयित्री के हैं। दलित स्त्री दलित पुरुष से अधिक शोषित है। स्त्री और दतिल स्त्री के रूप में होनेवाला शोषण हिरा बनसोडे की किविता में चित्रित हुई है। ''तुम्हारा उद्धार तुम्हें ही करना है'' ये बाबासाहेब के विचारों को पुरस्कृत करनेवाली कविता हिरा की है।

'फिर्याद' में कवयित्री स्त्री जीवन के दु:ख को चित्रित करना चाहती है। स्त्री के शारीरिक दुर्बलता का फायदा उठाकर उसके उपर अन्याय -अत्याचार किया जाता है, शीलभ्रष्ट किया जाता है, पुरुष के राक्षसी प्रवृत्ति के सामने बलि जानेवाली स्त्री का चित्र कवयित्री ने खींचा है-

''आमची इज्जत लुटली जात आहे
जातीयतेच्या धर्मांध व्यासपीठावर
आमचं शील जळत आहे
धर्मग्रंथाच्या पानापानावर''[214]

हिरा बनसोडे स्वयं एक दलित स्त्री होने के कारण स्त्री पर होनेवाले अत्याचार के खिलाफ केवल स्त्री जाति के दु:ख के रूप में वह देखती नहीं तो जातियता के रंग भी वहाँ अपरिहार्य रुप में दिखाई देती है। ये दु:ख नष्ट करने के लिए बाहू में बल होना चाहिए ऐसी उसकी इच्छा है। इस संबध में अंजली सोमण कहती है- ''इतिहास बदलने के लिए बलशाली हात चाहिए कवयित्री के ये विचार स्त्री विश्व में भडक उठी हुयी चिन्गारी का प्रतिनिधित्व है।''[215] 'गुलाम' कविता में स्त्री जीवन का दु:ख और उपेक्षितता का दु:ख चित्रित हुआ है-

''जिथे फुलांच्या वस्त्यांवर
वणवे लावले जातात
नि स्वामित्वाचे उत्सव
आनंदाने साजरे होतात
पण तिथल्या करुण कहाण्या दु:खाने उद्गारतात
स्त्री जन्म एक जुलूम आहे।''[216]

---

214) बनसोडे हिरा - फिर्याद, पृ. 28
215) सोमण अंजली - बारहवी मराठी कविता परिचय, पृ. 70
216) बनसोडे हिरा - फिर्याद, पृ. 19

जन्म से अस्पृश होने के कारण कवयित्री को उपेक्षितता का दुःख सहना पडा।

कवयित्री हिरा बनसोडे स्त्री जीवन का दुःख व्यक्त करने के लिए सीता, आहिल्या, शबरी, द्रौपदी यशोधरा आदि मिथकों का प्रयोग किया है-

''तो गेला, तो जिंकला, तो प्रकाशला
त्याच्या यशोगाथा ऐकताना
तुझे स्त्रीत्व हंबरत असेल
पति नि पुत्र हरवलेली तू
उन्मळली होतीस केळीसारखी
पण इतिहासाने सांगितलेली नाही
तुझ्या त्यागाची महान कथा''[217]

कवयित्री यशोधरा के माध्यम से समस्त स्त्री जीवन का दुःख व्यक्त करने का प्रयत्न किया है। कवयित्री की भाषा-शैली में विद्रोह है। स्त्री का दुःख उसका केंद्र है। स्त्रीत्व के अपमान का चिरंतन दुःख उन्होंने प्रखरता से समाज के सामने रखा है। उनकी भाषा पद्य से गद्य के समीप की लगती है, शैली वक्तृत्त्व पूर्ण और तीखी है।

7:1:36 सुशीला मराठे :

कवयित्री सुशीला मराठे की 'मम सुखाची ठेव'(1969), 'सती सावित्री' (1972), 'स्त्री धन' (1975) आदि काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। कवयित्री सुशीला मराठे का 'मम सुखाची ठेव' यह एक वैशिष्टयपूर्ण काव्य है। इसमें उन्होंने बालगंधर्व की गाथा पिरोया है। निन्यानवे पन्ने के काव्य में बालगंधर्व ने जिन चौदह नाटकों में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभायी थी इसका लेखा-जोखा इसमें चित्रित है।

आरंभ में बालगंधर्व की रूप और व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए कवियित्री कहती है-

'नारिरुप पाहुनि तयाचे नतमस्तक अप्सरा
इंद्रपुरीचे देवही करिती 'नमन' अशा नटवरा
त्या नटसम्राट त्रिवार करुनी मुजरा
उलगडुनि दाविते जीवन जरिपट सारा
ऐकुनि समग्रहि गंधर्वाची गाथा

---

217) बनसोडे हिरा - फिर्याद, पृ.6

गुणवंता पुढति विनम्र होईल माथा।'[218]

इस स्तवन के बाद बालगंधर्व के चरित्र का थोडे में कथन किया है। बालगंधर्व के स्वभाव का वर्णन करते हुए कवयित्री कहती है- उनका स्वभाव शांत, सरल, सात्विक वृत्ति का था। संगीत का ज्ञान बाल जीवन में ही पिता से प्राप्त हुई। लोकमान्य तिलक उन्हें 'बालगंधर्व' पद दिया। उन्हें अध्ययन में विशेष रूचि नहीं थी। बालगंधर्व प्रथम किर्लोस्कर मंडली में प्रवेश कर 'शकुंतला' की भूमिका निभायी शकुंतला के रूप में बालगंधर्व का अभिनय देखकर रसिक जनता पागल हो गयी। उसके बाद कृष्णाजी प्रभाकर खाडीलकर ने बालगंधर्व के लिए 'मानापमान' नाटक की रचना की। उसमें उन्होंने मानिनी के स्वभाव की उत्तम छटा अभिव्यक्त किया-

''स्त्री भूमिका कराव्या नारायणराव राजहंसानी
लकबी, मुरके, चालहि हंसगति लाजणें, मृदुजनानी
त्यानांच ते शोभे, त्यांच्यासाठीच नाटके असती,
म्हणती सारे ऐसे, अभिमाने रसिक हेच वदताती''[219]

किर्लोस्कर नाटय मंडली में अनुभव प्राप्त कर बालगंधर्व ने स्वयं की नाटयमंडली निकाली। कृष्णाजी प्रभाकर खाडीलकर का साथ उन्हें था ही। गोंविदराव टेंबे गणपतराव बोड़स ये नट साथ में थे। इस नाट्य कंपनी को उन्होंने 'गंधर्व नाटक मंड़ली' का नाम दिया। 'मूक नायक' नाटक का प्रथम प्रयोग उन्होंने किया। इस नाटक मंड़ली में बडे नाटयकर्ता, उत्तम गायक, वादक और नटों का सुरेख मेल हुआ। किर्लोस्कर - देवल नाटक लिख रहे थे ही। नाटय मंड़ल का वैभव दैदिप्यमान था। इन सभी वैभवशाली वातावरण का प्रत्ययकारी वर्णन करने के बाद बालगंधर्व ने नाटकों में महत्त्वपूर्ण स्त्री भूमिका किस प्रकार चित्रित करने में सफल हो गये इस का कथन कवयित्री ने किया है।

बालगंधर्व का सावित्री की भूमिका में धैर्य, निष्ठा और प्रीति इन गुणो का संगम दिखाई देता है। रुक्मिणी का श्रृंगार, शकुंतला की तन्मयता आदि साकार हो उठी है। गड़करी के सिंधु का मूर्तिमंत तारुण्य आँखों के सामने खड़ा किया है। 'शारदा' में अभिनय की सहजता है। 'नाही मी बोलत' यह 'मानापमान' का गीत प्रेक्षकों को खुष

218) मराठे सुशीला - मम सुखाची ठेव, पृ. 6
219) मराठे सुशीला - मम सुखाची ठेव,, पृ. 15

करता है।

स्वयंवर यानी -

''साक्षात रुक्मिणी रंगमंचकी अमोल दर्शन घडले;''[220]

पहले के कलाहीन नाटकों को देखकर पाठक उब गए थे । बालगंधर्व के आगमन से रंगमंच का मानो एक नया दालान खुल गया। उन्होंने नाटक को, संगीत को नया आयाम दिया। वेश-केश भूषा में परिवर्तन हुआ। यह सबकुछ परिवर्तन देखकर पाठक खुश होता था।

रंगमंच पर सफर होकर बालगंधर्व शरीर से थक गये लेकिन मन से नहीं। अंत में चित्र नगरी में उनका प्रवेश हुआ लेकिन उसमें उन्हें जीवंतता का अनुभव नहीं आया। आगे आगे आवज में भी फर्क पडा 'गळयावीना मी गंधर्व कसा' कहकर जीवन जीना उन्हें अच्छा नहीं लगा वे विकलांग हो गये-

''राजहंस जणू कर्दमिं रुतला खाईना चारा
कंठातचि का ताना रुतल्या? दुःख येतसे धरा''[221]

ऐसी उनकी अवस्था हो गयी। जीवन के अंतिम सोपान में उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से गौरवान्वित किया गया। 'पद्भूषण' से भी गौरवान्वित किया गया, जीवन सार्थक हुआ। रंगमंच के क्षेत्र में इतिहास निर्माण किया। बालगंधर्व चले गये लेकिन उनका स्वर छोड गये। 'पूना में बालगंधर्व रंगमंदिर' उनका चिरंतन स्मारिका है। वास्तव जीवन में दुःख बहुत था लेकिन उन्होंने दुनिया को आनंद दिया। उनका यह काल 'सोने पे सुहागा' था। ऐसा दूसरा कलाकार होना असंभव है-

''म्हणे विधाता मेनके, तुझ्या सारखीच मूर्ती
नाही घडविणे शक्य मला कधीही जगती''[222]

बालगंधर्व के जीवन का पूरा यश इस दोहे में है।

कवयित्री ने काफी सुंदर ढ़ंग से उपमा अलंकार का प्रयोग कर जीवन का सुंदर चित्र समाज के सामने रखा है।

---

220) मराठे सुशीला - मम सुखाची ठेव, पृ. 41
221) मराठे सुशीला - मम सुखाची ठेव, पृ. 65
222) मराठे सुशीला - मम सुखाची ठेव, पृ. 91

7:1:37 सुहासिनी इर्लेकर :

भावोत्कट और प्रभावपूर्ण कविता लिखनेवाली मध्ययुगीन मराठी संत कवयित्रियों की अध्ययनकर्त्री सुहासिनी इर्लेकर के 'तृप्ती'(1961), 'चित्रांगण' (1972), 'अक्षर' (1984) आदि काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुकी है।

कवयित्री सुहासिनी इर्लेकर 'यौवन', 'पुस खुणा', 'प्रीती', 'तुझ्यात मी वितळावे', 'बेहोश', 'तुझ्या माझ्या अबोल्यात' आदि कविता में प्रेम के विविध छटाओं का सुंदर अंकन किया है। प्रेम के आरंभ से लेकर अंतिम सफलता तक के विविध अनुभूति के चित्र यहाँ दिखाई देते हैं। हृदयमंदिर में प्रेम को छुपाकर रखा गया है, प्रेम बताने की बात नहीं रहती-

''कशास उभवू भाव- पिसारा
प्रीत कधी ही शमेल का''[223]

प्रणयाराधना की अपेक्षा यहाँ गौण है। प्रेम के कोमल छटा का वर्णन 'तुझ्या-माझ्या अबोल्यात' कविता में मंत्रमुग्ध रूप से चित्रित हुई है-

'तुझा माझा अबोलाच
हवा हवासा रे मला;
मूक अनुराग तुझा
त्याचा भारी छंद मला' [224]

कवयित्री की प्रेमानुभव प्रकट करने की पद्धति सहज है यह समझ मे आता है। इंदिरा संत की कविता में चित्रित प्रेमानुभव की तहर सुहासिनी की कविता में चित्रित प्रेमानुभव प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। प्रकृति के संपर्क से प्रेम के अनेक रूप उन्होंने अभिव्यक्त किया है। उनकी कविता में चित्रित विरह परिकथा में चित्रित विरह के समान है। विरह की भावना तीव्र शोक नहीं करती और उग्र रूप में भी व्यक्त नहीं होती। उनके प्रेयसी का मन प्रियकर के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहता है। प्रियकर में ही समाविष्ट होने की इच्छा रखनेवाली प्रेयसी, गलत मुखौटा धारण कर दुःख छिपाने का प्रयत्न करनेवाली प्रेयसी, दुःख से आकुल होकर जीवनरुपी गति और मृत्युरुपी मुक्ति को इन्कार करनेवाली प्रेयसी, 'मंचक प्रभूचा रिता का?' कविता में

---

223) इर्लेकर सुहासिनी - तृप्ति, पृ. 34

224) सुहासिनी इर्लेकर - तप्ति, पृ. 77

व्यक्त हुई है-

''धुंडु किती तुज कुंजातूनि रे?
किती किती प्रियकरा विनवू रें?
दमयंतीसम मी व्याकुळ रे?
नयनातूनि झरती सरिता का?
मंचक प्रभुचा आज रिता का?''[225]

सुहासिनी की कविता संग्रह में सफल प्रेम से असफल प्रेम अधिक अभिव्यक्त हुई है। क्रोध से प्रेम दूर हो जाता है। इसी संदर्भ की प्रेम भावना - 'तुझ्या माझ्या आबोल्यात' कविता में व्यक्त हुई है-

''तुझ्या माझ्या अबोल्यात
ओढ़ हवी मिलनाची
परी गडे मिलनात
हौस हवी कलहाची''[226]

प्रेम की एक आदर्श दुनिया निमार्ण करने के लिए उनकी कविता सिद्धहस्त है। उनकी कविता में चित्रित प्रियकर मटमैले आकाश की तरह लगता है।

मायका सभी के लिए मानो स्वर्ग होता है, सुख का एक झरना यहाँ बहते रहता है। भारतीय संस्कृति उत्सवप्रिय है, नागपंचीम, वट पौर्णिमा, हादगा आदि तीज-त्यौहारों में बेटी माँ के पास आती है, काफी दिन के बाद मिलने से माँ बेटी में ममता का बाढ़ आता है। इस वास्तविकता का चित्र कवयित्री इसप्रकार खींचती है-

''फार दिवसांनी आली। लेक माझी नवसाची।
नका धाडू ग पाण्यास। अशी उन्हाची तान्हाची।''[227]

माँ का बेटी के प्रति का प्यार और संवेदना कवियित्री ने सहज प्रकट किया है।

'तीट जरा लावू दे', 'फार दिवासांनी आली' आदि कविता में से मातृप्रेम प्रकट हुआ है। 'तीट जरा लावू दे' कविता में किलकारी मारकर दौडनेवाले नटखट बच्चे को नजर न लगे इसलिए तिलक लगाना चाहती है, तो 'फार दिवसानी आली' कविता में ससुराल में थककर आयी हुअी बेटी पर प्यार बरसानेवाली माँ कहती है-

---

225) सुहासिनी इर्लेकर - तप्ति, पृ. 79
226) सुहासिनी इर्लेकर - तप्ति , पृ. 77
227) सुहासिनी इर्लेकर- तप्ति, पृ. 61

''फार दिवसांनी आली
आली घेऊनी शिसार
भातावर तुपाची ग
वाढ जरा मोठी धार''[228]

बेटी ससुराल जानेवाली है इसलिए दु:खी माँ कहती है -

''फार दिवसानी आली
डोळा - डोळयासी लागेना
उद्या जायची सासरी
पाणी डोळयाचं खळेना''[229]

कवयित्री अपनी कविता में वास्तव और पारिवारिक अनुभव चित्रित करने में सफल हुअी है।

7:1:38 निर्मला देशपांडे :

कवयित्री निर्मला देशपांडे की प्रेम कविता एखाद सुंदर कल्पना पर आधारित रहती है। इस कल्पना चमत्कृति के माध्यम से ही विशिष्ट कविता की परिणामकारकता बढ़ते जाती है। 'छबी' में इसका प्रत्यय आता है।

''मज न्याहळता तुझी
छबी गोरी मोरी झाली
जशी भिंतीवरतून
उन्हं उतरली खाली''[230]

प्रेम के उन्मादक क्षण, कभी विरह के कारण उत्पन्न कोमल व्यथा, तो कभी अकेलेपन की कल्पना से कंपित मन, ऐसे ही कुछ क्षणों की मनोवस्था के दर्शन कवयित्री की कविता में दिखाई देती है। 'गंधखुळी' में प्रकृतिका सुंदर अंकन करते हुए कहती है-

''चिर क्षुधा शांतिस्तव
गोड तुझी स्मृती उरे
कमळाच्या कोशातला

228) सुहासिनी इर्लेकर - तप्ति, पृ. 61
229) वही, पृ. 71
230) देशपांडे निर्मला - गंधखुळी, पृ. 30

एक मधुकण पुरे''[231]

प्रेम के तृप्ति का अनुभव यहाँ व्यक्त हो रहा है।

सौंदर्यासक्ति कवयित्री निर्मला देशपांडे की काव्यात्मक प्रकृति का हिस्सा है। रस, रूप और सौरभ में वह पागल हो जाती है। प्रकृति का एक अलग झलक वह दिखाती है।

''मऊ तलमसी साडी
इंद्रधनुष्याची ल्यावी
शुभ्र चोळीसाठी पिसे
राजहंसाची मागावी ''[232]

प्राकृतिक सौंदर्य जब साकार हो उठती है तब अधिक भावसंपन्न बनती है।

कवयित्री को बेटी की चिंत्ता है, 'शिव शिंप्या चोळी', कविता में बेटी जब ससुराल जाती है, उस समय बेटी के लिए क्या-क्या करना पडता है, इसका सूक्ष्म चित्रण करती है। बेटी ससुराल जानेवाली है वह दर्जी को समय पर और अच्छी चोली सीकर देने के लिए कहती है, क्योंकि ससुराल जानेवाली लडकी को कुछ कम नहीं पडना चाहिए यही कवयित्री का उद्देश है। कवयित्री वास्तविक चित्र खींचते हुए कहती है-

''शिव शिंप्या चोळी किती घालू येरझारा
सासरला जाते लाडकी यशोधरा
शिव शिंप्या चोळी मोती लाव पसाभर
लाडक्या लेकीसाठी चोळी जाते दर्यापार ''[233]

चोली मे मोती लगाकर बेटी के सुख में ही अपना सुख देखने वाली माँ यहाँ दिखाई देती है।

7:1:39 हेमा लेले :

कवयित्री हेमा लेले 'दुसरं आकाश' (1979), 'अंतरंग' (1789) और 'प्रिय' (1991) कविता संग्रह में अपनी प्रेम भावना व्यक्त की है। इस काव्य संग्रहों में उनका उत्कृष्ट आत्मशोध का खोज दिखाई देता है। स्त्री-पुरुष के प्रेमनाटय का विश्लेषण इसमें

231) देशपांडे निर्मला - गंधखुळी, पृ. 36
232) वही, पृ. 36
233) देशपांडे निर्मला - गंधखुळी, पृ. 12

उन्होंने किया है।

'प्रिय' (1991) कवितासंग्रह में 47 कविताओं की कवितामाला मुख्य रूप से प्रिय पति को उद्देश में रखकर लिखी गयी है। पति के साथ चलनेवाली संवाद का सामंजस्य स्तर यहाँ दिखता है। 'इंद न मम' इस पुराणोक्त वचन का 'यह मेरा नहीं' यह अर्थ है। परंतु इसमें से 'न' निकालकर 'इंद मम' अर्थात 'यह मेरा' इस तरह की रचना की गयी है-

''म्हणूनच प्रिय, आपल्या इवल्याशा जगात रोज
उगवतो नवा सूर्य अन् रोजच असतो नवा शुभारंभ
रोज एकमेकांच्या हाताला हात लावून आपण म्हणतो
इंद मम, इंद मम, इंद मम''[234]

उनकी कविता में चित्रित प्रेयसी पियकर के प्रेम में नहाकर निकलती है, तो कभी अपना प्रेम प्रियकर के संकेतों पर नाचनेवाला नहीं ऐसा भी बताती है। सफल प्रेम की भावना उनकी कविता में इसप्रकार अभिव्यक्त होती है-

''जाण्यायेण्यावर तुझ्या, श्वास माझे विसंबती
घेतल्याची जाण मला, तुझे सारेच सहजी
झंझावत येतो तुझा, भरतोस सर्वांगानी
कशी सावरु मी वस्त्रे मनामधल्या देहाची''[235]

प्रेम में अपना सर्वस्व अर्पित करनेवाली प्रेयसी को जब समझ में आता है कि अपने प्रेम की कीमत उसे नहीं तो वह -

''तुझ्याबरोबर घेण्यासाठी
हा एक श्वास मी रोखून ठेवला होता
पण तूला ते आठवत नाही
माझ्या आठवणी मधले वसंत
सहजासहजी पुन्हा येत नाहीत''[236]

इन शब्दों में अपने विचार स्पष्ट व्यक्त करती है। हेमा लेले की कविता में चित्रित प्रेयसी प्रेमांध नहीं ऐसा दिखाती है। स्त्री पुरुष एक दूसरे को सिर्फ आनंद ही

234) लेले हेमा - प्रिय, पृ. 29
235) लेले हेमा - दुसरं आकाश, पृ. 29
236) लेले हेमा- अंतरंग, पृ. 30

नहीं दे सकते तो स्वतंत्रता भी देना आवश्यक है ऐसा उन्हें लगता है। अपनी प्रेमभावना की अभिव्यक्ति उन्होंने छन्दोंबद्ध और मुक्त छंद दोनों में किया है।

''बरसून तृप्त घनसा गेलास तू निघून
गाणे मनात माझ्या अधूरे तुझे अजून''[237]

प्रेम का उपभोग लेकर भी अतृप्त कविमन यहाँ व्यक्त हुआ है-

''बाहेरच्या दिवाळीशी , तसा असतोच कुठे संबंध
कारण मनातचं असतं सदापण त्याचं जळतं झाडं
जी आकाशाची तीच मनाची जात''[238]

प्रेम की विफलता, दुःखी बना मन यहाँ व्यक्त हुआ है। प्रेम के ऐसे विविध भाव कवयित्री ने अभिव्यक्त किया है। हेमा लेले प्रमुख रूप से उत्कृष्ट प्रेम कविताएँ लिखती है। उसमें से उनका आत्मशोध प्रकट हुआ है।

7:1:40 मलिका अमर शेख

कवयित्री मलिका अमर शेख की 'वाळूचा प्रियकर', 'महानगर', देहऋतु आदि काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चूके हैं।

स्त्री शरीर के अनुभव तीखे और स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करनेवाली कवियित्री मलिका को स्त्री देह यही मूल में स्त्री वेदना का जड लगता है। 'वाळूचा प्रियकर' कविता संग्रह में महानगरीय झोपडी का जीवन, दरिद्रावस्था, वेश्या व्यवसाय आदि का घिनौना चित्र देखने को मिलती है। स्त्रीत्व के नये अनुभव सश्यक्त रूप से मलिका की कविता में अभिव्यक्त हो उठी है, सुशील पगारिया रजनी परूळेकर की कविता की तरह मलिका की कविता में स्त्री को पुरूष अधिक दुःख देनेवाला दिखायी देती है। असफल प्रेमानुभव उनकी कविता में अधिक स्पष्ट व्यक्त हुई है। काफी देर तक प्रियकर की प्रतिक्षा करते रहना उसे पसंद नहीं प्रिय के याद से भडक उठी स्त्री उनकी कविता में दिखायी देती है। फुलरूपी वाटिका की अपेक्षा करनेवाली विरहिणी के भाग्य में काँटे देखकर वह निराश होती है। मलिका की कविता में समझौता करनेवाली और बार-बार के समझौते से दुःखी स्त्री दिखती है। पिछले प्रेम को भूलना भी संभव नहीं इसलिए उसके मन की अवस्था ऐसी हो जाती है-

'' हातात सुई-दोरा आहे म्हणून

237) लेले हेमा- अंतरंग, पृ. 22
238) लेले हेमा - दुसरा आकाश, पृ. 31

सगळं कायमच शिवून टाकता येतं थोडचं?

मी स्व:तला उसवू लागले

तर तेही जमेना''[239]

मलिका के कविता की स्त्री विद्रोही है। अन्याय के खिलाफ वह भडक उठती है। स्त्री शरीर और स्त्री जीवन के संबंध में स्पष्ट शब्दो में लिखनेवाली मलिका अमर शेख वेश्या जीवन के संबंध में अपनी कविता में जोशपूर्ण विचार व्यक्त की है। कवयित्री के अनुसार भारत में वेश्या संस्कृति यह प्राचीन संस्कृति है। यही संस्कृति आज फुटपाथ के बाजू में जीवन जी रही है। अभी जिनकी अवस्था कली की है, उन्हें शरीर बेचना पड़ता है-

''हजार रात्रींच्या अश्वत्थामी जखमा

निर्विकारपणे भोगाव्या

'नॅचरल प्रोसेस' असणाऱ्या अटल चार दिवसांत ही

'नॅचरल संभोग करावा''[240]

रजस्वला अवस्था में भी शरीर विक्रय न थमना इससे बढ़कर और क्या दु:ख है। गीता साने वेश्या व्यवसाय के संबंध में कहती है- "बलात्कार के तरह वेश्या और वेश्यासंस्था केवल मानव को ही मिला हुआ एक अभिशाप है।''[241]

मलिका की कविता में ऐसी ही शापित वेश्या दिखाई देती है। वेश्याओं के दर्द को हाथ ड़ालने का काम यहाँ कवयित्री ने किया है। 'मांडीवर' कविता में कवयित्री ने वेश्या जीवन पर प्रकाश ड़ाला है। पुरुषों की वासना के आगे बलि चढनेवाली वेश्या का दु:खमय जीवन पीड़ा के साथ कवयित्री ने चित्रित किया है।

स्त्री को बलि देनेवाले पुरुषसत्ता को समाप्त करने का आवेश कवयित्री व्यक्त करती है-

''अखेर प्रत्येकाच्या आयुष्यात

एक नाका येतो अपरिहार्यपणे

तो फोरास रोड असतो

खायकुयली सारखं तुमचं आयुष्य खाजवत असतो

---

239) शेख मलिका अमर - वाळूचा प्रियकर, पृ. 69

240) शेख मलिका अमर - वाळूचा प्रियकर , पृ. 11

241) साने गीता - भारतीय स्त्री जीवन, पृ. 163

खिजवत असतो

हसत असतो

..... रजस्वला

संभोग

बाळंतपण

शरीराभोवती फिरलेलं आयुष्यासकट माणसाचं चक्र

मुक्या वेंदनांचे वेटोळं

झोपताना माझ्या चौथऱ्याची आठवण ठेवाल का?

सुर्यतीर्थाच्या आकाशपक्षांनो''[242]

मलिका की कविता संघर्ष की कविता है। समाज में स्थित भ्रष्ट जीवन को देखकर वह आवाज उठाती है। जीवन के आह्वान को स्वीकार ने की ताकत उनकी कविता में है।

मलिका की कविता में चित्रित स्त्री विषयक अनुभव स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आज मूल्यों की होली हो रही है, ये सब देखकर कवयित्री के मन में तुफान उठता है।

''आमच्या आयुष्याच्या नाक्या नाक्यावर वासूगिरी

करणारे तुमचे लंपट शब्द

आमच्या सगळया आयुष्याला फोरासरोड करणारी

तुमची चवचाल नाव्यांची रास

.... सिग्रेट फुंकल्यासारखी तुम्ही बोलता

मानवतेच्या मूल्यांवर

हरीण डोळयांनी बघत असलेलं आमचं आयुष्य

किती दिवस करायची साठमारी

अशी स्वतःच्याच रक्ताची

... मला हे पाहयचं नाहीय

आणि मला हे संपवाचंय सगळं''[243]

---

242) शेख मलिका अमर - वाळूचा प्रियकर, पृ. 12,13

243) शेख मलिका अमर - वाळूचा प्रियकर,पृ. 55

इस परिस्थिति को मिटाना ही चाहिए ऐसा वह 'योध्दा' कविता में निर्धार करती है-

''आता तहाचं पांढर निशाण घेऊन
घोडा माघारी फिरवणं सुध्दा शक्य नाही
पुढे जायला हवं
.....
पूर्ण विराम नसलेला पराभव
विषासारखा भिन्नू लागलाय अंगांगात
पण जोवर लगाम हातात आहे
घोडा दौडतोय पुढे
तोपर्यंत लढण भाग आहे
सुर्यास्ताची वाट न पाहता''[244]

मलिका की कविता में व्यक्त विचार केवल स्त्री मुक्ति से संबंधित न होकर मानव मुक्ति की है। 'महानगर' कविता संग्रह में कवयित्री 'महानगर' को परिभाषा में बांधते हुए महानगर की वास्तव परिस्थिति समाज के सामने रखती है। अध मरे इन्सान, विष पीकर थका हुआ आकाश, पैरतले की खिसकी जमीन, उँचे महल, यंत्र, नंगे स्त्री-पुरुष इन्सान को खानेवाले इन्सान इससे बढ़कर और क्या है?-

''थोडया उंच इमारती
थोडया उघडया बायका
थोडेसे नागडे पुरुष
थोडीसी पोटांची एकाकी बेटं
थोडीसी यंत्र माणसांना खाणारा
महानगर म्हणजे अजून काय असतं?''[245]

महानगर में स्थित भूक की समश्या पर प्रकाश डालते हुए कवयित्री कहती है-

''कित्येक वर्षापासून या शहरातले लोक झोपले नाहीयतं
रात्र झाली की माणसाचं रुपांतर होत
वेगवेगळया भुकेत

244) शेख मलिका अमर - वाळूचा प्रियकर, पृ. 23

245) शेख मलिका अमर - महानगर, पृ. 6

आणि एक भूक खाऊन टाकते दुसऱ्या भुकेला
मोहाच्या झाडावर लटकणारी असंख्य माणसं
रात्र झाली की उडू लागतात
आंधळया शरीराच्या दिशेने
आतडयांच्या अरण्यात
आपण हरवत आलो नेहमीच
एक शुभ्र गरम भाकर सुध्दा
मात करते आपल्यावर
शहरावर दिवसा राज्य करतात रोबो
न रात्री बायका
न तरीही एखाद दुसऱ्या कवीलाच फक्त संशय येतोय
आमच्या जगण्याचा''[246]

कवयित्री को लगता है कि हम इन्सान के रूप में कभी पके ही नहीं, इसलिए स्वंय को खाने के लायक नहीं। 'देहरुतु' (1999) कवयित्री का एक सश्यक्त कविता संग्रह है। कवयित्री 'स्वातंत्र्य हे अजून कुठल्यातरी साखळीच नावं' कविता में स्त्री जीवन के विविध अनुभव व्यक्त करते हुए कहती है-

''बायका शरीर स्वच्छ करतात
कोंबडी सोलावी भर्रकन तसं
कपडे धुतात घर साफ करतात स्वेटर विणतात
खूप काय काही बाही करत राहतात
स्वातंत्र्याच्या आरशात कांहीच दिसत नाही
स्त्रीत्व जे खाऊन टाकतं स्त्रीला हळूहळू चवीनं
ज्याला हरकत घेत नाही कुठलीच स्त्री''[247]

आधुनिक मराठी की एक सश्यक्त विद्रोही कवयित्री के रूप में मालिका सामने आती है। उसने जीवन के वास्तविक समस्याओं को अपनी कविता का कथ्य बनाया है।

246) शेख मलिका अमर - महानगर, पृ. 38
247) शेख मलिका अमर - देहऋतू , पृ. 42

7:1:41 पद्मिनी बिनीवाले :

कवयित्री पद्मिनी बिनीवाले की 'मिडास' (1980) काव्यसंग्रह में 1964 से 1978 ई. तक करीब पंद्रह सालों के जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं। इन कविताओं में प्रमुख रूप से सफल प्रेमानुभव चित्रित हुई है।

इस काव्यसंग्रह का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है। 'मिडास' ग्रीक पुराणकथा में चित्रित सुवर्ण प्रेमी राजा है। 'मिडास' किसी वस्तु को स्पर्श करता है तो वस्तु सोने में परिवर्तित हो जाती है। 'मिडास' कवयित्री के लिए वह दाहक गर्मी का प्रतीक है। पद्मिनी की कविता में सफल और असफल प्रेम के दर्शन होते हैं।

प्रेयसी को अपने जाल में फँसानेवाला प्रियकर, प्रेम के विविध रंग के डर प्रेयसी के मन से निकालनेवाला प्रियकर, पेमरुपी खेल खेलकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर मन में आते ही निकल जानेवाला प्रियकर दिखाई देता है। यह जानलेवा खेल वह क्यों खेलता है, यही उसके समझमें नहीं आता। 'वेदनेचे झाल', 'तरीही', 'तुझ्या सूर्यप्रकाशी स्पर्शाने' आदि कविता में स्वार्थि प्रियकर दिखता है, प्रेयसी मात्र भोली है। उसके प्रेम कविता पढ़ते समय अंजिठा के गूफा में स्थित शिल्प ही कवयित्री है ऐसा लगता है, लेकिन यह प्रेम चिर काल तक टिकता नहीं। अपने जीवन से उसके जाने से वह दु:खी हो जाती है उसकी प्रतिक्रियाएँ बदलती है-

''झाडाला आहे आता हे माहित झालेल
पिंजऱ्यात मरुन पक्ष्यासारखे
फुलणाऱ्या फुलातच आहे
आपले मरण लपलेले
ते फुलायलाही भिते''[248]

स्त्री जीवन के सफल और असफल अनुभव अनेक कविता में उन्होंने अभिव्यक्त किया है-

''वाचलेल पान परत परत उघडले जावे
तशा पुन्हा: पुन्हा: डोळ्यापुढे उभ्या राहतात
तुझ्या अनंत आठवणी
आयुष्यातला एकेक दिवस

248) पदमिनी बिनीवाले - मिडास, पृ. 42

त्यांना देता देता
काल प्रवाहातून तरंगून येते वर
पतझड झालेल्या सुंदर वास्तुंचे
एक उध्वस्त नगर''[249]

प्रेम विफलता से तड़पनेवाला मन व्यक्त हुआ है।

कवयित्री पद्मिनी की कविता स्वयं की एक अलग अनुभव सृष्टि लेकर आती है-

''तू जवळ असून असा दूरस्थ
तुझ्या माझ्यात पसरलेले हे सात समुद्र
ते ही गोठलेले
त्या पलिकडे पसरलेली
मुक्या डोंगरांची रांगच रांग
त्यापुढं सळसळतंय
आठवणींचे घनगर्द रान
ज्यातलं आहे ओळखीच पाननं् पानं !''[250]

अथवा

माझ्या पाठीच्या कण्यात
तूच लावला आहेस
एक वेदनेच झाड
सतत कण्हणारा
एक निष्पर्ण वृक्ष! [251]

'प्रिय' के मिलन से दूर आजीवन दर्द से कराहनेवाली प्रेयसी निष्पर्ण वृक्ष के रूप में दिखाई देती है।

7:1:42 कल्याणी इनामदार :

कवयित्री कल्याणी इनामदार शब्द, रस, रूप, सौरभ में मस्त होकर विचरण करते -करते अतित को घेरनेवाली मनस्विनी है। शब्दों में मिटनेवाली, स्वर से चिंतन में समानेवाली अंतर्मुख होकर मन के गहराई तक पहुँचनेवाली कवयित्री है।

---

249) पदमिनी बिनीवाले - मिडास, पृ. 57

250) पदमिनी बिनीवाले - मिडास, पृ. 65

251) वही, पृ. 42

कल्याणी इनामदार कहानी, उपन्यास, कविता और चिंतन के माध्यम से स्वयं के व्यक्तित्व को खोजनेवाली कवयित्री है। कवयित्री की प्रवृति सुख में, दु:ख में रिश्ता जोडनेवाली है।

''माझी लाट लाटेवर आदळत पुढेच जाते
कधी तळाशी कधी तमाशी जोडीत नाते''[252]

कवयित्री की कविता नये नये क्षितीज पर फलती है, फुलती है, संध्यागीत गाने लगती है-

''सुन्न होऊन सांजावत
तेंव्हा खिन्न मनानं
कुठे जातात हे सगळे पक्षी
केवळ आभाळाला ठेवून साक्ष?''[253]

कल्याणी की कविता में प्रकृति एक समर्थ पुरूष है। प्रकृति के अमूर्त शब्दों का उन्मेष झंकृत हो उठा है, वैभवशाली परतत्वस्पर्श की भावना कवयित्री की कविता में दिखाई देती है। यहाँ जीवन के रिस्ते जोड़े जाते हैं, तोड़े नहीं जाते-

''गंध विरेल, पाकळी गळेल पण एक व्रण मागे ठेवेल
तुझ्या स्पर्शाची जखम तेवढी वाहत असेल''[254]

बहनेवाली जख्मों में से अनेक महाकाव्यों का जन्म हुआ है। क्रौंच पक्षी के जख्म से आदिअक्षर काव्य का जन्म हुआ। ये जख्म होते हैं अस्मिता के इसी में एक परिवर्तनकारी ताकद होती है, यही ताकद कल्याणी की कविता में है।

मौन का विश्व प्राशन करनेवाली यह कवयित्री शब्दों के हात छोड देना चाहती है लेकिन इस मौन में विष प्राशन करने की शक्ति है। अनंत अकेलापन इसी मौन में प्रकट हुआ है।

''रात्र काळोख्र काजळी
सूर सागरी उठेल
धुंद बेहोशीचा वारा
नको आळवू रागिणी

---

252) इनामदार कल्याणी - सुर्यगंधा, पृ. 4
253) इनामदार कल्याणी - सुर्यगंधा, पृ. 84
254) वही, पृ. 72

राम चांदणी होईल

मस्त मनाचे तारवे

माझ्या किनारी सुटेल''[255]

अकेलापन का मौन और उस मौन में से शब्दों का नर्तन नये झरने का जन्म, प्रकृति के विविध रंगो का अविष्कार कल्याणी की कविता में हुई है।

''क्षितीजाची ओथंबावा एक ढ़ग

निळा जांभळा गर्द, सुरंग

पाण्यात ही उठावे

एक वलय एक तरंग

वाऱ्यांनी ही घ्यावी तान

होऊन दंग

सांज सावळी

तशीच न्हावी

कृष्ण काजळी

नको पसारा, लाख तारका

शुक्र चांदणी झुलावी

आठवणींचा ताटवा नको

एकच मोगरा फुलावा

माझे मीपण हरवून जावे

असा गंध उरावा.''[256]

कवयित्री ऐसा सौरभ प्राप्त करना चाहती हैं जहाँ अंह का अस्तित्व न हो।

7:1:43 सुलभा हेर्लेकर :

'नितळाई', 'पहाट पक्षी', 'तृप्ती' काव्य संग्रह की लेखिका कवयित्री सुलभा हेर्लेकर अपने विशेष गुण, विषेशताओं के कारण आधुनिक मराठी काव्य क्षेत्र में उभरकर सामने आयी है। जीवन के अनेक अनुभवों को शब्दों मे सजीव बनाकर साकार किया है। समाज में रहकर भी अकेलापन, अस्वस्थता, उदासी देखकर कवयित्री

255) इनामदार कल्याणी - सुर्यगंधा, पृ. 25

256) इनामदार कल्याणी - सुर्यगंधा, पृ. 44

का मन निराश हो जाता है। एक तरल भावना प्रधान और संवेदनशील मन की पुकार पहाटपक्षी में सुनाई देती है।

कवयित्री के करिब-करिब सभी कविताएँ आत्ममग्न और स्वयं के साथ संवाद करनेवाली है। प्रेम उनका स्थायीभाव है। प्रेम मानव जीवन को संपन्न बनाती है, उसी प्रकार जीवन उध्वस्त भी करती है । अनुभवों को कभी बांधकर रखा नहीं जा सकता। अनेक भावतरंग प्रकट होते रहती है-

''मावळत्या सुर्याची संगपेरणी नाही
नी समुद्रलहरींचे तांडवही नाही
फुलांच्या झडी कशा सोडून गेल्यात दिशांना
देवदार वृक्षांनो, झडीच्या विलापात
आठवतोय या श्रावणातला राधा-राग [257]

जीवन के अनेक अनुभवों को साकारते समय कवयित्री को प्रकृति समीप की लगी। अपने सुख-दुःख खुले मन से कवयित्री प्रकति को कहने लगी -

''आता थोडयाच वेळात''
सुर्यफुले मावळतील
या म्लान झालेल्या सुर्यकिरणांना घेवून
डोळयातील मेघ सावरत
आषाढ घनांची नितांत वाट पाहणारी मी''[258]

सृष्टि में मन रम जाता है, लेकिन मन में किसी का तो चित्र साकार हो उठता है। अंदर ही अंदर वह किसी से तो रिश्ते जोडती है। ओठों पर प्रेम, मन में एक प्रकार की आँधी के कारण मन उदास हो उठता है। पास कोई नहीं, श्याम के समय का पश्चिम क्षितीज भी अलग दिखाई देता है। यादें सताने लगती है। उसे किसी का सहारा आवश्यक लगता है- ''काळया डोगरांशी भिडलेले रंग संधेची शांत पिवळी छाया त्या उमलणारी तुझी आठवण''[259]

257) हेर्लेकर सुलभा- पहाटपक्षी, पृ. 50
258) हेर्लेकर सुलभा- पहाटपक्षी, पृ.20
259) वही, पृ. 64

'संध्या', 'दिवस असावा', 'सौदामिनी', 'पायवाट' आदि कविता में सूक्ष्म प्रकृति-चित्रण से सौंदर्य वृद्धि हुई है -

"वसुंधरा ही नव्हेच ही तर राधा भोळी
जलक्रीडेस्तव नुक्ती या यमुनेत उतरली
कंदबावरी वस्त्र ठेविले पिवळे पिवळे
बघता बघता बालरवीने कुठे दडविले
बघत रहावे" [260]

प्रकृति-चित्रण का निमित्त कर कवयित्री चेतना का आरोप करती है।

7:1:44 अनुराधा पाटील :

निष्ठा और आत्मविश्वास से काव्यलेखन कर काव्य क्षेत्र में अपना स्थान निर्माण करनेवाली कवयित्री अनुराधा पाटील की 'दिंगत' (1981) 'तरीही' (1985) 'दिवसेंदिवस'(1992) आदि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुकी है। भाव कविता से लेकर दीर्घकविता तक प्रौढ़, सामंजस्य और चिंतनशील, विविध प्रकारोंको अपनाते हुए कविता के क्षेत्र में नया रास्ता निर्माण कर आशय समृद्ध बनाया है । उनके 'दिंगत' संग्रह पर ग्रेस जैसे कवि का प्रभाव दिखाई देता है-

"सांध्र संध्यासमयी तमाम वाजे अंधार बनाची गाज
लाट लाट दाटते उतरे दिठीवर व्याकूळ सांज" [261]

अथवा

"डोळयात सांद्र माझ्या अजून रक्तातले शहारे
का मौन जाणिवांचे पुसले पुन्हा इशारे " [262]

'दिंगत' में 'मैं' का 'तू' से संवाद है। उसमें से रिश्तों के बीच के संबंधो का खोज कवयित्री ने लिया है। उसके बिना उसका अस्तित्व पूरा होता नहीं। मुक्तछंद में कवयित्री ने यह भावना प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रीत की है।

"साऱ्या जन्मांची आण घालून तू चेतवलेली स्वप्नांची चंद्रज्योत
अजून देहात तेवत आहे

---

260) हेर्लेकर सुलभा- पहाटपक्षी, पृ. 35
261) पाटील अनुराधा- दिगंत, पृ. 69
262) पाटील अनुराधा- दिगंत, पृ. 73

तुझ्या पावलांवर रेखताना

नवीन उजळत जाईल दिशा, सूर सूर दिंगत ''[263]

कवयित्री अनुराधा की कविता मे सफल और असफल प्रेम का भावविश्व साकार हुआ है। असफल प्रेम के कारण आनेवाले अकेलेपन का दुःख उनकी कविता में दिखता है। प्रियकर का आतुरता से राह देखनेवाली प्रेयसी प्रियकर के शब्द पर विश्वास रखकर जीवन जीनेवाली स्त्री इन कविताओं मे दिखायी देती है। बार बार निराश होनेवाले मन को वह समझाती है -

''कधीतरी केंव्हातरी माझ्यातली मी

सांगते मला नको ठोठावूस ती

न उघडणारी बंद दारे ''[264]

समझदारपूर्वक अपना प्यार भुलनेवाली स्त्री यहाँ दिखायी है। 'तू नसतानाही' कविता में प्रेयसी अपने मन को समझाती है -

'तू नसतानाही'

तूझी आठवण यावी

दिवस तर असे अमानुष

प्रदीर्घ होते कधीपासून

पण सोसणार नाही आता

तुझं अवचित भेटणंसुद्धा
की एक दंतकथा आहेस तू आज

माझ्या मनात''[265]

'दिगंत' में जितनी तीव्रता से प्रेमानुभव अभिव्यक्त हुई है उतनी तीव्रता 'दिंवसेंदिवस'में दिखायी देती है। कवयित्री प्रेम की व्याकुलता व्यक्त करने के लिए उर्दू शेर शायरी का भी प्रयोग करती है।

''मला आठवत राहते

एखादी व्याकुळ प्रेयसी

आवो आखरी घाव

---

263) पाटील अनुराधा- दिगंत, पृ.37

264) वही, पृ. 35

265) पाटील अनुराधा- दिवसेंदिवस, पृ.69

तुम्हारा सही म्हणणारी ''[266]

कवयित्री अनुराधा पाटील के काव्यलेखन में आशय के साथ प्रयोगशीलता भी दिखायी देती है। उनके दिंगत (1981) संग्रह के सबंध में फ. मु. शिंदे कहते हैं- ''पहले ही संग्रह मे स्वयं का अलग रंग, रुप लेकर आना बहुत कम कलाकारों को संभव हो पाया है। अनुराधा पाटील उनमें से एक है। जिन्होंने पहले ही झलक में अपना अस्तित्व प्रस्थापित कर रखा, ऐसे कलाकारों का संग्रह निकलना अध्ययन कर्ताओं के लिए सुविधाजनक लगता है। कलाकारों के अस्तित्व का प्रश्न नहीं रहता। दिंगत प्रगल्भ अहसास का साक्षी है, ऐसा कहना होगा। यह प्रगल्भता, अनुभव, संवेदना और जीवन का मुक्त चिंतन इसमें से आते रहता है।''[267]

कवयित्री अनुराधा पाटील 'तरीही'(1995) और 'दिवसेंदिवस'(1992) कवितासंग्रह की यात्रा भी सहजता से की है। इसमें उन्हें स्वयं का अनुभवविश्व और उसे साकार करने की शैली का खोज लगा है। 'तरीही' में अपना जीवन एक प्रवाह है और विनाश की दिशा की ओर चला है । ऐसा कवयित्री कहती है-

''लाखोंच्या गर्दीत आपण अधिक एक
हरवत जातोय
ओंजळभर काजव्यांनी
प्रकाश हातात पकडता
येत नाही
हे खरंच, पण हा कुठला प्रवाह
नाशाच्या कडेला वाहत नेतोय''[268]

नारी चिंतनात्मक कविता लिखना, कठिन काम है लेकिन कवयित्री ने इसे सहज साध्य किया है। तत्वचिंतन के कारण उनके कविता का स्वरुप निवेदनात्मक, विधानात्मक हुआ है, तो भी विशुद्ध काव्य से कविता को उन्होंने ढ़लने नही दिया। स्वयं का शब्दरुप और शैली निर्माण करने की यशप्राप्ति कवयित्री को हुआ है। अनुराधा पाटील और रजनी परुळेकर के संबंध मे अविनाश पाध्ये कहते हैं - ''कुल मिलाकर 1985 ई. के कविता का विचार करने के बाद पुराने कवि स्वनिर्मिति के

266) पाटील अनुराधा- दिगंत, पृ.73
267) फ.मु. शिंदे- कालमन, पृ. 37
268) पाटील अनुराधा- तरीही, पृ. 10

आवर्त मे फँसे हुए दिखाई देते हो तो भी, अनुराधा पाटील, रजनी परुळेकर और विवेक राजापुरे जैसे कवि 'कवितापन' संभालनेवाले और काल की धारा में बहकर न जानेवाली कविता देते हुए दिखाई देते हैं। कविता का यह चित्र निश्चित ही दिल बहलानेवाला है।''[269]

अनुराधा पाटील की 'तरीही' (1985) काव्यसंग्रह के संबंध मे भास्कर लक्ष्मण भोळे कहते हैं- ''आज मराठी मे प्रचंड मात्रा में कविता लिखी जाने लगी है । एक महिने में अनेक कविता संग्रह प्रकाशित होते रहते हैं, उन्हें कम-अधिक पाठक भी मिलते हैं । लेकिन ऐसा एखाद दूसरा ही काव्य संग्रह रहता है, जो अपने अभिनव विशेषता से पाठकों को लुभाता है, उसकी पंक्तियाँ पाठकों के मन में हमेशा घर करके बैठती है। अनुराधा पाटील की 'तरीही' ऐसा ही एक संग्रह है। आज के भीड में भी उसका एक अलग अस्तित्व दिखायी देता है।''[270]

कवयित्री अनुराधा पाटील की कविता में अपत्य मृत्यु के फलस्वरुप आया हुआ दुःख हृदय हिला देनेवाला है। यह दुःख उनके 'भरल्या पुरल्या घरात ', 'आपल्या या मातीत','मी वाटून टाकीन','बिनतक्रार निभावलेला','या धराला जाणवत नाही', आदि कविता में चित्रित हुई है। बेटे के मृत्यु का दुःख सब से अधिक जन्म देने वाली माँ को होता है। इस मृत्यु से असहाय अकेलापन महसूस होने लगता है, जीवन व्यर्थ लगता है। उसके अनेक यादों से मन भर आता है। घर के अन्य लोगो में यह दुःख काफी समय तक नहीं रहता। दैनंदिन व्यवहार मे सब तल्लीन हो जाते हैं। लेकिन माँ दुःख सहते रहती है। उसे जीवन सुना-सुना लगता है। जीवन और मृत्यु के बीच का अस्पताल का वह दृश्य उसके आँखो के सामने से नहीं हटता। अपना पुण्य कहीं तो कम पडा क्या ? यह शक उसके मन में उत्पन्न होता है। बेटे के याद से व्याकुल माँ का चित्र काफी सशक्तता से कवयित्री खींचती हैं-

''या भरल्यापुरल्या घरात
बाई अशी रडत जाऊ नकोस
सई सांजेची
.....

269) पाध्ये अविनाश- कविता 1985, ललित, पृ. 81

270 भोळे भास्कर- साहित्य प्रत्यय, पृ. 111

घरभर रांगलेल्या लेकराची सय तुला
काळीज तुझे धोका खातं
पण अशी रडू नकोस माय
या भरल्या सांजेला
थोडा छातीवर दगड ठेवला
आणि समोर येईल ते आपलं म्हटलं
तर पांग फिटतो उकिरडयाचा
घोडही गंगेत न्हांत''[271]

बेटे के मृत्यु का दुःख आगे विस्तारित हुआ है। इस अनुभव से जीवन कितना भयानक है इसका वह कल्पना भी नहीं कर सकती डॉ. नागनाथ कोतापल्ले अनुराधा पाटील की कविता के संबंध में कहते हैं - '' एक प्रकार से अनेक दायरे पानी के पृष्ठ पर जैसे निर्माण होते हैं वैसे यह कविता अनेक भावना, अनुभव का प्रत्यय एक ही बार देते रहती है, शायद इस कविता की यह एक बहुत बडी विशेषता है, ऐसा कहा जाता है।''[272]

कवयित्री अनुराधा की कविता 'तुझ्या या अफाट पत्रात' अचानक हुई मृत्यु के कारण दुःख की तीव्रता व्यापक बनते गयी है, ऐसा दिखायी देता है।

''ईश्वरी आघाताच्या
अटल झंझावातानं
अंतर्बाहय झिझत जाणारे जीव
सांगत राहतात
आम्हाला समजून घे
अर्थ दे आमच्या ही असण्याला
आवाज दे
आमच्या कधी न संपणा-या
दुःखाच्या मुकेपणाला
प्रयोजन सांग

271) पाटील अनुराधा- दिवसेंदिवस, पृ. 34
272) कोतापल्ले नागनाथ- आधुनिक मराठी कविता-एक दृष्टिक्षेप, पृ. 116

अर्थहीन जन्ममृत्यूचं
निदान थांबव
पैलतिरावरुन ऐकू येणा-या
अर्ध्या वाटेवर सोडून
निघून गेलेल्या जीवलगाच्या
व्याकूळ करणा-या हाका''[273]

कवयित्री अनुराधा पाटील की कविता में अभिव्यक्त होनेवाला माँ बेटे का रिश्ता बेटे के जाने से तडप उठता है लेकिन वह वैयक्तिक दुःख में ही नहीं रहती वह विश्व के जीवन मृत्यु का विचार करती है। उसकी भावना विस्तारित होते जाती है। कवयित्री प्रभा गणोरकर कहती है -''वैयक्तिक निराशा और दुःख से होकर गुजरते समय धीरे-धीरे कुल मानवीय अस्तित्व से संबंधीत व्यापक दुःख का एहसास लेते हुए की गयी यात्रा है। इस यात्रा का हर पग स्पष्ट दिखाई देनेवाली पारदर्शी कविता है। यह मानो कविता की नियति थी। उसके लिए भोगा जानेवाला तड़पन भी प्रारब्ध था, लेकिन इसप्रकार की यात्रा और तड़प के बाद हर कविता श्रेय को पहुँचती हैं ऐसा नहीं अनेक बार बिना बोझ के नीचे दबकर विरुप हो जाती है। जीवन जीने का रुपांतर कविता में होने की प्रक्रिया में वह कविता से अलग निबंध, गद्य, आत्मचरित्र आदि अर्थशून्य शब्दजंजाल का रुप लेने की धोका भी रहती है। इसलिए ऐसा न होने देकर प्रत्येक जीवनानुभव को भावोत्कट और अस्सल कविता का ही रुप देनेवाली श्रेष्ठ स्तर की सृजनशील कविता दिवसेंदिवस में परिणत हुई है।''[274]

कवयित्री अनुराधा पाटील की कविता में चित्रित अनुभवों का अध्ययन करने के बाद ऐसा दिखाई देता है कि ये अनुभव उनके भावविश्व से निर्माण हुई हैं और कविता को अर्थपूर्ण बनानेवाली है। समकालीन कविता से अलग सिद्ध होती है। डॉ. नागनाथ कोतापल्ले कहते हैं- ''उनकी कविता पढ़ते समय एक प्रौढ़ समंजस और सुजान व्यक्तित्व का संवाद पाठकों से हो रहा है ऐसा लगता है। मराठी में स्त्री मन के स्पंदन अनेक कवयित्रियों ने किया है। अपवाद यह कविता घर, बच्चे, पति आदि में अधिक रत दिखती है। लेकिन अनुराधा पाटील की कविता इस पार्श्वभूमि पर एकदम अलग,

---

273) पाटील अनुराधा- दिवसेंदिवस, पृ. 21
274) पाटील अनुराधा- तरीही, पृ. 22

चिंतनशील और जीवन के दुःख का तीव्रता से खोज लेनेवाली है। इस कविता के अनुभव की कक्षा अधिक विस्तारित दिखाई देती है। कुल मिलाकर पीछले एक तप में उदयित कवयित्रियो में एक नाम तो है ही, लेकिन मराठी कविता इसे समझ लेना चाहिए, इस प्रकार की कविता है ऐसा कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।''[275]

कवयित्री सीधे और सरल बोली मे अपना अनुभव व्यक्त करती है। उनकी भाषा देहाती परिवेश और मिट्टी से रिश्ता जोडनेवाली है। इस परिवेश के साथ मिलकर जीवन जीने का अर्थ खोजती है। स्त्रीत्त्व के आदिम रूप के साथ एकरुप होने का प्रयत्न भी उन्होंने किया है।

दीर्घकविता का प्रयोग कर सामान्यतः कविता में आनेवाली गद्य की रुक्षता को उन्होनें आत्मविश्वास से टाल दिया है। इस संबंध में भालचंद्र नेमाडे कहते हैं- ''शैली के आधार पर उन्होनें स्वयं की भाषा अत्यंत तरल, रुपात्मक शैली चिह्नों से निर्माण किया हुआ दिखायी देता है। आज तो मराठी भावकविता के विश्व में उन्होंने ही नयी शैली में अपना पग रखा है, यह स्वीकार करना होगा।''[276]

7:1:45 यशोधरा साठे :

स्कूल जीवन से लेकर काव्यलेखन करनेवाली कवयित्री यशोधरा साठे की 'तनमानाची गाणी' (1982) और 'काळं आभाळ' दो काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुकी है। कविता पर बेहद प्रेम करनेवाली यशोधरा 'काळं आभाळ'(1992) में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहती है- ''साँस लेने जैसे सहज कविता लिखी गयी, कविता पर जितना प्रेम किया उतना किसी पर भी नहीं ... मैं स्पष्ट मान्य करती हूँ की अच्छी कविता अभी होनेवाली है।''[277]

कवयित्री यशोधरा साठे प्रमुख रूप से मुक्त छंद मे काव्याविष्कार की है, उनका अनुभवविश्व मर्यादित रहा हो तो भी भावविश्व से एक रूप होकर उन्होंने संयमित रूप से काव्यरचना की है। उनकी कविता में कहीं भी असंगतता दिखाई नहीं देती-

त्वचे खालून वाहणा-या रक्ताइतका जवळचा होतास तू
तू इतका दूर गेलास, कसा ?
काळं आभाळ, तुझे काळे डोळे

---

275) कोतापल्ले नागनाथ, पुस्तक परीक्षण-दिंगंत, पृ. 48
276) नेमाडे भालचंद्र - टीका स्वयंवर, पृ. 70, 71
277) साठे यशोधरा - काळं आभाळ, पृ. 4

आसमंतात भरुन राहिलेली उदासी

..... इतका दूर तू कसा राहू शकलास

माझं एकट हृदय थकलेले हात

त्याच वाटेवरुन परत फिरलेली माझी पावलं

तू का डोळयाआत गोठवून ठेवलीस ?''[278]

लेकिन यशोधरा की कविता एकतरफा लगती है, उनमें विफलता और उदासीनता की भावना दिखाई देती है। उनकी कविता में सफल प्रेमानुभव से असफल प्रेमानुभव का आधिक्य है । उनकी कविता में चित्रित प्रेयसी को प्रियकर के बिना जीवन निरर्थक लगता है। प्रियकर ने किए हुए उपेक्षा के कारण उसका हृदय हिल जाता है। यह निराश भाव उनकी कविता में इसप्रकार व्यक्त हुआ है-

''मृतांचे उघडे डोळे हलकेच मिटावेत तसं

अलगद सांभाळायला हवं होतंस

आपल्यातल्या नात्याला''[279]

कभी-कभी उसके मन में यह प्रेम भूल जाना चाहिए ऐसा लगता है लेकिन यह संभव नहीं हो पाता-

'' पुन्हा तीच दूर दूर

तेच श्वासात घुटमळणं

तीच बेसावध हवा .....

तेच मनात आर्त आक्रंदन

.....

तूच हवास .... ''[280]

यशोधरा साठे की कविता में चित्रित प्रेमानुभव बहुत कुछ उत्कट है ऐसा लगता नहीं अथवा पाठकों का हृदय भर उठे इसप्रकार की ताकद उसमें नहीं है ऐसा लगता है।

यशोधरा साठे की कविता में प्रेमभंग का दर्द दिखाई देता है। उनकी कविता में तू के साथ अखंड संवाद शुरु है।

'' सा-या अलवार स्वप्नांना

278) साठे यशोधरा - काळं आभाळ, पृ. 32

279) साठे यशोधरा - तनामनाची गाणी, पृ. 57

280) वही, पृ. 21

काळी वस्त्र पांघरुन तुझी सावली

माझ्या आतून झरत चालली आहे ’’[281]

अथवा

‘‘ तू म्हणतोस ते स्वप्न आता

आपल्यापासून खूप दूर गेलं आहे ’’[282]

स्वयं के विश्व में रमनेवाली, स्वप्नमय जीवन जीनेवाली कवयित्री यहाँ दिखायी देती है। उनकी भाषा सहज और सरल है, विशेषतः यह भाषा अंतमूर्खी है, प्रेमानुभव का यही एक धागा प्रमुख रूप से इन कविताओं में दिखायी देती है। परंतु यह अुनभव मन भरनेवाला नहीं।

7:1:46 ज्योति लांजेवार :

कवयित्री ज्योति लांजेवार की ‘दिशा’ (1982) ‘शब्द’, ‘निळे आभाळ’ (1992) काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुकी है। इनमें दलित समाज की वेदना व्यक्त हुई है। दलितों के वेदना पर ही कवयित्री का काव्य निर्माण हुआ है ऐसा दिखायी देता है। ‘दिशा’ (1982) इस पहले ही संग्रह ने दलित कवियो की पंक्ति में उन्हे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करा दिया। उन्होंने अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए मुक्तछंद का सहारा लिया है। स्त्री पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार प्रत्येक स्त्री के मन की ज्वाला भडकाने वाली है। पांचाली के मिथक का प्रयोग कर अपने मन की भावनांओं को कवयित्री ने इसप्रकार प्रकट किया है-

‘‘माझ्या डोळयापुढे सतत उभी असते

कौरवांच्या राजसभेत बेअब्रू होणारी पांचाली

युगानुयुगे जन्माला आलेले दुःशासन

समाजाने वाढवलेत स्वतःच्या छायेखाली

अरे अंगभर वस्त्र पुरवू नकोस

पण ओढणारे ते हात

मुळापासून छाटून तरी टाक

पुनरावृत्ति होवू देवू नकोस

281) साठे यशोधरा- काळं आभाळ, पृ. 14

282) वही, पृ. 16

नव्या महाभारताची
नाही तर आम्हालाही लिहाव्या लागतील
हिरव्या गवतावर लाल घोषणा''[283]

स्त्री पर होनेवाला यह अन्याय केवल दलित समाज तक सीमित न होकर अखिल स्त्री समाज का है। म. फुले, डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को वारिस के रूप में हिरा बनसोड़े, प्रज्ञा लोखंड़े और ज्योति लांजेवार ने अपनी कविता में संभाला है। ज्योति लांजेवार की कविता का उद्येश्य केवल स्त्री अनुभव व्यक्त करना न होकर पूरे, दलित, शोषित, पीडित, वर्ग का अनुभव व्यक्त करना है। स्त्रीपर होनेवाले अत्याचार को कवयित्री ने 'हिरव्या गवातावर लाल घोषणा' कविता में अपने मन में स्थित विद्रोह प्रकट किया है। पौराणिक मिथकों का संदर्भ लेकर व्यक्त होनेवाली यह भावना कवयित्री के काव्य की मार्मिकता व्यक्त करनेवाली है। कवयित्री जाति प्रथा पर तीखा व्यंग्य करते हुए कहती है-

''हे दयाघना, तुझे उपकार
आमचेवर आहेत अपरंपार
तुझ्या राज्यात अजुनही बंद दार
होवून आम्ही पृथ्वीला भार
कसे जगतो मरुन ठार
.....
इथे कुंभाराचे चाक
घडविण्यापूर्वी विचारते जात
बिचा-या मातीला
मग व्हावेत कसे बळकट हात ?''[284]

जातियता का सलनेवाला दु:ख यहाँ व्यंग्यात्मक रूप में व्यक्त हुआ है।

मलिका के तरह ज्योति की कविता में स्त्रीवादी विचार बडी सशक्तता से अभिव्यक्त हो उठी है। ये विचार केवल दलित कवयित्री के न होकर पूरे स्त्री जीवन से संबंधित हैं। 'माझी भूमिका, माझी कविता' में कवयित्री कहती है- '' सामाजिक

283) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 7
284) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 7

विषमता उसे सहन होता नहीं, जातियता उसे आराम बैठने नहीं देती, रुढ़ि, परंपरा, जुल्म, अन्याय, अत्याचार, लुट खसौट, बलात्कार आदि के खिलाफ संघर्ष करने के लिए उठ खड़ी होती है। अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने का प्रयत्न करती है मेरी कविता।''[285]

कवयित्री एक वेश्या माँ के दर्द का चित्र 'अशा अंगाईसाठी' कविता में खींचती है। इस कविता में चित्रित स्त्री वेश्या हो तो भी वह एक माँ है । पेट के लिए मजबूर माँ को कलेजे पर पत्थर रखकर रोनेवाले बच्चे का आक्रोश सुनना पड़ता है। वह अपने बच्चों को स्तनपान भी नहीं करा सकती क्योंकि वेश्यारुपी स्त्री देह उसे सजाना पडता है। वेश्या का हदय द्रावक अनुभव चित्रित करते हुए कवयित्री कहती है-

''घर काळोखात उभे
आत तान्हुला रडतो
देह सजवी माऊली
पान्हा चोळीत गळतो
बाळा निजावे रे गप्प
नको करुस आकांत
ओठ गुंतले बळेच
तरी अंगाई बंदिस्त''[286]

रोनेवाले बच्चे को वह दूध पिला नहीं सकती, उसके लिए लोरी नहीं गा सकती यही उसका दुःख है। ऐसे माँ के कोख से बच्चा क्यों जन्म लिया यह दुःख वह व्यक्त करती है। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में वेश्या के उपेक्षित जीवन को उसके मातृत्व को ज्योति लांजेवार सशक्त रूप में पूरे ताकद के साथ चित्रित किया है।

उपेक्षित जीवन की वेदना का चित्रण भी 'दिशा' में चित्रित हुई है। कवयित्री कहती है- इस देश में हम अभी भी उपेक्षित हैं। संस्कृति के द्वार हमारे लिए बंद ही हैं, इसलिए पृथ्वी पर बोझ बनकर हम जी रहे हैं। जन्म होने से पहले ही जाति का मुहर माथे पर लग जाता है। इन्सान के रूप में हमारी यहाँ कीमत नहीं, इस परिस्थिति में जीना मुश्किल हो गया है-

---

285) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 7
286) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 41

''परिस्थिती आणि नियतीची
गुंतागुंत सोडवताना
अन्यायाचे चाबुकवार
आजतागायत झेलित आहेत
जुलमांच्या सगळया रेषा मिटवीत
तारुण्य गहाण टाकलं
तरीही ..... निराशा विरली नाही आशेत
आता अंतिम टोकाच्या शोधात
वृध्दत्व पणाला लावून बसले,
वाळूच्या भिंती उभारुन
येणा-या वादळांच्या नाकेबंदी करीत ''[287]

ज्योति लांजेवार की कविता में चित्रित यह वेदना कभी स्वयं के संबंध में कभी समाज के संबंध में ऐसे दो रूपो में अभिव्यक्त हुई है। उस वेदना को 'तशीच येवू नकोस' कविता में विद्रोह की तीव्रता प्राप्त हुई है। क्रांतिदेवता को उद्देश में रखकर कवयित्री कहती है।

''म्हणून .... तू अवतार होवू नकोस बुध्दाचा
किंवा जन्म घेवू नकोस चार्वाकाचा
या अमानुषांच्या वस्तीत
दगडांचे देव वास्तव्याला आहेत
माणुसकी पायाखाली दडवून
भिंतीवरचे नग्नशिल्प जोपासताना
.....
म्हणून ..... तू घाई करु नकोस
तुझ्याच सवडीने ..... तुझ्याच मर्जीने
सावकाश ये
पण येताना लक्षात ठेव
डोळयात तुझ्या उगवला असू दे

287) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 35

अस्पर्श सुर्य .....

हातात तुझ्या माणसांचे हक्क ''[288]

ज्योति लांजेवार की कविता में दलितों को दिया जानेवाला जीवन की हीन पद्धति उनके उपर किया जानेवाला अन्याय आदि के प्रति दुःख व्यक्त हुआ है। उनकी कविता वेदना का विस्फोट लगती है। जातिपूजक और शोषक समाज को आग लगाने की भावना उनकी कविता में अभिव्यक्त हुई है-

''वाटतं घ्यावं हातात कोलीत

अन् लावावी आग

या अमानुषांच्या वस्तीला

जिथं आपल्या सर्वस्वाची होळी झालीय''[289]

इस विद्रोह में दलित वेदना छिपी हुई है ऐसा लगता है।

उन्हें खून से जुड़े हुए रिश्ते ही अधिक महत्त्वपूर्ण लगते हैं, क्योंकि वे ही कठीनाई में काम आते हैं, ऐसा अनुभव उन्हें आया है, 'नकळत जुळणारे धागे' कविता में कवयित्री कहती है-

''नातं आई, ताई-दादा, बाबा

सारे फसवे शब्द ठरतात

उराला वाळू लावून घ्यावी

असे ही कांही 'दर्द' असतात

फिरल्या वेळेला आधारास

कधीच आप्तांचे हात नसतात

हाकेसरसी धावून येणारे

कुणी परकेच पाय असतात''[290]

कवयित्री ज्योति लांजेवार की कविता पर शरदचंद्र मुक्तिबोध के विचारों का प्रभाव है। डॉ.द.भि. कुलकर्णी ज्योति लांजेवार की कविता के संबंध में कहते हैं – "नई कविता के प्रारंभिक काल में सामाजिक कविता को प्रचार, वैचारिकता और तपशिलता

288) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 22

289) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 13

290) ज्योति लांजेवार- दिशा, पृ. 42

के दबाव के नीचे न आने देकर उसे सामाजिक भाव कविता का बल मार्क्सवादी कवि शरदचंद्र मुक्तिबोध ने दिया था। दलित कविता के संदर्भ में यह प्रक्रिया अब शुरु हो गयी है। मर्ढ़ेकर के कविता का संस्कार लेकर मर्ढ़ेकरोत्तर कविता विकसित हो गयी, लेकिन उसने मुक्तिबोध के तरफ बहुत ध्यान नहीं दिया, वही कार्य आज कवयित्री कर रही है।"[291]

इस प्रकार कवयित्री ज्योति लांजेवार की कविता अन्याय सहन न करनेवाली, विद्रोही है। समाज को जागृत करने के लिए कवयित्री प्रसंगानुकूल स्फोटक और विध्वंसक रूप लेती है।स्वयं को प्राप्त अनुभव उन्होंने सहज व्यक्त किया है। अपनी कविता के अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने स्वयं का ही रास्ता खोज निकाला है ऐसा लगता है।

7:1:47 वासंती मुझुमदार :

कवयित्री वासंती मुझुमदार का 'सहेला रे' कवितासंग्रह प्रकाशित हो चुका है। प्रकृति के लुभावने संपर्क में वासंती अपने भावानुभव अधिक तीव्रता से, आत्मियता से व्यक्त करती है। अनेक ऋतुओं के आगमन से उनके मन की तार झंकृत हो उठती है-

''करुण पहाट
गळामोकळी आकाश अवेळ
कोंलार शार न्हाले आले
हुंगायची गंधवेळ ''[292]

प्रकृति सौंदर्य में डूब जाने के कारण कवयित्री के विचार अर्थपूर्ण वैविध्यपूर्ण और कलात्मक बने हैं-

''अशा जळत्या उन्हात
अर्धा मोहोर जळावा
मुक्या आंब्याच्या शाखेने
अश्रू एकला सांडावा ''[293]

प्रकृति के सौंदर्य का रसपान करने के लिए कवयित्री का मन आकुल हो उठता है। सौंदर्य के मुख्य अंश को उनकी कविता स्पर्श करती है। उनका काव्यात्मक अनुभव

---

291) कुलकर्णी द. भि.- दिशा, पृ. प्रस्तावना
292) मुझुमदार वासंती- सहेलारे, पृ. 3
293) मुझुमदार वासंती- सहेलारे, पृ. 8

धीरे-धीरे प्रकट होने लगता है-

''कुठल्याही फुलासाठी
पान नसते गळत
पानामधून प्रकाश
आपोआप झरत ''[294]

उनका अनुभव जैसे जैसे विस्तार पाता है वैसे वैसे उनके शब्दो में से नया कलात्मक ज्ञान प्रकट होता है-

''आकाश भरुन पाऊस
लवलवता
भुई भरुन फुले
बावरलेली
दिशा भरुन झाडे
अबोली उभी तटस्थ''[295]

अनुभूति गोचर होते ही सौंदर्य रूपी कमान अलग स्तर पर जाती है। अर्थ के साथ प्रामाणिक रहकर उन्होंने अपना कलात्मक अनुभव वृद्धिंगत किया है-

''थांबणे आहे इथे या राम संपत चालली
सावलीला हात नाही, रात्र उरली एकली''[296]

मन में कहीं न कहीं भरी हुई उदासी उन्हें बार बार कुरेदती है। प्रकृति के माध्यम से भावना प्रकट हो जाती है। और इस समय कवयित्री की कविता में सौंदर्य के दर्शन होते है-

''बघ नाही जळाला पार
भय जाशिल तू हि अवेळी
या श्रांत समुद्रावरती
घालीन मी ही रांगोळी''[297]

कवयित्री वासंती को जन्मतः ही सौंदर्यलक्ष्मी मन का वरदान प्राप्त हुआ है। इस

294) मुझुमदार वासंती- सहेलारे, पृ. 3
295) मुझुमदार वासंती- सहेलारे, पृ. 15
296) मुझुमदार वासंती- सहेलारे, पृ. 2
297) वही, पृ 21

वरदान से उनकी सौंदर्याविष्कारी कविता साकार हो उठी है। रंग,रुप,आकार, नाद और लय का तीव्र ज्ञान प्राप्त हुआ है।

7:1:48 ललिता गौरी भट्ट :

कवयित्री ललिता गौरी भट्ट की 'निमूट आता मान तुकव रे' यह विद्रोहवादी विचारधारा की कविता है । कवयित्री यह आशा व्यक्त करती हैं कि क्रांति की भयानक आँधी में अन्याय अत्याचार का क्षणभंगुर सत्ता एक पल में गिर जायेगी ।

''क्षणभंगूर जुलमी सत्तेचा
पायघोळ अंगरखा घालुनि
बुरसटलेल्या क्षुद्र मनाची
जीर्ण लक्तरे आत लपविशी
अवमानित पीडीत जनता ही
उठेल अवचित बंड कराया
क्रांतीच्या वादळवा-यामधी
तुझी लक्तरे पडतील उघडी ''[298]

कवयित्री उस काल में समाज चिंतन कर रही थी, यह उनकी कविता पढ़ने से समझ में आता है। भिकारी, दलित, मजदूर आदि के दीन अवस्था को कवयित्री देख रही थी।आर्थिक विषमता पर आधारित समाज का वह धिक्कार करना चाहती है।

प्रेम विषयक कविता भी कवयित्री ने लिखी है। प्रीतिपर का आत्मविश्वास व्यक्त करते हुए कवयित्री ललिता गौरी प्रफुल्लित होकर बहनेवाला तृप्ति का आनंद प्रकट करती है।

''हात तुझा मम करात गुंफुनि
दिली तुला मी दिली चेतना
येथे गांऊनि यशोशिखर रे
तृप्ति तुझी झेलीत उरावरी''[299]

कवयित्री ललिता गौरी की कविता की नायिका अपने शुद्ध , निरागस प्रेम मे रंगी हुई है। अपने प्रियकर से वह कहती है -

''तुझ्या रुपाने सुकूमारा रे

298) भट्ट ललिता गौरी- नवी भरत भेट, पृ. 63
299) भट्ट ललिता गौरी- मध, पृ. 111

पुण्यच मम साकार जाहले

वितळू दे मज तुझ्या मिठीने''[300]

कवयित्री की शृंगारिक कविता मर्यादित सीमा से बाहर न जाकर सौंदर्य से परिपूर्ण है।

7:1:49 प्रभा गणोरकर :

अपने अनुभवविश्व को सशक्तता से अभिव्यक्त करनेवाली कवयित्री प्रभा गणोरकर अपनी कविता संग्रह 'व्यतीत', 'विवर्त' (1985) में विविध आयामों से अनुभव व्यक्त किया है। उन्होंने 'मुक्तछंद' और 'दीर्घकविता'का प्रयोग किया है। उनकी कुछ कविताओं को कथारूप प्राप्त हुई है, जैसे -

''राजकन्येच्या बागेतल्या लिंबोणीचे वरचे लिंबू आपणच तोडायचे

असा त्याचा बेस असल्याने तो तातडीने तिकडे

चालत आला असावा, असे नंतर मोठयाई म्हणाली

तेंव्हा आम्ही खुप हसलो, मात्र त्या कहाणीत

पुढे काय झाले, ते नंतर कळले नाही''[301]

आशयानुरुप अनुभव को सीधा छूने का सामर्थ्य प्रभा गणोरकर की कविता में है। अनुभवों की तटस्थता और प्रामाणिकता उनके कविता की विशेषता है।

'व्यतीत'(1974) और 'विवर्त'(1985) संग्रह में प्रेमानुभव के विविध छटाएँ चित्रित हुए हैं। उनकी कविता में चित्रित दु:ख अंतर्मुर्खी है। यह अंतर्मुखता प्रेम की निराशा और दूरता से जन्मी है। गणोरकर का अनुभव विश्व समृद्ध है। स्त्री के खास अनुभव को व्यक्त करते करते वह लिंगनिरपेक्ष अनुभव भी व्यक्त करती है। स्त्री धर्म के आदिम मूल्यों का अहसास उनकी कविता में दिखायी देती है। उनकी कविता में चित्रित दु:ख प्रेम की निराशा और दूरता के कारण निर्माण हुई है। सफल प्रेमानुभव से असफल प्रेमानुभव प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुई है। प्रेममय जीवन में अचानक यह कटुता कहाँ से आयी, इसे वह खोज नहीं पाती लेकिन उसका मन उदास हो उठा है। कभी कभी इस उदासिनता का परिणाम कडाके कें झगड़े में होता है, मन उदास हो उठता है। अपना गुस्सा औरों पर निकाला जाता है, बेटी को खाना नहीं, पेड़ों को पानी

---

300) भट्ट ललिता गौरी- मध, पृ. 71

301) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 80

नहीं, पुरुषसत्ताक समाज जीवन में स्त्री को हार स्वीकारना पडता है। औरों पर गुस्सा निकाला जाने से वह पछताने लगती है और दु:खी होती है। प्रभा गणोरकर की कविता की स्त्री इसमें से रास्ता निकालती है।

''डोळयांना
हळूहळू अंधाराची सवय
करावी,
तसे मी स्वत:ला
शिकवित जाते आहे
तुझे माझ्याबरोबर नसणे ''[302]

प्रेम में निराशा उत्पन्न होने के कारण कविता में दु:ख का जन्म हुआ है।

अंतर्मुख होकर इस दु:खानुभव का वह विचार करती है। प्रेम की वास्तविकता को उनकी कविता स्वीकारती है। जीवन की प्रेरणा कितनी बार भी टूट पड़ी तो फिर उठकर ठहरने का प्रयत्न किया जाता है। 'झाडानीच मला' कविता में कहती है-

''झाडांनिच मला जगणे शिकविले
जमीनदोस्त केले तरी उभे रहाणे शिकविले ''[303]

इसप्रकार गणोरकर की कविता में प्रेम का प्रारंभिक आवेग न टाला जानेवाला है। पराजय और फिर यशस्वी होने के लिए किए गये प्रयत्न आदि तीनों सोपान दिखाई देते हैं।

स्त्री को विधवा जीवन शाप के समान लगता है, और सतीत्त्व के रूप में आनेवाली मृत्यु को वह भाग्य समझती है। प्रभा गणोरकर की कविता में कवयित्री स्वयं सती जा रही है, यह कल्पना कर सती का दु:ख, जीवितावस्था में मरते समय की यातना का चित्रण किया है-

''बघ, तो विचित्र आवाज
सारखा तडतडणारा नगारा
कुणीतरी मला कुंकू लावले
ओवाळले ही का .....

302) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 6
303)गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 20

कुणीतरी माझ्या दंडांना धरले
आणि माझी असहाय पावले
नुसती पुढ़े पडत गेली''[304]

'जाण्याआधी' बेटी और माँ के रिश्ते को व्यक्त करनेवाली दीर्घ कविता है। इसमें ससुराल जानेवाली बेटी को बिदाई देते समय दुःखी होनेवाली माँ दिखायी देती है। बेटी घर में आते समय रोटी का टुकड़ा उतारकर फेंकनेवाली माँ जब बेटी ससुराल निकलती है तो उसके न दिखने तक रास्ते पर आँखे बिछाकर ठहरी हुई माँ दिखायी देती है।

प्रभा गणोरकर की कविता में चित्रित लड़की अपने माँ के काम पर सूक्ष्म नजर रखने वाली है। 'चित्र' कविता में लडकी अनेक सूक्ष्म चित्र निकालती है। उन चित्रोंमें एक चित्र माँ के समझ में नही आती जिसमें एक छोटे पत्थर से निकाला गया दायरा और हरी बिंदिया माँ के समझ में जब नहीं आता तो बेटी समझाती है -

''तू जाण्यापूर्वी, काकडीच्या बिया पेरुन गेली होतीस ना आई ?
त्या मग उगवल्या ते हे ''[305]

कवयित्री प्रभा गणोरकर अपनी दीर्घकविता 'पर्सिक्यूशन' मे असुरक्षितता की भावना को सशक्तता से प्रकट किया है। घर, बगीचा, बस स्थानक, कार्यालय सब जगह असुरक्षितता की भावना कवयित्री को सताती है-

''..... कार्यालयाकडे जावे
बस स्टापजवळ तो जांघा खाजवीत हिडीस हसत उगाच नेहमी प्रमाणे
आणि कार्यालयाच्या आवारात ही
कपाळाला लाल रुमाल बांधलेली, तंगडया फाकवून
झुंडीने उभे
तिथल्या अरुंद जिन्यावरुन, काळोख्या खोल्यातून स्वतःला सांभाळून
परत आणले पाहिजे, घरी ते ही संध्याकाळच्या आत''[306]

नौकरी पेशा नारी के सामने किस प्रकार की समस्याएँ आती है, इसे कवयित्री ने सशक्त रूप से प्रकट किया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये समस्याएँ डर उत्पन्न

304) गणोरकर प्रभा- व्यतीत, पृ. 64
305) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 72
306) गणोरकर प्रभा- व्यतीत, पृ. 19

करती है, इस डर से बचने के लिए एक ही सुरक्षित मार्ग दिखता है- आत्महत्या। इसलिए वह आत्महत्या का विचार करने लगती है-

''माझी प्रिय बंद खोली एक खुर्ची एक दोर, पंख्याच्या हुकाला
..... आता त्यांचे कारस्थान यशस्वी होणार नाही
मी असुरक्षिततेच्या पलिकडे
अगदी पलिकडच्या ही पलिकडे ''[307]

प्रभा गणोरकर की कविता के संबंध मे आलोचक कहते हैं - ''स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में विविध समस्याएँ निर्माण हुई है, ये विभिन्न समस्याएँ स्त्री को सता रही है। स्त्रीत्त्व संभालते-संभालते संवेदनशील स्त्री के हिस्से में विविध प्रकार के अनुभव आ रहे हैं। ऐसे पार्श्वभूमि पर सामाजिक जीवन के संदर्भ में स्वयं के अस्तित्त्व का काव्यात्म स्तर पर लिया हुआ खोज और उसे साकार करनेवाले अनुभव कवयित्री प्रभा गणोरकर की है। ''[308] कवयित्री प्रभा गणोरकर का अनुभव विश्व बहुत बड़ा है। उन्होंने अपने अनुभवों को व्यक्त करने के लिए पेड़ को प्रेरणा के रूप में स्वीकारती है।

''झाडे उगवत राहीली, बिया टाकत राहिली
पाहता पाहता एक प्रचंड रानाने तिला वेढून घेतले
गगनचुंबी झाडांनी करकरुन आकाशाचा निळा तुकडाही
झाडून टाकला, त्याला ती शोधत राहीली ''[309]

अथवा

''कोणी मला इतक्यांदा उपटून असे तिथून
इथे, इथून तिथे लावले असते
किंवा दरवेळी फुटलेली कोवळी लालसपालवी
ढ़ोरांनी अशी कुरतडून टाकली असती
..... तर मी आत्महत्या केले असते
''..... झाडे कुठल्या जीवन प्रेरणेने चिवटपणे जगतात?
झाडानीच मला जगणे शिकविले

---

307) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 48
308) आलोचना- मुंबई, मई 1987, पृ. 15
309) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 19

जमीन दोस्त केले, तरी उभे राहणे शिकविले ’’[310]

इस प्रकार उनकी कविता में चित्रित पेड़ जीवन का प्रतीक है। प्रभा गणोरकर की कविता में व्यक्त अनुभव सीधे पाठकों तक पहुँचती है। विनाश और विकास जीवन के ये अटल सत्य पेड़ के माध्यम से व्यक्त कर दिखाने का प्रयत्न कवयित्री ने किया हैं।

7:1:50 रसिका देशमुख्र :

कवयित्री रसिका देशमुख्र की कविता जीवन का संदर्भ लेकर पाठकों के सामने आती है। विशेषतः इस कविता में निरागसता का एक हलका स्पर्श है। श्रावणसरी में उसका प्रत्यय आता है। श्रावणसरी की कविता कभी संदर्भ लेकर आती है, तो कभी संदर्भ के बिना, कभी अर्थो के झुमके पहनकर, तो कभी बिना पहने, कभी अनामिक बंधनो में अटककर,बंधन से जकड़कर, तो कभी तृप्त चाँदनी में नहाकर, कभी अपराध को भुलाकर, तो कभी आगेका पल अपना ना समझकर। इन अनुभवोंको मस्तिष्क में रख्रकर शबनम की बुँदो की तरह कवयित्री के विचार श्रावणसरी में उतरती है।[311]

कवयित्री का मन विशेष रूप से प्रकृति में विचरण करती है। प्रकृति के रंग, गंध को अपने हृदय में अनुभूति में समेटकर रख्रती है -

‘‘संध्याकाळ होत आलीय सूर्य मालवत चाललाय
स्वप्नांचे दिवे आता पेटवायला हवेत’’[312]

प्रकृति के संपर्क में जीवन के विविध अनुभूतियों को कवयित्री देख्रती है, परख्रती है। मन में स्थित अनेक भावनाओं को विविध आकार देती है। सुख्र-दुःख्र के अनेक क्षण, सौंदर्य प्रकृति दृष्टि से चित्रित करती है। भाव कोमल प्रेम भावना और प्रकृति में रत मन का साथ कवयित्री को है -

‘‘दूरत्वाचे क्षितिज
हळूहळू जवळ येतेय
काटया-कुटयांचे, दऱ्याख्रोऱ्यांचे रस्ते
अपेक्षेच्या गरुड झेपेने
पार केलेते ’’[313]

---

310) गणोरकर प्रभा- विवर्त, पृ. 20
311) देशमुख्र रसिका- श्रावणसरी, पृ. प्रस्तावना
312) वही, पृ. 37
313) देशमुख्र रसिका- श्रावणसरी, पृ. 31

कभी-कभी उसके मन के आसपास विषण्ण करनेवाली उदासीनता छा जाती है। किसी के तो पदचिन्ह उसे सताने लगती है। बीते हुए क्षणों को याद करती है। और पराजित मन से इन पदचिन्हों को संदर्भहीन कहती है। एक लुप्त होनेवाला सायंतारा उसे दिखाई देता है।

कभी-कभी कवयित्री के शब्दो में निराशा के स्वर सुनाई देती है। क्षणभंगुर जीवन की कल्पना उसके मन में हैं, लेकिन जीवन के दुःख को वह अलग शब्दो में प्रकट करती है-

''मातीतून उगवलेले मातीतच जाणार असते
फरक एवढाच
कांही मेलेले जिणे जगतात
कांही मरुन जगतात ''[314]

जीवन के इस दुःख का अवलोकन करते हुए कवयित्री प्रकृति के निकट जाती है। आँखो में स्थित प्रकृति को शब्द रूप देकर साकार करती है। कुल मिलाकर कवयित्री रसिका देशमुख की कविता जीवन के नानाविध अनुभव समृद्ध करती है।

इसप्रकार आधुनिक मराठी कविता में कवयित्रियों का किया हुआ कथ्य सौंदर्य हृदयस्पर्शी और संवेदनशील लगता है। प्रकृति में मानवता की खोज यह उनका उद्देश था। कवयित्री ने अपने सुख-दुःख खुले दिलसे प्रकृति के सामने कथन कर दिया प्रकृति सौंदर्य से प्रेरणा पाकर इन्होंने एक नये स्वप्नसृष्टि की निर्मिति की।

7:1:51 संगीता जोशी :

गज़ल मूलतः फारशी भाषा का काव्य प्रकार है। गज़ल का मूल अर्थ-प्रेयसी का प्रेम के विषय में बोलना है । प्रेमभावना यही गज़ल का विषय रहता है। गज़ल को भावकविता के रूप में मराठी काव्यसृष्टि में माधव ज्युलियन और सुरेश भट्ट ने प्रतिष्ठा प्राप्त करा दिया।

आधुनिक मराठी कविता में गज़ल का प्रयोग बहुत कम कवयित्रियों ने किया है। उनमें कवयित्री संगीता जोशी का महत्त्वपूर्ण उल्लेख किया जा सकता है। उनकी 'म्युझिका' (1986) काव्य संग्रह में 72 कविताएँ हैं, उनमें 50 कविताएँ गज़ल काव्यप्रकार की है। ये गज़ल वृत्तवैविध्य से सजी हुई है। संगीता जोशी अपने भावानुभव गज़ल के

---

314) देशमुख रसिका- श्रावणसरी, पृ. 36

माध्यम से सशक्तता से व्यक्त किया है। एक गज़ल में प्रेयसी प्रियकर को कहती है-

''ये साद ही तुला रे
ये प्रीतीच्या फुलारे''[315]

गजल यह प्रमुख रूप से प्रेमानुभव व्यक्त करनेवाला काव्यप्रकार हो तो भी संगीता जोशी ने इसमें क्रांति कर उठनेवाली स्त्री का यशस्वी प्रयोग किया है।

''एकटी स्त्री आजला रस्त्यात आली
काकणे केलीत काळाच्या हवाली
ठेवूनी आपापली बाजूस दु:ख्रे
घेतल्या हातात सा-यांनी मशाली
.....राहीली भिती तलाकाची न आता
एक सर्वांना नवी रझिया मिळाली''[316]

आधुनिक कालीन कवयित्रियों की कविता में गज़ल का प्रयोग कर मराठी कविता में अपना अनमोल योगदान दिया है, ऐसा कहा जा सकता है।

संगीता जोशी की 'म्यूझिका' में अनेक अनुभव 'गीत और गज़ल' के माध्यम से व्यक्त हुई है। उनकी कविता में चित्रित प्रेयसी को प्रियकर के प्रेम का आकर्षण है। अपनी बाहों में वह रोमांचित हो जाय यह उसकी अपेक्षा है। वैसे ही प्रेम के इस अनमोल पल में कुछ गलती न हो जाय इसलिए भी वह जागरुक है। अपने प्रियकर को वह कहती है -

''पुन्हा येवू नकोस असा
आभाळ दाटून आल्यासारखा
नकळत पुन्हा घडून जातील
माझ्या हातून वादळ चुका''[317]

अर्थात प्रेम करने की उसकी इच्छा है लेकिन प्रेम के पागलपन में कुछ गलती न हो जाय ऐसी भावना भी है। अपने मन को काबू में रखनेवाली प्रेयसी, प्रियकर का राह देखनेवाली प्रेयसी संगीता की कविता में चित्रित हुई है। उसके सिवा जीना व्यर्थ है। प्रियकर के साथ बिताए हुए अनेक पलों कों वह याद के रूप में संभलकर रखती है

---

315) जोशी संगीता- म्युझिका, पृ. 52

316) जोशी संगीता- म्युझिका, पृ. 17

317) जोशी संगीता- म्युझिका, पृ. 45

और उसकी प्रतीक्षा करते हुए कहती है -

''अजुन किती प्रतीक्षा
येशील सांग केंव्हा
सारे तुझ्याच नावे
हे श्वास वाहिले मी''[318]

संगीता जोशी की कविता में चित्रित प्रेमभावना इसप्रकार की है। 'गज़ल' काव्यप्रकार का प्रयोग करने में कवयित्री काफी सफल हो गयी है।

7:1:52 रजनी परुळेकर :

आधुनिक मराठी में दीर्घकविता रचनाप्रकार का यशस्वी प्रयोग करनेवाली कवयित्री के रूप में रजनी परुळेकर का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उनकी कविता में प्रेमानुभव से अधिक सामाजिकता और मानवतावादी विचार व्यक्त हुए हैं। पुरुष-प्रधान संस्कृति मे स्त्री शोषित है। शोषित स्त्री के विचार उनकी कविता में अभिव्यक्त हुई है। परूळेकर की कविताएँ संवादोत्सुक हैं। वे अपनी यादों से संवाद करती है। उनकी संवादात्मकता में दार्शनिक अनुसंधान की प्रवृत्ति है -

''आणि आज मला
तिची आठवण का झाली
कुणास ठाऊक
ती वर्गात होती माझ्या
चौथी पाचवीत
मारुतीच्या देवळाशेजारी
दुकान थाटलेल्या
फुलवाल्याची मुलगी
दररोज शेंदूर लावून यायची
माझ्यासाठीही आणायची
..... कुंभमेळयात ती
चिरडून मेली म्हणे''[319]

---

318) जोशी संगीता- म्युझिका, पृ. 51
319) परुळेकर रजनी- दीर्घ कविता, पृ. 31, 32

अथवा

''आठवताहेत .....क्षण
संघर्षाचे
कधी क्षुल्लक वाद
न जुळणा-या आवडी
कधी मोठे मतभेद
अटीतटीची समर्थने''[320]

रा.ग.जाधव परुळेकर की कविता में व्यक्त यादों के संबंध में कहते हैं- ''जीने का संयत, स्थिर प्रवाह यादों का रहता है, ऐसा कविता का अनुभव है। अस्तित्व का वर्तमान समय सार्थ या निरर्थ, ऐसे में अर्थपूर्ण जीने का मानवीय आधार यानी यादें। यादें जीना और मतलब का जीवन अर्थपूर्ण करना या अर्थपूर्णता का अहसास होना है।''[321]

रजनी परुळेकर की अलगता के संबंध में अविनाश सहस्त्रबुद्धे के विचार समझ लेना आवश्यक है - ''1960 ई. के आसपास मराठी कविता के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए उसमें कवयित्रियों का योगदान नहीं के बराबर था। स्त्री के मनोव्यापार और मनोविकार के वैशिष्ट्यपूर्ण दर्शन, स्त्री काव्य के माध्यम से होना चाहिए, लेकिन वह भी आज मराठी कवयित्रियों की कविता में दिखाई नहीं देता यह वास्तव स्थिति है, इसे अपवाद सिर्फ रजनी परुळेकर की कविता है।''[322]

रजनी परुळेकर की कविता में अभिव्यक्त स्त्री जीवन अन्य मराठी कवयित्रियों से अलग और स्वतंत्र प्रवाह की है। इनकी कविता के संबंध में आलोचक कहते हैं - '' सन सत्तर के आसपास जिन्होंने काव्य लेखन की शुरुवात की और कविताओं में से निर्माण होनेवाले किसी भी प्रवाह के आधीन न होकर अपनी कविता के अनुभव से प्रामाणिक रहकर ही केवल लिखी गयी, उन इने-गिने कवियों मे रजनी परुळेकर है।''[323]

कवयित्री रजनी परुळेकर की 'दीर्घकविता' में 'काळतोंडी तू' आणी 'पांढ़-या

---

320) परुळेकर रजनी- दीर्घ कविता, पृ. 38
321) जाधव रा.ग.- कविता व रसिकता, पृ.
322) सहस्त्रबुध्दे अविनाश- कवितारती, पृ. 41
323) आलोचना - अगस्त, 1990, पृ. 62

पायाची' कविता में प्रौढ़ और कुमारिका के अनुभव व्यक्त हुए हैं। दिखने में कुरुप कुमारिका को दिन में अनेक बार काले मुँहवाली और सफेद पैरोंवाली शब्द सुनने पड़ते हैं। इस का अर्थ उसे जब समझ में आता है तब वह कहती है -

''एक स्वच्छंद क्षणात गाफील असताना
कळले सारे
श्वास गुदमरला आतल्या आत''[324]

इसप्रकार उसकी अवस्था हो जाती है, कुरुपता के कारण सहा जानेवाला दुःख इस कविता में तीव्रता से व्यक्त हुई है। घर के लिए लड़की एक बोझ होती है और इस बोझ को मिटाने के लिए उसका विवाह किया जाता है। उसकी मानसिक अवस्था का चित्र कवयित्री इस प्रकार खींचती है -

''धापा टाकत घाई-घाईने आला एक दिवस
ब्राम्हणांनी पवित्र मंत्रानी बांधून टाकली
एक आडदांड खोडाभोवती
मान वाकली माळ घालताना
मन मोडले
पाय अडखळले उंबरठा ओलांडताना
शरीर समजुतदारपणे आत आले''[325]

प्रौढ़ कुमारिका के मन की अनेक ड़ोर सहज छिल गये हैं, कवयित्री का अनुभव विश्व व्यापक है। 'तू रागावली आहेस' कविता में कवयित्री कहती हैं-

''देह गीतमय व्हावा
म्हणून वा-याची वाट पाहणारे
वेळूचे बेट बनलेले शरीर
त्यावेळचे तुझे निश्वास
दबलेला हुंदका मला ऐकू येतो
बाभळीवर अडकून फाटून गेलेल्या
पतंगासारख्या चंद्र

---

324) परुळेकर रजनी- दीर्घ कविता, पृ. 20
325) परुळेकर रजनी- दीर्घ कविता, पृ. 20

नासलेल्या दुधातल्या चोथा पाण्यासारख्रं
तलावातलं विस्कटून गेलेलं चांदण
तुझ्या प्रत्येक क्षण
गाबोळीत एकेक मासा
खसखशीच्या दाण्यासारखा दिसणारा
निजरुपातच भरुन गेलेला''[326]

'परितुज मध्ये' कविता में कवयित्री कहती है -

''त्या लख्ख्र प्रकाशात
एक तडे गेलेली भिंत
तीत कावळयाच्या विळेतून जन्मलेली
नखं रोवलेल्या
घोरपडीसारख्री दिसणारी
पिंपळाची फांदी उद्दाम
प्रवासात विटेचा अडथळा येताच
थोडा वरचा तंतून तंतू
मांजरीच्या शेपटासारख्री फुलणारी''[327]

रजनी परुळेकर की कविता स्थल, काल और व्यक्ति को जीवित करनेवाली है, उसकी भाषा परिणामकारक होकर कविता को उच्च स्तर पर पहुँचानेवाली है।

7:1:53 अरुणा ढेरे :

लेखन, पठन, और समीक्षात्मक अनुसंधान का समृद्ध वारिस प्राप्त अरुणा की 'प्रारंभ' (1987) 'मंत्राक्षर'(1990) 'निरांजन'(1994) और 'पानावरचे थेंब'(1995) आदि कविता संग्रह महत्त्वपूर्ण हैं। उनकी कविता पर लोक साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है। स्त्री और उसका भावजीवन अरुणा के काव्य का केंद्रबिंदू है। छोटे बच्चे से लेकर बडे प्रेम मे नहाकर निकले हुए प्रेमिकाओं तक अनेक स्त्रियाँ उनकी कविता में मिलती है। कवयित्री प्रियकर और प्रेयसी के प्रेमानुभव के कोमल अनुबंध को सहज चित्रित करने में सफल हुई है। एक दूसरे में गुँथना, असमय में न मिलने के लिए कहना, छोटे-बड़े बातों पर रुठना, और फिर भी मिलन के लिए आकुल हो उठनेवाला मन चित्रित हुई

326) परुळेकर रजनी- दीर्घ कविता, पृ. 41
327) वही, पृ. 41

है। प्रियकर का स्वभाव ज्ञात होने के बावजूद भी कटू बोलने से दु:खी हो उठी स्त्री कहती है -

''सारे जरि कळते रे सहज मला कळते
नारी ही तुझ्या एखादया शब्दाने, स्पर्शाने
एखादया करण्याने
जिवापास दुखते रे, फार फार दुखते''[328]

स्त्री के संवेदनशील मन के दर्शन यहाँ होते हैं। अपना साजन अपने पर कितना भी गुस्सा किया, तो भी उसका प्रेम कम नहीं होता। पति उसके जीवन का अविभाज्य इकाई है। 'आले उदास गगन' की स्त्री साजन समीप न होने के कारण उदास होकर कहती है -

''आले उदास गगन तिचे वनवासी मन
नाही जवळ सजन''[329]

प्रियकर के याद से व्याकुल हो उठी प्रेयसी की अवस्था देखिए -

''त्याची ओढ स्पष्ट स्पष्ट, अगदी स्पष्ट कळतेय
ती एकाकी एकाकीच कासावीस होतेय''[330]

उदासीनता का अनुभव लेनेवाली स्त्री हताश होकर कहती है -

''शाश्वती नाही की, ओलांडता येईल तुझी उदासिनता
अन् इथे किती भरुन आलंय मन तुझ्याकरता''[331]

'प्रसार'कविता की प्रेयसी प्रियकर के प्रेम से सुध बिसरी हुई है, वह उसके साथ जन्म-जन्मांतर का रिश्ता जोडने के लिए तैयार है। उसे मिला हुआ प्रियकर समझदार है इसलिए -

''करते आहे प्रेम नावाचा सहृदय गुन्हा
पुन्हा पुन्हा''[332]

328) ढेरे अरूणा- मंत्राक्षर, पृ. 15
329) ढेरे अरूणा- मंत्राक्षर, पृ. 50
330) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 23
331) वही, पृ. 49
332) वही, पृ. 94

ऐसा वह कहती है। अरुणा ढ़ेरे की कविता में चित्रित स्त्री अनुभव से समझदार हुई है। प्रियकर पास न होने के कारण होनेवाली बैचेनी, तडपन शांत हुई है। वह अनुभव के अनेक धक्के से संभलती है, समंजस्य और शांत होती है।

''तू जवळ नाहीस म्हणून वेडे दिवस मला छळत नाहीत
तू असतानाही हल्ली जसे ते अंगावर येत नाहीत
..... तू नसतानाही जगणे एवढे सहज आहे
हे केवढे मोलाचे आहे''[333]

अरुणा की कविता में स्त्री मन के विलास की दिशा स्पष्ट दिखाई देती है। शुरुवात की भाव व्याकुलता, उत्कटता, बाद की कविता में शांत, संयत, समझदार होते गये हैं। अरुणा ढ़ेरे की कविता के संबंध मे मीना वैशंपायन कहती है - '' अरुणा ढ़ेरे की कविताओं का समय की दृष्टि से विचार किया जाए तो ऐसा दिखाई देता है कि उनकी प्रारंभिक कविता स्वयं के अथवा औरों के वैयक्तिक सुख-दुःख से संबंधित हैं, परंतु बाद में वे वैयक्तिकता से समाज की ओर झुकी हुई है।''[334]

उम्र में आयी हुअी कुमारिका का भी चित्रण कवियत्री ने किया है। जवानी से परिपूर्ण विवाहोत्सुक कुमारिका कहती है -

''मी ही पदर आलेली चोळी जरीची ल्यालेली
लाल काकणांच्यासाठी रक्तकमळे गुंफली''[335]

'सजण चाहूल' कविता में ससुराल जानेवाली लड़की के अनुभव कवयित्री अरुणा ढ़ेरे रेखांकित करती है -

''ही कसली कातरवेळा
गाढून भाग्य ये हृदयी
झरझरली चंद्रप्रवाही
काठासी रडते जाई''[336]

---

333) ढेरे अरूणा- यक्षरात्र, पृ. 18
334) वैशंपायन मीना- ललित, जुलै 1999, पृ. 38
335) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 22
336) ढेरे अरूणा- यक्षरात्र, पृ. 28

दुःख सहनेवाली और भगवान के सामने मथा टेक कर अपने आपको अभागी समझनेवाली विधवा का चित्रण 'मंत्राक्षर' संग्रह के 'त्वचेचिया राना'कविता में आयी है। कवयित्री कहती है-

''तरुणपण उजाडलं तुला
भगभगीत रित्या कपाळाचे भोग घेवून
पोटाशी पोर घेवून कोंबडीसारखी जगलीस
दिराभावांच्या संसारात पदर टिकवलास शर्थीन
तरी हसू देखील नाही विसरलीस''[337]

कवयित्री अरुणा ढ़ेरे की कविता में पारिवारिक रिश्तों के बीच से आए हुए विविध अनुभव विस्तार से चित्रित हुई है। उनके 'मंत्राक्षर' संग्रह की स्त्री समझदार है। बच्चों के भविष्य का विचार कर वह कठोर बनती है और उन्हें दूर रखती है। बच्चों के संबंध में उसके विचार इसप्रकार की हैं -

''त्यांनी स्वतंत्र वाढावे, तुझ्यावर मोठे व्हावे
तुला ओलांडून त्यांनी नवे असीम झेलावे''[338]

अरुणा की कविता में परिवार से अलग न होनेवाली रिश्तो में अटकी हुई स्त्री दिखायी देती है। वैधव्य में जेठ-भाई के आश्रय में रहकर बच्चों की परिवरिश करनेवाली माँ जब वृद्ध हो जाती है तब बच्चे उसकी सेवा नहीं करते। कीड़े-मकौड़े लगकर मृत्यु को वरण करनेवाली माँ के चेहरे पर अपने बच्चों के प्रति तनिक भी गुस्सा नहीं ऐसी अवस्था में शांत भाव से मृत्यु को स्वीकारनेवाली माँ को देखने के बाद मन आर्द्र हो जाता है।

कवयित्री माँ बेटी के रिश्ते के विविध भाव भी चित्रित करती है -माँ की मृत्यु के बाद याद निकालनेवाली लड़की माँ के लिए किए हुए श्रम का याद करते हुए कहती है -

''जसा आईचा पदर दूर गेला निसटून
तसे शांतवन पुन्हा नाही भेटले फिरुन''[339]

---

337) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 13
338) ढेरे अरूणा- मंत्राक्षर, पृ. 87
339) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 34

जैसे माँ के प्रति बेटी का प्रेमभाव होता है वैसे ही बेटी के प्रति माँ के भाव हैं। लडकी घर देर आते ही गुस्सा करनेवाली माँ दिखायी देती है। जवान बेटी समय पर घर न आने के कारण माँ का मन शक से भर उठता है। यही बेटी जब ससुराल जाती है तब उसे चार दिन के लिए लाना चाहती है क्योंकि उसे सुख मिले, बेटी का भविष्य और सुख की चिंता करनेवाली माँ कहती है -

''चार दिसांवर उभा आलेला श्रावण झुलवा
न्याया पाठवा, तिला माहेरी बोलवा
..... थोडी मिळू दे गारवा, तिला माहेरी बोलवा
सोसायचाच ना आहे पुन्हा वैशाख वणवा''[340]

बेटी के लिए चिंता करनेवाली माँ यहाँ दिखायी देती है।

कवयित्री अरुणा ढ़ेरे की कविता में स्त्री जीवन के विविध अनुभव चित्रित हुए हैं। स्त्रीपर होनेवाला अन्याय सनातन है। समाज व्यवस्था के विरुद्ध भले ही वह पुकार उठे उसका बहुत कुछ उपयोग होता नहीं। इस व्यवस्था में उसे यश प्राप्त होता नहीं। संत जनाबाई पर हुआ अन्याय, सनातनी संस्कृति के विरुद्ध किया हुआ संघर्ष 'जनी' कविता में कवयित्री ने चित्रित किया है -

''आला सणाणा दगड, शिव्या शिव्यांचा कहर
ओठ दाताखाली घेत तिने गिळीले जहर''[341]

जनाबाई ने सनातनी संस्कृति के खिलाफ संघर्ष करते समय जो अन्याय सहा वही अन्याय सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा का कार्य करते समय सहा, यही अनुभव यहाँ होता है। जना ने न्याय माँगने के लिए संस्कृति के द्वार खटखटाई लेकिन उसे न्याय नहीं मिला वह कहती है -

''अशी एकटी तू उभी मोकळा पदर
आणि नीज त्याची गाढ, त्याचे बंद आहे दार''[342]

और अंत तक संस्कृति के द्वार बंद ही रहे। जनाबाई को समाज व्यवस्था से प्राप्त जो दुःख भोगना पडा वह पूरे स्त्री समाज का दुःख है ऐसा लगता है।

---

340) ढेरे अरूणा- यक्षरात्र, पृ. 68
341) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 8
342) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 8

स्त्री जीवन का और एक दुःखपूर्ण घटना उसका परित्यक्ता होना है। आधुनिक कवयित्रियों में अरुणा ढ़ेरे की 'यक्षरात्र' और 'मंत्राक्षर' कविता संग्रह में परित्यक्ता के दुःखमय जीवन का चित्रण हुआ है।

'मंत्राक्षर' में परित्यक्ता के अनुभव सीता के मिथक से अभिव्यक्त किया गया है।

''दोन जीवांची ती आता, तिला चढेना चढण
नाही जवळ सजण
भगभगते कपाळ, तिला कुंकवाचा भोग
दिला सजणाने डाग
अरे, अरण्या वनात, तिने कुणापासी जावे
दुःख कुणाला सांगावे ?
ओठं दाताखाली घेत, तिने सावरले सारे
जरा झाकले निखारे''[343]

सीता के माध्यम से उसके दुःख में मानो सभी परित्यक्ताओं का दुःख समा गया है। वैधव्य स्त्री जीवन में सबसे बडा आघात है इस वैधव्य का चित्रण कवयित्रियों की कविता में काफी गहन और मार्मिक ढ़ंग से प्रकट हुई है।

अरुणा ढ़ेरे की कविता में स्त्री जीवन के अनेक रूप अभिव्यक्त हुए हैं। इसके रेखांकन के लिए उन्होंने 'मुक्तछंद' और 'ओवी' जैसी अन्य छंदोबद्ध रचना प्रकारों का प्रयोग किया है। उसमें उन्होंने प्रमुख रूप से मुक्तछंद का अधिक मात्रा में प्रयोग किया है -

''तुला समजू न शक्कणाऱ्या जाणिवांचे हुंदके
गळाभर दाटून येतात
आवरले नाहीत तर ओठांची थरथर होतात
अन फारच असहय झाले की
कविता होऊन कागदावर ठिबकू लागतात''[344]

अथवा

''जुन्या पुस्तकाच्या पानात ठेवलेल्या

---

343) ढेरे अरूणा- मंत्राक्षर, पृ. 3

344) ढेरे अरूणा- यक्षरात्र, पृ. 3

झगझगीत चांदीसारख्ये आयुष्य
तुझ्याबरोबर जगलेले, आज उलगडून पाहिले
आता त्यातून झरणार नाही आतडयाची माया
पण अजुन ही मन दुख्ररे होते
त्याला हलका स्पर्श करताना''[345]

स्त्री गीतों में चित्रित ओवी को अपनी कविता में जीवित रख्ने का काम अरुणा ढ़ेरे ने किया है। ओवी छंदो में स्त्री जीवन का अविष्कार उन्होंने अत्यंत सहज रूप में किया है। स्त्री गीत की अभिव्यक्ति इसप्रकार है -

''रंगमहाली विठूच्या, वाट पाहते रुक्मिण
चोळी ऐन्याची गुलाबी, निळी नेसली पैठण
..... अर्धी उलटली रात्र, कंथ येईना अजून
वाट पाहता पाहता, गेली पापणी भिजून
.....असा वेडाख्ुळा पति कसा घराला येईना
वाट पाहते रुक्मिण, कुठे थांबला कळेना''[346]

अपने अनुभव व्यक्त करने के लिए कवयित्री कभी-कभी पौराणिक और संतसाहित्य के संदर्भ आधार के रूप में लेती है।

''सुभद्रा होवून जगन्नाथाशेजारी उभे राहता यावे
असे फार फार वाटले
..... बाहय रूप असे तसे, त्याची आसक्ती गळते
तेंव्हा कुठे आत्मबळाने परब्रम्ह पेलवते''[347]

कभी कभी कवयित्री शब्दों की पुनरावृत्ति कर कविता को स्त्री गीत का ढ़ंग और लय प्राप्त करा देती है -

''ढग दाटून येईल येईल
वीज पाठून येईल येईल
..... कंथ शेजारी थांबला थांबला

345) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 65
346) ढेरे अरूणा- निरांजन, पृ. 9
347) वही, पृ. 53

पूर नदीचा वाढला वाढला ’’[348]

कुल मिलाकर आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में कवयित्री अरुणा ढ़ेरे का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। रा.ग.जाधव कहते हैं - ‘‘शब्द का आशय, छंद रचना, गीत के संदर्भ में अरुणा ढ़ेरे की प्रयोगशील दृष्टि उल्लेखनींय सिद्ध होती है। प्रयोगशीलता के लिए पोषक मनन, चिंतन, शब्दशक्ति, काव्यत्त्व, रचनात्मक दृष्टि आदि बाते अरुणा ढ़ेरे ने आत्मसात किया है। आत्मचिकित्सा की दृष्टि भी उनमें है। मराठी काव्य परंपरा का रसिक विश्लेषणात्मक ज्ञान भी उनके पास है उनकी कविता कल के मानुषी कविता के सर्वांगीण प्रयोगशीलता का विश्वास देनेवाली कविता है।’’[349]

इसप्रकार स्त्री और उसके भावजीवन को केंद्र मे रखकर अरुणा ने काव्य लेखन किया है। स्त्री जीवन के अनेक पहलू सहज शैली में अभिव्यक्त हो उठी है।

7:1:54 अश्विनी धोंगडे :

आधुनिक काल में स्त्रीवादी कवयित्री के रूप में अश्विनी धोंगडे का नाम उल्लेखनींय है। आश्विनी धोंगडे ने ‘स्त्रीसूक्त’ (1988) और ‘अन्वय’ (1992) दो काव्यसंग्रह में प्रेमानुभव से अधिक स्त्रीवादी विचार प्रमुख रूप से चित्रित किया है। स्त्री का घुटन यही स्त्रीसूक्त का महत्त्वपूर्ण आशयसूत्र है। उनकी कविता में सफल और असफल प्रेम का चित्रण हुआ है। इस चित्रण में प्रेम क्रींड़ा, प्रेममय रिश्ते में उलझन, टूटे हुए अहसास ऐसे कुछ इने-गिने भाव दिखाई देते हैं। प्रेम में हार-जीत रहता नहीं ऐसा कहते ही जाने पहचाने चेहरे एक ही घर में रहते हुए भी मन से एक-दूसरे से काफी दूर जाते हैं। एक दूसरे को समझ लेने की समझदारी उस समय समाप्त हो जाती है। अश्विनी की कविता में चित्रीत प्रेयसी कहती है -

‘‘माझ्या घराचे प्रवेशद्वार
उंच तुझ्या व्यक्तिमत्वाइतके
तुझी उंची दरक्षणी
दारापेक्षा वाढणारी’’[350]

‘‘तुझ्या घरात प्रवेश मिळावा

348) ढेरे अरुणा- निरांजन , पृ. 15
349) जाधव रा.ग. - आधुनिक मराठी कवयित्रींची कविता, पृ. 128
350) धोंगडे अश्विनी- अन्वय, पृ. 30

म्हणून मान वाकवून वाकवून
माझ्या पाठीचा कणा
कायमचा वाकून गेला''[351]

विधवा के दु:खमय जीवन का चित्रण अश्विनी धोंगडे की कविता में हुआ है। 'दोन मुलांची आई' कविता में विधवा स्त्री कें दु:ख का चित्रण किया गया हैं। वे दोनों आजीवन कष्ट सहकर, कर्जा चुकाकर आयु के अंतिम पाड़ाव में घर बांधते हैं। लेकिन घर में जाने से पहले ही पति मर जाता है। फलस्वरुप बच्चे और घर की जिम्मेदारी उस पर आ पड़ती है। पति निधन के बाद यह विधवा स्त्री बच्चों को पढ़ाकर नौकरी लगाती है। आगे पढ़े लिखे लड़के और बहू को ये बुढ़ी बोझ बन जाती है, इसके बारे में उनके मन मे नकार है, ऐसे असह्य विधवा के संबंध में कवयित्री लिखती है -

''तशी तिला दोन मुले आहेत
दोघे ही भाग्यवान आहेत....
प्रायव्हसीची कल्पना आहे
याची (कधी मधी) आठवण आहे
अधून-मधून तिला साडी घेवून
आपले कर्तव्य पार पाडले आहे''[352]

सिर्फ कर्तव्य समझकर देखने वाले लड़के हैं यही उस माँ का दु:ख है उसे जो प्रेम चाहिए, अपनत्व चाहिए वह नही मिलता यह स्पष्ट दिखायी देती है।

अश्विनी की कविता में पारिवारिक रिश्ते-नाते से आए हुए विविध अनुभव चित्रित हुए हैं। विशेषत: माँ के दर्द का चित्रण कवयित्री ने किया है। आज विभक्त पारिवारिक पद्धति और प्लैट संस्कृति में वृद्ध माता-पिता को रहने के लिए जगह नहीं इसलिए वे देहात में रहते हैं यही ठीक है, ऐसा लड़कों को लगता है। जरुरत पडने पर माता पिता को पास रखा जाता है और जरुरत समाप्त होने के बाद हकाल दिया जाता है। हकाल देनेवाले बेटे और बहू का चित्र कवयित्री खींचती है।

'वाटणी' कविता में चित्रित माँ अपने तीनों बच्चों को पढ़ाती है, नौकरी लगाती है लेकिन बाद मे माँ उन्हे बोझ लगती है। कुछ न कुछ बहाना करके माँ अपने पास न

351) धोंगडे अश्विनी - अन्वय, पृ. 30
352) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 29

रहकर दूसरे बेटे के पास रहने जाना चाहिए ऐसा उन्हें लगता है। माँ के त्यागमय जीवन को न जाननेवाले स्वार्थपूर्ण संबंध रखनेवाले लडके यहाँ दिखाई देते हैं। फुटबॉल की तरह माँ की अवस्था हो जाती है तो भी तृप्त माँ यहाँ दिखायी देती है -

''प्रत्येकाला शिकवला
आपल्या पायावर उभा केला
आवडत्या मुलींबरोबर
संसार थाटून दिला
सगळेच मला म्हणतात
आता आमच्याकडे ये रहायला
प्रेम त्यांचे इतके तरी
का ग पाणी तिच्या डोळयाला ?''[353]

'अन्वय' कविता संग्रह की 'या नव्या सुंदर जगात' कविता की माँ अपने बच्चों के उज्वल भविष्य की चिंता करती है। भागदौड, भ्रष्टाचार, डोनेशन जैसी इस दुनिया में बच्चे के भविष्य का विचार करनेवाली माँ यहाँ दिखायी देती है।

विवाहित स्त्री का दुःख, छल के फलस्वरुप होनेवाली उसकी आत्महत्या, हत्या का सशक्त चित्रण कवयित्री आश्विनी धोंडगे ने की है। पति-पत्नी के बीच का संघर्ष पत्नी की हत्या, छल ऐसे अनेक घटनाएँ स्त्री जीवन में घटीत होते रहती है और पुरुष इस घटना से बाईज्जत बरी होते हैं।

'बातम्या' कविता में कवयित्री ने इसी बात पर चिंता प्रकट की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी बार बार घटित होनेवाले इन घटनाओं को देखने के बाद कवयित्री ने जान बुझकर इस प्रश्न को अपनी कविता मे उठाया है। उनकी कविता में एक ओर ससुराल में बहू का होनेवाला छल दिखता है, तो दूसरी ओर गरीब असहाय सास को समझ न लेनेवाली बहू दिखती है -

''धाकटयाची बायको
सासूशी जमवून घेत नाही
माझी आपली गरीब गाय

353) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 49

हा माझा दोष काय?''[354]

अश्विनी धोंगडे की कविता की स्त्री अनेक बार अनेक रिश्ते संभालने के लिए प्रयत्नशील दिखायी देती है -

''तू कोण बाई
इकडची जाई
तू कोण बाई
मी दोन मुलांची आई
तू कोण बाई
मी सासू सासऱ्याची दाई
तू कोण बाई ?
माझ मलाच ठाऊक नाही.''[355]

पत्नी, माँ, दाई आदि विविध भूमिका निभाते समय उसके लिए कोई शेष नहीं रहता। हर एक के जरुरते पूरा करते समय वह एक मिनी कम्प्युटर है ऐसा लगने लगता है। नौकरी से आने के बाद घर के लिए कष्ट सहनेवाली वह होटल के वेटर से अलग कोई नहीं रहती। उसका मूड रहे या न रहे उसे सबके लिए प्रसन्न रहना ही पडता है। 'गृहिणी' कविता में कवयित्री इसप्रकार रेखांकित करती है -

''तीचा मूड असो वा नसो
भोंग्याच्या खांबासारखी ती असते मध्यावर
ती असते हक्काची सर्वांच्या
पण तिचा हक्क नसतो कोणावर''[356]

स्त्री का अकेलापन एक अलग पद्धति से चित्रित करने का प्रयत्न अश्विनी की कविता में दिखाई देता है।

'स्त्रीसूक्त' और 'अन्वय' में नौकरी - व्यवसाय से संबधित स्त्री के अनुभव व्यक्त हुए हैं। नौकरी करते हुए स्त्री धक्के खाते, धक्के देते लोकल में यात्रा करती है। लोकल में ही तरकारी चुनती है, स्वेटर बुनती है, घर में आकर घर के सभी काम

354) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 49
355) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 14
356) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 31

करती है। इस समय वह मानो वेटर की भूमिका निभाती है। घड़ी के काटे के समान उसका समय निश्चित है। ऑफिस से आने के बाद अथवा छुट्टी के दिन क्या क्या करना है। यही उसका दिनविशेष है। नौकरी पेश्या स्त्री को घरकाम और जिम्मेदारी से छुटकारा नहीं। पत्नी की भूमिका निभाते समय उसके मन की होनेवाली अवस्था इसप्रकार है-

''नोकरीवरुन दमून आल्यावरही
स्वयपाक करावा साग्र संगीत
रात्री ही जागत बसावे
त्याचे पाय हलके चुरीत
बायकोने असावे
बायको सारखे
ब्रेक ड्रायव्हरच्या हाती देऊन
निमूट पळणाऱ्या स्कुटरसारखे''[357]

ऑफिस, घर, और संसार संभालते समय स्त्री की होने वाली अवस्था, भागदौड़ का चित्रण कवयित्री करती है-

''डोळे मिटू मिटू झालेले
वाट पाहणारे थंड काळोखाची
देणे दिल्यासारखे ती देते शरीर ही
रोजच्या कामाचा एक भाग म्हणून
तेंव्हा ही तीच्या मनात धावत असते
सात सत्तावनची फास्ट लोकल
गर्दीत पळणारे पाय
अर्धवट निवडलेली भाजी
संपत आलेला गॅस
आणि इतर बरेच कांही.....''[358]

---

357) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 23

358) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 57

नौकरीपेश्या स्त्री जल्द छुट्टी मिलने के लिए कुछ खास प्रयत्न करनेवाली दिखती नहीं। साहब से अपना काम करा लेने के लिए प्रसंगानुकूल वह देह प्रदर्शन भी करती है -

''रजा संपल्या आहेत
थोडे लौकर घरी जायचे आहे
केबिनमध्ये साहेबाची परवानगी घेताना
तिचा पदर किंचित घसरला आहे
त्याने तिचे पेपर तपासले
यादी करुन गड्डे बांधले
गोड हसून थँक्यू म्हणत
तिने शेकहँड चे बक्षीस दिले''[359]

नौकरीपेश्या स्त्री के अनुभव सूक्ष्म दृष्टि से कवयित्री ने चित्रित की है।

'अन्वय' और पूर्ण रूप से स्त्रीवादी भूमिका लेकर स्त्री चित्रण करनेवाली 'स्त्रीसूक्त' की निर्माति अश्विनी धोंगडे की कविता में स्पष्ट रूप से स्त्रीवादी विचार अभिव्यक्त हुई है। स्त्रीत्व के बीच की रुकावट को दूर कर इन्सानियत का अधिकार प्राप्त करानेवाली स्त्री उनकी कविता में दिखायी देती है। अनेक स्तर पर स्त्री लुटी जा रही है। कोई उसे बुरी नजर से देखता है, कोई चर्चा से सहवास सुख प्राप्त करता है। जीवन के इस आपा-धापी में हम अपना सुख गँवाने लगे हैं यह धोंगडे की कविता में चित्रित स्त्री के समझ में आने लगा है। घर में अपना स्थान केंद्र में होने के बावजूद भी अपना कोई नहीं यह अहसास उसे हुआ है। अश्विनी की कविता स्त्री की मर्यादा और सामर्थ्य व्यक्त करनेवाली है -

''एक कोपरा राखून ठेव
स्वत:च्या स्वत:साठी
बऱ्या होत नसतात कधीच
वेदनेच्या जन्मगाठी
.....
रहा रोवून आपले पाय

359) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 52

निसटत्या वाळूवरही घट्ट रोवून
तू सुद्धा आहेस पुरुषाइतकीच महत्वाची स्त्री
हे एकदा साऱ्या जगाला दे सिद्ध करुन''[360]

'विमुक्ता' कविता में चित्रित स्त्री स्वयं के साथ लड़ती झगड़ती है। स्वयं में से ही प्रकट होकर अनेक स्त्रियों की श्वास मुक्त करनेवाली विमुक्ता होती है। इन्सान का इस दुनिया में आना-जाना उसके हाथ में नहीं, लेकिन उसका कर्तव्य उसके हाथ में है, स्त्री भी अपवाद नहीं है -

''माझे इथे असणे नसणे
कोण आधीच ठरवून गेले
पण तसे मला एक मन मिळाले
फक्त माझ्या चालीने चालणारे
एक मीपण मिळाले
माझ्याच हाताने घडणारे
एक प्रतिभेचे एवढेसे पीस
कुंपणापलीकडचे उडणारे
विचारांचे एक धगधगते हृदय
कोणते ही आक्रमण थोपवणारे''[361]

कवयित्री अश्विनी धोंगडे की कविता में सशक्त स्त्रीवादी भूमिका प्रकट होते हुए दिखाई देती है। स्त्री अध्ययनकर्त्री कवयित्री अश्विनी धोंगडे कहती है - ''स्त्री को पुरुष के बराबर स्थान मिलना यह काफी दूर की और अनेक वर्षोंतक चलनेवाली, फिर भी असंभव लगनेवाली होने के कारण यह लढ़ाई चिरकाल तक टिकनेवाली है। ''[362]

अश्विनी धोंगडे की स्त्री विषयक विचार स्वीकार करते समय ही स्त्री मुक्ति के संदर्भ में रा. ग. जाधव के विचार भी उल्लेखनींय लगते हैं - ''स्त्री मुक्ति यह एक क्रांति है लेकिन वह केवल मूर्तिभंजक, ध्वंसात्मक स्वरुप का नहीं, वह केवल मुक्ति रह हीं नहीं सकती। हर मुक्ति कुछ मर्यादा के सापेक्षता से ही मुक्ति सिद्ध होती है। पुरुष रुपी महिषासूर को पैरोंतले कुचलकर स्त्री मुक्ति सिद्ध नहीं होती क्योंकि स्त्री पुरुष ये

---

360) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 55
361) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. कविता क्र. 23

एक परस्पर पूरक द्वंद्व हैं। एक अर्थ से जीवन को संभालनेवाली द्विध्रुवात्मक रिश्ता उनमें है।''[363]

स्त्री जीवन का विविध आयामों से दर्शन करानेवाली कवयित्री अश्विनी धोंगडे विविध काव्य प्रकारों में काव्यलेखन किया है । अपनी कविता प्रभावपूर्ण सिद्ध कराने के लिए उन्होंने अनेक अविष्कार पद्धतियों का जान बुझकर प्रयोग किया है। समाचार पत्र के समाचार, दिनविशेष, विज्ञापन, कम्प्यूटर, जवाब पद्धति, किराणा की सूचि आदि अनेक प्रयोग उन्होंने किया है। जैसे -

''घरगुती भांडणातून पत्नीचा खून
विवाहितेच्या छळ आरोपातून
सबळ पुराव्याअभावी मुक्तता
जाचास कंटाळून विवाहितेची मुलासह आत्महत्या
अंधश्रद्धेचा गैरफायदा घेवून
बुवाबाजी करणाऱ्यास अटक
महिलांसी अनैतिक संबंध
दीडसे महिलांना फसविले''[364]

दिनविशेष -

''आजचा दिनविशेष
ऑफिसमधून आल्यावर
लिंबाचे लोणचे घालणे
उदयाचा विशेष
कॉलेजमधून आल्यावर
कुडर्याला गहू भिजविणे''[365]

काम और किराणा की सूची-

''तांदूळ- 5 किलो
गहू - 10 किलो

362) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीवादी समिक्षा: स्वरूप व उपाययोजना, पृ. 109
363) जाधव रा.ग. - साहित्य व सामाजिक संदर्भ, पृ. 186
364) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 8
365) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 6

..... भाव दिवसेंदिवस भडकताहेत

यादीत थोडी काटछाट करायला हवी

ह. डाळ 3 किलो

तूरडाळ 2 किलो

विजेचे बील भरायचंय

एल. आय. सी. चा चेक लिहायचय

किती वर्षांनुवर्षे करायची तीच यादी

कंटाळा 1 किलो

वैताग 2 किलो ''[366]

विज्ञापन -

''वधू पाहिजे - उंची 5 फुट 3 इंच

वय 21 वर्षे

स्वच्छ गोरी कोवळी

देखणी सडपातळ बांध्याची

.....(सर्व पैसे नवऱ्याकडे ठेवणारी)

वर पाहिजे - कोणतीही अट नाही

(फक्त पुरुष हवा) प्रौढ प्रथमवर

सापत्य विधुर, कोणी ही चालेले''[367]

विज्ञापन एक दूसरे के विरुद्ध होने के कारण एक पल में समजनेवाली है। कविता का अध्ययन करने के बाद ऐसा महसूस होता है कि ये कविता आसानता की ओर अधिक झुकी हुई है। इसलिए परिणामकारकता में वृद्धि हो तो भी काव्यात्मकता नष्ट होती है। उपालंभ के माध्यम से उन्होंने वेदना बताने का प्रयत्न किया है । 'स्थितप्रज्ञ आपण सारे' कविता में उपालंभ का यह भाव अधिक स्पष्ट हो जाता है -

''इराकने सौदी अरेबियावर

पुन्हा स्कड क्षेपणास्त्रे सोडली

आई वाढ ना लौकर भूक लागलीय

366) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 10

367) धोंगडे अश्विनी - स्त्रीसूक्त, पृ. 32

मित्र राष्ट्रांचा जोरदार प्रतिहल्ला
मानवी वस्तीवर तुफानी बॉंबफेक
हजारो इराकी नागरीक
मेल्याची भिती व्यक्त
पुलावचा बाऊल इकडे देना
पंजाबात अतिरेक्याकडून
अड्डावीस जणांची हत्या
मृतांच्या कुटुंबियांना भरघोस
सरकारी मदत जाहीर
मला श्रीखंड ठेवा हं थोडं''[368]

इन समाचारों के विषय और घर के वातावरण के विसंगति को अचूकता से पकडा गया है।

आज की स्त्री किस स्तर पर है इसका अहसास कवयित्री अश्विनी धोंगडे अपनी कविता के माध्यम से करा दिया है।

7:1:55 आसावरी काकडे :

सुसंस्कृत, सौंदर्य रुपी मन की बहुत ही सहज चित्रण कर मन की अनेक सूक्ष्म चित्र खींचनेवाली कवयित्री आसावरी काकडे की 'आरसा' (1991), 'लाहो' (1995) आदि प्रसिद्ध कविता संग्रह हैं। इनकी कविता में चिंतनशीलता प्रकट हुई है। प्रियकर का प्रेम वह सह सकती है क्या? इस विचार से घबरायी हुई प्रेयसी दिखाई देती है। आसावरी की कविता में चित्रित स्त्री समझदार और सहनशील है -

''दुःख देतं, ते प्रेम नव्हे
हक्क सांगते ते प्रेम नव्हे
प्रेम म्हणजे समजून घेणे
न सांगता
प्रेम म्हणजे ममत्व सोडणं
न सांगता''[369]

368) धोंगडे अश्विनी - अन्वय, पृ. 41
369) काकडे आसावरी- आरसा, पृ. 64

प्रेम विषयक भूमिका उल्लेखनींय हैं। प्यार में दिए हुए वचन पूरे किए जाते ही हैं ऐसा नहीं। एक भूले हुए वचन के संबंध में प्रेयसी कहती है -

''आपलं पीस उपटून काढताना
होणाऱ्या यातना
मी नाही सोसू शकणार
हातात हात घालून
चालू लागण्यापूर्वीच
मी हे कबूल केलेलं
आणि तू स्वीकारलेलं
किती सहज विसरलास''[370]

प्रेम की मस्ती कम होते ही झगड़ा, वाद-विवाद की शुरुवात हो जाती है। संघर्ष से प्यार बढ़ता है, ऐसा कहा जाता है, लेकिन कभी कभी मन दुःखाया जाता है। दोनों में आनेवाली अलगता को इन्कार नहीं किया जाता। आसावरी की समज मे चित्रित अनुभव इससे अलग है।वह उससे संघर्ष करती है लेकिन पहले जैसा चढ़ा हुआ आवाज नहीं हैं। वे दोनों अब समझदार हो गये हैं। वह कहती है –

''आपल्या हातून निसटून गेलेल्या संवत्सरांनी
जाता जाता समंजसपणाची शाल
आपल्यावर पांघरली आहे ?
की बरेच श्रावण बरसून गेल्यावर
आता सरावाने कोसळणाऱ्या पावसात
तितकासा आवेग उरलेला नाही''[371]

कवयित्री आसावरी काकडे की कविता में चित्रित विधवा स्त्री आक्रोष न करते हुए समझदारी से दुःख सहती है, स्वयं को संभलने का प्रयत्न करती है, क्योंकि उसे ज्ञात है -

''हळू हळू पांगतील सारे समजवणारे

370) काकडे आसावरी- आरसा, पृ. 42
371) काकडे आसावरी- आकाश, पृ. 29

मायेचे हात होतील कठोर
बघता बघता निवळेल आकाश
..... मग अख्ख्या आयुष्याला सामोरं जाताना
प्रत्येक क्षणी ती एकटीच असेल !''[372]

जीवन में अनेक बार प्रयत्न करने पर भी जुड़े हुए रिश्ते टिकते नहीं। काफी समय इसमें दुश्मनी आती है। यह दुश्मनी समझदारी से सहना पड़ता है। रिश्ते संभालने के व्यर्थ प्रयत्न को कवयित्री इसप्रकार चित्रित करती है -

''जुनी झाली की विरतात
नाती सुद्धा
किती ही काळजीपूर्वक विणलेली असली तरी
किंवा समंजसपणाच्या धाग्यांनी
पुन्हा पुन्हा सांधली तरी''[373]

स्त्रीवादी विचारों की दिशा खोजने का प्रयत्न कवयित्री ने 'आरसा' (1990), 'आकाश' (1991), 'लाहो' (1995) आदि कविता संग्रह में किया है। आसावरी काकडे की कविता में चित्रित स्त्री मूल में सोशिक और समझदार है। घर कें लोगों को समझ लेकर, उनकी सेवा करनेवाली उनके आनंद में ही अपना आनंद ढूँढ़नेवाली स्त्री दिखाई देती है। यह सब करते समय स्वयं को कभी खोजने का प्रयत्न नहीं किया था लेकिन -

''आता मी स्वत:ला शोधतेय
कुणास ठाऊक सापडेन की नाही''[374]

ऐसा उसे शक लगता है। स्वतंत्र विचार से जीवन जीते समय संसार मे तुफान आयेगी क्या ? ऐसा उसे डर लगता है। अपने मन के अनुसार दुनिया को झुकाने की ताकद उसके पास है लेकिन वह समझदार है, इसलिए क्रांति करती नहीं। स्त्रीवादी विचार से स्वतंत्र जीवन जीनेवाली स्त्री और पारंपारिक स्त्री के संबंध मे समाज के प्रतिक्रियाओं का वह विचार करती है। उसे दिखायी देता है -

''या तथाकथित मनुसंस्कृतित

372) काकडे आसावरी- आकाश, पृ. 58
373) काकडे आसावरी- आकाश, पृ. 43
374) काकडे आसावरी- आरसा, पृ. 48

तिच्या मोकळया श्वासांना किंमत नाही
जी घुसमटीला आहे
तिच्या कर्तृत्ववान आकाशाला प्रतिष्ठा नाही
जी दबलेल्या घरांना आहे !''[375]

अंत में यह स्त्री अपने साथी को स्वयं के पैरोंपर खडे रहने का ताकद माँगती है। उसके बराबर जीने का इच्छा व्यक्त करती है। आसावरी काकड़े की कविता में अपने व्यक्तित्व को स्वतंत्र खोजने की ताकद है लेकिन वह बीच में ही लड़खडाते हुए दिखायी देती है।

आसावरी काकडे की 'आरसा' (1990), 'आकाश' (1991), 'लाहो' (1995) काव्य संग्रहो में छन्दोबद्ध और मुक्तछांदात्मक काव्य रचना दिखाई देती है। उनकी कविता में भावविश्व का सुंदर अंकन करने का प्रयत्न दिखाई देता है। स्त्री मन की संवेदनशील वेदना उन्होंने व्यक्त किया है। उनकी कविता पर संवाद प्रिय शैली का प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कविता आकार से छोटी हो तो भी अल्पाक्षरमणीय हैं-

''पांढऱ्या ढगांना
काळा रंग देवून
पाऊस पाडता येणार नाही !''[376]

अथवा

''मी स्वतः साक्षी आहे
पण कळत नाहीय
कांही उगवते आहे नव्याने
जमिनीचे निबरकवच फोडून''[377]

अथवा

'' वर्षे
नुसती जात नाहीत कधी
जाताना देवून जातात
त्वचेला एकेक सुरकुती''[378]

---

375) काकडे आसावरी- आरसा, पृ. 12

376) काकडे आसावरी- आरसा, पृ. 22

377) काकडे आसावरी- लाहो, पृ.11

आसावरी काकडे की कविता पारंपारिक भावकविता से रिश्ता रखकर भी स्त्री मुक्ति के काल में स्त्री पर विचार करनेवाली है। स्वयं को आये हुए अनुभव उन्होंने व्यक्त किया है ।

7:1:56 माधवी देसाई :

कवयित्री माधवी देसाई की 'चकवा' (1986) और 'घर माणसांच' (1991) कविता संग्रह में चित्रित भावानुभव आत्मकेंद्रित और समाजाभिमुख हैं। स्त्री के अनेक भावविश्व उन्होंने खोलकर दिखाया है। उनकी 'चकवा' संग्रह की स्त्री स्वप्निल और भावुक दिखायी देती है। रास्ते पर चलनेवाला सौदागर उसके मन को सहज आकर्षित करा लेता है। उसके जाल में वह सहज फँस जाती है। समझ में आने के बाद वह बाहर पड़ना चाहती है और वह फँसते जाती है। 'प्रतिबिंब' कविता की स्त्री कहती है -

''जीवनाच्या वास्तव आरशात
प्रीतीचे भयाण रुप
भिजलेले मन मिटूनमिटून पाहते
स्वप्नवेलींचे रिते रुप''[379]

'घर माणसांच' (1991) कविता संग्रह में घर माणसांचे और घर तुळसीचे दो दीर्घ कविताएँ हैं। घर और तुलस को लेकर स्त्री जीवन के कटू अनुभव उन्होंने चित्रित किया है । बिखरी हुई प्रेम कहानी इस कवितामें व्यक्त हुई है। 'तुलस' कविता में अन्याय, अत्याचार से पीडित हिंदू स्त्री के दुःख दर्द का चित्रण है -

''स्त्री जातीची रीत अशी का असावी
जात्यावरच्या दळणांत तीच भरडून जावी ?''[380]

स्त्री दुःख को मर्यादा नहीं इसलिए आगे वह तुलसी स्वतंत्र होने का सलाह देती है और अपेक्षा भी व्यक्त करती है।

कवयित्री माधवी देसाई की कविता में मातृत्व शाप की वरदान पर विचार करनेवाली माँ दिखाई देती है -

''मंगल सुखद अनुभूतीनं नटलेलं
वेदनेतून जीवन घडवणारं ..... मातृत्व

---

378) काकडे आसावरी- लाहो, पृ. 85
379) देसाई माधवी- चकवा, पृ. 42
380) देसाई माधवी- घर माणसांचं, पृ. 50

जीवन पंगू करुन टाकणारं
खोटया आभासापायी जगवणारं..... मातृत्व
..... जीवनभर वेदना सोसणारं
जळून जीवन फुलवणारं .... मातृत्व
असहाय ..... एकाकी ..... अबोल
समर्पणात सुख मानणारं ..... मातृत्व
वरदानातून शापदग्ध करणारं
मातृत्व ''[381]

'अशी कशी तू' कविता में मजदुरी करनेवाली स्त्री का चित्र कवयित्री खींचती है-

''माहेरची वाट कधी भेटलीच नाही
केसांना कधी तेल लागलंच नाही
नवीन सावळं कधी ल्यालीच नाहीस
आठवडयाची मजुरी देतेस न् म्हणतेस
पैसं आनल्यात धनी, घेतासा न्हवं ?''[382]

पति की पिटाई, उसका शराब पीना, सब भूलकर पति के शरणमें गयी हुई देहाती मजदूर स्त्री यहाँ दिखायी देती है।

माधवी देसाई की 'चकवा' (1986) और 'घर माणसांच' (1991) काव्य संग्रह में छंदोबद्ध भावकविता, दीर्घकविता आदि काव्यप्रकारों का प्रयोग किया गया है। स्त्री जीवन की वेदना व्यक्त करनेवाली 'अशी कशी तू' कविता में नाटयात्मक संवाद प्रभावपूर्ण अभिव्यक्त हुए हैं -

''कालचं भी मारझोड विसरुन जातेस
अंगावरचे वळ पदराआड लपवतेस
डोळयातले आसू गिळून टाकतेस
सकाळी उठतेस न त्याला म्हणतेस

381) देसाई माधवी- चकवा, पृ. 37
382) वही, पृ. 17

''च्या झालाय धनी, घेतासा न्हवं ?''[383]

'घर' और 'तुलस' में जीवनानुभव से संबंधित दो व्यक्ति की कल्पना कवयित्री करती है -

''माणसांमधले उसवत गेलेले प्रीतीचे धागे बघताना
घर कमालीचे उदास होतं
फिक्या पांढऱ्या भिंतीसोबत
डोळे मिटून उगीच स्तब्ध होतं'' [384]

अथवा

मी तुळसी धरतीची कन्या
तापून, झोडपून, तडकून, सुकून
पुन्हा पुन्हा जळणारी, फुलणारी
नव्या रोपासाठी''[385]

उनकी कविता में चित्रित तुलस सब दर्द सहकर नवसृजन के लिए प्राणार्पण करनेवाली है।

स्त्री जीवन के विविध रूप, विविध अनुभव सीधी, सरल और सुंदर हैं। उसमें एक मिठास है कविता का आशय पाठकों के मन पर परिणाम करनेवाली है, उनकी कविता हृदयस्पर्शी है।

7:1:57 नीरजा :

स्वातंत्र्योत्तर काल में जीवन के सभी क्षेत्रो में परिवर्तन हुआ । जीवन अधिक गतिमान, संघर्षमय और तनावयुक्त बनता गया। स्त्री जीवन में भी विविध परिवर्तन हुए। इस बदलते स्त्री भावविश्व का चित्रण कवयित्री नीरजा ने 'निरन्वय' और 'वेणा' में की है। नीरजा के निरन्वय काव्य संग्रह पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है। नीरजा के काव्य संग्रह में 'प्रतीक्षा' जैसी एखाद् कविता छोड दी तो भावनामय होने के लिए नकार देनेवाली यह कवयित्री है। नीरजा स्त्री की पारंपारिक भूमिका नकारनेवाली प्रेम की विविध रूप अपनी कविता में व्यक्त किया है। 'वेणा' में चित्रित प्रेमानुभव इसप्रकार अभिव्यक्त हुए हैं -

---

383) देसाई माधवी- चकवा, पृ. 17
384) देसाई माधवी- घर माणसांचं, पृ. 17
385) वही, पृ. 55

''तुझ्या ओठाच्या पाकळया
माझ्या अंगातून
तेंव्हा माझ्या प्रत्येक श्वासाने
गायली अगणित गाणी
तुझ्या नावाची''[386]
सख्या !
तुला माहित आहे काय ?
..... खरेच, सख्या !
तू यायला हवे होतेस
भर दुपारी
नुसत्या आठवाने पेटलेला
माझ्या दारातला
लालभडक गुलमोहर पाहायला''[387]

प्रियकर को अत्यंत आतंरिकता से डाला हुआ प्रतिसाद इन कविताओं मे व्यक्त हुआ है। प्रेमसुख में बहनेवाला मन अभिव्यक्त हुआ है।

कवयित्री नीरजा की 'चुडा फुटला तेंव्हा' कविता में विधवा के दु:खद जीवनानुभव का चित्रण हुआ है। पति के मरने के बाद दु:ख से अधिक उसे रुढ़ि परंपरा का बलि किसप्रकार बनाया जाता है इसका चित्रण कवयित्री अंध:विश्वास, रुढ़ि परंपरा का भंडाफोड़ करने के लिए शायद किया है -

"त्या सर्वांनीच
केली सुरुवात
रडण्यास बीभत्स
त्याला जमीनीवर घेतले तेंव्हा
ती शांत आतल्या आत
संपल्यासारखी
मग सारे आक्रंदले
एका सुरात

386) नीरजा - वेणा, पृ. 70
387) वही, पृ. 75

तिला शृंगारा शेवटी
हिरव्या चुडयांनी
अन् पानाफुलांनी
..... ती
हया सगळयापासून दूर
हरवलेली भूतकाळात
अन बावरलेली
भविष्याच्या जाणिवेनं''[388]

नीरजा की कविता में विधवा स्त्री का दुःख और सामाजिक व्यवस्था देखकर मन खीज उठता है।

'प्रिय आईस' कविता में माँ को उद्देश्य में रखकर लिखी गयी नौं कविताओं की माला है। माँ अपने जीवन की कहानी बताती है। वह बहुत कष्ट सहनेवाली, बच्चों पर अपार प्रेम करनेवाली है। कवयित्री माँ मरने के बाद गंगा में अस्थि छोड़ देती है, उस समय कगार पर की चिड़िया के मुख से माँ का बोलने का आभास होता है -

''बुंदीचा लाडू वाटून घ्या पोरं हो
मला आपला
तुकडा ठेवा
कोरडया भाकरीचा''[389]

नीरजा की कविता में चित्रित माँ के संवाद हृदय हिला देने वाली है। माँ का त्याग महत्त्वपूर्ण है, यह त्याग वास्तव लगता है, यहाँ नाटकीयता के दर्शन नहीं होते इसलिए कविताएँ पाठकों को प्रभावित करती है।

नीरजा के कविता की स्त्री अपने रिश्ते-नाते संभालते मन ही मन घुट जाती है और रिश्तेदारों के संबंध में उसके मन में तिरस्कार उत्पन्न हो जाता है। 'जगण्याला काय नाव द्यायचे'? कविता की स्त्री कहती है -

''साऱ्या दुराव्यांची
हे सारे कृत्रिम धागे

388) नीरजा- वेणा, पृ. 63
389) नीरजा- वेणा, पृ. 61

टिचकीने टिचून जाणारे
त्यापेक्षा नागोबाला दूध पाजून
बांधावे पुण्य गाडीला''[390]

पारिवारिक रिश्तों को संभालते समय स्त्री का होनेवाला घुटन नीरजा की कविता में सशक्त रूप से चित्रित हुई है।

कवयित्री नीरजा की कविता से आनेवाला स्त्री जीवन, स्त्री अनुभव अलग हैं। उम्र भर एक ही पुरुष के पास रहना उसे पसंद नहीं। एक व्यक्ति के ताबे में न रहकर वह संसार मुक्त होना चाहती है। स्वेच्छा से वेश्या बनी हुअी स्त्री नीरजा की कविता में चित्रित हुई है -

''शरीर हलकं झालय
फुलासारखं
सगळया जखमा उतरवल्यापासून
इथं येणारा
असतो नवरा
एका रात्रीचा''[391]

जीवन के अनेक अनुभव, प्रतिक्रियाएँ केवल स्त्री पुरुष संबंध तक मर्यादित नहीं, तो समाज, संस्कृति, मानव जीवन और साहित्य आदि की व्यापक चर्चा इसमें हैं । स्त्रीवादी विचारों के अनुभव अत्यंत गहरे हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्री आदर्श के जो मूल्य बनाए गये हैं, वे मूल्य न होकर स्त्री स्वतंत्रता पर घाव करनेवाले हाथियार हैं। स्त्री के स्वतंत्र विचार और विकास के आड़ की बेड़ियाँ हैं, इसलिए नीरजा की कविता इन मूल्यों और आदर्शों का होली करती है -

''माझ्या संस्कृतिने
नजर केलेले स्त्रीत्वाचे आदर्श
जेंव्हा मी पेटवले शब्दानी
तेंव्हा साऱ्या पवित्रता
पेटून उठल्या''[392]

---

390) नीरजा- वेणा, पृ. 51
391) नीरजा- वेणा, पृ. 28
392) नीरजा- वेणा, पृ. 31

मातृत्व स्त्री को मिला हुआ प्रकृति रूपी दान है, यह सही हो तो भी उसकी इच्छा के विरुद्ध किया हुआ मनमानी नीरजा को पसंद नहीं। नीरजा की कविता में स्त्री मन के संदर्भ में चित्रित विद्रोह का विस्फोट पाठकों का हृदय हिला देनेवाला है। पतिव्रता सावित्री पर तो वह तीखा व्यंग्य कसती है। आज के स्त्री जीवन का यह घुटन रुकाने के लिए कवयित्री सावित्री को उद्देश में रखकर कहती है -

''सावित्री बाई
पुन्हा एकदा येऊन जा
हया सत्यवानांनी
केली आहे होळी
आमच्या आयुष्याची
त्यांचे वाढू द्यायचे
हे अनाठायी तण
की संपवायच्या हया वेदना
ते एकदा सांगून जा
ते एकदा सांगून जा''[393]

इन पंक्तियो में चित्रित द्विवरुक्ति उपालंभ की तीव्रता व्यक्त करनेवाली है। रा. ग. जाधव कहते हैं -''काली के ध्वंसात्मक रूप का साक्षात्कार करानेवाली नीरजा की कविता मराठी काव्य में अनन्य साधारण हैं।''[394]

कवयित्री नीरजा ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए मुक्तछंद का अधिक प्रयोग किया है। उनकी कविता में चित्रित स्त्री क्रांतिकारी है। अपने अंतकरण में व्याप्त संताप को व्यक्त करते हुए कहती है -

''तू ही डोळयांवरुन पट्टी बांधून घे
पापं दुर्लक्षिली
की आई होणं फार सोपे असतं ''[395]

नीरजा की कविता क्रांतिकारी है। अनेक बार वही तीखी भाषा में अपना क्रोध प्रकट करती है। पुरुषी प्रवृत्ति का धिक्कार करते-करते कभी-कभी स्त्री ही स्त्री का

393) नीरजा- वेणा, पृ. 49
394) जाधव रा.ग. - आधुनिक मराठी कवयित्रींची कविता, पृ. 26
395) नीरजा- निरन्वय, पृ. 19

शोषण करती है। उसके दुःख का वही जिम्मेदार है। ऐसे विचार उनकी कविता में व्यक्त हुए हैं -

''माझ्या संस्कृतिने
नजर केलेले स्त्रीत्वाचे आदर्श
जेंव्हा मी पेटवले शब्दांनी
तेंव्हा साऱ्या पतिव्रता
पेटून उठल्या
मुस्कट दाबून माझ्या शब्दांचे त्यांनी छाटुन टाकली लेखणी
माझ्या बोटांची''[396]

पौराणिक कहानियों के आधर पर स्त्री के दुःख को उन्होंने अलग-अलग पद्धति से व्यक्त किया है। यम के हात से पति के प्राण लेकर आनेवाली सावित्री ने पतिव्रता की कसौटी ही आज के स्त्री के लिए शेष रखा है। इसलिए सावित्री से प्रश्न करती है-

''माझ्या बये
सत्यवानाने डागले असते
तोंडावर
आणि जाळले असते तुला
तुझ्या बापाच्या राज्यासाठी
तर किती घातल्या असत्या प्रदक्षिणा''
वटलेल्या बुंध्याला?[397]

नीरजा ने भावाभिव्यक्ति के लिए कुछ अलग संवादात्मक शैली का प्रयोग किया है-

''ती म्हणाली,
मी माझ्या काळयाभोर केसांचा
दिवा कर
म्हणजे मग मी तुला वाट दाखविन
माझ्या प्रियकराच्या घराची

396) नीरजा- वेणा, पृ. 31
397) नीरजा- वेणा, पृ. 48

मी म्हंटले''
ते एवढं सोपं नसतं
सगळे मुखवटे ओरबडून काढले असते तुझे
तेंव्हा ती म्हणाली मुर्ख आहेस
स्वातंत्र्याच्या डांगोरे पिटत
गावभर फिरणारा तू,
..... मागे पडलेली तूझी सावली
अलग कर तुझ्यापासून;
म्हणजे मी ही अडखळून पडणार नाही
तुझ्या बरोबर चालताना''[398]

इस प्रकार नीरजा की कविता में स्त्री जीवन के अनेक अनुभव व्यक्त हुए हैं। उनकी कविता में चित्रित सावित्री का मिथक पारंपारिक विचारों के विरूद्ध की क्रांति है। सनातन धर्म में स्थित पतिव्रता का विचार बतानेवाली सावित्री को उन्होंने ठुकरा दिया है। भारतीय स्त्री पर लदा हुआ अमानुष्य पति निष्ठा का उन्होंने तीव्र शब्दों मे निषेध किया है। उनकी भाषा विद्रोही और सनातनी विचारों को सुरुंग लगानेवाली है।

7:1:58 प्रज्ञा लोखंडे :

प्रज्ञा लोखंडे को लेखन का वारिस उनके पिता दया पवार से प्राप्त हुआ है। अत्यंत भावुक और तीव्र संवेदनाओं के गुण उनकी प्रेमानुभव व्यक्त करनेवाली कविता में दिखाई देती है। उनकी कविता में चित्रित प्रेयसी प्रियकर के प्रेम में मिट जाना चाहती है। विफलता का दु:ख उसे पचाना पडा है। दु:ख पचाना कितना कठिन है, यह 'अर्थ' कविता में व्यक्त हुआ है। प्रियकर के बिना प्रेयसी का मन दु:खी हो उठता है। हर दिन वह उसका राह देखती है। उसके न आने से श्याम रुखा-सूखा, और फिका लगता है। कभी कभी उनके बीच के रिश्ते में निर्माण धूल को हटाने का या पोंछने का और नये अंकुर जमा करने का प्रयत्न करती है-

''त्याचा माझ्या नात्यावर
साचलेली धूळ
मी हलकेच पुसते

398) नीरजा- वेणा, पृ. 30

आभाळावर दाटून आलेल्या

काळसर उदास तवंगात

मी नव्याने रूजते.''[399]

प्रज्ञा लोखंडे की कविता में चित्रित प्रेयसी समझदार है। प्रेम विफलता का दुःख सहने का प्रयत्न 'नातं' कविता में करती है-

''जिवापाड जपलेले संदर्भ सगळे

देहावर लपेटून

मी उभी राहते

तुझ्या समोर

आणि तू सहजपणे

नाकारतोस सार कांही

..... मी विस्कटत जाते

आतल्या आत

आणि माझ्या हुंदक्याला

मी शिवून टाकते

अलवार हातांनी''[400]

कवयित्री 'रूप कुँवर' कविता में राजस्थान के उस रूप कुँवर के दुःख का चित्रण करती है जिसे सती जाने के लिए बाध्य किया गया-

''स्त्रीत्वाचा मूक आक्रोश सजवण्यात

धन्य झालेली आपली महान संस्कृति आणि

जोहारापासून सत्तीपर्यंतचा हा प्रवास

इक्कीसवी सदीन तसूभर ही बदलला नाही 'रूपकुँवर''[401]

प्रौढ़ कुमारिका, परित्यक्ता, विधवा और सत्ती आदि विविध अनुभवों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में हुई है। एक स्त्री दूसरे स्त्री का दुःख अधिक समझ सकती है, यह स्पष्ट होता है।

---

399) लोखंडे प्रज्ञा- अंतःस्थ, पृ. 36

400) लोखंडे प्रज्ञा- अंतःस्थ, पृ. 48

401) वही, पृ. 15

'अंत:स्थ' कविता संग्रह में माँ का बोझ हलका करने के लिए बेटा फूल चुनने के लिए जाता है। बेटे का काम माँ के लिए आधार बनता है। एक-दूसरे के आधार पर जिनेवाला बच्चा मातृप्रेम से वंचित हो जाता है, पीच्छे रह जाती है, सिर्फ स्मृतियाँ-

''तिच्यासाठी स्वप्नाचें इमले रचता रचता
अखेर निखळता तिचा श्वास
मागे उरलेल्या त्याच्या हाका,
कोमेजून कोमेजून गेलेल्या...''[402]

कवयित्री प्रज्ञा लोखंडे अपनी कविता के संबंध में स्वयं कहती है- ''दलित कविता की तीसरी - पीढ़ी का प्रतिनिधित्त्व कर स्त्री के दु:ख दर्द को चित्रित करनेवाली यह कविता हु इसकी संरचना ही अलग है।''[403]

दलित आंदोलन में उत्साह से सहभाग लेनेवाली दलित स्त्री की आज की स्थिति 'काजळी' कविता में कवयित्री ने रेखांकित किया है। बगल में बच्चा लेकर, फटे-पुराने कपडे पहनकर, कालाराम मंदीर, चवदार झिल जैसे जगह संसार की चिंता न करते हुए वह आंदोलन में प्रतिभागी बनी। इस क्रांति में बहुत कुछ स्त्रियों ने योगदान दिया लेकिन आज यह क्रांतिचक्र सांस्कृतिक चक्र में गहरे रूप में धँस गया है और अब-

''आता वाढत चाललाय
दिशाहिन कोलाहल
चहुबाजूंनी चिणला जातोय
तुझा बुलंद आवेग
तरी ही
तू निमूटपणे चालतेस
त्यांनी आखून दिलेल्या रस्त्यावरून
तरीही
तू बोलत नाहिस
दबलेल्या हुंकाराबद्दल
रक्ताच्या सुकलेल्या ओघळाबद्दल''[404]

---

402) लोखंडे प्रज्ञा- अंत:स्थ, पृ. 5
403) वही, पृ. मेरे शब्द
404) लोखंडे प्रज्ञा- अंत:स्थ, पृ. 33

उसके सुख पर आया हुआ काजल कब दूर हो जाएगा यह दर्द प्रज्ञा लोखंडे यहाँ व्यक्त करती है।

कवयित्री की स्त्री जीवन के दुःख को देखने की दृष्टि नया अनुभव देनेवाली है। रुपकुँवर, यशोधरा आदि के दुःख का चित्रण उन्होंने किया है-

''यशोधरा जगत राहिली
मातीच्या पावलांनी
पुन्हा पुन्हा झोपवले उन्मत बहर
तिच्या मनाच्या काठावर
.... ती समजावत राहिली
अवघ्या शरिराला ....मनाला...
घट्ट अडसर घातली तिने
आयुष्यातल्या उजाड ऋतुंना''[405]

'रूपकुँवर' का दुःख व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है-

''तू घुसमटत राहिलीस जळत्या लाटांच्या थैमानात
अलवार चांदण्यात पडझडीचा सुगावा लागला तेंव्हा
तेंव्हा फार उशीर झाला असेल रुपकुँवर''[406]

'गोदंण' में स्त्री जीवन का दुःख व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है-

''अवघ्या शरीरभर रुतलेलं
दुःखाच गोंदण
दर नव्या झडीत
तिने अधिकच सावरलेलं''[407]

प्रज्ञा लोखंडे की कविता पाठकों पर प्रभाव डालनेवाली, दुःख को वाणी देनेवाली है।

7:1:59 सुमति लांडे :

कवयित्री सुमति लांडे की 'कमळकाचा' (1993) काव्य-संग्रह में 1978 से 1993 ई. तक करीब पंद्रह साल के जीवनानुभव व्यक्त हुए हैं। उनकी कविता अनेक आयमों

405) लोखंडे प्रज्ञा- अंतःस्थ, पृ. 39
406) लोखंडे प्रज्ञा- अंतःस्थ, पृ. 16
407) वही, पृ. 10

से अभिव्यक्त हुई है। हात से छुटे हुए पल को जीवित करने की शक्ति उनमें है। 'कमळकाचा' संग्रह में असफल प्रेमानुभव बड़ी मात्रा में अभिव्यक्त हुई है। जान की बाजी लगाकर खोजे हुए रास्ते पहचान की होने के बावजूद भी बेपहचान हो जाते हैं। हर श्याम जख्म लेकर आती है, कवयित्री का मन निराश हो जाता है। दुःख से आहत मन को संभालना मुश्किल हो जाता है। इस निराशा से वह अगले विचारतक आ पहुँचती है-

''अलीकडे
तिच्या
बिन छताच्या भिंतीवर
कोरलेली दिसतात
अक्षरे
कोणत्याही पंखाखाली
बांधू नये गाव
कोणत्याही चोचीसाठी
उधळू नये नाव''[408]

ऐसा विचार करने लगती है।

कवयित्री सुमति लांडे 'कमळकाचा' काव्य संग्रह में अपने भावनाओं का अविष्कार मुक्तछंद के माध्यम से की है। साठोत्तरी काल में निर्माण हुई नयी पद्धति यानी कविता को शीर्षक न देना, ऐसी ही कविता सुमति के काव्य-संग्रह में चित्रित हुई है। अनेक पलों को अपनी कविता में उन्होंने जीवित किया है। उसी के साथ एखाद विषय लेकर वह सलगता से कविता में विचार व्यक्त करती है। उदा. 'बारिश' विषय को लेकर अपनी मन की प्रेमभावना तिरपन से सतावन तक लगातार पाँच कविताओं में उन्होंने व्यक्त किया है। इस कविता में चित्रित प्रेमभावना अधिकाधिक गहरा होते गया हुआ दिखायी देता है-

''पाऊस
पदारात
बांधून घेता येत नाही

408) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ. 83

हे

कळण्या इतपत

तिनं

आता

शहाणं व्हायला हवं''[409]

अथवा

''माझ्यातही

एक पाऊस

..... मला

समजत असते

ती

पावसाची भाषा''[410]

सुमति लांडे मुक्तछंद में ही, लेकिन कुछ अलग पद्धति से काव्यरचना की है। अक्षरों के नीचे अक्षर इस पद्धति को देखकर नाराजी व्यक्त करते हुए रा.ग. जाधव कहते हैं- ''कविता का चरण अथवा लाईन भी एक केंद्रिय एकात्मकता की इकाई है। विशेषतः मुक्तछंद के संबंध में तो लाईन कहाँ खंडीत करना, या सही रूप से इसकी शुरुआत कहाँ से होती है, इस ओर ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक सिद्ध होती है। ऐसी बेपरवाही 'चरण' दृष्टि की परिसीमा सुमति के अनेक कविता में दिखाई देती है।''[411]

रा.ग. जाधव का यह विचार सही लगता है, क्योंकि ऐसी रचना से काव्य परिणामकारक होता है, ऐसा नहीं, उलटे काव्य बेड़ौल निश्चित ही दिखायी देती है, जैसे-

''आखं

आयुष्य

उलगडून

टाकलं

---

409) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ. 70

410) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ.73

411) जाधव रा.ग. - आधुनिक मराठी कवयित्रींची कविता, पृ. 132

तुझ्यावर

तू

मात्र

उघडाच

होत

राहिलास

इथे...

तिथे...''[412]

समकालीन कवयित्रियों में अलग काव्य रचना करनेवाली कवयित्री सुमति लांडे की कविता में विफल प्रेमानुभव अधिक मात्रा में व्यक्त हुए हैं। प्रेम विफलता का यह दुःख अंतर्मुख पद्धति से पाठकों तक आती है। उनकी कविता में अभिव्यक्त विफलता इसप्रकार देखा जा सकता है-

''बाहेरची बारा तासांची रात्र

आतला चोवीस तासांचा अंधार

मला एक पणती हवी होती

उजेड समजावून सांगणारी

हे देखील नाकारणारी

नियतीच का ?''[413]

अथवा

''उशी नीट ठेवताना

चुरगळलेलं काळीज

झटकून घेते

प्याल्यातल्या

थेंबाबरोबर

मी

पापण्यांसी

412) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ. 23

413) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ. 28

गोळा झालेलं आभाळ

ओतून देते.’’[414]

स्वप्न और वास्तव के कारण घुटे मन का चित्रण यहाँ व्यक्त हुआ है। प्रेम में विफलता से दु:ख प्राप्त होने के बाद भी कविता में कहीं विशृंखलता दिखाई नहीं देती। इस संग्रह में विफलता से खुलते जानेवाला मन और उस पर समंजस रूप में विजय पानेवाला कवि मन यहाँ व्यक्त होता है। आज के स्त्रीमुक्ति के काल में उनकी यह सहनशीलता अलग लगती है। उनकी कविता अल्पाक्षरमणीय है। कम शब्दो में अनुभव जागृत करने की कला उनकी कविता में है।

7:1:60 मीना गजभिये :

दलितों के दु:ख को वाणी देने का काम कवयित्री मीना गजभिये ‘मूक’ कविता में की है। कविता पढ़ने के बाद ज्ञात होता है कि कवयित्री इसमें दर्द, वेदना चित्रित करने लगी है इसका अहसास होने लगता है। दलित भी कविता द्वारा अपना अनुभव व्यक्त करने लगा है -

‘‘कावळयाचा एक उपयोग पाहिला, झाले मी थक्क

उपाशी लोकांना कावळे खातांना पाहिले मी चक्क

ढोरं खा, गुरे खां, कावळे खा, कुणी केलाय रिवाज

उठत का नाही याविरुध्द अजुनही कुणाचा आवाज?

कावळे खाण्यास मजबूर

त्यांनीच दिलय स्वत: ऐवजी कावळयांना सुळावर

पण मी ज्यांच्यासाठी लिहिते

त्यांच्यापर्यंत आक्रोश माझा गेला नाही

माणसांनी माणसांसारखं रहावं

हे अजून त्यांना कळलेलं नाही

पोटातली भूक त्यांना तसं कळू देणार नाही.’’[415]

414) लांडे सुमति- कमळकाचा, पृ. 46

415) गजभिये मिना- मूक, अस्मितादर्श, अप्रैल, मई, जून, 1976

दलितों के दु:ख को वाणी देने का प्रयत्न कवयित्री ने किया है। लेकिन उसे शक लगने लगा है कि जिनके लिए वह लिखने लगी है उन लोगों तक उसके विचार पहुँचेगे या नहीं।

7:1:61 मीना दीक्षित :

कवयित्री मीना दीक्षित की कविता में समाज चिंतन का स्वर दिखाई देता है। उनकी कविता में विद्रोहवादी विचार, दलितों के दु:ख का चित्रण और रूढ़ि पर आघात आदि 'स्वस्तिक', 'स्वप्न', 'रिकामे देव्हारे', 'बेइमान', 'वांझोटी' कविता में दिखाई देती है। 'वांझोटी' कविता में आज के समाज का यथार्थ चित्रण उन्होंने किया है -

''होत आहे क्रौंचवध लाखांनी
पण आजच्या या वाल्मीकिची
दया आणि चीड
वांझोटी आहे रे वांझोटी''[416]

'स्वस्तिक' में वह कहती है -

''कडाडला आहे आज भाव अप्रामाणिकपणाचा
लावले जात आहे सच्चेपणाला
लेबल बावळटपणाचे''[417]

कवयित्री को लगता है कि इस दुनिया में प्रामाणिकता का मूल्य कम हो गया है। जिसके पास क्षमता है उसे पागल समझा जाता है। झूटे सिक्के बाजार में चल रही है। इसप्रकार दुनिया का कानून विचित्र है।

7:1:62 कमल सोहोनी :

कवयित्री कमल सोहोनी विचार विमर्श के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि - बेकारी, दरिद्रता और मँहगाई दैवि आपत्ति न होकर मानव निर्मित हैं -

''तगमग सारी जीवनकलही, धगधग जीवन पेटतसे
काय म्हणोंनी द्यावी आहुति अंतर्मानास वाटत से।''[418]

'धन्य' कविता में कवयित्री एक भिकारीणी का रेखाचित्र अपने यथार्थ शब्दों में उतारती है। भिकारिणी का जर्जर शरीर, फटे कपडे, भूखा पेट इस अवस्था में वह

---

416) दीक्षित मीना- मीना, पृ. 48
417) वही, पृ. 94,95
418) सोहोनी कमलाबाई- काव्यकमळ, पृ. 58

बच्चों को दूध भी दे नहीं सकती। गरिबों के लिए, देश के विकास के लिए कवयित्री कुछ तो करना चाहती है -

''देशहितासाठी अभिमानाने धावूं
कणकण मातीचा घामाने भिजवूं
बीज विकासाचे उद्योगी रुजवूं
स्वतंत्र प्रगतिचा मार्ग जगा दाखवूं''[419]

चीन आक्रमण, गोवा मुक्ति आंदोलन, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन, आदि विषयों पर कवयित्री ने कलम चलाई है। स्फूर्तिप्रद रचनाएँ लिखी है। अन्याय के विरुद्ध कवयित्री के मन में क्रोध है वह कहती है -

''या राष्ट्राच्या अभिमानाला
गालबोट जर लाविल कोणी
घालू त्याला कंठस्नानहि
तलवारीचे कळेल पाणी''[420]

परतंत्रता नष्ट हो गयी, ब्रिटीशों का वर्चस्व नष्ट हुआ और देश स्वतंत्र हुआ, स्वतंत्रता का सपना सत्य में उतर आया वीरों को पुरसत मिला न मिला तभी चीन ने षड्यंत्र आरंभ कर दिया। आक्रमण की चेतावनी दी यह देखकर कवयित्री आह्वानपूर्वक कहती है -

''काय झाले स्मरत नाही, शाहि शास्ते टिकले नाही
अस्तनीतले निखारें थंड केले सुटले सारें
ब्रिटीश सूर्य गेला पळत, याद राख, जा परत''[421]

इस प्रकार कवयित्री विदेशी आक्रमण कारियों को वापस जाने के लिए कहती है।

7:1:63 मंदा बोडस :

कवयित्री मंदा बोडस और योगिनी जोगळेकर ने बेटी के फलते- फुलते हुए संसार का काफी सुंदर चित्रण किया है। बेटी का व्यवहार फलने लगता है, वह माँ बनने वाली होती है, खत लिखकर वह अपनी माँ को बताती है, माँ आनंदित हो जाती है, आगे की पूरी तैयारी माँ करने लगती है। पोते-पोति की कल्पना से प्रफुलित हो

419) सोहोनी कमलाबाई- काव्यकमळ, पृ. 21
420) सोहनी कमलाबाई- काव्यकमळ, पृ. 34
421) सोहनी कमलाबाई- काव्यकमळ, पृ. 45

जाती है। इसका सूक्ष्म चित्रण करते हुए कवयित्री कहती है-

''नको फुलूस मोगऱ्या इतुक्यात पानोपानी।
माझ्या चंद्रकोरीसाठी हवी रोज ताजी वेणी।
करा पाळणाही नीट बोलावून सुताराला।
आता येणार घरात नंदकिशोर सावळा।''[422]

आज्ञाकारी बहू का चित्रण कवयित्री ने सरसता से किया है। नम्रतापूर्वक बहू अपनी सास से कहती है-

''नका म्हणू सासूबाई
नाही माहेरची रीत
जें जें चुकले ते माझे
नका निंदू माझे गोत
लेकी सारखी होईन
तुम्ही म्हणता आपूली''[423]

'सारे सारे नकली आहे' कविता में कवयित्री मंदा बोडस दंभ पर तीखा व्यंग्य कसती है।

देश में शांति स्थापित करने के लिए प्रयत्न करनेवाली कवयित्री यहाँ दिखाई देती है।

'गंधवेडी' में वह कहती है-

''आमुचा गोवा आम्हा परत द्या
म्हणता देती नकार
आपुल्याच घरी
तेथील जनता बेकार नी लाचार
शरणागत जी अभय त्याजला
संस्कृतीच आमुची
'नेहरु' म्हणती भारत राखील
बाजू न्यायाची

422) बोडस मंदा- गंधवेडी, पृ. 38
423) वही, पृ. 77

पोर्तुगीज हे शत्रू - न आमुचे
वैर न मनि धरणार
शांतीसाठी भारत माझा
सदैव हा झटणार ''[424]

कवयित्री ने भारतीय संस्कृति की महानता का वर्णन यहाँ किया है।

7:1:64 अंजली फडके :

कवयित्री अंजली फडके की 'गीतांजली' संग्रह की सभी भावकविताएँ प्रेमभावना से ओतप्रोत भरी हुई है। 'शपथ तुझी', 'ओंजळीत धरले मी', 'स्वप्ननिळे' में प्रेमभावना से भावविवश होकर प्रियतमा कहती है-

''साक्ष ऐक
बकुळीच्या गंधाची
निळावल्या बोटांची
या प्रेमाला बकुळगंधाची साक्ष''[425]

प्रेममय खेल का अकेलापन समाप्त होता है। वह सबकुछ अपने प्रियकर पर छोड देती है-

''तुझ्याच हाती सारे आता
तूच जाण रे बुरे भले
जळा अर्पिल्या पणतीपरि मी
अस्तित्वापुरती उरले''[426]

इसप्रकार कवयित्री अंजली फडके की प्रेमकविता आत्मचिंतन में लुप्त हो जाती है।

7:1:65 स्नेहलता किनरे :

माँ की महिमा के संदर्भ में स्नेहलता किनरे ने अत्यंत सूक्ष्म वाणी में कहा है कि - पुराने और नये का समन्वय करने की क्षमता माँ में रहता है। 'आई तू' कविता में कवयित्री स्नेहलता किनरे कहती है- ''गगनाचे मोठेपण तीच मापी मापाविण साऱ्या

424) बोडस मंदा- गंधवेडी, पृ. 86
425) फडके अंजली- गीतांजली, पृ.
426) फडके अंजली- गीतांजली, पृ.

विश्वाच्या मूळाला तिने वाहिले जीवन''[427] माँ के प्रति के प्रगल्भ विचार यहाँ व्यक्त की गई है।

स्नेहलता किनरे की कविता में श्रृंगार वर्णन के कुछ कुछ बेशुमार रचना के दर्शन होते हैं। शांता शेळके की तरह धिटाई से वह अपनी भावनाएँ व्यक्त करती है-

''आवळुनि कवळुनि रंगून चुंबिलेस तू स्वच्छंद
नव्हते ठाऊक घाऊक असशील भरुन मकरंद
गाठ मिठीच्या प्रकट बंधनी क्षणात होऊनि निर्बंध''[428]

कवयित्री अखिल दुनिया का भी विचार करती है। चीन आक्रमण के पार्श्वभूमि पर कवयित्री कहती है कि, यह कसौटी का समय है। यह सिर्फ भारत का प्रश्न नहीं है तो अखिल दुनिया का प्रश्न है। और जो जो अपने पास है उसे निज राष्ट्र के लिए अर्पित करने का आह्वान करती है-

''असेल जे जे तुमच्यापासी
ते ते अर्पा निज राष्ट्रासी
खारीसम ही जी थोडीसी
प्रश्न नव्हे हा माझा तुमचा
तसा न केवळ भारत भूचा
प्रश्न असे ही अखिल जगाचा''[429]

कवयित्री अपनी उदार भावना प्रकट करते हुए कहती हैं कि जो अपने पास है वह राष्ट्रहितार्थ अर्पित कर देना चाहिए।

निष्कर्ष :

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य, कवयित्रियों का अनुभव विश्व, उन्होंने प्रयोग में लाया हुआ काव्य-प्रकार, भाषा-शैली, कुल मिलाकर मराठी कविता में उनका स्थान कविता के अध्ययन के बाद मिले हुए निष्कर्ष आदि का विवेचन किया गया है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा दिखाई देता है कि आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में नौकरी

---

427 किनरे स्नेहलता- कण्या, पृ. 32
428 वही, पृ. 20
429 किनरे स्नेहलता- कण्या, पृ. 11, 12

करनेवाली स्त्रियों की संख्या अत्यल्प थी, उसमें भी उच्चवर्णीय समाज के स्त्रियों की संख्या अधिक थी। स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री शिक्षा के प्रसार के कारण, नगर और देहात में स्त्री शिक्षा का प्रमाण बढ़ता गया, और समाज के सभी क्षेत्रों में नौकरी व्यवसाय के लिए घर के बाहर जानेवाली स्त्रियों की संख्या बढ़ती गयी है। स्त्री आत्मविश्वास और सामर्थ्य से सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारी उठा रही है। शिक्षा के कारण उनका संकुचित विश्व व्यापक हुआ। पूरी दुनिया के समाज जीवन का वह अध्ययन कर रही है। आधुनिक काल में स्त्री का अनुभव विश्व बढ़ गया है उन्हें अपने स्वत्त्व का अहसास हुआ है। अन्याय के खिलाफ वह क्रांति करने लगी है। देहाति स्त्री का जीवन अभी भी पारंपारिक पद्धति का है। शिक्षा के कारण थोड़ा-बहुत उनके जीवन में भी सुधार हुआ हो तो भी उसकी मात्रा अत्यंत कम है।

आधुनिक कालीन मराठी कवयित्रियों की कविता का अध्ययन करने के बाद एक बात स्पष्ट हो जाती है कि, इस काल में कवयित्रियों की और उनके काव्य-संग्रहों की संख्या अधिक है। स्वतंत्रता पूर्व कवयित्रियों की काव्य-संग्रह से स्वातंत्र्योत्तर कालीन कवयित्रियों की कविता-संग्रह मात्रा में अधिक है। और इन कवयित्रियों के अनुभवविश्व में वृद्धि होते हुए स्पष्ट दिखाई देती है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य में स्त्री जीवन का अध्ययन, प्रेमानुभव, वैवाहिक जीवन, पारिवारिक नाते-रिश्ते संबंध, नौकरी - व्यवसाय, उपेक्षित समाज, स्त्रीमुक्ति आंदोलन, स्त्रीवादी विचार, प्रकृति-चित्रण, देश प्रेम, भक्ति-भावना, किसान, मजदूर, समाज, संस्कृति, संसार, रूढि परंपरा विरोध आदि विविध प्रकार के अनुभवों को देखने के बाद समझ में आता है की, प्रेमानुभव से संबंधित कविता लिखनेवाली कवयित्रियों की संख्या अधिक है। स्त्री संवेदनशील होने के कारण प्रेम उसका स्थायिभाव है। इसलिए 'प्रेम' आधुनिक मराठी कवयित्रियों का मुख्य आशय है। प्रेमानुभव से संबधित कविताएँ सिर्फ संख्या से ही अधिक नहीं तो, गुणात्मकता की दृष्टि से भी प्रभावशाली और श्रेष्ठ हैं। स्वतंत्रतापूर्व कवयित्रियों की कविता से स्वातंत्र्योंत्तरकालीन कवयित्रियों की कविता में प्रेमानुभव अधिक निर्भयता से व्यक्त हुआ है। कवयित्रियों की कविता में प्रमुख रूप से सफल और असफल प्रेमानुभव व्यक्त हुआ है। प्रेम और प्रियकर को अनन्यसाधारण महत्त्व देनेवाला, प्रेम को जीवन अर्पित करनेवाला पारंपारिक भाव भी इस कविता में दिखाई देता है। मनोरमा रानडे,

विमला देशपांडे, लक्ष्मीबाई बेहरे, मनोरमा नावलेकर, संजीवनी मराठे, इंदिरा संत, शांता शेळके, पद्मा गोळे, सरिता पद्की, शिरीष पै, सुलभा हेर्लेकर, अनुराधा पोतदार, सुहासिनी इर्लेकर, पद्मिनी बिनीवाले, सुशील पगारिया, अंजली ठकार, हिरा बनसोड़े, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकड़े, हेमा लेले, अनुराधा पाटील, माधवी देसाई, मलिका अमर शेख, नीरजा, अरुणा ढ़ेरे, प्रज्ञा लोखंड़े, सुमति लांड़े, संजीवनी खोजे यशोधरा साठे, ललिता गौरी भट्ट, संगीता जोशी, अंजली फडके आदि कवयित्रियों ने प्रेमानुभव के विविध रूप अपनी कविता में व्यक्त किया है।

वैवाहिक जीवन, मायका, सास-बहू, ससूराल आदि से संबंधित अनुभव काशिताई नाटेकर, बहिणाबाई चौधरी, लक्ष्मीबाई टिळक, पद्मा गोळे, मंदा बोडस, सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, अरुणा ढेरे, प्रज्ञा लोखंडे आदि कवयित्रियों ने व्यक्त किया है । उसमें ससुराल जानेवाली लड़की, ससुराल का दुःख, सुशील पगारिया अरुणा ढेरे, आदि की कविता में दिखाई देता है। प्रौढ़ कुमारिका के जीवन को और सवत के दुःख को राह कर देने का प्रयत्न केवल रजनी परुळेकर ने किया है। परित्यक्ता स्त्री का दुःख चित्रित करने का प्रयत्न अरुणा ढेरे ने किया है। लोक साहित्य का आधार लेकर सीता के दुःख के माध्यम से परित्यक्ता स्त्री का दुःख उन्होंने व्यक्त किया है।

वैधव्य यह भारतीय संस्कृति में स्त्री जीवन का सबसे बडा अभिशाप है। विधवा के दुःख को चित्रित करने का प्रयत्न लक्ष्मीबाई टिळक, सावित्रीबाई जोशी, बहिणाबाई चौधरी, आसावरी काकडे, अश्विनी धोंगडे, अरुणा ढेरे, नीरजा आदि कवियित्रियों ने किया है। इससे संबंधित अनुभव उनकी कविता में अधिक गहराई से व्यक्त हुई है। आसावरी काकड़े की कतिवा में चित्रित स्त्री वैधव्य से आक्रोश करनेवाली नहीं, तो समझदारी से दुःख सहनेवाली है। भारतीय संस्कृति में वैधव्य शाप तो मृत्यु वरदान माना जाता है। सती जानेवाली स्त्री का अनुभव प्रभा गणोरकर, प्रज्ञा लोखंडे की कविता में तीव्र उपालंभ व्यक्त हुआ है। वैवाहिक जीवन से संबंधित अनुभव लक्ष्मीबाई टिळक अनमेल विवाह का निषेध करती है। सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकड़े, अनुराधा पाटील, अरुणा ढ़ेरे, प्रज्ञा लोखंड़े आदि ने भी अपने अनुभव प्रकट किया है। कवयित्रियों की संवेदनशीलता प्रेम के संबंध

में जितनी तीव्र है, वही तीव्रता वैवाहिक जीवन से संबध तक आनेवाले अनुभव के संबंध में होना चाहिए था। स्त्री का दुःख स्त्री ही समझ सकती है, इस दृष्टि से देखा जाय तो, स्त्री दुःख का चित्र अधिक मात्रा में उतारना चाहिए था, लेकिन वैसा हुआ नहीं ऐसा दिखता है। लडकी को बोझ समझ कर उसके सहमति के बिना इसका विवाह किया जाता है। इसका चित्रण रजनी परुळेकर ने किया है।

पारिवारिक रिश्ते-नाते संबंधों से आनेवाले अनुभव पद्मा गोळे, शिरीष पै, नीरजा अनुराधा पोतदार, सुहासिनी इर्लेकर, सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, माधवी देसाई, अरुणा ढेरे, ज्योति लांजेवार, प्रज्ञा लोखंडे, सरिता पद्की आदि कवयित्रियों की कविता में व्यक्त हुआ है। प्रज्ञा लोखंडे की कविता में चित्रित लड़का माँ के लिए प्रयत्नरत दिखाई देता है, अनुराधा पाटील की कविता में पुत्र-विरह का दुःख दिखाई देता है, तो अन्य कवयित्रियों की कविता में बच्चों के सुख के लिए प्रयत्न करनेवाली कष्ट सहनेवाली माँ दिखाई देती है। अश्विनी धोंगडे की कविता में पुत्र स्वार्थि प्रवृत्ति का दिखता है। स्वयं के बीवी बच्चो में रत लडके के लिए माँ बोझवत लगती है। समाज में स्थित वास्तवता का दर्शन यहाँ होता है। ज्योति लांजेवार की कविता में वेश्या माँ का दुःखद अनुभव तीव्रता से व्यक्त हुआ है। माधवी देसाई की कविता में मातृत्त्व वरदान में से शापदग्ध करनेवाला अनुभव व्यक्त हुआ है।

माँ-बेटी के बीच के रिश्ते का चित्रण प्रभा गणोरकर, अरुणा ढेरे की कविता में हुआ है और वह हृदयस्पर्शी है। चाचा-पोती के बीच का संबंध केवल रजनी परुळेकर ने व्यक्त किया है। घर के छोटे- बडे कलह का छोटे बच्चों पर होनेवाला परिणाम यह इन रिश्तों से संबंधित कविताओं में से स्पष्ट दिखाई देता है। सास-बहू के रिश्ते का संबंध अश्विनी धोंगडे की कविता में चित्रित हुआ है। उनकी कविता में दहेज के लिए बहू की होनेवाली हत्या और सास को न समझ लेकर छलनेवाली बहू भी यहाँ दिखती है। परस्पर विरोधी अनुभव उनकी कविता में अभिवयक्त हुई है।

परिवार में रहकर भी अकेलेपन का अनुभव परिवार के मुखिया स्त्री को आता है। यह अनुभव अनुराधा पाटील, अरुणा ढेरे आदि कवयित्रियों की कविता में से आती है। आसावरी काकडे, त्योति लांजेवार आदि की कविता में एक विशिष्ट नाते-रिश्तो के संबंध में विचार व्यक्त न होकर पुरे नाते-रिश्तों के संबंध में सहज रुप में विचार व्यक्त

हुए हैं। नाते-रिश्ते संबंधो के बीच की व्यर्थता विषयक अनुभव इसमें से व्यक्त हुए हैं मराठी कवयित्रियों की कविता में पारिवारिक नाते-रिश्ते से संबंधित चित्रण बहुत ही कम दिखाई देता है। वात्सल्य प्रेम, विमलाबाई देशपांडे, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, नीरजा, माधवी देसाई, शिरीष पै आदि ने व्यक्त किया है।

नौकरी व्यवसाय करनेवाले स्त्री के अनुभव विश्व के संबंध में अश्विनी धोंगडे ने प्रभावपूर्ण लेखन किया है। इनके अलावा अनुराधा पोतदार, प्रभा गणोरकर की कविता में नौकरी व्यवसाय करनेवाली स्त्रियों का जीवन चित्रित हुआ है। माधवी देसाई की कविता में मजदूर स्त्री जीवन व्यक्त हुआ है।

उपेक्षित समाज सें आए-हुए अनुभव हिरा बनसोडे, रजनी परुळेकर, मलिका अमर शेख, अरुणा ढेरे, ज्योति लांजेवार और प्रज्ञा लोखंडे की कविता में चित्रित दु:ख उपेक्षित जातिसंस्था से आयी हुई है। हिरा बनसोडे, ज्योति लांजेवार की कविता में चित्रित यह दु:ख स्त्री के रूप में और दूसरे दलित स्त्री के रूप में दोनों अवस्थाओं में व्यक्त हुआ है, ज्योति लांजेवार की कविता में विद्रोह और दर्द की तीव्रता है। अरुणा ढेरे संत जनाबाई के दु:ख को सामने लाने का प्रयत्न किया है। रजनी परुळेकर, मलिका अमर शेख, ज्योति लांजेवार आदि कवयित्रियों ने वेश्या व्यवसाय से संबंधित स्त्री के दु:ख का चित्रण किया है। वेश्या बस्ती, यहाँ का खुला संभोग, गाली-गलौज उनका बीभत्स जीवन, वेश्या माँ का दर्द आदि का गरहा चित्र उन्होंने खींचा है। नीरजा की कविता में चित्रित स्त्री को उम्र भर एक ही पुरुष के पास रहना पसंद नहीं, स्वेच्छा से वेश्या बनी हुअी स्त्री यहाँ दिखाई देती है।

स्त्रीमुक्ति आंदोलन और स्त्रीवाद के संबंध से आये-हुए अनुभव शब्दबद्ध करनेवाली अनेक कवयित्रियाँ दिखाई देती है। सावित्रीबाई फुले, लक्ष्मीबाई लेले, पद्मा गोळे, सरिता पदकी, अनुराधा पोतदार, सुशील पगारिया, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, मलिका अमर शेख, ज्योति लांजेवार, प्रज्ञा लोखंडे, मीना गजभिये, प्रभा गणोरकर, संगीता जोशी, रजनी परुळेकर, माधवी देसाई, नीरजा आदि कवयित्रियों ने स्त्रीवादी दृष्टिकोण के आधारपर स्त्री जीवनानुभव बताने का प्रयत्न किया है। इन सभी कवयित्रियों में अश्विनी धोंगडे ने विशेष अहसास से स्त्री जीवन की ओर देखा है ऐसा दिखाई देता है। उनके 'स्त्रीसूक्त' काव्य-संग्रह का आशय सूत्र स्त्री और स्त्री जीवन यही है ऐसा दिखाई देता है। अश्विनी धोंगडे, मलिका अमर शेख,

ज्योति लांजेवार, नीरजा, प्रज्ञा लोखंडे आदि की कविता में स्त्रीवाद के संबंध में सशक्त विचार व्यक्त हुए हैं। वैसे अन्य कवयित्रियों की कविता में दिखता नहीं। आधुनिक कालीन कवयित्रियों की संख्या और उनके काव्य संग्रह की संख्या देखा जाय तो, स्त्रीवादी दृष्टिकोन को सामने रखकर लिखनेवाली कवयित्रियाँ बहुत ही कम दिखाई देती है। इसलिए स्त्रीवादी विचार मराठी कविता में अपना अस्तिव निर्माण नहीं करा पाया ऐसा दिखता है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों कविता में दिन-विशेष, विज्ञापन, कम्प्युटर, उत्तर पद्धति, किराणा की सूची ऐसे अनेक अभिनव पद्धति का प्रयोग उन्होंने किया है, इसके साथ दीर्घ कविता का प्रयोग भी उन्होंने किया है। इन सभी अभिव्यक्ति प्रकारों में से मन को भानेवाले, अहसास देनेवाले अनुभव उन्होंने बिना शक से व्यक्त किया है। आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर की कविता से बाद की कविता में अधिक खुलेपन का अहासास होता है। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता प्रकृति, समाज और संस्कृति का सम्मान करनेवाली कविता है। वह मराठी कविता के परंपरा से रिश्ता जोडनेवाली नाता संभालनेवाली है। जो जीवन देखा गया अनुभव किया गया, उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति करनेवाली यह कविता है। अंतर्मन को खोलकर बाह्य जीवन के वास्तविकता का चित्र खींचनेवाली कविता है। अपने अनुभव और मन में उमड़-घुमड़कर आनेवाले अनुभव और विचारों की सहज निर्मिति उनकी कविता में व्यक्त हुई है।

नीरजा जैसी कवयित्री ने पारंपारिक भावना को तिलाजंलि देने का प्रयत्न किया है। परंपरा से जिनकी पतिव्रता के रूप में पूजा की जाती है, ऐसे प्रतिव्रताओं का भोगा हुआ दुःख और यातना के प्रति समाज के आँखे बंद है। ये पतिव्रताएँ भी इन्सान थे, इन पतिव्रताओं को देवता बनाकर उनके दुःख की ओर अनदेखा करनेवाली परंपरा को फटकारा है। मनोरमा रानडे, अश्विनी धोगडे आदि कवयित्रियों ने दहेज प्रथा की समस्या को अपनी कविता का कथ्य बनाया है।

भक्ति-भावना से संबधित विचार मथुराबाई पंडित, पद्मावती बाई, भटकळकर, लक्ष्मीबाई कुलकर्णी, लक्ष्मीबाई नांदुरकर, लक्ष्मीबाई चितळे, सारजाबाई बापट, सावित्रीबाई पाटणकर, लक्ष्मीबाई दिंगबर, कृष्णाबाई गाडगीळ आदि ने

आख्यान के माध्यम से व्यक्त किया है।

देश प्रेम, देश भक्ति की भावना को, लक्ष्मीबाई टिळक, शांतादेवी परदेशी, मनोरमा नावलेकर, पद्मा गोळे, कमल सोहोनी, स्नेहलता किनरे, मंदा बोडस, आदि ने प्रकट किया है। शांतादेवी में एकता की भावना, मनोरमा में गांधी प्रेम दिखाई देती है। चीन आक्रमण, गोवा मुक्ति आंदोलन, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन आदि को कमल सोहोनी और स्नेहलता किनरे ने अपनी कविता का कथ्य बनाया है। सावित्रीबाई फुले, लक्ष्मीबाई नांदुरकर, मीना दीक्षित आदि ने रूढि-परंपरा का विरोध किया है।

आद्य पर्यावरणवादी कवयित्री के रूप में सावित्रीबाई फुले का उल्लेख किया जा सकता है। पर्यावरण संतुलन का विचार उन्होंने अपनी कविता में प्रकट किया है। प्रकृति के विविध छटाओं का वर्णन करने वाली अन्य कवयित्रियाँ हैं, मनोरमा नावलेकर, काशिताई नाटेकर, मनोरमाबाई रानडे, बहिणाबाई चौधरी, संजीवनी मराठे, शांता शेळके, पद्मा गोळे, अनुराधा पोतदार, सरिता पद्की, अंजली ठकार, शिरीष पै, निर्मला देशपांडे, सुलभा हेर्लेकर, वासंती मुझुमदार, रसिका देशमुख आदि।

सावित्रीबाई फुले, संजीवनी मराठे, शिरीष पै, हिरा बनसोडे आदि की कविता में सामाजिक भावना, सुधारवादी दृष्टि दिखाई देती है। हिरा बनसोडे, की कविता में सामाजिक विषमता के खिलाफ क्रांति करनेवाली दलित स्त्री दिखाई देती है। बहिणाबाई चौधरी ने संसार के सीधे गणित को शब्दों में अंकित किया है। शिरीष पै में आम आदमी के प्रति दया की भावना है। किसान, मजदूर, भिकारी आदि का चित्रण सावित्रीबाई फुले, बहिणाबाई चौधरी, शिरीष पै, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, कमल सोहोनी आदि ने किया है। सरिता पद्की ने बच्चे को जन्म देने के बाद पहले ही दिन काम पर जानेवाली मजदूर स्त्री को अपनी कविता में स्थान दिया है।

ओवी (अरुणा ढेरे) अभंग (मनोरमा नावलेकर, अंजली ठकार) गजल (संगीता जोशी) बिना शीर्षक की कविता (सुमति लांडे) दीर्घ कविता (रजनी परुळेकर) हायकू (शिरीष पै) आदि पद्धति का अवलंब मराठी की कवयित्रियों ने किया है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की भाषा प्रारंभिक दौर की कवयित्री की भाषा से सशक्त है। उसमें खुलापन अधिक है। प्रारंभिक दौर की मराठी कवयित्रियों की कविता में स्थित संकोच, बुजदिलापन, डर आदि बाद की कविता में दिखाई नहीं देती। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता विद्रोहात्मक और क्रांतिकारी है।

संक्षेप में समाज का प्रतिबिम्ब तथा प्रतिक्रियाएँ साहित्य में चित्रित होती रहती है। आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा के कारण जागृति हुई है। समाज के अनेक स्तरों में से कवयित्री आगे आ रही है और अपना अनुभव व्यक्त कर रही है। आधुनिक मराठी कविता के प्रारंभिक दौर में कवयित्रियों ने वैधव्य, प्रौढ़ कुमारिका, सती, वेश्याजीवन, परित्यक्ता का जीवन, दलित स्त्री जीवन ऐसे विविध प्रकार के अनुभव विश्व को कविता में समाविष्ट किया नहीं था परंतु बाद में ये अनुभव अपनी कविता में कवियित्रियों ने व्यक्त किया है। स्त्रीमुक्ति आंदोलन स्त्रीवादी विचार आदि स्वतंत्रतापूर्व कविता में अत्यंत क्षीण रूप में व्यक्त हुए थे बाद में यह मात्रा बढ़ गयी है। लेकिन यह वृद्धि अपेक्षा से बहुत ही कम है।

उपसंहार

आधुनिक हिंदी कविता का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु युग ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। सर्व प्रथम भारतेंदु युग के काव्य का वास्तविक महत्त्व नवीन चेतना के संधान के रूप में उपलब्ध होता है। इस काल में पहली बार जीवन से संबंध रखनेवाली सारी बातों को कविता का विषय बनाने का आग्रह सामने आया है, जिसे एक बड़े परिवर्तन का शुभारम्भ माना जा सकता है। द्विवेदी युगीन कवियों ने मानवीय क्रिया कलापों, प्रकृति की बहुरंगी एवं मोहक छवियों, समाज, जाति, राष्ट्र एवं मानवता की उन्नति के प्रेरक भावों को चित्रित किया है। इन कवियों ने काव्य में लोकहित का आग्रह तथा बुद्धि एवं हृदय के बीच संतुलन की बात करके अपने विवेकसम्मत दृष्टिकोण का परिचय दिया है। छायावादी कवियों ने कविता के क्षेत्र में परम्परा से हटकर अपनी मौलिकता का परिचय देते हुए नवीन दिशाओं का उद्घाटन भी किया है। इन कवियों ने काव्य स्वरुप, काव्य तत्त्व, रस, काव्यवर्ण्य, काव्यशिल्प के विवेचन में मौलिक अंतर्दृष्टि का परिचय दिया है। इन्होंने काव्य में सांस्कृतिक सौंदर्य, विश्वमानवता, युगचेतना, वैयक्तिकता, प्रकृति-चित्रण, राष्ट्रीयता, स्वाभाविकता एवं सात्विकता का समर्थन किया है। प्रगतिवादी कवियों ने कविता को कल्पना से मुक्त कर ठोस धरती पर उतारा और संघर्षरत समाज की विभीषिकाओं से परिचित कराकर एक नवीन अध्याय का शुभारम्भ किया। इन कवियों ने क्रांति का आह्वान, परिवर्तन की पुकार, साम्यवाद की जय, स्थूलता का आग्रह, यथार्थवादिता, समसामयिक समस्याओं के प्रति सजगता शिल्पगत सहजता को स्थापित किया। इस युग में काव्य एवं जन जीवन के संबधों में परस्पर प्रगाढता आई है।

प्रयोगवादी कवियों ने काव्य-स्वरुप के अंतर्गत प्रेम की रागात्मक कल्पना, वैयक्तिक अनुभूति, वैचित्र्य-प्रदर्शन, लघुता के प्रति साहित्यिक दृष्टि, भौतिक यथार्थ की मानवतावादी व्याख्या, प्रकृति प्रभाव, प्रयोग से प्राप्त सत्य का समावेश किया है । इन कवियों ने काव्य के अभिव्यजंना कौशल में भी ख्रास तरह का आग्रह दिख्रलाई पड़ता है। नई कविता के कवियों ने जीवनसत्य का अनवरत अनुसंधान, अनुभूति की प्रामाणिकता, सामाजिक अनुभव के सहारे आत्मभिव्यक्ति तथा अर्थ की लय को काव्य स्वरुप के अंतर्गत रख्रा है । समकालीन कविता के कवियो ने युगीन परिवेश का सच्चा

चित्र खींचकर आम आदमी को कविता का विषय बनाया है । आज की कविता उन लाखों, करोडो, शोषितों पीडितों के साथ है, इन दीन-हीन शोषित पीडित आम आदमी के प्रति इनके मन में प्रेम है, सहानुभूति है। आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर इन्होंने आम आदमी की संवेदना को काव्य स्वरूप में स्थान दिया है।

जब हम आधुनिक हिंदी कविता का विचार करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अल्प अपवादों को छोड़कर अधिकांश कविताएँ काव्य के आंतरिक एवं बाह्य गुणों से परिपूर्ण हैं। उन का भावपक्ष एवं कलापक्ष अत्यंत समृद्ध है।

आधुनिक हिंदी कविता में व्यक्त देशकाल, समाज, राष्ट्र और विभिन्न विचारधाराओं का विकास हुआ है। इनमें होनेवाले परिवर्तनों के साथ-साथ हिंदी कविता के क्षेत्र में भी काफी परिवर्तन दिखाई देता है। इस युग में पहली बार कविता को जनसाधारण की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा उसमें जीवन मूल्यों, आधुनिक विचारधाराओं, वैज्ञानिक प्रगति, प्रौद्योगिकीय विकास, विश्व साहित्य एवं समाज के पारस्परिक संगठन का प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है। इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता एक नवीन दिशा का उद्घाटन करते हुए आगे बढ़ रही है।

आधुनिक मराठी कविता का आरंभ 1885 ई. से माना जाता है। क्योंकि काव्य के भीतर नवीन दृष्टिकोण की एक निश्चित परंपरा यहीं से मिलने लगती है। काव्य साहित्य की दृष्टि से इस युग पर विचार करने के पूर्व पृष्ठ भूमि के तौर पर जो परंपराबद्ध काव्य साहित्य था। उसका विचार करना आवश्यक होता है।

1875 से 1895 ई. तक का मराठी काव्य संक्रमणकाल का काव्य है। अधिकतर काव्य साहित्य परम्पराबद्ध था । कुछ ऐसी रचनाएँ भी प्रकाशित हो रही थी जिनमें आधुनिकता का निश्चित स्पर्श था। आधुनिक काल के पहले निम्नलिखित काव्य धाराएँ थी, संतकाव्य, पंतकाव्य और शाहिरी काव्य । संतकाव्य की परम्परा 12 वी शताब्दी से 18 वी शती तक चलती रही और आज भी उसका अस्तित्व टिका हुआ है। नामदेव, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि संत कवियों की एक लंबी परम्परा मराठी में मिलती है। मोरोपंत, वामन पंडित आदि के समय से पंतकाव्य की धारा चली आ रही थी । इस परम्परा के कवियो में पांडित्य अधिक था, भक्ति भावना कम थी, वैसे तो इनकी सभी काव्य- कृतियों के मूल में भक्ति ही है । यह काव्य-परम्परा हिंदी के रीति काव्य के निकट पड़ती है।

एक ओर इस प्रकार की परंपराबद्ध काव्य परम्परा थी तो दूसरी ओर इसी काल में नये आंदोलन शुरु हो चुके थे । इन आंदोलनों का निश्चित परिणाम साहित्य पर भी हो रहा था। इन आंदोलनों के कारण मराठी कविता में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। 1875 से 1885 ई. तक के इस काल में आधुनिक कविता की नींव रखी गयी। इसी नींव पर केशवसुत युग के काव्य भवन का निर्माण हुआ। केशवसुत ने नवीन प्रवाहों की शुरुवात की, उन्होंने विषयों के नये क्षितिजों को स्पर्श किया। उनकी कविता में सामाजिक यथार्थता, प्रगतिशीलता, प्रकृति प्रेम, शुद्ध लौकिक प्रेम, रहस्यात्मकता आदि सभी स्वर हैं। हिंदी में इनकी तुलना केवल निराला के साथ की जा सकती है। गोंविदाग्रज, बी, दत्त, विनायक, रेंदाळकर, रहाळकर, लक्ष्मीबाई टिळक आदि का योगदान आधुनिक मराठी कविता में महत्त्वपूर्ण रहा है।

1920 ई. के आसपास रे. तिलक, गोंविदाग्रज, बालकवि, रेंदाळकर आदि कवियों का निधन हुआ। कुछ कवियों का काव्य लेखन बंद हुआ। राजनीतिक दृष्टि से तिलक युग भी इसी समय समाप्त हो गया। माना जाता है कि आधुनिक कविता का ऐतिहासिक युग 1920 ई. मे समाप्त हुआ। परंतु अनेक महत्त्वपूर्ण कवि इस काल में काव्य-लेखन करने लगे। काव्य इतिहास में अपना स्वतंत्र नाम स्थापित करनेवाले कवियों में प्रमुख रुप से चंद्रशेखर बी, तांबे, सावरकर एवं गोंविद है।

1920 ई. के आसपास बालकवि, गडकरी, रे. तिलक इ. कवियों के निधन से काव्य क्षेत्र में अंध:कार फैल गया। कविता के क्षेत्र में उदासीनता छा गई, लेकिन इस अंध:कार को भेद कर रविकिरण मंडल के कवि गिरीष, यशवंत, माधव ज्युलियन के अतिरिक्त श्री. बा. रानडे और मनोरमा रानडे आदि महत्त्वपूर्ण कवि सृजनरत रहे हैं।

रविकिरण मंडलोत्तर मराठी काव्यकाल के प्रमुख कवियों में केशवसुत सम्प्रदाय को चलानेवाले काव्य-विहारी, कुंजविहारी, साने गुरुजी, सेनापति बापट, रविकिरण मंडल के प्रतिध्वनित हुए कवि या. मु. पाठक, वि.भ. कोलते, भ.श्री. पंडित, स.अ. शुक्ल, निशिगंध, गोपीनाथ, वा.भा. पाठक, मंडल के जानपद गीत परंपरा को आगे चलानेवाले ग.ह. पाटील, ग.ल. ठोकळ, गूढवादी वा.ना. देशपांडे, प्रगतिशील समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होकर लिखनेवाले अनंत काणेकर, विडंबनकार कुसुमाग्रज, पु.शि. रेगे आदि कवियों का काव्य लेखन इस काल के उत्तरार्ध में शुरु हुआ।

1935 ई. के आसपास आधुनिक मराठी कविता की गति धीमी हो गयी ऐसी चर्चा होने लगी । 1920 ई. में जो परिस्थिति निर्माण हो गई थी, वही स्थिति 1940 ई. के समय माधव ज्युलियन भा.रा. तांबे के निधन के कारण हुआ। यह महसूस होने लगा कि स्वच्छंदतावाद में विकृति आने लगी, आत्मकेंद्रीत संकुचित प्रवृत्ति, समकालीन वास्तविकता से दूर सामान्य जीवनानुभव, शब्दगत जानपद गीत, केशवकुमार, काणेकर का पद्य से गद्य की ओर प्रयाण आदि कारणों से मराठी कविता का विकास रुक गया है । कुसुमाग्रज ने ऐसी परिस्थिति में मराठी कविता की जिम्मेदारी अपने कंधे पर ले ली। कुसुमाग्रज की कविता में क्रांति की प्रखर अभिव्यक्ति दिखाई देने लगी। ऐसा लगा की मानो केशवसुत सम्प्रदाय का पुनर्जीवन हुआ है। 20 शताब्दी के पाँचवे दशक में मराठी कविता में परिवर्तन हुआ। अभिव्यक्ति की नए रास्ते मिल गये, नये दशक में नयी कविताएँ लिखी गयी। 1935 से 1945 का दशक मर्ढेकर क्रांति का पूर्व तैयारी का दशक माना जाता है। अनिल, कुसुमाग्रज, बोरकर आदि के स्वच्छंदतावादी अनुभव इतने स्पष्ट थे कि उन्होंने नये काव्य क्रांति का नींव डाली है। इन तीनों के साथ-साथ, ना.ग. जोशी, रा.अ. काळेले, मन मोहन, श्रीकृष्ण पोपळे, वा.रा् कांत, कृ.ब.निंकुब, बी.रघुनाथ, भालचंद्र लोवलेकर, ना.घ. देशपांडे, संजीवनी, वि.म. कुलकर्णी, सोपानदेव चौधरी, राजा बढे, पद्मा आदि कवि तथा कवयित्रियों का काव्य-सृजन शुरु था।

1950 ई. तक आते-आते सारे विश्व में मनुष्य जाति तथा उसके भविष्य के प्रति जबरदस्त निराशा उत्पन्न हो गयी थी। दो महायुद्धों में लाखों की संख्या में लोग मारे गये थे, सामाजिक तथा पारिवारिक व्यवस्था तहस-नहस हो चुकी थी, मानवी मूल्यों की स्थिति हास्यास्पद हो गयी थी। मंगलमय तथा पवित्र बातों पर से विश्वास उड रहा था। अकेलेपन का एहसास बढने लगा था। पूँजीवाद बढ रहा था, मजदूर और मध्यम वर्ग का शोषण अधिक तेजी से हो रहा था ।

1947 ई. में भारत देश स्वतंत्र हुआ। 1950 ई. के पूर्व के काव्य का आशावादी दृष्टिकोण गलत लगने लगा था। सामान्य व्यक्ति के इस दर्द को तटस्थ रूप से शब्द बद्ध करना आवश्यक था। पुराने कवि अपने ही आदर्शो से जुडे थे। इसीकारण आधुनिक कवियों द्वारा नये युगबोध को व्यक्त करने के प्रयत्न शुरु हुए।

हिंदी में यह कार्य 1945 ई. से आरंभ होता है। अज्ञेय के नेतृत्व में प्रयोगवादी कवियों ने विषय, भाषा, तथा शिल्पगत प्रयत्न कर दिया। मराठी में आंदोलन के रूप

में इस प्रकार का कार्य नहीं हुआ। अकेले मर्ढेकर के साहित्य को ही सर्वोत्कृष्ट साबित कर दिया है। शरदचंद्र मुक्तिबोध, नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, दया पवार आदि ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। नई कविता की दूसरी पीढी का उदय होते समय ही वसंत हसबनीस, ग.ब. ग्रामोपाध्ये और य.द. भावे आदि कवियों ने भी योगदान दिया। नई कविता के लक्षणों ने भी योगदान दिया। नई कविता के लक्षणों को अपनी अपनी पद्धति से स्वीकार कर कविता को प्रयोगशील बनानेवाले कवियों में विंदा करंदीकर, मंगेश पांडगांवकर, वसंत बापट और इंदिरा संत प्रमुख हैं।

1920 ई. से 1947 तक राष्ट्रीय काव्यधारा अत्यधिक प्रबल रही । जब-जब राष्ट्र की स्वतंत्रता खतरे में आ जाती है, तब-तब इस प्रकार की कविताओं का सृजन स्वाभाविक है। हिंदी में मैथिलीशरण गुप्त से लेकर दिनकर तक राष्ट्रीय कवियों की काव्य परंपरा ही है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो मराठी में इस प्रकार की कविताएँ बहुत पहले मिलती है। कवि श्री. विनायक आधुनिक मराठी काव्य साहित्य की राष्ट्रीय काव्य-धारा के प्रथम कवि है। राष्ट्रीय काव्यधारा के अन्य प्रमुख कवि गोंविद, साने गुरुजी, दु.आ. तिवारी, टेकाडे, बेहरे, वसंत बापट, कुसुमाग्रज, अनिल, ग.दि. माडगुळकर आदि हैं।

1960 ई. के बाद मराठी कविता बहिर्मुखता की वृति छोडकर अधिक अंतर्मुख होने लगी। अब कवि अपने अंतर्मन की गहरी खोज करने लगे। मनुष्य मन की गहराई अपरिमित है। कविता का असली क्षेत्र मन है। इस प्रकार के विचार व्यक्त किये जाने लगे। समाज वातावरण, राजनीति, आदि को मन की अतल गहराई में ले जाकर वहाँ से प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की जाने लगीं। एक ओर मर्ढेकर की यह परंपरा है तो दूसरी ओर कविता को समाज जीवन के साथ जोड दिया गया तथा व्यक्ति और समाज के संघर्ष को व्यक्त किया जाने लगा। अनिल, मुक्तिबोध, कुसुमाग्रज की यह परम्परा है।

साठोत्तरी मराठी कविता में आगे चलकर, स्वच्छंदता का नया प्रवाह, मराठी गज़ल, लोकगीत प्रवाह की कविता, ग्रामीण कविता, मुस्लिम कविता, स्त्रीवादी कविता, दलित कविता आदि का निरंतर विकास हेाता रहा। दलित कवियों में नारायण सुर्वे, नामदेव ढसाळ, केशव मेश्राम, दया पवार, वामन सुदामा निंबाळकर, यशवंत मनोहर आदि प्रमुख हैं। आज दलित कविता आत्मशोध की कविता न होकर विश्वव्यापकता प्राप्त की हुई कविता है। आधुनिक मराठी कवियों ने जीवन के विविध अनुभवों,

समस्याओं को खुले दिल से अभिव्यक्त किया है। आधुनिक मराठी कवियों की प्रतिभा का सामर्थ्य बहुत बडा है। इसलिए दिनोंदिन अधिक जीवंत, मौलिक अनुभव कवि अपनी कविता में अंकित कर रहा है।

आधुनिक काल के पूर्ववर्ती समय में हिंदी तथा मराठी में भक्त तथा संत कवयित्रियों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। पूर्ववर्ती काल में हिंदी में कवयित्रियों की संख्या मराठी से अधिक दिखाई देती है। हिंदी में लगभग 25 से अधिक कवयित्रियाँ सृजनरत दिखाई देती हैं तो मराठी में लगभग 8 कवयित्रियाँ । इन कवयित्रियों के केंद्र में ईश्वर था। इन्होंने भक्ति से संबंधित कविताएँ लिखी हैं। स्त्री लेखन की परम्परा पुरानी और संपन्न है । वैदिक काल से स्त्री का रुप सृजनरत रहा है। उसे प्राप्त हुए अनुभव, आशा-आकांक्षा, सुख-दुःख आदि गीतों के माध्यम से सहज प्रकट हुई है।

आधुनिक मराठी की पूर्ववर्ती संत कवयित्रियों ने संस्कृत काव्य में स्थित आत्मनिवेदन के अभाव को दूर किया। वे पहले दर्जे की भावगीत परंपरा को मराठी में ले आई भावना की उत्कटता, जीवनाविष्कार इस दृष्टि से संत कवियित्रियों की कविता महत्त्वपूर्ण है। अपने मन में उमड़कर आये हुए भक्ति-भाव को उन्होंने कविता के माध्यम से प्रकट किया।

मध्ययुगीन मराठी कविता के करीब सात सौ वर्ष के इस प्रदीर्घ काल में पारमार्थिक, आध्यात्मिक छटपटाहट व्यक्त करनेवाली स्त्रियों की संख्या अल्प है तो भी उनकी कविता प्रकृति से अलग है। अध्यात्म के राह पर चलनेवाली ये स्त्रियाँ स्वयं के अनुभवों से अत्यंत प्रामाणिक हैं। इसमें एक रम्य अविष्कार उन्होंने निर्माण किया है। संसार यह स्त्री का सर्वस्व है, इसलिए उन्होंने परमेश्वर का चित्रण भी सांसारिक रूप में चित्रित किया, परमेश्वर को उन्होंने कभी माँ के रूप में, कभी पति के रूप में तो कभी बालक के रूप में देखा। ब्रह्मसुख की दिशा में ले जानेवाला उनका यह प्रयत्न मन प्रसन्न करनेवाला है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों का परिचय एवम् रचनात्मक सरोकार देखने के बाद ऐसा लगता है कि कवयित्रियों की कविता की पृष्ठभूमि अत्यंत व्यापक है । इस काल की कविता पर सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक आदि परिस्थितियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है ।

कवयित्रियों के जीवन परिचय तथा रचनाओं को देखने के बाद संक्षेप में कहा जा सकता है कि कवयित्रियों ने अपने जीवन को जिस तरह देखा, जाना, परखा है उसी तरह अभिव्यक्त किया है। उससे उनके व्यक्तित्व और रचनाओं का निर्माण हुआ है। वे अपनी साहित्यिक कृतियों में जीते-जागते जीवन के अनुभव को चित्रित करती है। ये कवयित्रियाँ रुढि परम्पराओं के विरोध में है। साहित्य की दृष्टि से उनकी रचनाओं का अपना महत्त्व है। साथ ही ये कवयित्रियाँ अच्छी लेखिकाएँ भी हैं। अत: हम कह सकते हैं कि कवयित्रियों का व्यक्तित्व निश्चित रुप से साहित्यिक पाठकों के लिए प्रेरणादायी तथा महत्त्वपूर्ण रहेगा।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों का परिचय तथा रचनात्मक सरोकार देखने के बाद ऐसा लगता है कि, आधुनिक मराठी कविता की पृष्ठभूमि भी अत्यंत व्यापक है। आधुनिक मराठी कविता को समृद्ध बनाने में कवयित्रियों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। कवयित्रियों को प्राप्त अनुभव, आशा-आकांक्षा, गृहस्थी से संबंधित, खेती में काम करते समय, गार्हस्थ्य जीवन में आए हुए अनुभव कवयित्रियों ने सशक्तता से चित्रित कर मराठी कविता को आगे बढाया है। आधुनिक काल में उनके अनुभवों का दायरा बढता गया, हर क्षेत्र में वह विचरण करने लगी। स्व अस्तित्व को पहचान कर अपनी जागरुकता का परिचय दिया । उन्होंने अबला जीवन को नकारते हुए सबला का प्रतिपादन करते हुए आगे बढनेवाली स्त्री को अपनी कविता में स्थान दिया। इस काल की कवयित्रियों में स्त्री विषयक आक्रोश की भावना तो दिखाई देती है परंतु उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक, संदर्भ, आर्थिक विषमता, पारिवारिक संबंध आदि के उल्लेख मिलते हैं।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता के कथ्य सौंदर्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि आधुनिक हिन्दी कविता संसार में कवयित्रियों का अपना एक अलग स्थान है। आधुनिक कविता के प्रारंभिक दौर में अनेक कवयित्रियाँ सक्रिय रही है। ये प्रारंभिक दौर की कवयित्रियाँ अधिक मात्रा में भक्ति, देशप्रेम, घर, संसार, परिवार, प्रकृति आदि से ही जुड़ी दृष्टिगत होती हैं। आधुनिक कविता की विकास प्रक्रिया में कवयित्रियों के योगदान को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। इनकी कविताओं में स्त्री जीवन के साथ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, मिथकीय, पारिवारिक संदर्भो, प्रकृति परिवेश का अंकन नजर आता है।

आधुनिक काल की स्त्री रुढियों तथा धार्मिकता को मानने के लिए तैयार नहीं है। वे इन परम्पराओं से बाहर निकलना चाहती हैं। कुछ कवियत्रियाँ परम्परा को मानते हुए भी नवीनता का आग्रह रख रही हैं। वे इन बदलती हुई परिस्थितियों से संघर्ष कर सकती है। अन्य स्त्रियों को प्रेरणा दे सकती है, ऐसी स्थितियों का चित्रण कई संवेदनाओं से जुडा हुआ है। इनकी कविताएँ सामाजिक सरोकार के तलाश की कविताएँ हैं। इन कवयित्रियों की कविताओं में कहीं कहीं युग की परिवर्तित परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु इनकी कविताओं का मूल कथ्य व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन ही रहा है। इन कवयित्रियों की कविताओं में हमें कहीं सुख-दुःख की भावना तो कहीं भक्तिभावना, प्रिय मिलन की आकुलता, बच्चों के प्रति ममत्व का भाव, प्रकृति-चित्रण, मजदूर, किसान, विधवा समस्या, संघर्ष चेतना, देशप्रेम की भावना आदि विशेषताएँ आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में दिखाई देती हैं।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में कवयित्री प्रताप कुँवरिबाई ने पारिवारिक जीवन को सर्वाधिक महत्त्व दिया हैं। सुभद्राकुमारी चौहान, शकुंतला माथुर आदि ने भी पारिवारिक जीवन को महत्त्व दिया है। चंद्रकलाबाई, निधि रानी, कमल कुँवर, रत्न कुँवरि बीबी, तोरन देवी शुक्ल लली, कमल कुमारी, रानी रघुराज कुँवरि, हीरादेवी चत्तुर्वेदी, विद्यावति कोकिल, तारा पांडे आदि कवयित्रियों ने अपनी कविता में भक्ति को महत्त्व दिया है। तोरनदेवी शुक्ल लली ने जीवन की प्रगति और विकास के लिए वेदना, पीड़ा, और निराशा की अवहेलना कर हास्य को अपनाया है। हीरादेवी चत्तुर्वेदी, सुमित्रा कुमारी, सिन्हा, शांति मेहरोत्रा, कीति चौधरी, शांति जैन आदि कवयित्रियों ने भी अपनी कविता में वेदना और पीडा का चित्रण किया है। रामकुमारी देवी चौहान ने 'देशप्रेम' को महत्त्व दिया। श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने 'राष्ट्र प्रेम' तथा वात्सल्य भावना को महत्व दिया है। तोरनदेवी शुक्ल लली, हीरादेवी चत्तुर्वेदी, पुरुषार्थ वती, विद्यावती कोकिल, तारा पांडे, आदि कवयित्रियों ने देश प्रेम का चित्रण किया है। श्रीमती महादेवी वर्मा और उर्मिला कौल ने विरह-वेदना और दुःख में सुख को देखा है। श्रीमती होमवती देवी ने 'सामाजिक संवेदना' को स्थान दिया। श्रीमती होमवती देवी रामेश्वरी देवी चकोरी आदि ने विधवा समस्या का चित्रण किया है। होमवती देवी, रामेश्वरी देवी चकोरी, विद्यावती कोकिल, तारा पांडे, सुधा गुप्ता, सुमित्राकुमारी सिन्हा, शकुंतला सिरोढिया आदि कवयित्रियों की कविता में प्रकृति-

चित्रण दिखाई देता है। रामकुमारी देवी चौहान, हीरादेवी चतुर्वेदी आदि ने मजदूर और किसान को अपनी कविता में स्थान दिया है। सरस्वती देवी, होमवती देवी, शकुंतला सिरोढिया आदि ने स्त्री समस्या का चित्रण किया है। रामेश्वरी देवी चकोरी, सुमित्राकुमारी सिन्हा, शकुंतला सिरोढिया, सुभद्राकुमारी चौहान, शांति मेहरोत्रा आदि ने अपनी कविता में प्रेम-भावना व्यक्त किया है। समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का चित्रण हीरादेवी चतुर्वेदी, कामिनी भटनागर आदि कवयित्रियों ने किया है। साथ ही और भी कुछ कवयित्रियाँ कविता के क्षेत्र में सक्रिय रही।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर के बाद हिन्दी कवयित्रियों की कविता निरंतर विकसित होती रही, क्योंकि नारी करुणामय ममता की मूर्ति एवं कोमलता का प्रतीकात्मक रुप है। नारी सृजन धर्मा है, वह निज का अस्तित्व निर्माण कर सृष्टि की संरचना में सलग्न है। आधुनिक हिंदी की कवयित्रियाँ इसीका अहसास कराती है। संस्कृति, परम्पराओं की सुरक्षा, कलाओं की वृद्धि उसी की सृजनशीलता का परिणाम है। समाज की सभ्यता का स्तर उस समाज में होनेवाले स्त्री के स्थान पर निर्भर रहता है। प्रकृति की दी हुई दुर्बलता को झटककर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में स्त्री निरन्तर प्रयत्नशील रही। प्राचीन काल से ही परिवेश, पर्यावरण, कृषिक्षेत्र, वंशवृद्धि पारिवारिक जिम्मेदारी स्त्री पर रही हैं। स्त्री आदिकाल से लेकर आजतक सजग रही है। अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति उसने कविता के माध्यम से प्रकट की है।

प्राचीन काल में स्त्री का क्षेत्र सीमित रहा है। वह कविता या साहित्य की दृष्टि से संवेदनशील होते हुए भी केवल सामाजिक मर्यादाओं के कारण बहुत कम योगदान दे पायी थी। आज परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ है, होता जा रहा है। स्त्री विभिन्न क्षेत्रों में अपना अस्तित्व बना रही है। कथा साहित्य सृजन में प्रेमचंद युग से ही लेखिकाएँ थी। स्वतंत्र भारत मे नारी जागरण और शिक्षा के प्रचार - प्रसार स्वरुप नयी सशक्त लेखिकाओं की पीढी उदित हुई।

कविता के क्षेत्र में अनेक कवयित्रियाँ अपना पहचान बना चुकी है। उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक संदर्भ, भ्रष्ट राजनेताओं पर व्यंग्यात्मक तीव्र प्रहार, आर्थिक विषमता, पारिवारिक सम्बन्ध, शोषण, गरीबी, भूखमरी, बेकारी आदि के उल्लेख मिलते हैं। लेकिन तीव्र अभिव्यंजना अपवादात्मक ही। इसके साथ ही उन्होंने स्वतंत्रता की माँग की है तथा लज्जा, संकोच का त्याग करने का प्रयास किया है।

आधुनिक हिन्दी कवयित्रियाँ अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उन परम्परागत मूल्यों का विरोध कर रही है जिनके बोझ से वह स्वनिर्णय की शक्ति को खो चुकी थी। आज वह जमाना नहीं रहा। आज की स्थिति ऐसी है कि पति के दुत्कारने पर उन्हींके चरणों में रोटी की मजबूरी के लिए लिपटी रहना वह पसंद नहीं करती। आज रोटी से अधिक महत्त्व है स्त्री की अपनी प्रतिष्ठा एवम् स्वतंत्रता का। अनेक कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में सामाजिक व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाई है और परम्परागत धार्मिक रुढियों का भी विरोध किया है।

कुछ कवयित्रियों ने नारी की स्वतंत्र अस्मिता और अस्तित्व के लिए पुरुष के मेधावी और आक्रमक व्यक्तित्व के साथ निरन्तर संघर्ष कर नारी की उज्ज्वल तस्वीर प्रस्तुत की है। इन कवयित्रियों ने नारी की आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, स्वतंत्र अस्तित्व, परम्परागत मतों द्वारा चित्रित तथा आरोपित अबला व्यक्तित्व को नकारते हुए उसे सबला और पुरुष प्रधान संस्कृति को आह्वान देनेवाली 'स्त्री' के रुप में चित्रित किया है।

कुछ कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में युगीन विषमताओं को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। उनकी अनेक कविताओं में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक संदर्भ आदि के सजीव चित्र भी दिखाई देते हैं। अनेक कवयित्रियों ने तो मिथकों के आधार पर नारी की विवशता दयनीयता को रेखांकित किया है। (सुमन राजे, मंजू महिमा भटनागर, निशा निशांत) आदि कवयित्रियों ने नारी जीवन के अनेक प्रश्नों को उठ खड़ा किया है। कुछ कवयित्रियों में दयनीयता, विवशता भी देखी जा सकती है। परन्तु प्रधानता अलिप्तता तथा आहवान की रही है। (स्नेहमयी चौधरी, पुष्पा राही, मणिका मोहिनी, शीला गुजराल, सुनिता जैन, शशि शर्मा, शांति जैन, उषा चौधरी) आदि।

कुछ कवयित्रियों सुनीता जैन, रमणिका गुप्ता, पद्मा पाटील, सुधा गुप्ता, डी. माधवी की कविता में प्रकृति चित्रण भी दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक संतुलन का बिगड़ना तात्पर्य पर्यावरण का असंतुलन मनुष्य के लिए हानिकारक है। मनुष्य प्रकृति का नाश कर रहा है। प्रकृति की सुरक्षा होना अनिवार्य है। इन कवयित्रियों के प्रकृति चित्रण में विविधता है। किसीने प्रकृति के सुंदर रुप का वर्णन किया है तो किसी ने पर्यावरण के असंतुलन पर चिंता व्यक्त की है। ग्रामीण संस्कृति, पर्यावरण, सामाजिक

सरोकार आदि का चित्रण मुक्ता की कविता में दिखाई देता है।

आधुनिक काल में इस प्रकार की कविताएँ प्राय: सभी कवयित्रियों ने लिखी है। अब कवयित्रियों के सामने वर्तमान सामाजिक विषमता के अनेक पक्ष हैं। व्यवस्था के अनेक बदलते रुप हैं जिसे आज के जीवन मे विकसित महानगरीय सभ्यता के अभिशापों के प्रति भी इन कवयित्रियों की सजगता देखी जा सकती है। वक्त की अनेक बदरुप सच्चाइयों को इन कवयित्रियों ने समझा और महसूस किया है। आज की भ्रष्ट व्यवस्था में जीनेवाला इन्सान धीरे-धीरे स्वाभिमान शून्य हो गया है। सहज रुप से जीना भूल गया है। इस पर अनेक कवयित्रियाँ अपने मत प्रकट की है। इंदू जैन, इंदू वशिष्ट, उर्मिला कौल, सावित्री डागा, रमा सिंह, कामिनी भटनागर, मणिका मोहिनी, सावित्री डागा आदि प्रमुख है।

कुछ कवयित्रियों ने वर्तमान भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था, भ्रष्ट चरित्र, पर व्यंग्यात्मक प्रहार भी किया हैं। इसके साथ ही अनेक कवयित्रियों ने अपनी कविताओं में युगीन विषमताओं का चित्रण किया है। उनकी अनेक कविताओं में राजनीतिक सूझबूझ एवम् सामाजिक व्यवस्था के प्रति जागरुकता की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें प्रमुख हैं, सुमन राजे, कमल कुमार, किरण जैन, अरुणा कपूर, प्रभा मुझुमदार, इंदू वशिष्ट आदि। सुधारवादी दृष्टी कुसुम अंसल में और दलित स्त्री का चित्र रमणिका गुप्त में दिखाई देती है।

स्त्रीवादी दृष्टिकोण को सामने रखकर लिखनेवाली कवयित्रियों मे सुमन राजे, समणिका गुप्त, कुसुम अंसल, कामिनी भटनागर, मंजु महिमा भटनागर, प्रभा खेतान, शांति जैन, अमृता भारती, अरुणा कपूर, मुक्ता, सावित्री डागा, शशि शर्मा, सुशीला कपूर, डी. माधवी, अर्चना वर्मा, दिनेश नंदिनी डालमिया, निशा-निशांत, शशि सहगल आदि प्रमुख हैं। पारिवारिक जीवन का चित्रण कुसुम अंसल, कामिनी भटनागर, शशि सहगल, सुनिता जैन, आदि कवयित्रियों की कविता में हुआ है। वात्सल्य का चित्रण विद्यावती कोकिल और मंजु गुप्ता ने किया है। मजदूर और किसान के दु:ख दर्द को जानने का प्रयत्न रमणिका गुप्ता, इंदू जैन, इंदू वशिष्ट, अरुणा कपूर आदि ने किया है।

आम आदमी का दर्द और पीडा का चित्रण सुधा गुप्ता, इंदू जैन, अरुणा कपूर, इंदू वशिष्ट, उषा चौधरी आदि ने किया है। कवयित्री रमा सिंह ने रुढि परंपरा

का विरोध किया है। यांत्रिक जीवन और जीवन की क्षणभंगुरता को प्रभा मुझुमदार और इंदू वशिष्ट ने चित्रित किया है। दहेज प्रथा का विरोध इंदू वशिष्ट और मंजु महिमा भटनागर ने किया है। गगन गिल और अनामिका ने स्त्री देह दमन को अपनी कविता में स्थान दिया है।

शोषण, अन्याय, अत्याचार, कन्या भ्रूण हत्या, कन्या जन्म, बिना सहमति से गर्भपात आदि समस्याओं का चित्रण कामिनी भटनागर, शशि सहगल, सुशीला कपूर, सुशीला जोशी आदि कवयित्रियों ने किया है। मणिका मोहिनी ने शहरी संवेदना को लताडा है और पुष्पा राही ने आक्रोश प्रकट की है। सावित्री डागा ने मूल्यों का ऱ्हास और अर्थ केंद्रित सभ्यता पर करारा चोट की है। शशि शर्मा स्त्री को शोषण से मुक्त करना चाहती है, उसने स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व की माँग की है।

व्यवस्था में स्थित अंतर्विरोध, असफल प्रजातंत्र, आज की राजनीति आदि अनेकविध समस्याओं का चित्रण सुमन राजे, कमल कुमार, किरण जैन, अरुणा कपूर, प्रभा मुझुमदार, इंदू वशिष्ट आदि कवयित्रियों ने किया है।

सुधारवादी, प्रगतिवादी विचारों को बढावा देनेवाली अनेक कवयित्रियाँ दिखाई देती हैं। कुसुम असंल बलशाली भारत के निर्माण के लिए गाँवो, बस्तियों को ज्ञान विज्ञान की सुविधाओं से जोडने का सलाह देती है। महादेवी वर्मा की संपूर्ण सहानुभूति गरीबों के साथ जुडी हुई है। रमणिका गुप्ता ने सामान्य लोगों की चिंता, श्रमिकों की पीडा और आम दलित स्त्री का प्रतिनिधित्व किया है। अरुणा कपूर, इंदू वशिष्ट आदि ने बाल मजदूरी के व्यथापूर्ण जीवन का मार्मिक चित्रण किया है।

शांति सुमन का वर्गहीन समाज की स्थापना का लक्ष्य है। इंदू जैन ने आतंकवाद और एटम बम जैसी समस्या पर प्रश्न उठाया है। किरण जैन ने वर्तमान सामाजिक विषमता का चित्रण किया है। कमल कुमार ने भ्रष्टाचार से ग्रस्त राजनीति और चार-दीवारी में बंद न्याय व्यवस्थापर तीखा व्यंग्य कसा है। डी. माधवी जीवन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए, मन शांति के लिए मंदिर-मस्जिद न जाकर मन के दिए जलाने का सलाह देती है।

इस प्रकार ये कवयित्रियाँ अपनी कविताओं में परंपरागत अभिव्यक्ति से आगे बढकर आधुनिक युग बोध या जीवन के यथार्थ से जुड चुकी है। अतः हम स्पष्ट कह सकते हैं कि आधुनिक हिन्दी कविता की विकास प्रक्रिया में निश्चित ही इन कवयित्रियो

का योगदान महत्त्वपूर्ण तथा प्रशंसनीय है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य, कवयित्रियों का अनुभव विश्व, उन्होंने प्रयोग में लाया हुआ काव्य-प्रकार, भाषा-शैली, कुल मिलाकर मराठी कविता में उनका स्थान कविता के अध्ययन के बाद मिले हुए निष्कर्ष आदि का विवेचन किया गया है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा दिखाई देता है कि आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में नौकरी करनेवाली स्त्रियों की संख्या अत्यल्प थी, उसमें भी उच्चवर्णीय समाज के स्त्रियों की संख्या अधिक थी। स्वातंत्र्योत्तर काल में स्त्री शिक्षा के प्रसार के कारण, नगर और देहात में स्त्री शिक्षा का प्रमाण बढ़ता गया, और समाज के सभी क्षेत्रों में नौकरी व्यवसाय के लिए घर के बाहर जानेवाली स्त्रियों की संख्या बढ़ती गयी है। स्त्री आत्मविश्वास और सामर्थ्य से सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारी उठा रही है। शिक्षा के कारण उनका संकुचित विश्व व्यापक हुआ। पूरी दुनिया के समाज जीवन का वह अध्ययन कर रही है। आधुनिक काल में स्त्री का अनुभव विश्व बढ़ गया है उन्हें अपने स्वत्त्व का अहसास हुआ है। अन्याय के खिलाफ वह क्रांति करने लगी है। देहाति स्त्री का जीवन अभी भी पारंपारिक पद्धति का है। शिक्षा के कारण थोड़ा-बहुत उनके जीवन में भी सुधार हुआ हो तो भी उसकी मात्रा अत्यंत कम है।

आधुनिक कालीन मराठी कवयित्रियों की कविता का अध्ययन करने के बाद एक बात स्पष्ट हो जाती है कि, इस काल में कवयित्रियों की और उनके काव्य-संग्रहों की संख्या अधिक है। स्वतंत्रता पूर्व कवयित्रियों की काव्य-संग्रह से स्वातंत्र्योत्तर कालीन कवयित्रियों की कविता-संग्रह मात्रा में अधिक है। और इन कवयित्रियों के अनुभवविश्व में वृद्धि होते हुए स्पष्ट दिखाई देती है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित कथ्य सौंदर्य में स्त्री जीवन का अध्ययन, प्रेमानुभव, वैवाहिक जीवन, पारिवारिक नाते-रिश्ते संबंध, नौकरी - व्यवसाय, उपेक्षित समाज, स्त्रीमुक्ति आंदोलन, स्त्रीवादी विचार, प्रकृति-चित्रण, देश प्रेम, भक्ति-भावना, किसान, मजदूर, समाज, संस्कृति, संसार, रूढि परंपरा विरोध आदि विविध प्रकार के अनुभवों को देखने के बाद समझ में आता है की, प्रेमानुभव से संबंधित कविता लिखनेवाली कवयित्रियों की संख्या अधिक है। स्त्री संवेदनशील होने के

कारण प्रेम उसका स्थायिभाव है। इसलिए 'प्रेम' आधुनिक मराठी कवयित्रियों का मुख्य आशय है। प्रेमानुभव से संबधित कविताएँ सिर्फ संख्या से ही अधिक नहीं तो, गुणात्मकता की दृष्टि से भी प्रभावशाली और श्रेष्ठ हैं। स्वतंत्रतापूर्व कवयित्रियों की कविता से स्वातंत्र्योंत्तरकालीन कवयित्रियों की कविता में प्रेमानुभव अधिक निर्भयता से व्यक्त हुआ है। कवयित्रियों की कविता में प्रमुख रूप से सफल और असफल प्रेमानुभव व्यक्त हुआ है। प्रेम और प्रियकर को अनन्यसाधारण महत्त्व देनेवाला, प्रेम को जीवन अर्पित करनेवाला पारंपारिक भाव भी इस कविता में दिखाई देता है। मनोरमा रानडे, विमला देशपांडे, लक्ष्मीबाई बेहरे, मनोरमा नावलेकर, संजीवनी मराठे, इंदिरा संत, शांता शेळके, पद्मा गोळे, सरिता पद्की, शिरीष पै, सुलभा हेर्लेकर, अनुराधा पोतदार, सुहासिनी इर्लेकर, पद्मिनी बिनीवाले, सुशील पगारिया, अंजली ठकार, हिरा बनसोड़े, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकड़े, हेमा लेले, अनुराधा पाटील, माधवी देसाई, मलिका अमर शेख, नीरजा, अरुणा ढ़ेरे, प्रज्ञा लोखंड़े, सुमति लांड़े, संजीवनी खोजे यशोधरा साठे, ललिता गौरी भट्ट, संगीता जोशी, अंजली फडके आदि कवयित्रियों ने प्रेमानुभव के विविध रूप अपनी कविता में व्यक्त किया है।

वैवाहिक जीवन, मायका, सास-बहू, ससूराल आदि से संबंधित अनुभव काशिताई नाटेकर, बहिणाबाई चौधरी, लक्ष्मीबाई टिळक, पद्मा गोळे, मंदा बोडस, सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, अरुणा ढेरे, प्रज्ञा लोखंडे आदि कवयित्रियों ने व्यक्त किया है । उसमें ससुराल जानेवाली लड़की, ससुराल का दुःख, सुशील पगारिया अरुणा ढेरे, आदि की कविता में दिखाई देता है। प्रौढ़ कुमारिका के जीवन को और सवत के दुःख को राह कर देने का प्रयत्न केवल रजनी परुळेकर ने किया है। परित्यक्ता स्त्री का दुःख चित्रित करने का प्रयत्न अरुणा ढेरे ने किया है। लोक साहित्य का आधार लेकर सीता के दुःख के माध्यम से परित्यक्ता स्त्री का दुःख उन्होंने व्यक्त किया है।

वैधव्य यह भारतीय संस्कृति में स्त्री जीवन का सबसे बडा अभिशाप है। विधवा के दुःख को चित्रित करने का प्रयत्न लक्ष्मीबाई टिळक, सावित्रीबाई जोशी, बहिणाबाई चौधरी, आसावरी काकडे, अश्विनी धोंगडे, अरुणा ढेरे, नीरजा आदि कवियित्रियों ने किया है। इससे संबंधित अनुभव उनकी कविता में अधिक गहराई से व्यक्त हुई है।

आसावरी काकड़े की कतिवा में चित्रित स्त्री वैधव्य से आक्रोश करनेवाली नहीं, तो समझदारी से दुःख सहनेवाली है। भारतीय संस्कृति में वैधव्य शाप तो मृत्यु वरदान माना जाता है। सती जानेवाली स्त्री का अनुभव प्रभा गणोरकर, प्रज्ञा लोखंडे की कविता में तीव्र उपालंभ व्यक्त हुआ है। वैवाहिक जीवन से संबंधित अनुभव लक्ष्मीबाई टिळक अनमेल विवाह का निषेध करती है। सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकड़े, अनुराधा पाटील, अरुणा ढ़ेरे, प्रज्ञा लोखंड़े आदि ने भी अपने अनुभव प्रकट किया है। कवयित्रियों की संवेदनशीलता प्रेम के संबंध में जितनी तीव्र है, वही तीव्रता वैवाहिक जीवन से संबध तक आनेवाले अनुभव के संबंध में होना चाहिए था। स्त्री का दुःख स्त्री ही समझ सकती है, इस दृष्टि से देखा जाय तो, स्त्री दुःख का चित्र अधिक मात्रा में उतारना चाहिए था, लेकिन वैसा हुआ नहीं ऐसा दिखता है। लडकी को बोझ समझ कर उसके सहमति के बिना उसका विवाह किया जाता है। इसका चित्रण रजनी परुळेकर ने किया है।

पारिवारिक रिश्ते-नाते संबंधों से आनेवाले अनुभव पद्मा गोळे, शिरीष पै, नीरजा अनुराधा पोतदार, सुहासिनी इर्लेकर, सुशील पगारिया, प्रभा गणोरकर, रजनी परुळेकर, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, माधवी देसाई, अरुणा ढेरे, ज्योति लांजेवार, प्रज्ञा लोखंडे, सरिता पद्की आदि कवयित्रियों की कविता में व्यक्त हुआ है। प्रज्ञा लोखंडे की कविता में चित्रित लड़का माँ के लिए प्रयत्नरत दिखाई देता है, अनुराधा पाटील की कविता में पुत्र-विरह का दुःख दिखाई देता है, तो अन्य कवयित्रियों की कविता में बच्चों के सुख के लिए प्रयत्न करनेवाली कष्ट सहनेवाली माँ दिखाई देती है। अश्विनी धोंगडे की कविता में पुत्र स्वार्थि प्रवृत्ति का दिखता है। स्वयं के बीवी बच्चो में रत लडके के लिए माँ बोझवत लगती है। समाज में स्थित वास्तवता का दर्शन यहाँ होता है। ज्योति लांजेवार की कविता में वेश्या माँ का दुःखद अनुभव तीव्रता से व्यक्त हुआ है। माधवी देसाई की कविता में मातृत्त्व वरदान में से शापदग्ध करनेवाला अनुभव व्यक्त हुआ है।

माँ-बेटी के बीच के रिश्ते का चित्रण प्रभा गणोरकर, अरुणा ढेरे की कविता में हुआ है और वह हृदयस्पर्शी है। चाचा-पोती के बीच का संबंध केवल रजनी परुळेकर ने व्यक्त किया है। घर के छोटे- बडे कलह का छोटे बच्चों पर होनेवाला परिणाम यह इन रिश्तों से संबंधित कविताओं में से स्पष्ट दिखाई देता है। सास-बहू के रिश्ते का

संबंध अश्विनी धोंगडे की कविता में चित्रित हुआ है। उनकी कविता में दहेज के लिए बहू की होनेवाली हत्या और सास को न समझ लेकर छलनेवाली बहू भी यहाँ दिखती है। परस्पर विरोधी अनुभव उनकी कविता में अभिवयक्त हुई है।

परिवार में रहकर भी अकेलेपन का अनुभव परिवार के मुखिया स्त्री को आता है। यह अनुभव अनुराधा पाटील, अरुणा ढेरे आदि कवयित्रियों की कविता में से आती है। आसावरी काकडे, त्योति लांजेवार आदि की कविता में एक विशिष्ट नाते-रिश्तो के संबंध में विचार व्यक्त न होकर पुरे नाते-रिश्तों के संबंध में सहज रुप में विचार व्यक्त हुए हैं। नाते-रिश्ते संबंधो के बीच की व्यर्थता विषयक अनुभव इसमें से व्यक्त हुए हैं मराठी कवयित्रियों की कविता में पारिवारिक नाते-रिश्ते से संबंधित चित्रण बहुत ही कम दिखाई देता है। वात्सल्य प्रेम, विमलाबाई देशपांडे, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, नीरजा, माधवी देसाई, शिरीष पै आदि ने व्यक्त किया है।

नौकरी व्यवसाय करनेवाले स्त्री के अनुभव विश्व के संबंध में अश्विनी धोंगडे ने प्रभावपूर्ण लेखन किया है। इनके अलावा अनुराधा पोतदार, प्रभा गणोरकर की कविता में नौकरी व्यवसाय करनेवाली स्त्रियों का जीवन चित्रित हुआ है। माधवी देसाई की कविता में मजदूर स्त्री जीवन व्यक्त हुआ है।

उपेक्षित समाज सें आए-हुए अनुभव हिरा बनसोडे, रजनी परुळेकर, मलिका अमर शेख, अरुणा ढेरे, ज्योति लांजेवार और प्रज्ञा लोखंडे की कविता में चित्रित दुःख उपेक्षित जातिसंस्था से आयी हुई है। हिरा बनसोडे, ज्योति लांजेवार की कविता में चित्रित यह दुःख स्त्री के रुप में और दूसरे दलित स्त्री के रुप में दोनों अवस्थाओं में व्यक्त हुआ है, ज्योति लांजेवार की कविता में विद्रोह और दर्द की तीव्रता है। अरुणा ढेरे संत जनाबाई के दुःख को सामने लाने का प्रयत्न किया है। रजनी परुळेकर, मलिका अमर शेख, ज्योति लांजेवार आदि कवयित्रियों ने वेश्या व्यवसाय से संबंधित स्त्री के दुःख का चित्रण किया है। वेश्या बस्ती, यहाँ का खुला संभोग, गाली-गलौज उनका बीभत्स जीवन, वेश्या माँ का दर्द आदि का गरहा चित्र उन्होंने खींचा है। नीरजा की कविता में चित्रित स्त्री को उम्र भर एक ही पुरुष के पास रहना पसंद नहीं, स्वेच्छा से वेश्या बनी हुअी स्त्री यहाँ दिखाई देती है।

स्त्रीमुक्ति आंदोलन और स्त्रीवाद के संबंध से आये-हुए अनुभव शब्दबद्ध करनेवाली अनेक कवयित्रियाँ दिखाई देती है। सावित्रीबाई फुले, लक्ष्मीबाई लेले, पद्मा

गोळे, सरिता पदकी, अनुराधा पोतदार, सुशील पगारिया, अश्विनी धोंगडे, आसावरी काकडे, अनुराधा पाटील, मलिका अमर शेख, ज्योति लांजेवार, प्रज्ञा लोखंडे, मीना गजभिये, प्रभा गणोरकर, संगीता जोशी, रजनी परुळेकर, माधवी देसाई, नीरजा आदि कवयित्रियों ने स्त्रीवादी दृष्टिकोण के आधारपर स्त्री जीवनानुभव बताने का प्रयत्न किया है। इन सभी कवयित्रियों में अश्विनी धोंगडे ने विशेष अहसास से स्त्री जीवन की ओर देखा है ऐसा दिखाई देता है। उनके 'स्त्रीसूक्त' काव्य-संग्रह का आशय सूत्र स्त्री और स्त्री जीवन यही है ऐसा दिखाई देता है। अश्विनी धोंगडे, मलिका अमर शेख, ज्योति लांजेवार, नीरजा, प्रज्ञा लोखंडे आदि की कविता में स्त्रीवाद के संबंध में सशक्त विचार व्यक्त हुए हैं। वैसे अन्य कवयित्रियों की कविता में दिखता नहीं। आधुनिक कालीन कवयित्रियों की संख्या और उनके काव्य संग्रह की संख्या देखा जाय तो, स्त्रीवादी दृष्टिकोन को सामने रखकर लिखनेवाली कवयित्रियाँ बहुत ही कम दिखाई देती है। इसलिए स्त्रीवादी विचार मराठी कविता में अपना अस्तिव निर्माण नहीं करा पाया ऐसा दिखता है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों कविता में दिन-विशेष, विज्ञापन, कम्प्युटर, उत्तर पद्धति, किराणा की सूची ऐसे अनेक अभिनव पद्धति का प्रयोग उन्होंने किया है, इसके साथ दीर्घ कविता का प्रयोग भी उन्होंने किया है। इन सभी अभिव्यक्ति प्रकारों में से मन को भानेवाले, अहसास देनेवाले अनुभव उन्होंने बिना शक से व्यक्त किया है। आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर की कविता से बाद की कविता में अधिक खुलेपन का अहासास होता है। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता प्रकृति, समाज और संस्कृति का सम्मान करनेवाली कविता है। वह मराठी कविता के परंपरा से रिश्ता जोडनेवाली नाता संभालनेवाली है। जो जीवन देखा गया अनुभव किया गया, उसकी प्रामाणिक अभिव्यक्ति करनेवाली यह कविता है। अंतर्मन को खोलकर बाह्य जीवन के वास्तविकता का चित्र खींचनेवाली कविता है।अपने अनुभव और मन में उमड़-घुमड़कर आनेवाले अनुभव और विचारों की सहज निर्मिति उनकी कविता में व्यक्त हुई है।

नीरजा जैसी कवयित्री ने पारंपारिक भावना को तिलाजंलि देने का प्रयत्न किया है। परंपरा से जिनकी पतिव्रता के रूप में पूजा की जाती है, ऐसे प्रतिव्रताओं का भोगा हुआ दुःख और यातना के प्रति समाज के आँखे बंद है। ये पतिव्रताएँ भी इन्सान थे, इन पतिव्रताओं को देवता बनाकर उनके दुःख की ओर अनदेखा करनेवाली परंपरा को

फटकारा है। मनोरमा रानडे, अश्विनी धोगडे आदि कवयित्रियों ने दहेज प्रथा की समस्या को अपनी कविता का कथ्य बनाया है।

भक्ति-भावना से संबधित विचार मथुराबाई पंडित, पद्मावती बाई, भटकळकर, लक्ष्मीबाई कुलकर्णी, लक्ष्मीबाई नांदुरकर, लक्ष्मीबाई चितळे, सारजाबाई बापट, सावित्रीबाई पाटणकर, लक्ष्मीबाई दिंगबर, कृष्णाबाई गाडगीळ आदि ने आख्यान के माध्यम से व्यक्त किया है।

देश प्रेम, देश भक्ति की भावना को, लक्ष्मीबाई टिळक, शांतादेवी परदेशी, मनोरमा नावलेकर, पद्मा गोळे, कमल सोहोनी, स्नेहलता किनरे, मंदा बोडस, आदि ने प्रकट किया है। शांतादेवी में एकता की भावना, मनोरमा में गांधी प्रेम दिखाई देती है। चीन आक्रमण, गोवा मुक्ति आंदोलन, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन आदि को कमल सोहोनी और स्नेहलता किनरे ने अपनी कविता का कथ्य बनाया है। सावित्रीबाई फुले, लक्ष्मीबाई नांदुरकर, मीना दीक्षित आदि ने रूढि-परंपरा का विरोध किया है।

आद्य पर्यावरणवादी कवयित्री के रूप में सावित्रीबाई फुले का उल्लेख किया जा सकता है। पर्यावरण संतुलन का विचार उन्होंने अपनी कविता में प्रकट किया है। प्रकृति के विविध छटाओं का वर्णन करने वाली अन्य कवयित्रियाँ हैं, मनोरमा नावलेकर, काशिताई नाटेकर, मनोरमाबाई रानडे, बहिणाबाई चौधरी, संजीवनी मराठे, शांता शेळके, पद्मा गोळे, अनुराधा पोतदार, सरिता पद्की, अंजली ठकार, शिरीष पै, निर्मला देशपांडे, सुलभा हेर्लेकर, वासंती मुझुमदार, रसिका देशमुख आदि।

सावित्रीबाई फुले, संजीवनी मराठे, शिरीष पै, हिरा बनसोडे आदि की कविता में सामाजिक भावना, सुधारवादी दृष्टि दिखाई देती है। हिरा बनसोडे, की कविता में सामाजिक विषमता के खिलाफ क्रांति करनेवाली दलित स्त्री दिखाई देती है। बहिणाबाई चौधरी ने संसार के सीधे गणित को शब्दों में अंकित किया है। शिरीष पै में आम आदमी के प्रति दया की भावना है। किसान, मजदूर, भिकारी आदि का चित्रण सावित्रीबाई फुले, बहिणाबाई चौधरी, शिरीष पै, संजीवनी मराठे, पद्मा गोळे, कमल सोहोनी आदि ने किया है। सरिता पद्की ने बच्चे को जन्म देने के बाद पहले ही दिन काम पर जानेवाली मजदूर स्त्री को अपनी कविता में स्थान दिया है।

ओवी (अरुणा ढेरे) अभंग (मनोरमा नावलेकर, अंजली ठकार) गजल (संगीता जोशी) बिना शीर्षक की कविता (सुमति लांडे) दीर्घ कविता (रजनी परुळेकर) हायकू

(शिरीष पै) आदि पद्धति का अवलंब मराठी की कवयित्रियों ने किया है।

आधुनिक मराठी कवयित्रियों की भाषा प्रारंभिक दौर की कवयित्री की भाषा से सशक्त है। उसमें खुलापन अधिक है। प्रारंभिक दौर की मराठी कवयित्रियों की कविता में स्थित संकोच, बुजदिलापन, डर आदि बाद की कविता में दिखाई नहीं देती। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता विद्रोहात्मक और क्रांतिकारी है।

संक्षेप में समाज का प्रतिबिम्ब तथा प्रतिक्रियाएँ साहित्य में चित्रित होती रहती है। आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा के कारण जागृति हुई है। समाज के अनेक स्तरों में से कवयित्री आगे आ रही है और अपना अनुभव व्यक्त कर रही है। आधुनिक मराठी कविता के प्रारंभिक दौर में कवयित्रियों ने वैधव्य, प्रौढ़ कुमारिका, सती, वेश्याजीवन, परित्यक्ता का जीवन, दलित स्त्री जीवन ऐसे विविध प्रकार के अनुभव विश्व को कविता में समाविष्ट किया नहीं था परंतु बाद में ये अनुभव अपनी कविता में कवियित्रियों ने व्यक्त किया है। स्त्रीमुक्ति आंदोलन स्त्रीवादी विचार आदि स्वतंत्रतापूर्व कविता में अत्यंत क्षीण रूप में व्यक्त हुए थे बाद में यह मात्रा बढ़ गयी है। लेकिन यह वृद्धि अपेक्षा से बहुत ही कम है।

आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता का अध्ययन करने के बाद दिखाई दिया कि, प्रारंभिक दौर में कवयित्रियों का क्षेत्र घर, गृहस्थी, संसार, बच्चे, मायका आदि तक सीमित था। कालांतर में ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ। स्त्रियाँ पढने लगीं, घर की देहलीज पार कर बाहर आने लगी, विविध अनुभवों से वह अवगत हो गयी। पहले पुरुष स्त्री के दुःख-दर्द, समस्या आदि को कविता के माध्यम से व्यक्त करता था। लेकिन आधुनिक काल में स्त्री, स्त्री की भावना व्यक्त करने लगी। प्रत्येक विषय, घटना, समस्या को स्पर्श कर अपनी भावना व्यक्त करने लगी।

आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता में कुछ समानताएँ और कुछ विषमताएँ दिखाई दी। दोनों भाषाओं की कवयित्रियों में पुराने विषय परिवर्तित होकर आए हैं। प्रारंभिक दौर में उनकी दृष्टि भक्ति तक सीमित थी। बाद में प्रकृति प्रेम, देश, समता, स्वातंत्र्य विश्वबंधुत्व तक उसकी दृष्टि गयी। इस व्यापकता और विशालता के कारण स्त्री दुनिया को खुली आँखों से देखने लगी। आधुनिक काल में इन कवयित्रियों की अभिव्यक्ति केवल स्त्री विषयक भावना, वैयक्तिकता तक सीमित नहीं रही। उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक संदर्भ, भ्रष्ट प्रवृत्ति पर प्रहार,

आर्थिक विषमता, शोषण, गरीबी, रुढी-परंपरा का विरोध आदि के उल्लेख्र मिलते हैं। प्रारंभिक दौर में हिंदी कवयित्रियाँ पारिवारिक स्थितियों तथा भक्ति भाव को व्यक्त करती रहीं तो मराठी कवयित्रियाँ पारिवारिक स्थितियों के साथ विद्रोह भाव भी प्रकट करती रही। हिंदी कवयित्रियों की कविता में दुःख्र तथा स्त्री की असहायता अधिक प्रकट हुई तो मराठी कवयित्रियों में कुछ ने इसे प्रकट किया परंतु अधिक का रुख्र सामाजिक स्थिति के प्रति ख्रीज व्यक्त करना रहा है। समकालीन हिंदी कवयित्रियों में विद्रोह तथा स्त्री विषयक जागृति देख्रने को मिलती है तो ये बातें प्रारंभिक मराठी कवयित्रियों में दिख्राई देती है। निश्चित ही आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता में व्यक्त भाव, विचार सोचने को बाध्य करते है। इन कवयित्रियों ने सामाजिक उन्नति और मानव जागृति का सफल प्रयास किया है।

आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता मे विविध भावों तथा विचारों का अंकन हुआ है। कवयित्रियों का काव्य-सृजन दिन-ब-दिन परिष्कृत होता गया। उन्होंने सभी विषयों को लेख्रन के भीतर समा लिया है। आज तक नारी लेख्रन नारी जीवन से संबंधित था, उनकी कथा व्यथा थी किंतु आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की व्यथा कथानक तक सीमित नहीं है। आज इन कवयित्रियों का योगदान श्रेष्ठ हैं। आधुनिक काल में नारी नारीतर विषय पर भी लिख्र रही है। आज कवयित्रियाँ अपने से बाहर निकलकर कडवे सच का अवलोकन कर रही है। उनके लेख्रन में आमूलाग्र परिवर्तन हुआ है। प्रारंभिक दौर में कवयित्रियों का लेख्रन आत्मानुभूति थी किंतु आधुनिक काल में कवयित्रियाँ समाज की चिंता व्यक्त करनेवाली रचनाएँ निर्माण करने लगी। 20 वी सदी में भूमंडलीकरण, बाजारवाद, आधुनिकता आदि नये-नये विषय साहित्य में आ गये, कवयित्रियों ने ऊस पर भी अपनी लेख्रनी चलाई।

आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में मराठी कवयित्रियों की कविता चार-दीवारी के आगे नहीं जा सकी पति, देवी देवता, व्रत-उपवास आदि तक सीमित रही लेकिन आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में हिंदी कवयित्रियों की कविता अधिक मात्रा में भक्ति, देश-प्रेम, घर-संसार, परिवार, प्रकृति आदि में जुडी रही। आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में अंग्रेजी जमाने में मराठी में एक भी कवयित्री का स्वतंत्र काव्य-रचना प्रकाशित नहीं हो सकी। अंग्रेजी जमाने में संग्रहित कुछ स्त्री गीतों के रचनाकार

कदाचित स्त्री होगी लेकिन उसका उल्लेख नहीं मिलता केवल उसमें चित्रित विषय और 'ओवी' में स्त्री के भावनाओं का अप्रत्यक्ष अविष्कार दिखाई देने के कारण अनुमानतः यह स्त्री रचित कविता है ऐसा तर्क लगाया जा सकता है। आधुनिक हिंदी कविता संसार में कवियित्रियों का अपना एक अलग स्थान है। आधुनिक काल के प्रारंभिक दौर में अनेक कवयित्रियाँ सक्रिय रही है।

आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता के कथ्य-सौंदर्य का अध्ययन करने के बाद ऐसा लगता है कि, आधुनिक हिंदी की कवयित्रियाँ अभिव्यक्ति की क्षेत्र में आगे हैं। विषयों की विविधता उनकी सोच, विचार वैश्विक संदर्भ के महसूस होते हैं। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की अभिव्यक्ति विश्वस्तर पर विचार करने तक प्रगल्भ नहीं है। उनके विचारों का दायरा पारंपारिक विचारों तक सीमित रहा है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता सुधारवादी, सामाजिक विचारों को बढावा देनेवाली है। वे भूख और गरीबी को नष्ट करना चाहती हैं। उनके अनुसार सामान्य लोग विज्ञान की उन्नति से कोसों दूर है, भारत में आज भी सुविधाओं से कई गांव वंचित है, दूर हैं, यह उन्होंने देखा है और अपनी कविता में चित्रित किया है। वे कहती हैं बलशाली भारत का अगर निर्माण करना है, तो गाँवों-बस्तियों को ज्ञान-विज्ञान की सुविधाओं से जोडना आवश्क है। ये सुधारवादी विचार महासता बननेवाले भारत के लिए प्रासंगिक लगते हैं।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में भ्रष्टाचार से ग्रस्त राजनीति, विकृतियों के शिकार, चार-दीवारी में बंद न्याय, असहय जनता, असफल प्रजातंत्र, आम आदमी का दर्द और पीडा आदि का सश्यक्त चित्रण दिखाई देता है। आधुनिक हिदी कवयित्रियों की संपूर्ण सहानुभूति गरीबों, मजदूरों के साथ जुडी हुई हैं। वे अपना दुःख उनके दुःख में शामिल कर एकाकार होना चाहती है। सामान्य लोगों की चिंता, श्रमिकों की पीडा और आम मजदूर स्त्री का प्रतिनिधित्व, बाल मजदूरी के व्यथापूर्ण जीवन का मार्मिक अंकन इन्होंने किया है। बाल मजदूर न वे हंस रहे हैं, न रो नहे हैं, न अच्छी तरह जीवन जी रहे हैं। विषम परिस्थितियों के कारण परेशान बच्चे इन्हें दिखाई दी है।

आधुनिक मराठी की अधिकतर कवयित्रियों ने 'प्रेम' विषय को ही अपनी कविता का कथ्य बनाया है। आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की अपेक्षा मराठी कवयित्रियों

की कविता में प्रेमानुभव से संबंधित कविता लिखनेवाली कवयित्रियों की संख्या अधिक दिखाई देती है। आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में शृंगार वर्णन का चित्रण है लेकिन शृंगार का विस्तृत वर्णन दिखाई देता नहीं मराठी कवयित्रियों की कविता में विस्तृत शृंगार वर्णन के दर्शन होते हैं।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों ने स्त्री मुक्ति आंदोलन का सशक्त चित्रण किया है। स्त्री मुक्ति आंदोलन और स्त्रीवाद को उठ खडा किया है। नारी व्यक्तित्व तथा उसके अस्तित्व को उजागर किया है। आधुनिक मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित स्त्री मुक्ति आंदोलन और स्त्रीवाद के संबंध में आए हुए अनुभव देखने के बाद लगता है कि, मराठी में स्त्रीवादी दृष्टिकोण को सामने रखकर लिखनेवाली कवयित्रियाँ और काव्य-संग्रह की संख्या बहुत कम दिखाई देती हैं। इसलिए स्त्रीवादी विचार मराठी कविता में अपना अस्तित्व निर्माण नहीं कर पायी ऐसा महसूस होता है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में पारिवारिक जीवन के सत्य, जो अभितक अछूते और अनदेखे पडे थे उसे साकार करने का प्रयत्न हिंदी की कवयित्रियों ने किया है। उनके अनुसार स्त्री के लिए परिवार ही सबकुछ है। परिवार उसके लिए एक सीमा नहीं तो उपासना है, हर एक स्त्री में माँ की ममता, पत्नी का प्यार हमेशा जागृत रहता है, यह भाव प्रकट हुआ है। मराठी कवयित्रियों की कविता में पारिवारिक नाते-रिश्तों में माँ, बेटी, बेटा, सास-बहू, ससुराल, मायका आदि का चित्रण मिलता है।

माँ के दर्द का चित्रण दोनों कवयित्रियों ने किया है। वृद्धावस्था में बेटे किस प्रकार अनदेखा करते हैं, और बेटों के सहारे से वे वंचित हो जाते हैं, इस अनुभव को दोनों कवयित्रियों ने सश्यक्तता से चित्रित किया है। हिंदी कवयित्रियों की कविता में चित्रित माँ बेटों के प्रति शिकायत करती है, क्रोध प्रकट कर गलती को दिखाना चाहती है। लेकिन इसके विपरित मराठी कवयित्रियों की कविता में चित्रित माँ क्रोध सहकर अपने बेटों का हित चाहती है, उनके प्रति शिकायत न कर मृत्यु को वरण करनेवाली माँ दिखाई देती है।

आधुनिक हिंदी तथा मराठी कवयित्रियों की कविता में स्त्री समस्या और दुःख दर्द का चित्रण हुआ है। मराठी कवयित्रियों की अपेक्षा हिंदी कवयित्रियों की कविता में अधिक हुआ है ऐसा लगता है। हिंदी कवयित्रियों की कविता में दुःख को सुख में

बदलने की शक्ति और साहस दिखाई देती है। उनके अनुसार बाधाएँ मनुष्य जीवन को सौंदर्य ही प्रदान करती हैं। स्त्री देह का कथन, क्रंदन, अर्जन का चित्र भी इन्होंने खींचा है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में देह-दमन की समस्या अधिक मात्रा में चित्रित हुई है। इनकी कविता में प्रथम रजोस्राव के अनुभव को चित्रित किया गया है। मराठी कवयित्रियों की कविता में स्वेच्छा से वेश्या बनी हुई स्त्री दिखाई देती है। उम्र भर एक ही पुरुष के पास रहना उसे पसंद नहीं है। एक व्यक्ति के बंधन में न रहकर वह संसार मुक्त होना चाहती है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में जागृत अस्मिता, मानवाधिकारों की मांग आदि के बारे में सजग दलित स्त्री दिखाई देती है। युगों-युगों से पीडित तथा बंधनों में जकडी नारी की मुक्ति चाहती है। वर्तमान समाज की नारी जीवन से संबंधित सभी समस्याओं के साथ जुडी हुई है। वेश्या समस्या, देवदासी समस्या, किशोरियों की दयनीय अवस्था, स्त्री जीवन की परेशानियाँ, विवशताएँ आदि का चित्रण इनकी कविता में दिखाई देती है।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों की कविता में कविता को शीर्षक न देने की पद्धति का अवलंब नहीं किया गया। लेकिन मराठी में इस पद्धति का अवलंब दिखाई देता है। मराठी कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं में 'अभंग' रचना को महत्त्वपूर्ण मानकर पारंपारिक अभंग रचना से अलग अभंग रचना कर मराठी में अभंग रचना का महत्त्वपूर्ण स्थान सिद्ध कर दिखाया है। 'हायकू' जैसी जापानी काव्य-प्रकार का अनुसंधान, चिंतन कर मराठी में लाने का महत्वपूर्ण कार्य कर अपनी प्रयोगशीलता का दर्शन कराया है। हिंदी कवयित्रियों की कविता में यह प्रयास दिखाई देता नहीं।

आधुनिक हिंदी कवयित्रियों ने स्त्री मन के सभी सवालों की सही तस्वीर खींची है। उनकी दृष्टि नारी जीवन की यातनाओं और परेशानियों तक सीमित नहीं तो रात-दिन कठोर श्रम, संघर्ष करनेवाली स्त्री तक गयी है। संघर्ष ही उनके वर्तमान जीवन का निष्कर्ष है। ये कवयित्रियाँ नए धरातल की तलाश में हैं। इस प्रकार भारतीय नारी की अस्मिता उसके भीतर कहीं शून्य में पल रही आशा को चित्रित करना इन कवयित्रियों का उद्देश्य रहा हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ) संदर्भ ग्रंथ

i) हिंदी: कविता संग्रह

1) अंसल कुसुम - 'धुएँ का सच', अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं. 1980.

2) अंसल कुसुम - 'मौंन के दो पल', पंजाब पुस्तक भंड़ार, दिल्ली. प्र.सं. 1975.

3) अंसल कुसुम - 'मेरा होना', अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं. 1998.

4) अंसल कुसुम- 'जो कहा नहीं गया', राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, सं. 1996.

5) अंसल कुसुम- 'विरूपीकरण' अभिव्यंजना प्रकाशन, पंजाबी बाग, नई दिल्ली. प्र.सं. 1986

6) अनामिका – 'बीजाक्षर', मधुमती, अगस्त-सितम्बर, 1999.

7) कमल कुँवर- 'विनय चंद्रिका', ड़ायमंड जुबली प्रेस, अजयगढ 1899.

8) कमल कुमार- 'बयान' सन्मार्ग प्रकाशन, बंग्लो रोड, दिल्ली. प्र.सं. 1979

9) कपूर अरुणा – 'तुम झेल नहीं पाओगे' अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. 1998

10) कात्यायनी- 'सात भाईयों के बीच चम्पा', आधार प्रकाशन (हरियाणा) पंचकूला 1994

11) केसर कीर्ति – 'मुझे आवाज देना', अभिव्यंजना, बी. 70/72, लॉरेन्स, दिल्ली प्र.सं. 2002.

12) कोकिल विद्यावती – 'ऋतायन', ज्योति प्रकाशन, पाँडिचेरी, प्र.सं. 1985.

13) कौल उर्मिला- 'पथिक आ' आधार प्रकाशन, दिल्ली 1981

14) खरे नर्मदाप्रसाद- 'बुन्देले हरबोले के मुँह जिसने सुनी कहानी', चाँद प्रेस लि. चंद्रलोक इलहाबाद प्र.सं. 1931.

15) खेतान प्रभा- 'अहल्या', सरस्वती बिहार, शाहदरा, दिल्ली प्र.सं. 1988.

16) गिल गगन- 'अंधेरे में बुद्ध' 1998. मधुमती, अगस्त-सितम्बर, 1999.

17) गुप्ता रमणिका – 'तुम कौन' , नवलेखन प्रकाशन, हजारी बाग, बिहार 1999.

18) गुप्ता मंजु- 'रोशनी का दस्तावेज', सार्थक प्रकाशन, गौतम नगर, नई दिल्ली.

19) गुजराल शीला- 'बर्फ के चेहरे' भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली.

20) चंद्रकलाबाई –'रामचरित्र', जगत् प्रकाशन प्रेस, फतहगढ

21) चकोरी रामेश्वरी देवी- 'किंजल्क', गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ.

22) चत्तुर्वेदी हीरादेवी- 'मधुमास' इंडियन प्रेस लि. इलाहाबाद 4 था सं. 1953.

23) चत्तुर्वेदी हीरादेवी- 'मधुबन', साहित्य प्रेस, जबलपुर प्र.सं. 1940.

24) चत्तुर्वेदी हीरादेवी- 'मंजरी', कर्मवीर प्रेस, जबलपुर, 1933.

25) चौहान सुभद्राकुमारी- 'मुकुल', हंस प्रकाशन, इलाहाबाद.

26) चौहान रामकुमारी देवी- 'निश्वास', तरुण भारत ग्रंथावली, प्रयाग प्र.सं. 1935.

27) चौधरी स्नेहमयी- 'चौतरफा लडाई', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 1986.

28) ज्वालादेवी- 'स्त्री कवि कौमुदी', हनुमंत प्रेस, कालाकांकर 1897.

29) जैन सुनिता – 'कौनसा आकाश', पराग प्रकाशन, कर्ण गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली, प्र.सं. 1979.

30) जैन सुनिता - सम्पूर्ण कविताएँ (जाने लडकी पगली), 'वागर्थ' अक्तुबर 1997.

31) जैन इन्दू- 'हिंदी कवयित्रियाँ:तब से अब तक', गगनांचल अप्रैल – जून 2004. अंक-2.

32) जैन इन्दू- 'यहाँ कुछ हुआ तो था', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं. 1994.

33) जैन इन्दू- 'कुछ न कुछ टकराएगा जरुर', ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2004.

34) जैन शांति- 'हथेली का आदमी', पराग प्रकाशन, विश्वासनगर, शाहदरा दिल्ली प्र.सं. 1989.

35) जैन किरण – 'यात्रा और यात्रा' , अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली. प्र. सं. 1971.

36) जोशी सुशीला- 'अनुभूति के पंख, प्र.सं. 2004.

37) ड़ालमिया दिनेशनंदिनी- 'जागती हुई रात है औरत' राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं. 1994

38) द्विववेदी रेखा- 'हिरण्य गर्भा', विद्या विहार, दरिया गंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2002.

39) निशा निशांत – 'पगड़ण्डी का सफर' भारतीय प्रकाशन संस्था, दिल्ली-1994.

40) डॉ. पाटील पद्मा- 'कादम्बिनीं' गंधबहार प्रकाशन, कोल्हापुर प्र.सं. 1998.

41) पुरुषार्थवती- 'अन्तर्वेदना', विश्व साहित्य ग्रंथमाला, लाहौर.

42) भटनागर मंजु महिमा- 'बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखीं' जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- 1994.

43) भटनागर कामिनी – 'निजीगंध' वाणी प्रकाशन, दिल्ली-1990

44) भारती अमृता- 'सन्नाटे में दूर तक', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1992.

45) भारती अमृता – 'आज या कल या सौ वर्ष बाद' 1977

46) माथुर शकुंतला – 'चाँदनी चूनर', साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद प्र.सं. 1960.

47) मेहरोत्रा शांति – 'निष्कृति', लक्ष्मी स्टोअर्स, वंशी भवन, बारुनी खंदक लखनऊ

48) मुक्ता- 'जाने क्यों बार बार', अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं. 2003.

49) मुझुमदार प्रभा- 'अपने अपने आकाश', पार्श्व पब्लिकेशन, निशा पोल, रिलीफ रोड, अहमदाबाद, प्र.सं. 2003.

50) मोहिनी मणिका- 'मेरा मरना' विवेक प्रकाशन, दिल्ली-1985.

51) रत्न कुँवरिबीबी- 'प्रेमरत्न', भारतेंदु हरिश्चंद्र, काशी, प्र.सं. 1925.

52) रमासिंह-'समुद्रफेन', नवयुग पुस्तक भंडार, लखनऊ

53) राजे सुमन- 'उगे हुए हाथों के जंगल', ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. 1987.

54) राजे सुमन – 'एरका' नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली. प्र.सं. 1990

55) रामकुमारी देवी- 'निःश्वास', तरुण भारत ग्रंथावली, प्रयाग प्र.सं. 1892.

56) रानी रघुराज कुँवरि- 'रामप्रिया विलास', भारतेंदु हरिश्चंद्र, काशी प्र.सं. 1925.

57) वशिष्ट इंदू – 'टुकडे टुकडे जिंदगी' अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर-1999

58) वर्मा महादेवी- 'नीहार' साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद.

59) वर्मा महादेवी- 'सांध्यगीत' भारती भंड़ार, लीड़र प्रेस, इलाहाबाद.

60) शुक्ल 'लली' तोरनदेवी- 'जागृति' श्री रत्नावली पुस्तक भंडार, कानपुर

61) सरस्वती देवी- 'सुंदरी सुपन्थ', भारत जीवन पुस्तकालय, काशी

62) सरस्वती देवी- 'वनिता बंधु', क्षोत्रिय अपलाहितकारक, बिजनौर

63) सिन्हा सुमित्राकुमारी- 'विहाग', युग मंदिर, उन्नाव

64) सिन्हा सुमित्राकुमारी- 'बोलो के देवता', उन्नाव

65) सिरोढिया शंकुतला- 'दीप', प्रदीप प्रेस मुरादाबाद, प्र.सं. 1944.

66) सिरोढिया शंकुतला- 'चाँद इतना हँसा', किताब महल प्रा.लि. प्र.सं. 1993.

ii) हिंदी: संदर्भ ग्रंथ

1) अज्ञेय- 'तारसप्तक', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्र.सं. 1972.

2) डॉ. उपाध्याय करुणाशंकर- 'आधुनिक हिंदी कविता में काव्य चिंतन' क्वालिटी बुक्स, रामबाग, कानपुर प्र. सं. 1999.

3) गुप्त अशोक कुमार- 'आधुनिक युग के वातायन से', पुस्तक प्रचार दिल्ली, प्र.सं. 1976.

4) गौड़ शारदा- 'नई कविता में प्रेम चित्रण', सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर राजस्थान, प्र. सं. 1980.

5) ड़ॉ. ड़ागा सावित्री- ' आधुनिक हिंदी मुक्तक काव्य में नारी', देवनागर प्रकाशन, जयपुर प्र.सं. 1977.

6) डॉ. नगेंद्र- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', मयुर पेपर बैक्स, नौएड़ा 26 वाँ. सं. 1999.

7) डॉ. नागपाल रमण- 'आधुनिक हिंदी काव्य में पलायनवाद', वि.भू. प्रकाशन, अहिलाबाद प्र.सं. 1977.

8) डॉ. पाण्डेय रामसजन- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', संजय प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं. 2004.

9) डॉ. पाठक जितराम- 'आधुनिक हिंदी काव्य में चेतना का विकास', राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.

10) डॉ. पाटील पद्मा- 'समकालीन कविता में प्रकृति-तादात्म्य', लघुशोध परियोजना, 2001.

11) माथुर उमेश –'आधुनिक युग की हिंदी लेखिकाएँ' प्र. दिग्दर्शन चरण, जैन, दरियागंज दिल्ली, प्र.सं. 1969.

12) डॉ. 'मिश्र' शिव उमेशचंद्र- 'आधुनिक हिंदी काव्य-सरिता', जयभारती प्रकाशन दलाहाबाद, प्र.सं. 2004.

13) राजे सुमन- 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास', भारतीय ज्ञानपीठ, लोदी रोड, नई दिल्ली, प्र.सं. 2003.

14) वर्मा महादेवी- 'काव्य कला और जीवन दर्शन', प्रसार भारती भंड़ार, लीड़र प्रेस, इलाहाबाद.

15) शर्मा श्रीनिवास- 'हिंदी साहित्य का इतिहास', अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली नया सं.2000.

16) डॉ. शर्मा राजनाथ- 'हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 5 वाँ. सं. 1986.

17) डॉ. शर्मा शिवकुमार- 'हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियाँ', अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली 13 वाँ.सं.

18) डॉ. शर्मा हरिचरण- 'नयी कविता का मूल्यांकन परंपरा और प्रगति की भूमिका', आशा प्रकाशन गृह, दिल्ली प्र.सं. 1972.

19) साळुंखे आ.ह.- 'महाभारतातील स्त्रिया', एक्सप्रेस प्रकाशन, कोल्हापुर प्र.सं. 1996.

20) डॉ. सिन्हा मंजु- हिंदी और गुजराती नयी कविता का परिदृश्य', नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दरियागंज, दिल्ली प्र.सं. 1973.

21) सिंह रामयतन- 'आधुनिक हिंदी कविता में चित्र-विधान', नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र.सं. 1965.

22) डॉ. सिंघल शशिभूषण- 'साहित्य विधाएँ', आधुनिक प्रकाशन, मौजपुर दिल्ली प्र.सं. 2002.

23) डॉ. सोनकर मनोज- 'सत्तरोतरी हिंदी कविता: संवेदना, शिल्प और कवि', प्रकाशन संस्थान, दरियागंज, नई दिल्ली प्र.सं. 1994.

iii) मराठी: कविता संग्रह

1) अंहकारी सरोज- 'पुष्पाजंली', स्वस्तिक प्रिंटर्स अँड बाईंड्स, नारायण पेठ, पुणे, प्र. सं. नवम्बर 1987.

2) इर्लेकर सुहासिनी- 'तृप्ती' कुलकर्णी ग्रंथागार, पुणे. प्र. सं. 1961.

3) इनामदार कल्याणी- 'सुर्यगंधा', परचुरे प्रकाशन मंदिर, मुंबई प्र. सं. 1976.

4) काकडे आसावरी - 'आकाश', सेतु प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1991.

5) काकडे आसावरी - 'आरसा', सेतु प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1990.

6) काकडे आसावरी - 'लाहो', कॉन्टीनेंटल प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1995.

7) काळे राधाबाई- 'हृदतरंग', पुणे, प्र.सं. 1946.

8) किनरे स्नेहलता - 'कण्या', उरण जि. कुलाबा, प्र. सं. 1968.

9) कुलकर्णी लक्ष्मीबाई - 'चंद्रहास आख्यान', बेलगांव, प्र. सं. 1957

10) केळकर सावित्रीबाई - प्रासदिक पद्यावली, मुंबई, प्र. सं. 1900

11) कोल्हटकर उमाबाई - 'वटसावित्रीचे आख्यान' प्र. सं. 1925.

12) खोजे संजीवनी -'एकोल', मानसन्मान प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1986.

13) गणोरकर प्रभा - 'विवर्त' पॉप्युलर प्रकाशन, ब्युरो, मुंबई प्र. सं. 1985.

14) गणोरकर प्रभा - 'व्यतीत' पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई प्र. सं. 1974.

15) गणोरकर प्रभा- 'पंचधारा' मराठी साहित्य परिषद, हैद्राबाद, जाने-मार्च 1995.

16) गजभिये मीना - 'भूक', आस्मितादर्श, अप्रैल-जून 1976.

17) गोळे पद्मा - 'नीहार' मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1954.

18) गोळे पद्मा - 'स्वप्नजा' मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1962.

19) गोळे पद्मा - 'आकाशवेडी' मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1968.

20) चौधरी बहिणाबाई- 'बहिणाबाई ची गाणी 'पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र. सं. 1978.

21) जोशी संगीता - 'म्युझिका', सुगावा प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 1986.

22) ठकार अंजली - 'तुलसीदल', मौज प्रकाशन ब्युरो, मुंबई प्र. सं. 1971.

23) ढेरे अरुणा - 'यक्षरात्र', सुरेश एजन्सी पुणे, प्र. सं. 1987.

24) ढेरे अरुणा - 'मंत्राक्षर', सुरेश एजन्सी पुणे, प्र. सं. 1990.

25) ढेरे अरुणा - 'निरंजन', सुरेश एजन्सी पुणे, प्र. सं. 1994.

26) तेलंग इंदिराबाई - 'भावना तरंग', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. 1937.

27) देसाई माधवी - 'चकवा', मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे प्र. सं. 1986.

28) देसाई माधवी - 'घर माणसांचे', मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे प्र. सं. 1991.

29) देशमुख रसिका - 'श्रावणसरी', ज्ञानेश प्रकाशन, नागपुर, प्र. सं. 1985.

30) देशपांडे निर्मला - 'गंधखुळी' मुंबई, 1962.

31) देशपांडे विमला- 'भरारी' सीताबर्डी, नागपुर प्र. सं. 1970

32) देशपांडे अपर्णा - 'निवारा', बडोदे, नागपुर प्र. सं. 1953.

33) देशपांडे अपर्णा - 'पर्णकुटी', बडोदे, नागपुर प्र. सं. 1946

34) देशपांडे विमला- निर्माल्यमाला', विदर्भ प्रकाशन संस्था, अमरावती, प्र. सं. 1933.

35) धोंगडे अश्विनी - 'स्त्री सूक्त', श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1988.

36) धोंडगे अश्विनी - 'अन्वय' दिलीपराज प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1992.

37) नावलेकर मनोरमा - 'भावकुसुमांजली', पुणे, प्र. सं. 1931.

38) नीरजा- 'निरन्वय', मधुश्री प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1987

39) नीरजा- 'वेणा', नीलकंठ प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1994.

40) पदकी सरिता- 'चैत्रपुष्प', पुणे, प्र.सं. 1962.

41) परांजपे आनंदीबाई- सुबोध गाणी, पुणे, प्र. सं. 1953

42) पंडीत मथुराबाई - 'गीता कूंजन', सांगली, द्वि. सं. 1929.

43) पगारिया सुशील- 'दीपकळया', क्रांति प्रकाशन, जळगांव, प्र. सं. 1993.

44) पगारिया सुशील - 'मनवृंदावन', क्रांति प्रकाशन, जळगांव, प्र. सं. 1970.

45) पगारिया सुशील - 'केसर', क्रांति प्रकाशन, जळगांव, प्र. सं. 1977.

46) परुळेकर रजनी - 'दीर्धकविता', पॉप्युलर प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1985.

47) परुळेकर रजनी - 'स्वीकार', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. 1993.

48) परदेशी शांतादेवी – 'मंगल ज्योति', अहमदाबाद, प्र.सं. 1955.

49) पाटील अनुराधा - 'दिगंत' कुशा प्रकाशन, औरंगाबाद तृ. सं. 1993.

50) पाटील अनुराधा - 'दिवसें दिवस' कुशा प्रकाशन, औरंगाबाद द्वि. सं. 1992.

51) पाटील अनुराधा - 'तरीही' कुशा प्रकाशन, औरंगाबाद द्वि . सं. 1997.

52) पाटणकर सावित्रीबाई – 'गीत वैजयंति', थाना, प्र.सं. 1935.

53) पै. शिरीष- 'एका पावसाळ्यात', मुंबई, प्र. सं. 1969.

54) पै. शिरीष- 'गायवाट', परचुरे प्रकाशन मंदिर, मुंबई, प्र. सं. 1985.

55) पोतदार अनुराधा - 'आवर्त' पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र. सं. 1969.

56) पोतदार अनुराधा- 'मंझधार' सुरेश एजन्सी, पुणे, प्र. सं. 1989.

57) पोतदार अनुराधा- 'सहकंप', मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, प्र. सं. 1982.

58) पोतदार अनुधारा- 'कॅक्टस प्लॉवर' मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1969.

59) पाटील कृष्णाबाई - 'सुमनांजलि' मुंबई, 1922.

60) बनसोडे हिरा- 'फिर्याद', समाज प्रबोधन संस्था, प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1985.

61) बापट कमलाबाई - श्रीदत्त पंचामृत, पनवेल, प्र.सं. 1930.

62) बिनीवाले पद्मिनी- 'मिडास', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र. सं. 1980.

63) बेहरे लक्ष्मीबाई- 'सुमनमाळ', मुंबई, प्र. सं. 1914.

64) बोडस मंदा- 'गंधवेडी', मुंबई प्र.सं. 1966

65) भटकळकर पद्मावती- 'भक्ति ज्ञान पर पद', हुबळी प्र. सं. 1937.

66) मराठे संजीवनी - 'चंद्रफूल', स्त्री सखी प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1971.

67) मराठे संजीवनी- 'संसार', प्रकाशन दा.ना. मोघे, स्कूल आणि कॉलेज बुक स्टॉल, कोल्हापुर प्र. सं. 1942.

68) मराठे संजीवनी- 'संजीवनी', अनमोल प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1976.

69) मराठे संजीवनी- 'चित्रा' , परचुरे प्रकाशन, मुंबई, प्र. सं. 1957.

70) मराठे संजीवनी- 'राका' , मनोहर ग्रंथमाला प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 1938.

71) मुझुमदार वासंती- 'सहेला रे', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1983.

72) रानडे मनोरमा- 'श्रीमनोरमा', शालिनीबाई रानडे, मुंबई प्र.सं. 1939.

73) लांजेवार ज्योती- 'दिशा', निखील प्रकाशन, नागपुर, प्र. सं. 1982.

74) लांडे सुमती- 'कमळकाचा', अक्षर चळवळ प्रकाशन, मुंबई प्र. सं. 1993.

75) लेले हेमा- 'अंतरंग', उन्मेश प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1989.

76) लेले हेमा- 'अंतरंग', उन्मेश प्रकाशन, पुणे द्वि . सं. 1990.

77) लेले हेमा- 'दुसरं आकाशं', नीलकंठ प्रकाशन, पुणे, द्वि.. सं. 1990.

78) लेले लक्ष्मीबाई- 'निरांजन', श्रीनिवास प्रकाशन, हैद्राबाद प्र. सं. 1943.

79) लोखंडे प्रज्ञा- 'अंतःस्थ' मानसन्मान प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 1993.

80) शेळके शांता- 'वर्षा', कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 1947.

81) शेळके शांता- 'रुपसी', अजय प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. 1956.

82) शेळके शांता- 'कळयांचे दिवस फुलांच्या राती', सुरेश एजन्सी, शुक्रवार पेठ, पुणे प्र.सं. 1985.

83) शेळके शांता- 'गोंदण', अभिजित प्रकाशन, मुंबई प्र. सं. 1975.

84) शेख्र मलिका अमर- 'वाळूचा प्रियकर', प्रकाशिका, ज्योती अमर शेख्र, मुंबई प्र. सं. 1979.

85) शेख्र मलिका अमर- 'महानगर', प्लोरिडा शास्त्रीनगर, मुंबई प्र.सं. मार्च 1999.

86) शेख्र मलिका अमर- 'देहऋतु', डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रबोधिनी प्र. सं. मार्च 1999.

87) संत इंदिरा- 'शेला', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई द्वि. सं. 1966.

88) संत इंदिरा- 'बाहुल्या', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1972.

89) संत इंदिरा- 'सहवास', प्रकाशक, ल.न. चापेकर, पुणे प्र. 1940.

90) संत इंदिरा- 'मृगजळ', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र. सं. 1957.

91) संत इंदिरा- 'रंगबावरी', मौज प्रकाशन गृह, मुंबई प्र.सं. 1964.

92) संत इंदिरा- 'मृण्मयी', (संपा. रमेश तेंडुलकर) सुविचार प्रकाशन मंडळ, नागपुर

93) संत इंदिरा- 'मेंदी', मौज प्रकाशन गृह, द्वि. सं. 1963.

94) साठे यशोधरा- 'तनामनाची गाणी', विश्वमोहिनी प्रकाशन पुणे, प्र. सं. 1982.

95) साठे यशोधरा- 'काळं आभाळ', साहित्य सेवा प्रकाशन, औरंगाबाद प्र. सं. 1993.

96) सोहोनी कमल- 'काव्यकमळ', मुंबई प्र. सं. 1965.

97) प्रा. सोलापुरे सुशीला- (संपा) 'महदंबेचे धवळे', कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद प्र. सं. 2003.

98) हेर्लेकर सुलभा- 'पहाटपक्षी', राधेय प्रकाशन, नागपुर प्र. सं. 1981.

iv) मराठी : संदर्भ ग्रंथ

1) अत्रे प्र.के.- 'फुलांची ओंजळ' 'बी. कविंची समग्र कविता', कॉन्टीनेंटल प्रकाशन, पुणे छठा सं. 1969.

2) अत्रे प्र. के.- (प्रस्तावना) 'बहिणाबाईची गाणी', ज्योति पिरिऑडिकल्स, मुंबई, चौथा सं. 1982.

3) इर्लेकर सुहासिनी- 'प्राचीन मराठी संत कवयित्रींचे वाङ्मयीन कार्य', परिमल प्रकाशन औरंगाबाद, प्र.सं. 1980

4) करंदीकर गो. वि.- 'माधव ज्युलियन एक प्रयोगशील कवि' 'परंपरा आणि नवता', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई द्वि. सं. 1980.

5) प्रा. किर्लोस्कर मालती (संपा) 'सप्तसरिता', पुणे

6) प्रा. कुलकर्णी सरोजिनी - (संपा) 'मराठी साहित्य दर्शन', पुणे 1961.

7) कुलकर्णी वा. ल. 'जिप्सी' च्या निमीत्ताने 'मराठी कविता जुनी आणि नवी' पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. 1980.

8) कोत्तापल्ले नागनाथ - पुस्तक परीक्षण, 'दिगंत', 'अनुष्टुभ', मार्च-अप्रैल 1983.

9) कोत्तापल्ले नागनाथ — 'आधुनिक मराठी कविता एक दृष्टिक्षेप', प्रतिभास प्रकाशन, परभणी, 1919.

10) डॉ. खरात माधवी - 'सावित्रीबाईची साहित्य साधना' , निरंतर शिक्षण त्रैमासिक, जनवरी 2003.

11) डॉ. खांडगे मंदा, दीक्षित लीला, ताम्हनकर मंजरी – 'स्त्री साहित्याचा मागोवा' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे प्र.सं. दिसम्बर 2002.

12) गोसावी र.रा. (संपा) 'श्री सकल संतगाथा' खंड-1, सारथी प्रकाशन, पुणे प्र.सं. 2000

13) डॉ. चंदनशिवे सुनील- 'मराठी दलित कविता:एक चिकित्सक अभ्यास' पॅरामाऊंटन लिथो और ऑफसेट प्रेस, मुंबई, प्र.सं. 6 दिसम्ब 2005

14) डॉ. चिडगोपकर अलका - 'अर्वाचीन मराठी कवयित्री', स्नेहवर्धन पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, प्र. सं. 1 जनवरी 2007.

15) जाधव रा. ग. - 'आधुनिक मराठी कवयित्रींची कविता, प्रतिमा प्रकाशन, पुणे प्र.सं. 1996.

16) जाधव रा. ग. - 'कविता व रसिकता' परिमल प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र.सं. 1985.

17) जाधव रा. ग. - 'साहित्य व सामाजिक संदर्भ, कॉन्टीनेंलटल प्रकाशन, पुणे द्वि.सं. 1996.

18) जाधव रा. ग. – 'साठोत्तरी मराठी कविता व कवी', साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद 1997.

19) जोग रा. श्री. - (संपा) 'काव्य प्रदक्षिणा', कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1972.

20) जोशी अनंत लक्ष्मण - 'मराठी सारस्वत', अनमोल प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 1992.

21) डॉ. जोशी प्र.न.- 'अर्वाचीन मराठी वाङ्मयाचा इतिहास' , स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 15 अगस्त 1997

22) देशपांडे अ.ना. 'मराठी वाङमयाचा इतिहास', भाग-2, व्हीनस प्रकाशन, पुणे प्र. सं. जनवरी 1958.

23) देशपांडे केजकर प्रकाश- 'मराठी कविता नवी वळणे' साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र. सं. 1994.

24) देशपांडे वा. ना. (प्रस्ता) - 'प्रीतिपथावर' एन. के. पब्लिशिंग हाऊस पुणे, प्र. सं. 1947.

25) धोंगडे अश्विनी - 'स्त्रीवादी समीक्षाः स्वरुप व उपाययोजना' दिलीपराज प्रकाशन, प्रा. लि. पुणे, प्र. सं. 1993.

26) नेमाडे भालचंद्र- 'टीका स्वयंवर', साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद, द्वि.सं. 2001

27) पाडगांवकर मंगेश - 'संहिता' (विंदा करंदीकराची निवडक कविता) कॉन्टीनेंटल प्रकाशन, पुणे, प्र.सं. 1975.

28) पंडित भ.श्री. 'आधुनिक मराठी कविता', सुविचार प्रकाशन मंडळ, नागपुर, सं. 1952.

29) पाटील पुरुषोत्तम - (संपा) 'कवितारती', (इंदिरा संत विशेषांक, विजय पोलिस वसाहत, धुळे, सितम्बर 1989 से फरवरी 1990.

30) पाडगांवकर मंगेश- 'प्रस्तावना' बोरकरांची कविता, मौज प्रकाशन गृह प्र.सं. नवम्बर 1960.

31) पाटील गंगाधर- 'हार्द (प्रकाशन) 'सहस्त्रगाथा' पु.शि. रेगे यांची निवडक कविता, कॉन्टीनेंटल प्रकाशन पुणे, प्र.सं. 1975.

32) पाटणकर रा. भा.- 'मुक्तिबोधांचे साहित्य', मौज प्रकाशन, मुंबई

33) डॉ. बिराजदार वसंत- 'आधुनिक मराठी वाड्मयाचा इतिहास', कैलास पब्लिकेशन औरंगाबाद, प्र.सं. 15 अगस्त 1999.

34) भोळे भास्कर- 'साहित्य प्रत्यय', स्वरुप प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र. सं. 2001.

35) माळी मा.गो. - (संपा) 'सावित्रीबाई फुले' समग्र वाड्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ, मुंबई, द्वि.सं. 1998.

36) माळी मा.गो.- 'मानव व सृष्टी' काव्यफुले', 'सावित्रीबाई फुले' समग्र वाड्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ, मुंबई, द्वि.सं. 1998.

37) माळी मा. गो.- 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर', 'सावित्रीबाई फुले' समग्र वाड्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ, मुंबई, द्वि.सं. 1998.

38) डॉ. मेश्राम योगेंद्र- 'दलित साहित्य उद्गम आणि विकास', श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपुर, प्र.सं. 1998.

39) डॉ. रणसुभे सूर्यनारायण- 'प्रादेशिक भाषा और साहित्येतिहास' लातुर जिल्हा हिंदी साहित्य परिषद, प्र. सं. 2004.

40) लांजेवार विठ्ठल- 'युगस्त्री : सावित्रीबाई फुले', ज्ञानेश प्रकाशन, प्रतानगर, नागपुर

41) वेदालंकार वेदकुमार- 'मराठी संत काव्य', विकास प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 2000.

42) वैद्य शंकर- 'रसयात्रा', 'कुसुमाग्रजांची निवडक कविता', कॉन्टीनेंटल प्रकाशन, पुणे द्वि .सं. जनवरी 1989.

43) शिरवाडकर वि.वा.- 'बिजली', वसंत बापट यांचा निवडक कविता संग्रह, साधना प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. मई 1952.

44) शिंदे फ.मु. — 'कालमन', परिमल प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र.सं. 1986.

45) शेवडे इंदूमती, 'संत कवयित्री', पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई प्र.सं. 1989.

46) संत दु.का. 'स्त्री जीवनःअन्वय आणि अर्थ', महाराष्ट्र ग्रंथ भंडार, कोल्हापुर, प्र.सं. 1976.

47) साने गीता- 'भारतीय स्त्री जीवन', मौज प्रकाशन मुंबई, प्र.सं. 1986.

48) साठे शारदा- 'स्त्रीवाद, सर्वांग परिपूर्ण तत्वज्ञान नव्हे', शब्दालय, दिवाळी श्रीरामपुर 1993.

49) हर्डीकर कल्याणी- 'संत साहित्य पूर्व पीठिका' 'स्त्री साहित्याचा मागोवा', प्रतिमा प्रकाशन, सदाशिव पेठ, पुणे प्र.सं. 2002.

50) हातकंणगलेकर म.द. 'स्त्रीवाद एक व्यक्तिगत अभिप्राय, शब्दालय, दिवाळी श्रीरामपुर 1993.

आ) पत्र- पत्रिकाएँ:

i) हिंदी :

1) डॉ. भावना त्यागी- 'मन की पीडा को अभिव्यक्त करती कविताएँ' 'गगनांचलं' अप्रैल-जून 2004 अंक 2.

2) सुधीश पचौरी- 'स्त्री देह के कथन', 'मधुमती' अगस्त-सितम्बर 1999.

3) डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र- 'भाषा' मई-जून 2003.

4) रामदरश मिश्र- 'सुनीता जैन की कविताएँ', संचेतना मार्च-जून 1995.

5) कृष्णचंद्र लाल- 'प्रश्नों के घेरे', 'समीक्षा', जुलाई-सितम्बर, 1992

6) सुमन राजे- 'समीक्षा' जनवरी-मार्च 1998 अंक 4.

7) डॉ. मंजु गुप्ता- 'भाषा' मार्च-अप्रैल 1995 अंक 4

8) डॉ. क्रांति कुमार- 'भाषा' मई-जून 2005

9) शांति जैन- 'समीक्षा' अप्रैल-जून 1990

10) जगदीश्वरी प्रसाद- 'चार काव्य संकलन' 'समीक्षा', अप्रैल-जून 2004.

11) रेवती रमण- 'समीक्षा' जनवरी-मार्च 2006

12) डॉ. हरिमोहन- 'वागर्थ' अक्तुबर 1997

13) इंदु जैन- 'ज्ञानोदय', नवोदित लेखिका विशेषांक अप्रैल 1962 (कुसुम कुमार)

14) नीरजा टंडन- 'तृष्णांकित', 'समीक्षा' अक्तुबर-सितम्बर 1981 अंक 3.

15) डॉ. सुधेश- 'भाषा', मार्च-अप्रैल 1995.

ii) मराठी :

1) 'आलोचना', मुंबई, मई 1987.

2) 'ज्ञानोदय', जुन 1889.

3) 'करमणूक' 30 जुलाई 1892.

4) 'मासिक मनोरंजन' जुलाई 1898 अंक 1.

5) 'करमणूक', 30 दिसम्बर 1893.

6) 'बालबोंधमेवा' 30 दिसम्बर 1893.

7) 'बालबोधमेवा', दिसम्बर 1897.

8) 'मासिक मनोरंजन' वर्ष 4 जुलाई 1898.

9) 'प्रभातकाळ, काव्य रत्नावली' मार्च 1892.

10) 'आलोचना', जनवरी 1973.

11) 'आलोचना', अगस्त 1990

12) 'महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका'

13) 'सत्यकथा'

14) 'ललित'

15) 'यशवंत'

16) 'स्त्री'

इ) कोश:

i) हिंदी :

1) बृहद हिन्दी-मराठी शब्द कोश- गो.प.ने.ने. श्रीपाद जोशी (संपा) महाराष्ट्र राजभाषा सभा, पुणे प्र.सं. मार्च 1965.

2) मानक हिंदी कोश- रामचंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद.

3) हिंदी-अंग्रेजी शब्द कोश- डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 25 वाँ. अं. 2001.

4) संस्कृत-हिंदी कोश- आप्टे वामन शिवराम, ज्ञान मंडळ, वाराणसी.

5) हिंदी साहित्य कोश- डॉ. दीक्षित आनंद प्रकाश, ज्ञानमंडळ, वाराणसी भाग-1.

6) हिंदी शब्द सागर- भाग-3 श्यामसुंदर दास.

7) भाषा-शब्द कोश- डॉ. रामशंकर शुक्ल 'रसाल', रामनारायणलाल बेनी प्रसाद, इलाहाबाद 2.

8) भारतीय संस्कृति कोश- सं.पं. महादेव शास्त्री जोशी, भारतीय संस्कृति कोशमण्डल, पुणे, 30 सं.1997.

9) बृहद राष्ट्र भाषा कोश- रतनलाल बाजेरिया, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा.

10) नालंदा अद्यतन कोश- पुरुषोत्तम नारायण अग्रवाल, आदिश बुकडिपो, करोल बाग, दिल्ली 05 सं. 1992.

ii) मराठी :

1) मराठी व्युत्पती कोश- कृ.पा. कुलकर्णी, श्रीपाद जोशी, शुभदा सारस्वत प्रकाशन, पुणे 05 सं. 1993.